С.-А. Г. Б.
Инв. № 160705

ТУРКЕСТАНСКІЙ

СБОРНИКЪ.

Статьи и замѣтки изъ русскихъ и иностранныхъ газетъ.

СБОРНИКЪ СОСТАВЛЯЕТСЯ
по порученію Туркестанскаго Генералъ-Губернатора.

Томъ 533.

С.-А. Г. Б.

ТАШКЕНТЪ.

Оглавленіе 533 тома.

1. Иностранцевъ К. Матеріалы изъ арабскихъ источниковъ для культурной исторіи сасанидской Персіи. (Записки Восточнаго отдѣленія Императорскаго русскаго археологическаго общества. Томъ XVIII) . . . 1

Вырѣзки изъ газетъ:

„Окраины Россіи“.

2. Письмо изъ Туркестана (33—39) . . . 121

„Туркестанскій Курьеръ“ за 1910 г.

3. Сельско-хозяйственныя и промышленныя итоги Туркестана. К. Тимаевъ (1) . . 135
4. О земствѣ въ Ферганѣ (2) 138
5. Кто заплатитъ новый хлопковый налогъ? С. Понятовскій (3). 142
6. Переселенческія невзгоды въ Туркестанѣ. К. Тимаевъ (4) 145
7. Съ засѣданій и по поводу засѣданій о земствѣ (5) 147
8. Судъ присяжныхъ въ Туркестанѣ. К. Тимаевъ (5) 149
9. Возрастаніе интереса къ Туркестанскому краю. К. Тимаевъ (6) 151
10. Изъ засѣданій о земствѣ (7). . . . 154

II.

11. Переселенческій вопросъ въ раіонѣ Туркестанъ-Сибирской ж. д. К. Тимаевъ (7) . 156
12. Историческая справка къ судебной реформѣ въ Туркестанѣ. К. Тимаевъ (8) . . 158
13. Кровавое столкновеніе въ Бухарѣ (8—10) . 160
14. Заключительное засѣданіе совѣщаній о земствѣ (9) 168
15. XV-лѣтіе газеты „Закаспійское обозрѣніе". К. Тимаевъ (17) 170
16. О каналѣ Императора Николая I-го въ Голодной Степи (17). 173
17. Когда у насъ будетъ земство. Г. М. Антоновичъ (18) 178
18. Ташкентская желѣзная дорога (18) . . 182
19. Гашишъ и фанатизмъ (19) 183
20. Проникновеніе австрійскихъ товаровъ въ Сѣверную Персію (19) 184
21. Еще о каналѣ Императора Николая I-го въ Голодной Степи. К. Тимаевъ (20) . . 185
22. Въ Бухарѣ (21, 24) 188
23. Орошеніе новыхъ земель частными лицами (24) 193
24. По поводу развитія исламизма (25) . . 194

Отдѣльный оттискъ изъ Записокъ Восточнаго Отдѣленія
Императорскаго Русскаго Археологическаго Общества.
Томъ XVIII.

К. ИНОСТРАНЦЕВЪ.

МАТЕРІАЛЫ ИЗЪ АРАБСКИХЪ ИСТОЧНИКОВЪ

для

КУЛЬТУРНОЙ ИСТОРІИ САСАНИДСКОЙ ПЕРСІИ.

ПРИМѢТЫ И ПОВѢРЬЯ.

باب العرافة و الزجر و الفراسة
على مذهب الفرس

САНКТПЕТЕРБУРГЪ.
ТИПОГРАФІЯ ИМПЕРАТОРСКОЙ АКАДЕМІИ НАУКЪ.
Вас. Остр., 9 линія, № 12.
1907.

МАТЕРІАЛЫ ИЗЪ АРАБСКИХЪ ИСТОЧНИКОВЪ

для

КУЛЬТУРНОЙ ИСТОРІИ САСАНИДСКОЙ ПЕРСІИ.

ПРИМѢТЫ И ПОВѢРЬЯ.

باب العرافة و الزجر و الفراسة على مذهب الفرس

I.

ТЕКСТЪ.

Арабскій текстъ, съ котораго мы начинаемъ нашу работу, издается по одной рукописи Лейденской Библіотеки[1]). Въ нѣкоторыхъ мѣстахъ, о чемъ подробно говорится въ слѣдующемъ далѣе изслѣдованіи, текстъ этой рукописи совпадаетъ съ текстомъ издаваемаго Броккельманомъ сочиненія Ибн-Кутейбы ʿУюн-ал-ахбāръ. Въ значительнѣйшей части его намъ пришлось однако ограничиться лейденской рукописью, вводя временами коньектуры и отказываясь въ нѣкоторыхъ мѣстахъ отъ безспорнаго перевода. Заключительная глава, псевдэпиграфическій трактатъ Иппократа, издана нами по свѣркѣ съ содержащей этотъ трактатъ берлинской рукописью[2]) и индійскимъ его изданіемъ[3]). Лейденская рукопись датирована

---

1) Catalogus codicum orientalium Bibliotecae Academiae Lugduno Batavae auctoribus P. de Jong et M. J. de Goeje, III, 1865, 167—168. Проф. de Goeje, выпускающій второе изданіе этого каталога, сообщилъ въ письмѣ къ бар. В. Р. Розену, что и ему этотъ трактатъ извѣстенъ лишь въ лейденской рукописи.

2) Ahlwardt, Verzeichniss der arabischen Handschriften der königlichen Bibliothek zu Berlin, IV, 1892, 555, № 5371.

3) A catalogue of the Bibliotheca Orientalis Sprengeriana, Giessen, 1857, 104, № 1884.

757 г. Хиджры (1356 г. по Р. Х.); берлинская рукопись, «физіономическій» трактатъ Мухаммеда-ибн-Абу-Тāлиба ад-Димашкī, помѣчена 930 г. Хиджры (1524 г. по Р. Х.); индійское изданіе — новое, снабженное арабскими и персидскими глоссами. При изданіи мы отмѣчаемъ берлинскую рукопись буквой А, индійское изданіе буквой В.

Съ внѣшней стороны рукопись ясна и не возбуждаетъ большихъ затрудненій; въ нѣкоторыхъ, немногихъ случаяхъ пришлось проставлять отсутствующія діакритическія точки, прибавлять пропущенныя буквы, дѣлать вставки. Съ внутренней стороны текстъ представляетъ нѣкоторыя трудности[1]), которыя увеличиваются тѣмъ, что мы лишены критерія для провѣрки. Какъ ни малъ однородный текстъ у Ибн-Кутейбы, онъ все же значительно помогаетъ намъ въ пониманіи параллельныхъ мѣстъ, равно какъ и тексты А и В. Однако подобнаго рода памятники легко подвергаются измѣненіямъ и поэтому тексты иногда различаются.

При изданіи я въ большинствѣ случаевъ не указывалъ отсутствія въ рукописи діакритическихъ точки или точекъ при одной буквѣ, особенно когда слово при отсутствіи ихъ не имѣло смысла, а также отсутствія *тешдида*, равно какъ и *хамзы* послѣ долгихъ гласныхъ. Прочія поправки отмѣчены въ своемъ мѣстѣ, а сдѣланныя мною вставки въ текстъ помѣщены въ прямыя скобки. Главы или отдѣльныя части трактата, отмѣченныя у меня чертою надъ строкой, написаны въ рукописи красными чернилами. Изъ особенностей рукописи укажу на систематическое проставленіе *даммы*, въ большинствѣ случаевъ тамъ, гдѣ ея совершенно не требуется (напр. الشُطرنج, الضُحك, الهُند и др.)[2]).

Считаю долгомъ выразить мою признательность управленіямъ Лейденской Академической и Берлинской Королевской Библіотекъ, любезно выславшимъ въ Петербургъ черезъ посредство Императорской Академіи Наукъ, первое — рукопись издаваемаго мною текста (не ограничивая срокомъ), второе—рукопись А и индійское изданіе В (послѣднее изъ библіотеки восточныхъ книгъ Шпренгера).

---

1) R. Foerster, Scriptores physiognomonici graeci et latini, vol. I, Lipsiae, 1893 (Bibliotheca scriptorum graecorum et romanorum Teubneriana), LXXXI, пишетъ по поводу находящейся въ той же рукописи физіономики Полемона: «Scriptura quidem clara, textus vero ipse valde corruptus atque e parte mancus est». Ср. тамъ же замѣчанія Hoffmann'a, 95.

2) По пагинаціи рукописи нашъ текстъ начинается на стр. 49б, потому что первая страница не пагинирована. Листъ 69 въ пагинаціи рукописи пропущенъ вовсе, такъ что съ л. 70 пагинація рукописи сходится съ пагинаціей Hoffmann'a и моей и въ рукописи оказывается 76 листовъ (вопреки Hoffmann'y, 294). Относительно чтенія даты ср. сомнѣнія Foerster'a, LXXXI, n. 1; въ текстѣ (294) принята однако цифра Лейденскаго каталога.

Въ 1875 г. бар. В. Р. Розенъ, въ бытность свою въ Лейденѣ, списалъ текстъ этого трактата. По этому списку, любезно мнѣ предоставленному, я могъ ознакомиться съ содержаніемъ текста до полученія рукописи, чѣмъ значительно облегчилось ея списыванье. Ему же обязанъ я рядомъ цѣнныхъ замѣчаній при обработкѣ и текста, и перевода.

50б بسم الله الرحمن الرحيم

باب العرافة والزجر والفراسة على مذهب الفرس قال ابو عثمان عمرو بن[1] بحر الجاحظ
اعلم أن القضايا على الأمور الغائبة كثيرة الظنون فيها اختلافًا والحقيقة منها قليلة
يسيرة والإصابة فيها غير مضمونة ولكلّ أمّة من الأمم ولكلّ جيل من الأجيال[2] رأى
5 تذهب اليه ومذهب قد توهّموه فى أنفسهم وعوّلوا عليه وأكثر ذلك ظنون و أوهام
و حسبان فربّما وقع فى النادر والفارد أمر موافق[3] فى فنونهم المستشعرة والتخيّل[4] أنّ
ذلك كائن فى كلّ أوان و حادث فى كلّ زمان و من[5] مثله يجب[6] الحذار و من وقوعه
يلزم الفرار فيوعزه الأوّل الى الثانى ويأثره الغابر عن الماضى و ربّما صدقت المخيلة
والفراسة فى شىء ثمّ اختلفت من مثله فى أشياء و ربّما تطيّرت النفس من شىء و لها
51a 10 الخير لو علمت فيه والسعادة بتلاقيه و للأمم والأجيال تصاريف فى التخيّل || والفراسة
والاستشعار والطيرة والزجر والعرافة فأكثر الناس استشعارًا [العرب] ولهم تخيّلات
فاسدة وظنون غير صادقة وقد ذكروا ذلك فى أشعارهم و زجرهم وأمثالهم [و] من زعمهم
أنّ الجنّ والغيلان تتصوّر لهم وأنّ الجنّ تخبرهم بما يكون فى أشعار يروونها[7] ويسمعونها
ويفهمونها عنهم فيعملون بذلك فيصحّ لهم فى الزجر و صياح الطير و ملاقاة الوحش و
15 السانح والبارح والجابه والتالى و لقاء الحيّة والأفعوان والدود والحشرات[8] و صياح
الغراب و هدير الحمام و عزيف الجانّ و صوت الحصى و خرير المياه و طموم السيول والنظر
الى السحاب والغيوم و الهداية بالنجوم و معرفة الأنواء والأمطار والرعد والبرق و ما أشبه
ذلك ممّا ليس لغيرهم من الأمم وللهند ما ليس لغيرهم من الوهم والتوهّم والظنّ

---

1 Рук. عمر ابن.
2 Рук. الجيل.
3 Рук. امرًا موافقًا.
4 Рук. و التحيل.
5 Рук. ان.
6 Рук. يحب.
7 Рук. يرونها.
8 Рук. الحسر.

والتخيّل والحدس والتركين و الترجمة والتنجيم والطبّ والفراسة والجفر[1] و هو معرفة
أيّام السنة وهبوب الرياح و طلوع المنازل للقمر و غروبها وعليها يعوّلون فى حكمهم
516 ويقولون || جفر الرياح وجفر الأمطار وجفر الأنوآء والجفر كتاب لهم يجمع أحكام السنة ثمّ
يقسمونها[2] أرباعًا على فصول السنة ومنازل القمر فكلّ سبع منازل لربع من أرباع السنة
يسمّونه جَفْر ويقضون منه على الأمطار والرياح والأسفار[3] والحرب وما أشبه ذلك 5
ومنهم تعلّمت الأكاسرة والفرس سائر العلوم و عنهم أخذوا وبهم يقتدون لا سيّما فى
الطبّ والتنجيم والحساب والوهم والعرافة والزجر والفراسة ومنازل القمر وما أشبه
ذلك فامّا الروم فإنّهم أخذوا عن اليونانيّين[4] جميع الأشيآء و لهم الصنائع الدقيقة
الجليلة والحكم والطبّ والفلسفة وإقامة الأدلّة والبراهين وعلم النقش والهندسة وعلم
الهيئة فى الأفلاك و النجوم و لهم العزائم والرقى والسحر والتوهّم و التخيّل و ما أشبه 10
ذلك فامّا الفرس فإنّهم أخذوا عن الهند جميع الأشيآء و لهم الفراسة والسياسة
والطيرة والاستشعار و سوء الظنّ والوهم والهمّة والقضايا والأحكام والأمثال و تدبير
52a النفس و إصلاح كلّ فاسد و حفر الأبآر || والأنهار والقنى و العيون و سوق الأنهار
وعقد الجسور والقناطر ومساقط الأحجار والمياه و نصب الأشجار و أصناف الأشيآء
واختلافها ممّا يصلح للملوك و أصحاب الدول و ما يجرى مجراهم وكانت الهند تحمل 15
اليهم أصناف الأشيآء واختلافها و كان كسرى قباد و سابور وكسرى أنوشروان وبهرام
جور وشاهان شاه ملك الملوك[5] يجتلبون[6] من الهند سائر الأصناف و يجرون الأرزاق
الوافية ويفوّضون النعم الدثرة الى علمآء الهند وحكمآئهم فيفدونهم[7] فى كلّ سنة
بالنوبة خلق كثير من صنوف الحكمآء و العلمآء والحسّاب والمنجّمين والمعزّمين والموّهين
والمترجمين[8] وأصحاب القضايا والأحكام والعرافة والفراسة فيقضون اليهم ويعرفونهم بما 20
يكون فى تلك السنة من الحوادث وما يجرى عليهم من القضايا ويحكمون بما يجرى
فى كلّ يوم وكلّ شهر وكلّ حول ويزعمون أن معرفة ذلك من الكواكب السبعة
والبروج الاثنى عشر من طلوع الطالع وأفول الآفل ومن شرفها[9] وهبوطها وكانوا

---

1 Рук. скорѣе الجغر.

2 Рук. يقسموها.

3 Рук. الاسعار.

4 Рук. اليونانيون.

5 Пропускъ, не обозначенный въ рукописи.

6 Рук. لحتلبون.

7 Рук. فيفيدونهم.

8 Рук. المرجيين.

9 Рук. скорѣе شوفها.

526 يقولون || لهم جميع ما يجرى فى الأرض من حركة و سكون و اختلاف و اتّفاق و اجتماع
وافتراق إنّما هو بحركات الفلك وباختلاف النجوم واتّفاقها و طلوع السعد و هبوط النحس و
أنّ الله تعالى قد جعل لعباده الّذين فى الأرض علامات تظهر فى كرور السنين
والأعوام والشهور والأيّام من النجوم السائرة والأفلاك الدائرة و أنّ جميع ما فى الأرض
5 من نامٍ و جماد ونبات و حيوان فهو[1] بتأثير من الأبراج العاليات والنجوم الزاهرات وأنّ
الحوادث تحدث من اجتماعها وافتراقها واختلافها واتّفاقها وكلّ ما يحدث من القضايا
والعلامات والحوادث المختلفات فإنّ له حكمًا سابقًا من تأثير علوىّ وقضآء سمآوىّ
وكانوا يقضون على جميع ما يرون ويسمعون ويزجرون و يتفرّسون فى سائر الأشيآء
والأصناف والحوادث من سمع كلام او صوت طير او سقوط حجر او هفيف شجر واستقبال
10 حيوان ويقضون على علامات الأعضآء من الأنس والدوابّ ومعرفة اختلاج ما فى
53a الجسد من عرق || او غيره والنظر فى الأكتاف والقضآء بضرب الفصّ والكعاب وخطّ
الخطوة فى الأرض و حساب الهسميرج و هى القرعة والفأل والمساهمة ثمّ النظر فى
الطبّ و جسّ العروق والمعاينة لمياههم والقضايا بالتمييز بين الأشيآء والاستدلال
بما قد كان او سيكون و ما أشبه ذلك و كان جميع من يحكم بأمر او يقضى بقضآء أنّه
15 قد كان او سيكون يكتب خطّه به ويرفعه الى الملك فاذا نظر الملك فيه أودعه خزانة
سرّه[2] وقد قيل أنّ كسرى قباد لم يكن يعبأ بما يرفع اليه من[3] ذلك ولا ينظر فيه
ويعتقده كفرًا او حقًّا وكان[4] المنجّمون قد نظروا فى أيّام الأسبوع و حكموا عليها و قدّروها
للملك وقالوا لكلّ يوم طالع يتولّاه و حكم يقتضيه ذلك الطالع فكان من تقديرهم أن
جعلوا المحفل الأعظم والمجلس الأكبر و ولاءة[5] العمل الكبير للرجل الشريف يوم
20 السبت ثمّ يجلس للقضآء وينصف المظلوم ويبحث فى الكتب يوم الأحد و يتصيّد وينظر
536 فى أمر الصيد و موضعه يوم الاثنين ويضرب بالصوالجة || ويلعب بالخيل والصراع
ويضع[6] النيران فى بيت النار يوم الثلاثآء ويحاسب على الوراد والنفقة وعلى عدّة
المقاتلة وأبواب المستعملات وإنفاق العمارات و سائر ما ينبغى الفحص عنه و يوجّه
العيون والجواسيس الى العدوّ وينظر فى أمر الطرز وصدر الورق والعين والبيع

---

1 Рук. وهو.
2 Рук. سُرو.
3 Рук. فى.
4 Рук. كانوا.
5 Рук. ولاه.
6 Рук. يوضع.

والشرى ويُسرّ[1] ما ينبغى إسراره يوم الأربعآء[2] وينظر فى أمر العظمآء و الأشراف
وأهل البيوتات وتأسيس المدن والحصون والقلاع والبيوت يوم الخميس ويتفرّغ ليوم
زينته وغسله وطيبه وأكله وشربه ولباس حليته وحلية نسائه ويأمر بإحضار القينة
والعزف وآلة القصف وأصحاب الملاهى ويأمر بغرس الأشجار ونصبها و إحضار الفواكه
وما ينبغى من آلة الملاهى يوم الجمعة وكان يسمّى يوم الزينة وكانوا قد قسموا الزمان 5
على ذلك فكان الملك لا يألو أن يأتى كلّ يوم من أيّام الأسبوع الّا ما قدّر له ثمّ
كانوا ينظرون فى أمور الناس وما يجرى فى أحوال الأيّام || وكانوا يتكرّهون أشيآء 54a
يخبرونهم بها أصحاب الفراسة والزجر و أصحاب العرافة مثل التطيّر[3] بصياح غراب
او صياح ديك او صياح كلب او حمار او بغل وما أشبه ذلك فكان قوم يكرهون صياح
الديك و زقاءه ويقولون زقآء[4] الديك مكروه للقاء الأكابر والملوك والأشراف ويقولون 10
هرير الخطّاف مفرق بين الجيران والرفقآء وأنّه يدلّ على الوحدة والغربة والفرقة وكان
منهم من يقول أنّ هذه الحوادث تدلّ على أسباب فمن كرهها كره ذلك السبب
قالوا من كره صهيل الخيل والبغال والحمير لا ينجح فى حاجته ومن كره صوت الخنافس
كان عقيمًا شره النفس و من كره شخيخ البغال ابتلى بغربة و كان بذيًّا فى منطقه ومن
كره زفير النار لم ينل من ربع الأرض كسبًا و من كره نباح الكلاب لم يزل مغتربًا 15
ولم تزل الشدائد له باعثة و من كره نهيق الحمار كان كارهًا للشرار موادًّا للأخيار
وقد يبتلى ببلاء و من كره صياح الثعالب كان خيرًا يخلص الناس من المكاره و من كره
صوت العساعس كان قليل الصديق ردىّ العقل وقالوا || من أحبّ أصوات الغنم 54b
والإبل والبهائم كان نافعًا[5] غليظًا باغض الناس ومن أحبّ أصوات المغنّين وأصحاب
الملاهى كان مصرًّا على الملاهى والمآثم يبغض الناس ومن أحبّ صفير الحيّات لم 20
يزل هاربًا متواريًا ومن أحبّ حسيس النمل لم [يزل] أسيرًا فى أيدى العدى ومن
أحبّ نقيق الضفادع لم يزل فى أجله فسخة[6] وكانوا يتطيّرون بأشيآء ويحقّقونها فيقولون
من تطيّر بهفيف الهوآء[7] لم يزل متهومًا بزور يكذب به عليه وكان جميع ما يتطيّرون

---

1 Рук. ايسر.
2 Рук. يوم الثلاثآء والاربعآء.
3 Рук. الطير.
4 Рук. مرقا.
5 Рук. فحا.
6 Рук. فسحه.
7 Рук. الهوى.

به و يتفرّسون به او يزجرون او يتفأّلون به يتحقّق ذلك من السنة فى وقتين أحدهما
مهرماه والآخر آذرماه وكانت اوّل الطيرة تكون من الصبيان والفال من العامّة وكان
العامّة اذا لغيت[1] بشىء و أكثرت الأراجيف فيه او جرى ذلك على ألسنتها تحقّقت[2]
الأمر فيه او فزعوا منه وتطيّروا به وكانوا يتطيّرون بالأزرق العين ولا سيّما اذا كان
5 كوسجًا[3] او منمّش الوجه اوكان فى وجهه خيلان كثيرة[4] وكانوا يتكلّمون على الخيلان أين
كانت من الجسد فإن كانت[5] فى الوجه كان لها || حكم وإن كان الخال واحدًا[6] كان له 55a
حكم وإن كان له اثنان كان لهما حكم اخر وإن كان شامة او خال كبير او خيلان كثيرة
فى موضع كان لها حكم وكان لهم فى القتال علامات من مهبّ الرياح الأربع واذا
هبّت الريح من المشرق كانت الغلبة لصاحب الشرق وإن كانت من الغرب كانت
10 الغلبة لصاحب الغرب ومن الجنوب لصاحب الجنوب ومن الشمال كانت كذلك
وهذا شىء أخذوه عن الهند وحكمآئهم و سنذكره فى بابه إن شآء الله تعالى وكان لهم
أشيآء وأسباب يتفأّلون بها فى أوّل السنة اذا كثر استعمال الناس لها وللّهج بذكرها
فكانت السنة الّتى[7] يعنون فيها باتّخاذ قسىّ ونشّاب تكون سنة صيد وقنص وظفر
بالوحش واقتدار على العدوّ و السنة الّتى يعنون فيها باتّخاذ الجلاهق و هى قسىّ
15 البندق سنة حصار وتحصّن[8] والسنة الّتى يعنون فيها بالصوالجة سنة تنازع و تخاصم
وتشاجر والسنة الّتى يعنون فيها باتّخاذ مقاليع وحجارة سنة كثيرة[9] الغنم والبقر
والمواشى والسنة الّتى يعنون فيها [باتّخاذ] كرّة سنة || خصب وأمن والسنة الّتى تكثر 556
فيها العبادات و تعمر فيها بيوت العبادة وبيوت النيران سنة ايتلاف واجتماع وتواصل
والسنة الّتى يكثر فيها الصراخ والصياح والضجيج وصياح الصبيان يقولون هذه سنة زلازل
20 وكانت تستشعر الناس فيها الاختفاء والهرب وتكون سنة موتان[10] والسنة الّتى[11]
فيها على الأرض ظهرًا لبطنٍ[12] سنة يقتل فيها كثير من المحاربين والسنة الّتى يكثرون
فيها الصفق بالأيدى سنة يكثر فيها الويل والعويل والفجيعة وكان لهم علامات من

---

1 Рук. الغيت.
2 Рук. تحقيق.
3 Рук. كوشج.
4 Рук. كثير.
5 Рук. كان.
6 Рук. واحد.
7 Рук. الذى.
8 Рук. تحص.
9 Рук. كثير.
10 Рук. موتًا.
11 Пропускъ, не обозначенный въ рукописи.
12 Рук. ظهر البطن.

الوحش يزجرونها ويتفرّسون بها قالوا[1] اذا عوت ذئاب الجبال وجاوبتها الكلاب
من القرى تفاقم الأمر فى الحرب وتسافكت الدمآء واذا عوت الكلاب من القرى
و جاوبتها ذئاب الجبال كان وبآء و موتان[2] و جوارف واذا أكثرب[3] السباع
البغتات[4] والهرب والصياح دلّت بذلك على إتيان العدوّ واذا فعلت مثل ذلك
الكلاب وجاوبتها كلاب أخر دلّت على الهرب واذا فعلت مثل ذلك كلاب ولم 5
تجاوبها كلاب أخر دلّت بذلك على هرب أهل المدينة || وتواريهم واذا أكثرت 56a
الثعالب الصياح أكثرت السحرة الفساد واذا صاحت الثعالب صياحًا شبيهًا بعوىّ
الكلاب أصاب الناس من السباع الضارية عظيم[5] الضرر واذا صاحت صياحًا كأنّه
صياح بنات آوى كثرت المناجاة على العظمآء والأشراف واذا[6] صرخ ديك فى دار قبل
وقت صراخ الديوك كان ذلك محاولة لدفع بليّة قد شارفت بتلك الدار واذا صرخت 01
دجاجة فى دار كصراخ[7] الديوك كان ذلك منها تحذيرًا لمن فيها من آفة أشرفوا عليها
واذا أكثر الديك النزوان على وسادة ربّ الدار و على متّكئه نال الشرف العظيم و
نباهة[8] و رياسة واذا أكثرت الدجاجة النزوان على متّكئه نال خمولًا[9] و منقصة واذا
أذرق ديك[10] على فراشه نال مالًا رابحًا[11] طيّبًا و خيرًا كثيرًا[12] فإن ذرقت دجاجة على
فراشه دلّت بذلك على موتان كائن واذا[13] أكثرت الضفادع النقيق دلّت بذلك 15
على أنّ الموت قد نزل بالبلدة الّتى هى فيها فإن نقّت و [قد نزل] بالناس ذلك
دلّت على أنّ الموت قد انكشف عن تلك البلدة وإن[14] أنّ ديك فى دار فشا ||
فيها مرض الرجال وإن أنّت دجاجة فشا فيهم مرض النسآء واذا صرخت الديوك 56b
صراخًا كالبكآء فشا الموت فى النسآء واذا صرخت الدجاجة مثل صراخ الديوك فشا
الموت فى الرجال واذا نغق الغراب الأسود فجاوبته دجاجة دلّ ذلك على خراب 20
سيُعمر واذا قوّقت دجاجة و جاوبها غراب دلّ ذلك على عمران سيُخرب واذا[15] نقلت

---

1 Cp. ʿUjûn-al-aḫbâr, ed. Brockelmann, II, ١٨٧,١٧—١٨٨,٣.

2 Рук. موتًا.

3 Рук. كثرت.

4 Рук. المعصاب.

5 Рук. كظم.

6 Cp. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٨,٣—٨.

7 Рук. لصراخ.

8 Рук. ابناه.

9 Рук. خمول.

10 Рук. ديكًا.

11 Рук. ربحًا.

12 Рук. خير كثير.

13 Cp. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٦,١٩—١٨٧,١.

14 Cp. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٧,١—٦.

15 Cp. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٦,١١—١٤.

الجرذون الى متاع ربّ البيت برًّا او شعيرًا[1] رزق الزيادة فى ماله و ولده وإن
قرضت ثيابه دلّت بذلك على أنّه ينقص من ماله و ولده وينبغى قطع ذلك القرض
وإصلاحه فإنّ فيه مدفعًا[2] لما يشفق من تلك البليّة بإذن الله تعالى علامات فى
النّيران اذا شبّت نار من كانون على يمين من هو جالس دلّت على هبوب رياح
5 و رهج وإن كانت على يسار من هو جالس دلّت على مطر و ثلج هو واقع قريب وإن
دارت النار حول الكانون دلّت على صخب يكون فى الموضع و تنازع وإن هى دارت
57a حول من هو جالس او أمامه دلّت على فرح يكون و سرور يحدث || وأكل وشرب
وعرس وإن دارت النار أمام الكانون دلّت على شخوص صاحب الدار من رحله
وإن دارت خلف الكانون دلّت على مرض يصيب أهل تلك الدار وإن[3] شبّت
10 النار شبوبًا يشبه الضحك دلّت على فرح و حزن وامّا[4] النار الّتى تشتعل فى أسافل
القدر فإنّها تدلّ على أمطار كثيرة واذا رأيت فتيلة السراج او الشمعة تتحبّب ويعلو
بعضها على بعض دلّ ذلك على المطر واذا رأيت السراج او الشمعة او النار[5]
تلتهب فى الكانون ترمى شررًا كثيرًا[6] دلّ ذلك على المطر الكثير فى ذلك الموضع
او بقربه وقالوا أيضًا اذا جاوب القبج الوحشىّ للقبج الأهلىّ فإنّ أهل تلك البلدة
15 يظفرون بعدوّهم واذا[7] غطّ الرجل الدنىء[8] ناله سبى وذلّة و من نفخ فى نومه أفسد
ماله و من ضرب بأسنانه فى نومه كان ذلك دليلًا[9] منه بالنميمة وينبغى أن يضرب
على فيه بخفّ منخرق واذا أكثر الرجل العظيم الشريف مسح[10] جسده بيديه من غير
أن يكون به حكاك و بثيابه قمل او براغيث عظمت معرّته واذا فعل ذلك الرجل الدنىء[11]
57b عظمت منفعته ومن سال ريقه فى نومه || ابتلى بغربة واذا[12] فشا الموت فى البقر
20 وقع الموتان فى البشر واذا فشا الموت فى الخنازير عمّت الناس العافية و السلامة
واذا فشا الموت فى السباع والوحش أصاب الناس لزبة و شدّة واذا فشا الموت فى
الجرذون أصاب الناس رخص و خصب وقالوا أيضًا من استهان بالفحشآء وأحبّ أن يذيع

---

1 Рук. شعير.
2 Рук. مدفع.
3 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٦,١٤–١٥.
4 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٦,١٥–١٦.
5 Рук. نار.
6 Рук. شرر كثير.
7 Ср. Ujûn-al-aḫbâr, II, ١٨٧,٦–٨.
8 Рук. الدنى.
9 Рук. دليل.
10 Рук. منسح.
11 Рук. الدنى.
12 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٦,١٦–١٩.

ذلك كان غبيًّا عميًا ومن صرم العاقل و صادق الأحمق كان غبيًّا جاهلًا [وقالوا] لن يصيب الشىء آفة بعد أن يجتهد فى إصلاحه إلّا من قِبَل المقادير وقالوا على الانسان أن يحذر ويجتهد وليس عليه دفع المقدار و قالوا من حفظ لسانه وفرجه وقى نفسه من آفات القدر وقالوا إنّ الصغير اذا لم يجلّل الكبير كان اليه التلف سريعًا والكبير متى لم يرحم الصغير ابتلى بالقسوة والنبوة والشكاة وقالوا أيضًا خير الصبيان من كان على شيمة الصبيان و خير الكهول من كان على شيمة الكهول و هم أيمن على من تلقّوه واستقبلوه وقالوا[1] إنّه ليكره استقبال المخلوق[2] من الأنس والدوابّ والسباع والطير ساعة يوضع ما لم يكن فى كنهه و حينه || ويتخوّف فى استقباله تسافك الدمآء 58a و مهما كان منه ناقصًا فى الخلق[3] كان أهون لبليّته لأنّه إنّما يرى شيئًا ناقصًا قد صار آفته على نفسه و من[4] سقطت قدّامه حيّة من حجر أصابه مضرّة واذا ألقيت حيّة ميّتة فى دار قد ربّت فيها أصاب ربّ الدار آفة فى ماله قالوا واذا[5] تحوّلت الطير و السباع الجبليّة عن مواضعها دلّت بذلك على أنّ الشتآء يشتدّ ويتفاقم وأنّ[6] الموت من المريض الشبيه من الصحيح قريب وينبغى تباعده علامات فى الجواهر[7] قالوا ينبغى أن تُكثِر[8] النظر فى الدرهم الصافى الصوت وتستقصى معرفته مخافة أن يكون من صفر وأن تعرف حال الدينار الشديد الصفرة لعلّه أن يكون مموّهًا او مبهرجًا وتنظر[9] الزبرجد الشديد الخضرة لعلّه أن يكون زجاجًا وكذلك الياقوت الشديد الحمرة لعلّه أن يكون بلّورًا مصبوغًا[10] وكذلك تغيّر حال الرجال والنسآء والفراسة فيهم فتعرف حال[11] من كان منطيقًا لسنًا لعلّه كثير الكلام قليل النفع جاهل بالصنائع والأمور وكذلك حال من كان سكّيتًا لعلّه أن يكون خبيث || النفس بعيد الغور شديد 58b الحيلة وكذلك المرأة الحصرة الشديدة الحياء لعلّها تكون عاهرة فاسقة وكذلك المرأة المتقشّفة المظهرة للصلاح والعبادة والديانة لعلّها أن تكون محتالة وكذلك الرجل الناسك المتعبّد لعلّه صاحب حيلة والتفرّس فى هذه الأشيآء نافع و من كان به حاذقًا

---

1 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٨,١٢–١٣.

2 Рук. المخلوف.

3 Рук. الخلف.

4 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٧,٨–٩.

5 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٦,١٠–١١.

6 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٨,٩–١٠.

7 Рук. الجوهر.

8 Рук. يُكثر.

9 Рук. تنضر.

10 Рук. بلوغًا مصبورًا.

11 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٨,١٠–١٢.

لم يتمّ عليه حيلة ولا تمويه فيجب أن تعرف ذلك إن شاء الله تعالى قالوا وينبغى
للرجل المتحرّز الحازم أن يحرز رحله و يحفظ نفسه وأسراره ولا يأنس بمن يكثر غشيان
رحله ولا يخرج بسرّه الى من يفحص عن أسراره ويتدبّر أموره ولا يثق بمن يحرص على
الأمانة فإنّ ذلك دليل على الخيانة والبحث عن الأسرار طلب[1] للعثار والثقة بكلّ
5 أحد عجز و بوار قالوا اذا نفش فرس او برذون ذنبه دلّ على سفر صاحبه واذا نفشه
فيما ظهر من ذنبه دلّ على سفر بعيد وإن كان فيما بطن من الذنب دلّ على طول
الإقامة والثبات وإن كان النفش حول ذنبه دلّ على بدئه[2] و رجعته بسرعة || وإن 59a
كان عن يمينه دلّ على نقصان يكون فى دوابّه وإن كان عن يساره دلّ على زيادة
تكون فى دوابّ صاحبه و قالوا اذا[3] كان فى الهوآء جُنّة[4] و ظلمة من غير علّة ولا غيم
10 يخاف[5] على الناس الوبآء والمرض واذا رأيتَ فى آفاق السمآء فى ليلة مصحية
كاختلاف النيران غشى البلاد الّتى رُئِىَ[6] ذلك فيها عدوّ وإن رُئِىَ[6] ذلك و كان
العدوّ على البلاد انكشف عنها واذا[7] سمع لسقف البيت صرير شخص من فيه عنه
واذا كثرت الديوك الصياح كان ذلك منها إنذارًا وتحذيرًا وإخبارًا بغلبة أوليآء الله
أعدآءه واذا[8] صفّق الديك بجناحيه و لم يصح[9] دلّ ذلك على أن الخير محتبس عن
15 صاحبه قالوا واذا استوى نبت الشعير الّذى يزرع فى أوّل السنة دلّ على خصب
تلك السنة فإن حسن سفل ذلك[10] الشعير دلّ على خصب آخر السنة وإن حسن
نبت وسطه دلّ على خصب وسط السنة واذا لم ينبت إلّا رأس الشعير شملت الناس
الشدائد فى تلك السنة واذا اختلف نباته اختلفت أحوال تلك السنة ويستدلّ ممّا
استقبل منه[11] || ربّ البيت على حاله فما كان منه على يمينه دلّ على حال زوجته 59b
20 وما كان منه على يساره دلّ على حال ولده و ما كان من ورآئه دلّ على حال خدّامه
واذا حسن نبت حواليه كان خيرًا من أن يحسن نبت وسطه وأعلاه لأنّ نبت حواليه
يدلّ على اندفاع البليّة عنه واذا حسن نبت الشعير وأضرّ به جرذان يخاف على دار

---

1 Рук. و طلبًا.
2 Рук. نداه.
3 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٧,٩–١٢.
4 Рук. الهوى حمه.
5 Рук. يخاف.
6 Рук. راى.
7 Ср. ʿUjûn-al-aḫbâr, II, ١٨٧,١٦.
8 Ср. Ujûn-al-aḫbâr, II, ١٨٧,١٤–١٥.
9 Рук. يصيح.
10 Рук. تلك.
11 Рук. منها.

صاحبه من السرقة وإن أضرّ به طير يخاف عليه بآفة فى خضرائه[1] وإن أضرّ به شىء كلّه يخاف عليه كلّ البلآء وإن أضرّ شىء ببعضه تخوّف عليه ببعض البلآء فإن تفرّق نبته كان مذمومًا وإن اجتمع كان مباركًا جيّدًا من كلام جوبر الهندىّ فى الفراسة و علامات فى الرجال والنسآء وما أشبه ذلك قال جوبر الهندىّ فى كتاب عمله للأكاسرة وأنفذه اليهم من بلد الهند فكان محتفظًا فى خزائنهم يعملون بما فيه ويقتدون 5 به فى أفعالهم وأحوال مملكتهم و صفات رياستهم و كان يقتدى به الخاصّ والعامّ قال 60a ينبغى للّاعب بالشطرنج أن يكون جيّد || الفكر حسن التقدير صحيح الرؤية سريع الحساب عن صحّة رؤية جاد لعبه بها ومن طال فكره فيها لم يكن فارغًا لغيرها و لا فيه موضع لسواها وقال أيضًا اذا رأيت الرجل ذاهل العقل غائص الفكر من غير علّة فاعلم أنّه جيّد للّعب بالشطرنج واذا رأيته يحرّك يده ويقبضها فاعلم أنّه جيّد الضرب 10 بالسيف واذا رأيته يقلب يده اليمنى واليسرى[2] ويطيل فركهما فاعلم أنّه جيّد الرمى بالنشّاب واذا رأيته يتزاور ويميل بمنكبيه فاعلم أنّه جيّد الطعن بالرمح واذا رأيت الإنسان يدير بياض عينه من غير علّة ويرفعها حتّى يغيب السواد فاعلم أنّه جيّد الرمى بالسهام واذا فعل ذلك فاصطكّت أسنانه و سمع له تصريف و صوت فإنّه جبان هلع واذا رأيت يديه ترتعس و بدنه يضطرب فاعلم أنّه شجاع جيّد الرمى إلّا ان 15 يكون به صلف او جنون او علّة قال وينبغى أن تتوسّم الطلاقة فى الرجل فاذا رأيته صنّاع اليد خفيف الحركة قوىّ اليد فاعلم أنّه شجاع واذا رأيت الإنسان مدوّر || 60b الأعضاء فاعلم أنّه شجاع جيّد الرمى جيّد الطعن بالرمح فاذا رأيت الإنسان طيّاشًا سريع الكلام ضيّق مخارج الحروف عَسِر التمتمة و عقدة اللسان فاعلم أنّه لا يصلح لرمى ولا لطعن وكذلك إن كان به رعشة و ارتعاد و كذلك إن كان يحرّك برأسه تحريكًا 20 شديدًا وإن ضعفت يد الإنسان او شلّت لم يتّخذ للعدو ولا للحركة واذا رأيته يُهَمْهِمُ[3] اذا حدّث وينتصب لهمّك[4] كأنّه يريد جوابك فاعلم أنّه بصير بالمسئلة و الجواب واذا رأيت الإنسان يستعيد حديثك فاعلم أنّه يطلب الدليل و هو بصير بغوامض الأجوبة واذا رأيت الإنسان اذا حدّثك كأنّه يخاصمك فاعلم أنّه بعيد الغور شديد الرؤية[5]

---

1 Рук. خضرانه.

2 Рук. اليسار.

3 Рук. يهمك.

4 Рук. لهمك.

5 Рук. الروبه.

طويل الأسف و ربّما كان [ذلك] حمقًا وجنونًا واذا رأيت الإنسان فيه لطف وتنصّت[1]
فاعلم أنّه يطلب الجواب بالأدلّة واذا رأيت الإنسان معترفًا بالجهل فإنّه اعترافه به
جيّد له واذا رأيته متفخّمًا يدّعى أكثر ممّا يحسن فاعلم أنّه متعسّف جاهل ومن إجادة
المخاطبة معرفة المخاطب وقتها فإنّ[2] || من [معرفة] وقتها إصابة الوقت لها واذا 61a
رأيت المتكلّم مقتصدًا[3] فى منطقه فاعلم أنّه قد أعفى المجيب له فى قوله عن التعسّف
فى الجواب وتكليفه إيّاه بغير الصواب لئلّا يمتنع من حكم من الحكومة بينه وبين من
يخاطبه و يتميّز[4] بين صنوف ما ينطق به * فى حسن دعيّه[5] قال واذا رأيته مقتصدًا[3]
أيضًا فى قوله فاعلم أنّه قد ترك السرف فى إعلان الفطنة وإسرارها[6] وتحفّظه و اجتنابه
اللجاجة والغلظ والتعطّف والتعسّف والتسرّع وأنّه لم يتكلّم إلّا بعد رؤية و فكر ثاقب
وقريحة جيّدة صادقة واذا رأيته يتكلّم ويستشهد بكلامه و ربّما حلف عليه فقد خلط الحقّ
بالباطل و ادّعى بالشهادة على الغائب وقد تكلّم على ما وافق ظنّه وتخيّله ومن تجويد
الكلام أن يحقّق نطقه و يحترز[7] من الأمر الضارّ فيه ومن الكذب وأن يأتى بالحجج
و صواب المثل ويتمثّل بالمَرْضىّ المقبول ويقيس الأمثال بالأمثال والأشباه بالأشباه و*افتتاح
كلامه من كنهه و وقته و صدقه على الصحّة[5] قال ومن إجادة تبليغ الرسالة || أن يقتضوا 61b
على مثل ما وصفت لك من حال المخاطبة إنّما هى بمنزلة تبليغ الرسالة غير أنّه ينبغى
لمبلّغ الرسالة الحفظ لما استودع منها وإن تداخله محتاج[8] اليها فى حال المخاطبة قال و
اذا رأيت الرجل من عادته كثرة التمحّل والاحتيال فى المعيشة فاعلم أنّ ذلك [ليس]
من عادة من كانت سجيّته الخير والتواضع والتوسّع ومن اعتاد الذلّ والإعطاء ليس
من[9] عادته المنع والردّ والاحتجاب بالعلل ومن كان من هديه[10] السماحة والسخاء و ما
أشبه ذلك[11] فصل فى التفرّس فى النطق والصمت والصوت والكلام و ما أشبه ذلك
قال وقد كانت الأكاسرة تتفرّس فى الرجل المهذار الكثير الكلام ليكون[12] ساقطًا

---

1 Рук. لطفًا و تنصتًا.

2 Рук. فان || فان.

3 Рук. مقتصد.

4 Рук. تمييز.

5 Текстъ фразы отъ * представляетъ затрудненія.

6 Рук. أسراره.

7 Рук. لحتر.

8 Рук. скорѣе لحتاج.

9 Рук. من ليس.

10 Рук. هدده.

11 Пропускъ, не обозначенный въ рукописи.

12 Рук. لا يكون; такъ же и дальше. (Поправка внесена на поляхъ рукописи синимъ карандашемъ рукой европейца).

مهينًا و فى الكثير الملق ليكون محتالًا و فى اللّيّن الصوت الخافض النطق الحلو اللسان ليكون مخنّثًا[1] و فى الطويل الصمت القليل النطق ليكون ماكرًا[2] او يكون عائبًا[3] و فى السريع الكلام ليكون حَرِجًا و فى التمتام والأبشغ والأعسر الصوت
62a ليكون لجّاجًا او ناقصًا و كانوا يقولون العىّ حرج[4] || فى *الجنان و لجلجة[5] فى اللسان و
5 نقص فى البيان و قالوا كلّ كثير الكلام مهذار ضعيف الجنان وقالوا من كثر كلامه قلّت أفعاله وقالوا احذر كلّ من زاد قوله على فعله واحذر الملق و لا تركن الى قوله و لا تثق به فمن زاد فى قوله نقص فى فعله ومن طال صمته و قلّ كلامه كان نظره اعتبارًا و صمته افتكارًا وهذه الخصال من خلال العلمآء والحكمآء واذا كان بضدّ ذلك كان صمته عيًّا و فكره سهوًا و اعتباره غفلة و هذه الخلال من خلال النَوْكَى والجهّال وقال بعض
10 الحكمآء كلّ شىء عُرف[6] له معنى و فيه فائدة الّا فكر الرعنآء والعاقل اذا تفكّر اعتبر واختبر والجاهل اذا تفكّر تبلّد وتحيّر و العرب تقول فلان هدّار وكلامه هدر وهذر[7] اذا لم يكن فيه فائدة واذا ذمّوا رجلًا قالوا كلامه زائد على أفعاله وأفعاله دون كلامه وأنشد فيه

اذا نصتوا للقول قالوا فأحسنوا * ولكنّ حسن القول خالفه الفعل
15 و ذمّوا لنا الدنيا وهم يرضعونها * أفاويق حتّى ما يدرّ لها ثعل[8] ||

626 باب من الفراسة فى علامات بدن الإنسان و رأسه و شعره وما أشبه ذلك قال ابو عثمان الجاحظ اعلم أن الأشيآء المدركة الّتى تقع تحت الحواسّ لا تدرك إلّا بحاسّة من الحواسّ الخمس امّا نظرًا او سماعًا او شمًّا او ذوقًا او لمسًا والأشيآء فى إدراكها على ضربين ضرورىّ واستدلالىّ فالاستدلالىّ ما احتاج الى
20 إقامة دليل و برهان و استشهاد وإيضاح ليقوم ويثبت فى العقل فيصير كالمعاين بالحسّ و هذا يكون فى الأشيآء العقليّة وامّا الضرورىّ فهو ما يقع تحت الحواسّ الخمسة فما ذكرناه آنفًا فمنه ما يشترك فيه الخاصّ و العامّ والعاقل والجاهل

---

1 Рук. محمنًا.
2 Рук. مكرًا.
3 Рук. عيبًا.
4 Рук. جرح.
5 Рук. الحما الجلجه.
6 Рук. اعرف.
7 Рук. هدرًا و هذرًا.
8 Рук. يدرى لها فعل и يرتضونها. Ср. لسان العرب, XII, ١٩٣ и XIII, ٨٨.

ولا يحتاج الى إقامة دليل عليه ومنه ما يظهر لبعض الناس ويخفى عن بعض فيحتاج
فيه الى العلمآء وأصحاب التجربة والقياس فمن ذلك أن يكون الإنسان جيّد الحسّ
والفطنة سريع الذكآء طويل التجربة كثير الدراية فيرى علامة فى الإنسان او مزاجًا
غالبًا[1] || عليه او حركة فيه ويسمع منه كلامًا او يرى منه فعالًا فيدركه بوجوب جوهره 63a
فيه لا يفطن بها كثير من العوامّ وهذا لا يدرك إلّا بقوى النفس او بطول التجربة فمن
ذلك إن ترى إنسانًا سريع الحركة سريع الحفظ فاذا كان كذلك فاحكم عليه بالنسيان
والضياع لما يحفظ والبطئ الحركة أذكر للأشيآء[2] وأقلّ نسيانًا ولذلك قيل اذا غلب
السودآء على مزاج الإنسان غاص فكره و جاد قياسه و دام حفظه و بقى عليه وهذا
لثقل الحركة وثباتها لأنّها اذا ثبتت حفظت أجزآءه[3] بعضها على بعض فلذلك صاحب
السودآء بطئ النبض ضامر العروق قليل الحركة وانتفع بالحركة و قوى بها مزاجه واذا
رأيت عروق الإنسان تضرب ضربانًا شديدًا و رأيت وجهه أحمر و شعره قائم فإنّ
ذلك يدلّ على الجرأة والحركة و صاحب هذا الحال سريع الأمراض سريع النقل[4]
لا يثبت على حال و لا عهد و لا عقد والغالب عليه الكذب و المخرقة و الزور ويكون
كثير الجماع و ربّما كان فاسقًا [و] اذا اختلج مع ذلك رأسه دلّ على مرض او سفر وإن
قام شعر || الرأس قيامًا مستويًا دلّ على فساد وإن اختلج الجانب الأيمن واستوى 63b
الشعر دلّ على خير كثير[5] والرطوبة مع الحرارة وكثرة الدم دليل على الاختلاج قال
واذا كان فى الوجه والخدّ و نصف الرأس والعنق دلّ على الفالج واللقوة ويكون صاحبه
قليل الذهن أعمى القلب مع خبث و شره فى النفس و حسد فى الكبد و غمّ فى الصدر
و دآء فى الأعضآء و حقد فى الحشا قال واذا رأيت عروق الإنسان تضرب ضربانًا سريعًا
و ليس فى وجهه حمرة و رأيت الصفار يعلوه مع جفاف شفتيه فالغالب عليه المرّة الصفرآء
وهذا يكون سريع الحركة قليل الحفظ قليل الذكر سريع النسيان و الغالب عليه الحدّة
والشرّ ويكون جبانًا رعديدًا هلعًا ويكون شديد التحرّز فإن رأيت مع ذلك اختلاج
جانب رأسه الأيمن فاحكم عليه أنّه جبان طائر الفواد واذا كان فى وجه الإنسان
شامة او نقط كثيرة او على عينيه و خدّه حمرة تشبه اللطمة او الشامة و نحو ذلك
فينبغى أن تحذره وتخافه واذا كان مقدم الرأس منحسرًا من الشعر فإنّ صاحبه ||

1 Рук. مزاج غالب.
2 Рук. الاشيآء.
3 Рук. اجزآء.
4 Рук. الثقل.
5 Рук. خيرًا كثيرًا.

64a خيّر الطبع كريم النفس واذا كان أغمّ[1] كان صاحبه مذمومًا ثقيلًا[2] بليد الفطنة قليل النجابة والعرب تكره الغمم و تمدح الانحسار والنزوع ويقولون أنّه من صفة الكرام والشجعان قال الشاعر

فلا تنكحى إن فرّق الدهر بيننا * أغمّ[3] القفا والوجه ليس بأنزعا[4]

واذا كان الغمم فى القفا والوجه كان أقبح و أفظع[5] قال واذا رأيت عروق الوجه تضرب 5 وتتحرّك تحريكًا شديدًا * ومتى تركت على وجهه رأيتها تضرب[6] دلّ ذلك على الشرّ الشديد واذا كانت العروق فى الوجه بادية مع حمرة دلّت على شرّ النفس و قوّتها قال وإن كان ذلك مع صفار دلّ على ضعف النفس وبرد المزاج وبرد الحسّ و قلّة التمييز و ربّما كان شديدًا والأذن لا تتحرّك فاذا رأيت الإنسان يحرّكها متى شآء فإنّه شره كلبىّ النفس و فيه سبعيّة مع ضعف و جبن يعتريه ويكون شرهًا ردىّ النفس قال بعض 10 أصحاب الفراسة اذا رأيت الإنسان يحرّك أذنيه متى شآء فاحكم عليه أنّ فيه 64b خلقًا من || أخلاق الكلاب مع جبن شديد و ضعف نفس قال واذا رأيت الشعر نابتًا فى الأذن فاحكم عليه بطول العمر واذا رأيت الأذن صغيرة صمعآء دلّت على طيبة النفس والخلق وخفّة الروح واذا كانت كبيرةً[7] دلّ على الخبث و ربّما كان فاسقًا او سارقًا و ما أشبه ذلك قال واذا كانت عروق الإنسان ساكنة وأجفانه منسدلة 15 مسترخية فالغالب عليه الرطوبة فهو بليد[8] قليل الفطنة كثير الشهوة والنسيان قال وإن كان كذلك و فى عينه ظفرة او فصّ دلّ ذلك على البله مع شره النفس و دنآءة الهمّة و شدّة البخل واذا رأيت مع ذلك خدّه اليمين و عينه و شفته تختلج فإنّه يدلّ على خير وإن كانت اليسار دلّت على شرّ يصيبه وينبغى أن يحذر منه و قال أصحاب الاختلاج والوهم يقولون اذا اختلجت الرقبه دلّت على جهد و شدّة تصيب 20 صاحبها وقال أصحاب الفراسة اذا طالت الرقبة و دقّت كان صاحبها بليدًا[8] قليل الذكر 65a والفطنة فإن كان فيها عجزة او تعويج دلّت على عمآء القلب || والبلادة والغفلة قال واذا اختلج الكتف دلّ على سلطان و جاه و منزلة عظيمة و ما أشبه ذلك قال واذا كان

---

1 Рук. غمّ.

2 Рук. تقمل.

3 Рук. اعمر.

4 Ср. لسان العرب, X, ٢٣٠.

5 Рук. اقطع.

6 Текстъ фразы отъ * представляетъ затрудненія.

7 Рук. كان عكدوتًا?

8 Рук. بليل.

بين الأكتاف شامة او خال دلّ على النبل او على الرياسة والمنزلة العظيمة وكذلك
اذا كانت تحت الإبط دلّت على الشرف و الكرم و اذا كان فى الشامة شعر دلّت
على قوّة النفس و حدّتها و على الجرأة والسلاطة وشجاعة النفس واذا اختلجت الشامة
الّتى بين الأكتاف دلّت على أمر عظيم ينال صاحبها و رفعة عظيمة و ربّما دلّت على
5 سلطان عظيم قال واذا اختلج الكتف اليمين دلّ على شىء يقع فى يده و خير يناله
واذا كانت اليسار دلّ على خسارة تصيبه فإن كان فى اليسار خال او شامة
دلّت على خير وكذلك فى اليمين أيضًا تدلّ على خير واذا اختلج الذراع اليمين دلّ
على خير كثير و ربّما دلّ على شجاعة و قوّة فإن كان فيه[1] خال او شامة دلّ ذلك على
قوّة النفس و علوّ همّة و خير ينال صاحبه وإن كان فى الشمال فبضدّ ذلك واذا اختلج
10 البطن دلّ على فرح صاحبها و كثرة سرور فإن كان عليها خيلان او شامة دلّت ||
على خير قال وإن كانت أنثى دلّت على كثرة الولد و تكون[2] مُذكِرًا قال وإن 65b
كانت العروق يابسة فالغالب على صاحبها البرد واليبس والبلادة والنسيان وإن
كان عليه خال او شامة كان أوكد واذا كان فى شعر الرأس دارات دلّت على غمّ
صاحبها وكثرة تعبه واشتغال سرّه و ربّما دلّت على بلادة الخاطر و قال أصحاب الفراسة
15 أنّ الذكر فى الشيوخ أكثر والحفظ فى الشباب أسرع و قال آخرون أنّ شرخ الشباب
و سرعة حركته تمنع[3] من ثبات حفظه و لا تمنع من سرعته لأنّ السريع الحركة لا يثبت
معه شىء و هو مع الشيوخ أثبت لأجل ذلك ترى الشيخ على حال واحد و على رأى
واحد لأنّ تجربة الشيخ أقوى من تجربة الغلام وإسراع الغلام أقوى من [إسراع]
الشيخ فعلى قدر قواه إسراعه الى الأشياء بقوّة الحركة قال واذا قويت الحركة رقّ الدم
20 لأنّ من شأن الحركة رقّة الدم و تلطيفه واذا لطف تفرّق وتنشّفه الحرارة الغريزيّة قال
والشيخ فيه برودة و رطوبة وإبطاء يحفظ عليه أشياء[4] كثيرة || فحفظه ضعيف وذكره قوىّ 66a
وكلّما أراد إسراع الحركة لم ينطبع فيها شىء ويغلب على صاحبها البخار والالتهاب
حتّى يؤدّيه الى الطيش و الخفّة باب العلامات فى الإنسان من الشامات والخيلان
قال اعلم أنّ العلامات الّتى فى الطبائع لا تخفى وإن حرص الإنسان فى كتمانها
25 وإخفائها لأنّ الطبيعة تنذر بما فيها و تظهر فلا بدّ أن يظهره الله تعالى فى فعله و حركته

---

1 Рук. فيها.

2 Рук. يكون.

3 Рук. يمنع; такъ же и дальше.

4 Рук. اسباب.

وإشارته فقد نطق القران بذلك فأوضح و بيّن عبارة للنبىّ صلّى الله عليه وسلّم فقال تعالى [1] وَلَوْ نَشَآءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ فجعل القول علامة و جعل السيما علامة قال الشاعر

ومهما يكن عند آمرءٍ من خليقة * وإن خالها تخفى على الناس تعلم

فعلامة الإنسان تدلّ على ما [فى] طبائعه من خير و شرّ و خبث وأمانة و وفآء ونحو ذلك 5
قال وبذلك استدلّ أصحاب الفراسة على ما فى طبائع الإنسان و على علامات جسمه
666 وسائر || بدنه قالوا اذا عظم الرأس دلّ على وفور الدماغ و كثرة المخّ فيه والرطوبة
و على عقل صاحبه واذا صغر الرأس دلّ على الحمق والخفّة والعرب تسمّى الصغير الرأس
الصعل و هو عندهم مذموم و صاحبه غير نجيب جبان بخيل شبيه رأس النعام لأنّ النعام
صعل الرأس و هو سريع الإجفال شديد المخافة قال الشاعر 10

صعل يعود بذى العُشَيْرة بيضَه * كالعبد ذى الفرو [2] الطويل الأصلم [3]

قال اذا كان فى الرأس دوارتان [4] و كان فيهما خال او شامة كان صاحبه تعبًا مغمومًا
واذا كان الرأس قليل الشعر دلّ على التعب أيضًا و الهمّ و اشتغال البال وإن كانت
الشامة بين عينيه من فوق جبينه الأيمن يكون زانيًا فاسقًا ويكون قليل المعيشة ردىّ
التدبير لنفسه وإن كان فوق جبينه الأيسر يكون تعبًا وينال شيئًا من الرياسة على تعب 15
و شدّة و صعوبة قال واذا كانت الشامة فوق الجفن الأيمن يكون صاحبها أستاذًا [5] حاذقًا
67a فى كلّ عمله واذا كانت فى الأيسر || يكون تقيًّا صالحًا عابدًا واذا كانت فى أصل الأذن [6]
يكون سيّئ الخلق ينافر أهل بيته وإن كانت شامة سودآء يكون صالحًا وينال رياسة
و تدلّ على الشجاعة وإن كانت من اليسار يكون فى حزن طول حياته واذا كانت
فى أصل أنفه من جانب عينه يكون له أعدآء كثيرة وإن كانت فى شمال جبينه و ما 20
يلى كتفه يكون رجلًا مظلومًا وينال رياسة وإن كانت ما بين عينيه يكون وقورًا

---

1 Коранъ, 47,32.

2 Рук. الغرق.

3 Стихъ изъ Му'аллаки 'Антары, см. Arnold, Septem Moallakat, ١٠٣ и Ahlwardt, Six ancient arabic poets, ٤٦ (ср. p. 23).

4 Рук. دوارتين.

5 Рук. استاذ.

6 Рук. الان.

مهيبًا محبوبًا ويكون عالمًا صالحًا وإن كانت الشامة فوق رأس الكتف اليمين او
الشمال فإنّه يكون طويل العمر و يرث أهل بيته كلّهم فإن كانت على رأس كتفه
او مرجع كتفه اليسار تكون حياته بضياع و تعب وإن كانت على اليمين ينال
مرتبة سنيّة وإن كانت على جانب أنفه الأيمن يكون تقيًّا صالحًا وإن كانت على
5 الجانب الأيسر يكون تعبًا شقيًّا وإن كانت فوق خدّه الأيمن يكون صانعًا متعوبًا و لا
ينال خيرًا[1] إلّا بالتعب الكثير وإن كانت على طرف الأذن اليمنى[2] يكون حزينًا
متعوبًا ذليلًا || وإن كانت على اليسرى[3] من فوق او أسفل دلّ ذلك على خير كثير 67b
و سرور تامّ وإن كانت على طرف الشفة العليا من الشمال دلّ على محبّة النسآء
وعشقهنّ فإن كانت على فرطوسته فإنّه لا يعيش له ولد و يكون طويل العمر وان كانت
10 تحت الفرطوس فإنّه ممّن تتمّ عليه الحيل و يكون الناس يحبّونه ويميلون اليه وإن
كانت على الحلق شامة او خال دلّت على خير كثير و فرح نفس و حسن خلق وإن كانت
على قصبة الحلق تدلّ على سفر و غربة وإن كانت على جنب عنقه الأيمن كان أقوى
لها فى علامة السفر والغربة وإن كانت على رقبته من الشمال الى مرجع الكتف
يكون غنيًّا تعبًا صاحب مواش[4] وإبل و حرث و زرع واذا كانت على مرجع الكتف
15 الأيمن دلّت على حياة طويلة و عمر طيّب وإن كانت على اليسار يدلّ على أنّه يكون
صاحب مواش[4] و زرع و تناية و رفعة وإن كانت قريبة من المرفق اليمين و كان
معها آثار فإنّها تدلّ على حزن و همّ من قبل الوالدين وإن كانت على كتفه ||
الأيمن و الأيسر دلّت على جلالة عظيمة و رفعة من القرابة والأجلّآء وإن كانت 68a
الشامة والخيلان على صدره من فوق الثديين جميعًا مثل الزفت يكون رئيس بيت[5]
20 و مقدّمًا فيهم وإن كانت الشامة او الخيلان او الآثار على بطن الإنسان فإنّه ينال
خيرًا كثيرًا و يسلم من شرّ إن شآء الله تعالى قال فإن كانت الشامة على فم المِعْدَة
من الجانب اليسار فإنّه يدلّ على حقد ويبلغ أمرًا عظيمًا[6] وإن كانت الشامة على
القلب و كانت شديدة السواد يكون صاحبها زانيًا رديًّا سريع الحركة خفيف الطائر
شديد الحمق والنهم وإن كانت على البطن يكون زانيًا خبيث النفس بعيد الغور

---

1 Рук. خير.
2 Рук. اليمين.
3 Рук. اليسار.
4 Рук. مواشى.
5 Рук. بيتًا.
6 Рук. امر عظيم.

شديد الحيلة وإن كانت على السرّة[1] يكون زانيًا محبوبًا وينال رياسة وسلطانًا[2] وإن
كانت على بطنه موضع الزنّار من بين يديه يكون ضعيف القلب ضعيف الحال ردىّ
الحياة و يكون زانيًا فإن كانت من اليسار يكون جبانًا خائفًا و يكون تقيًّا وإن كانت
686 شامة او علامة سودآء تحت آباطه فإنّه يكون صاحب خير || و جلالة و رياسة ويسوّد فى
قومه وإن كانت الشامة او الخيلان على ظهر الإنسان فإنّه يكون لوطيًّا و يكون 5
حسن الخلق طيّب النفس وإن كانت على صلبه من الجانب الأيمن فإنّه يقع فى أفواه
الأعدآء وإن كانت علامة سودآء فوق متنه فإنّه يكون مصابًا بعقله وإن كانت شامة
فى وسط صلبه من اليمين ينال سلطانًا وجلالة وإن كانت من اليسار فإنّه يصيبه
هوان و شدّة وإن كانت على ظهره من الجانب الأيسر فإنّه يعسر أمره و يحتاج الى
الناس وإن كانت الشامة على إحدى أليتيه تدلّ على موت بعض أهله ويرثهم 10
وإن كانت امرأة يموت من يعزّ عليها وإن كان له علامة سودآء او خال أسود على
فخذه مقابل الفخذ[3] كان موسرًا وينال جلالة و سلطانًا[2] و خيرًا و رفعة وإن كانت
على اليمين يصلح أن يكون ملكًا مطاعًا او سلطانًا مقتدرًا و قال إن كانت الشامة
على اليمين او نكتة سودآء فى حُقّ فخذه اليمين يكون مخراقًا يحبّ المدح[4] والثنآء
69a والخرق[5] والحمق ويكون محمقًا ارعن[6] وإن || كانت على الركبة اليمنى[7] و قريبة الى 15
أسفل تدلّ على عيب يكون فيه وإن كانت على إحليله يكون شجاعًا جريًّا فى القتال
وإن كانت على حُقّ فخذه الأيسر يكون فيلسوفًا حكيمًا وإن كانت على ركبته اليسرى
ينال مرتبة عظيمة و غنآء و مالًا وإن كانت على ركبتيه جميعًا يكون رئيس قومه و سيّد
أهله و صاحب يسار و غنآء وإن كانت على ساقيه تدلّ على سفر و شقآء و دوران و تعب
وإن كانت على عقبيه يكون رئيس أهله و غيرهم و رئيس كلّ صنعة وكلّ شىء يدخل 20
فيه و حاذقًا بكلّ ما يعمله وإن كانت نكتة سودآء على قدميه تدلّ على تعب كثير
و تعذير فى الأمور و قلّة فطنة و دراية و عمى قلب وإن كانت فى يديه يكون متغرّبًا
وإن كانت على كفّه الشمال يكون عفيفًا صالحًا مستورًا وإن كانت فى أسفل رجله

---

1 Рук. الصُره.

2 Рук. سلطان.

3 Рук. الفخذين.

4 Рук. المدحآ.

5 Рук. الخراق.

6 Рук. ارعنًا. Текстъ этой фразы представляетъ затрудненія.

7 Рук. اليمين.

علامة سوداء يكون منقلب الرأى فإن كانت لامرأة كانت تمشى بالنميمة او فاسدة
علامات النساء من كانت من النساء فى ثديها مثل أزرار القميص شامة سوداء او
حمراء فإنّها تكون تقبر زوجها الأوّل والثانى وتقبر بعض أولادها و من كانت || لها 69b
علامة سوداء او مثل زرّ القميص الصغير او مثل العدسة على أشفار عينيها فإنّها
تكون تنفر من الأزواج و تبغضهم و تكون غليظة القلب جافية[1] الطبع قال و من كانت
على صدرها او على وركها علامة سوداء فإنّها تكون خيرة النفس تحبّ الخير والزيادة
لكلّ أحد صالحة ديّنة و من كانت لها علامة سوداء او شامة او نكتة او خال أسود
او أحمر على طرف أنفها من النساء او الرجال فإنّه يكون غنيًّا خيرًا صالحًا يحبّ
الخيرات والمنافع كلّها والله أعلم باب معرفة الاختلاج و ضربان العروق قالوا من اختلج
يافوخه او جمجمة رأسه فإنّه يدلّ على مرض او سفر و قال قوم من الحكماء يدلّ على علوّ
همّة وينال منزلة عظيمة و من اقشعرّ جلد رأسه او قام شعر رأسه فإنّ ذلك يدلّ على
فساد و قال قوم يدلّ [على] ضعف القلب و رقّة الطبع و الجبن و الفزع و من اختلج جانب
رأسه الأيمن دلّ على خير يكون قريبًا فإن كان الجانب الأيسر دلّ على فساد و من
ضربت عروق رأسه او أصداغه || دلّ على مرض حادث من دم و حرارة و دلّ على 70a
خوفه و فزعه و ضعف قلبه واذا اختلجت الجبهة او ضربت فيها عروق كثيرة دلّ ذلك
على حزن و غمّ او على رمد يحدث من دم و من اختلج ناحية وجهه اليمنى[2] دلّ على خير
وإن كانت اليسرى[3] دلّ على شرّ واذا اختلج وسط الوجه دلّ على حزن و غمّ فإن اختلج
جفن العين دلّ على خير و من كانت عروق وجهه و أجفانه تتحرّك و تضرب من غير
اختلاج و غير علّة فإنّه شرير الطبع نمّام همّاز عيّاب مغتاب للناس و من اختلج طرف
أنفه دلّ على فساد فإن تحرّكت عروق الشفتين[4] والأنف من غير اختلاج و كان
ضربانها شديدًا او ظهر معها حمرة دلّت على آفات رديّة تحدث بالوجه والعين وإن
كانت بلا حمرة خيف على صاحبها من اللوقة و انقلاب الوجه و كذلك إن تحرّك الفكّ أيضًا
و من اختلجت أذنه اليمنى[5] دلّت على خير و صلاح وإن كانت اليسرى[6] دلّت
على غمّ و فساد فإن تحرّكت عروقها من غير اختلاج دلّت على آفة او عرض يحدث

---

1 Рук. جافه.
2 Рук. اليمين.
3 Рук. كان الايسر.
4 Рук. الشفينى.
5 Рук. اليمين.
6 Рук. اليسار.

70б فى صماخ الأذن وأجراح[1] تظهر فى الرأس || فإن اختلجت الرقبة دلّت على تعب
و جهد فإن ضربت عروقها دلّت على الدم الثابت او على أمر حادث وإن اختلجت
الأكتاف دلّت على سلطان و عزّ فإن ارتعدت من غير اختلاج دلّت على فزع حادث او
مرض بارد وإن اختلج وسط اللحية و ارتعدت الذقن دلّ على خير فإن تحرّكت هناك
عروق من غير اختلاج دلّ على دم ينزل من الرأس وإن اختلج ما تحت اللحية من 5
الحنك اليمين دلّ على خير وإن كان من اليسار دلّ على شرّ و[2] كان مكروهًا
فإن تحرّكت فيه عروق من غير اختلاج دلّ على خلط بلغمىّ ينزل من الرأس الى
اللحية والى الفكّين و إخراج الدم له جيّد[3] امّا حجامة و امّا فصادًا[4] واذا اختلجت
الأعضآء دلّت على الفزع والوهل والفشل فإن تحرّكت فيها عروق من غير اختلاج او[5]
فى الذراعين دلّت على دم جرى[6] فى العروق واذا اختلج الذراع اليمين دلّ على 10
خير وإن كان اليسار دلّ على شرّ و خسارة واذا اختلج البطن دلّ على فرح كثير
71a فإن دام بها ذلك وكان لها كالعادة فصاحبها شبق هائج يحبّ الجماع والباه وإن || كانت
امرأة فهى تحبّ الغلمة والمتعة و تكون ولودًا مذكرًا و كذلك اختلاج السرّة أقوى
دلالة فى النساء من دلالة الرجال فى حبّ الباه والمتعة و اختلاج الأليتين والفخذين
يدلّ[6] على فرح و اختلاج الساقين يدلّ[7] على تعب القلب والغمّ و من اختلجت قدماه او 15
كعباه فهو متعوب القلب و مكدود النفس والله أعلم باب معرفة أوهام الهند و زجرهم
و فراستهم و عرافتهم اعلم أنّ للهند كتاب الأوهام فى خزائن ملوكهم يرجعون فيه الى
أصول و مذاهب قديمة و أكثر ما فيه ظنّ و تخيّل و عارض داخل على نفوسهم لأنّ الدليل
ما يثبت على أكثر ما قالوه و لهم أيضًا كتاب الجفر يقضون فيه على ما يكون فى السنة
من الأمور الحادثة ويستدلّون على معرفة ذلك بمنازل القمر كلّ ليلة و هى ثمان 20
و عشرون[8] منزلة الى أن يعود كالعرجون القديم[9] فكلّما زاد او نقص و ارتفع و هبط
71б حكموا عليه حكمًا بمخالفة الأوّل و لهم حكم[10] على الرياح الأربع من هبوب || الشمال
والجنوب والصبا والدبور و على الغيوم فى اختلاف ألوانها ويستعرفون من ذلك

---

1 Рук. اخراج.
2 Рук. و ان.
3 Рук. جيدًا.
4 Рук. فصاد.
5 Пропускъ, не обозначенный въ рукописи.
6 Рук. عرى.
7 Рук. يدلان.
8 Рук. عشرين.
9 Ср. Коранъ, 36,39.
10 Рук. حكمًا.

علامات الجدب والخصب والغلآء والرخص و الأمن و الخوف و اختلاف الدول و إقامة
الفتن و لهم زجر يخالفون فيه زجر العرب و ذلك أنّ العربىّ اذا زجر فسمع هدير
الحمامة او صوت طير او مفاجاة حيوان او سانح او بارح او هفيف شجر او هبوب
ريح او ما أشبه ذلك قضى عليه و لم يفتقر فيه الى دليل ثانٍ[1] من معرفة طالع او
5 غارب او آفل او كون القمر فى منزلة سعد او مقابلة سعد او نحس او مقارنة او تربيع
او تثليث و لم يعرّج على شىء من ذلك والهند يزجرون ويتفأّلون ويستدلّون بالدلآئل
الأرضيّة و يجعلونها مقرونة بالدلآئل العلويّة وينظرون القمر فى أىّ برج هو و أىّ منزلة
وما هو الغارب و الطالع و أين النحس والسعد وكيف المقاربة و المقارنة والمفارقة والرجوع
و ما أشبه ذلك و لا يقضون بدليل واحد و لهم أحوال كثيرة يتعرّفون منها الكائنات
10 و لهم الخمسة والعشرون الحال يسمّونها أحوال النجوم و هى مذكورة فى كتب النجوم
وجعلها || قوم خمسة عشر و هى مثل الاجتماع والافتراق و طرح الشعاع و نظر الكوكب 72a
الى الكوكب و بعده و قربه و محبّته و بغضه و رجوعه و ما أشبه ذلك و لهم دلائل أرضيّة
جعلوا لها جدولاً و هى خمسة و عشرون حالة فاذا وقع واحد منها نظروا أين القمر
وفى أىّ برج هو و أىّ منزلة و حكموا بسعده او نحسه و خيره و شرّه مثل صياح الغراب
15 و نهيق الحمار و عوى الكلب فإن صاح الغراب والقمر فى موضع جيّد حكموا بما يرونه
من السعد وإن عوى الكلب والقمر فى موضع ردىّ قضوا بما يرونه من النحس و من
أراد هذه الأحوال طلبها من الجدول و قد ذكرناها طُرَفًا بغير قضيّة عليها و هى صياح
الغراب و نهيق الحمار و عوى الكلب و صرير السقف و سقوط الطير و زفير النار و شخيخ
البغل وصهيل الفرس وصياح الديك وصوت الطير وهفيف الشجر و هبوب الريح و صوت
20 الفار و صياح الهرّ و قرض الفار الثوب * إخراق الثوب نظآئر الشرّ[2] و خمود المصباح و
وقوع الدسم على الثوب و دخول الحيوان الدار و لقآء الضرس[3] و صرير السرير و ما أشبه
ذلك من الأحوال || وقد جعلوها كالعلامة والدلالة و منازل القمر ثمانية و عشرون منزلة 72b
منها أربعة يابسة نحسة مشومة لا يكاد ينجب[4] فيها عمل و هى الدبران والغفر و قلب
العقرب و سعد الذابح و أربعة سعد و هى رطبة يستدلّ بها على الخصب و هى الثريا
25 والزبرة و الجبهة وبطن الحوت و للعرب علامات يستدلّون بها على معرفة الأمطار

---

1 Рук. ثانى.

2 Глосса; текстъ испорченъ.

3 ?

4 Рук. ينجب.

و النوء[1] و لا يحكمون بها على خير و لا على شرّ و من أراد معرفة ذلك استدلّ عنه
فى كتب الأنوآء والمنازل وكتب الزجر والفراسة والقضايا والأحكام والأدلّة كثيرة والقضايا
مختلفة و الله اعلم بالصواب باب[2] من الاستدلال بالفراسة والعلامة والنكتة و البثرة
و غير ذلك ممّا جمع من كلام إبقراط الحكيم و ترجمه حنين بن إسحق قال اعلم أنّ الله
تعالى جعل على كلّ جارحة من جوارح الحيوان و الإنسان علامة ثمّ جعل على تلك 5
العلامة و تلك الجارحة سترًا من الصحّة والسلامة فلا تزال تلك العلامة مخفيّة تحت
الستر المسبول مصونة || بثوب العافية المسدول فاذا ظهرت علامة من بعض تلك 73a
العلامات استدلّ بها على حدث آفة و ظهور عاهة او موت عاجل او حدث نازل قال
و كان إبقراط يسمّى تلك العلامات أسرار الطبيعة و إنّه أمر بها أن تجعل فى قبره معه
فكتبت فى لوح و جعلت معه قال فلمّا أحبّ قيصر معاينة قبر إبقراط أتاه لينظر اليه 10
فاذا هو قد دثر فأمر بتجديده فلمّا حفر وجد فيه درج عاج فيه الصحيفة و فيها هذه
العلامات فأمر الملك بتجديدها و ترجمتها و نقلها فنقلت و ترجمت فأوّل ذلك قال
إبقراط اذا كان فى وجه المريض ورم لا يجد له مسًّا[3] و كانت يده اليسرى موضوعة
على صدره غالبًا[4] فاعلم أنّه يموت الى ثلاثة و عشرين يومًا و لا سيّما إن كان فى أوّل
مرضه يعبث بمنخريه قال واذا كان فى ركبتى المريض جميعهما[5] أورام شديدة غليظة 15
فاعلم أنّه يموت الى ثمانية أيّام و لا سيّما إن كان فى بدو مرضه يعرق عرقًا كثيرًا[6] قال
وإذا كان فى العرق[7] الّذى فى الرقبة يولّد النوم[8] بثرة صغيرة و عليها كهيئة الغبرة ||
فاعلم أنّ ذلك المريض يموت الى خمسين يومًا من بدو مرضه و علامة ذلك أنّه يعطش 73b
فى أوّل مرضه عطشًا شديدًا قال واذا كان على اللسان بثرة كالغبرة و هى شبه ذبابة
الكلب او شبه حبّة الخِرْوَع فاعلم أنّ صاحبها يموت من يومه و آية ذلك أنّه يشتهى 20
فى أوّل مرضه الأشيآء الحارّة الطبع قال واذا كانت على الأصابع بثرة صغيرة سودآء

---

1 Рук. النور.

2 Отсюда до строки 7 المسدول включительно см. Foerster, o. c. 294.

3 Ср. Bollettino italiano degli studii orientali, Nuova Serie, Num. 7, 133—134.

4 Рук. و كان عابثًا, A غالبًا, B лишь موضوعة على صدره.

5 Рук. جميعها.

6 Рук. عرق كثير.

7 Рук. العروق, A и B العرق.

8 Рук. الذى تولد الدم, A الذى يولد النوم, B الذى فى الرقبة يولّد النوم (съ поясненіемъ المراد بهذا العرق شريان السبات и толкованіемъ названія сонной артеріи).

شبه الكرسنّة[1] و أوجعت فاعلم أنّ صاحبها يموت ليومين من مرضه و آية ذلك أنّه
يكون فى بدو مرضه ثقيل البدن واذا كانت على إبهام اليد اليسرى او إبهام الرجل
اليسرى بثرة صغيرة جاسية شبه الفولة كمدة اللون لا توجع فاعلم أنّ المريض يموت
لستّة أيّام من أوّل مرضه و آية ذلك أنّه يختلف فى بدو مرضه اختلافًا شديدًا واذا
5 كانت فى الأصبعة الوسطى من الرجل اليمنى بثرة لونها لون حلى الصاغة[2] فاعلم أنّ
صاحبها يموت لاثنى [عشر] يومًا من مرضه و آية ذلك أنّه يشتهى فى بدو مرضه الأشياء
74a الحرّيفة شهوة شديدة قال واذا كانت أظافير الأصابع كمدة اللون || و فى الجبهة بثرة
دميّة[3] فاعلم أنّ صاحبها يموت لأربع أيّام من بدو مرضه وآية ذلك أنّه يكون كثير
العطش فى أوّل مرضه كثير التثاؤب قال واذا كان فى إبهام الرجلين حكّة شديدة
10 و كان لون الرقبة كمدًا جدًّا فاعلم أنّ صاحب ذلك يموت فى اليوم الخامس من
مرضه وآية ذلك أنّه يبول فى أوّل مرضه بولًا شديدًا كثيرًا متغيّرًا[4] قال واذا كان
على جفن المريض ثلاث بثرات إحداهنّ سوداء و الأخرى كمدة و الأخرى الى
الشقرة فاعلم أنّ صاحب ذلك يموت الى سبعة عشر يومًا من أوّل مرضه وآية ذلك أنّه
يبزق بزاقًا كثيرًا شديدًا فى أوّل مرضه قال واذا كان على إحدى جفون[5] المريض بثرة
15 كالجوزة ليّنة كمدة اللون فاعلم أنّه يموت الى يومين وآية ذلك أنّه يكون فى أوّل مرضه
ينام نومًا ثقيلًا قال واذا سال من منخرى المريض دم يضرب الى الشقرة و ظهر بيده
اليمنى بثرة بيضاء لا توجع فاعلم أنّه يموت الى يومين[6] او ثلاثة من بدو مرضه و آية
ذلك أنّه لا يشتهى الطعام البتّة قال واذا ظهر فى الفخذ الأيسر من المريض ||
746 حمرة[7] شديدة لا توجع طولها ثلاث أصابع فاعلم أنّه يموت الى خمسة عشر يومًا من بدو
20 مرضه و آية ذلك أنّه يحتكّ فى بدو مرضه حكّة شديدة و يشتهى أكل البقول قال
واذا كان خلف أذن المريض اليسرى بثرة سوداء فاعلم أنّ صاحبها يموت الى أربع

---

1 Рук. الكرشنه, A и B الكرسنّة, и въ B поясняется الباقلا الصغيرة.

2 A لونها كاون جلا الصاغة و هو الطرطير (?), B لونها كُحلّى الصاغة съ поясненіями для послѣднихъ двухъ словъ — персидскимъ زيورهاى زرگران и арабскимъ لونها كالذهب أراد بها الحمرة الوبائيّة.

3 Рук. قىّ, A دمية, B دموية съ поясненіемъ اى احمر اللون.

4 Рук. بول شديد كثير متغيّر.

5 Рук. جفن.

6 Рук. يومان.

7 Рук. جسر, A и B حمرة.

و عشرين يومًا من بدو مرضه بها و آية ذلك أنّه يشتاق فى بدو مرضه الى الماء
البارد شوقًا شديدًا قال واذا كانت خلف الأذن اليسرى بثرة جاسية شبه الحمّصة[1]
فاعلم أنّ صاحبها يموت الى عشرين يومًا من أوّل مرضه فى تلك الساعة الّتى ظهرت
فيها تلك البثرة و آية ذلك أنّه يبول فى أوّل مرضه بولًا كثيرًا قال واذا كانت خلف
الأذن اليمنى بثرة حمرآء شبيهة[2] حرق النار و هى فى عظم الباقلّآء[3] فاعلم أنّه يموت 5
لستّة أيّام من مرضه و آية ذلك أنّه يتقيّأ فى بدو مرضه قيئًا كثيرًا قال و قد يعرض
لبعض الناس وجع فى الخشفة فاذا عرض ذلك لأحد ثمّ ظهرت فى المرفق بثرة كمدة
اللون فإنّه يموت فى اليوم الخامس من مرضه و آية ذلك أن يكون فى بدو مرضه
75a يشتهى || شرب الشراب كثيرًا قال واذا ظهر تحت الإبط الأيسر بثرة عظيمة فى
عظم السفرجلة كمدة اللون فاعلم أنّ صاحبها يموت الى خمسة عشر يومًا من مرضه 10
و آية ذلك أنّه يعرض له فى بدو مرضه نوم ثقيل قال واذا كانت على الكعب بثرة
كمدة كبيرة فاعلم أنّ المريض يموت لثمانية و عشرين يومًا من أوّل مرضه و آية
ذلك أنّه يشتاق فى بدو مرضه الى برد الهوآء او الى الأطعمة الباردة شوقًا شديدًا
قال واذا كان على الصدغ الأيسر بثرة تميل الى الشقرة فاعلم أنّ صاحبها يموت
الى أربع أيّام من بدو مرضه و آية ذلك أنّه يحكّ عينيه حكّة شديدة لا يشتفى من 15
حكّها قال واذا كان فى وسط الرأس ورم مثل الجوزة أسود لا يرتفع فاعلم أنّ صاحبه
يموت الى أربعين يومًا من بدو مرضه و آية ذلك أنّه يعرض له فى بدو مرضه تثاؤب كثير
قال واذا كان فى الصدر ورم أسود فاعلم أنّ صاحبه يموت الى ثلاثة أشهر من بدو
مرضه و آية ذلك أنّه يشتهى فى بدو مرضه الى البطّيخ و عسر البول و ربّما أصاب[4]
75b المريض || فالج قال واذا أصاب المريض فالج و برئ و انتكس فى مرضه فإنّه يموت 20
لتمام سبعة أيّام من بدو انتكاسه و ربّما ظهرت علامة او بثرة او حمرة او شىء[5] يدلّ
على ذلك و آية ذلك أنّه يستفيق فى نكسته فاذا استفاق فإنّه يموت قال و وجدت
هذه العلامات من كلام إبقراط فألحقتها بهذه الفصول قال إبقراط علامة اللون الردىّ
سبعة حمرة اللون و صفرته و زرقته و سواده و كدرته و كمودته و غبرته قال الحمرة تدلّ

---

1 Рук. الحصايه, A и B الحمصة.

2 Рук. شبيه.

3 Рук. الباقلاه.

4 Рук. صاب.

5 Рук. شيًا.

على غلبة الدم و ربّما قتلت و ربّما كانت سالمة تدلّ على مرض سريع قال و
الصفرة تدلّ على خلط شديد و على مرض طويل و يزول و الزرقة علامة رديّة تدلّ على
الموت السريع قال والسواد يدلّ على علامات رديّة و تزول فإن ظهر معها بثر دلّ
على الموت قال والكدرة إن كان معها خضرة دلّت على مرض يزول وإن كانت
5 بخلاف ذلك دلّت على مرض طويل و يزول قال و كمودة اللون يدلّ على نقض[1]
و يزول سريعًا فإن ظهر معها بثر دلّت || على علامات رديّة و موت[2] لا سيّما إن ظهر 76a
معها بثرة او ورم او انتفاخ او تلطّخ او حكّة و ما أشبه ذلك فاعرف ذلك و قس
عليه ترشد إن شآء الله تعالى و الله أعلم و حسبنا الله و نِعْمَ الوكيل والحمد لله ربّ
العالمين و صلّى الله على سيّدنا محمّد وآله و صحبه الأكرمين و سلّم وافق[3] الفراغ من
10 نسخه بدمشق المحروسة حماها الله تعالى يوم الاثنين ثامن شهر رمضان المعظّم سنة
سبعة و خمسين و سبعمائة والحمد لله وحده نسخه العبد الفقير الى الله تعالى عبد
الله بن سليمان بن الريحانىّ الموصلىّ عفا الله عنه

---

1 Рук. نقضًا.

2 Пропускъ, не обозначенный въ рукописи.

3 Отсюда и до конца см. Foerste , o. c. LXXX—LXXXI и 294.

II.

ПЕРЕВОДЪ.

50б Во имя Бога Всемилостиваго, Всемилосерднаго!

Глава о познаваніи будущаго, о гаданіи и о физіономикѣ[1]) по взглядамъ Персовъ.

Говоритъ Абӯ-ʿУсма̄нъ ʿАмръ-ибн-Бахръ ал-Джа̄хизъ.

Знай, что сужденія относительно скрытыхъ (отъ насъ) обстоятельствъ изобилуютъ различными предположеніями, и истины въ нихъ мало, недостаточно, и вѣрность ихъ не надежна. У каждаго народа и у каждаго племени (существуютъ) соображенія, которыми они руководятся, и мнѣнія, которыя они составляютъ и на которыхъ основываются. Большая часть всего этого (лишь) предположенія, домыслы и догадки; иногда же, въ рѣдкомъ и одиночномъ (случаѣ), совпадаетъ дѣйствительность съ суевѣріемъ, и (тогда является) воображеніе, что это бываетъ всегда и случается во всякое время, и что подобнаго нужно остерегаться и избѣгать. И передаетъ одинъ другому, и современникъ разсказываетъ со словъ предка. И иногда гаданіе и физіономическое наблюденіе сбываются относительно чего-нибудь, а по отношенію къ другимъ однороднымъ предметамъ не оправдываются; иногда же люди считаютъ что-либо дурнымъ знакомъ, а для нихъ благо въ знаніи его и счастье во встрѣчѣ съ нимъ.

У народовъ и племенъ (существуютъ) всякаго рода предвидѣнья,
51а физіономическія наблюденія, предчувствія, повѣрія, гаданія и способы познаванія будущаго. Больше всѣхъ занимаются предчувствіями Арабы; у нихъ плохія предвидѣнья и неправильныя предположенія. Они сообщили объ этомъ въ ихъ поэзіи, гаданіи и поговоркахъ. И они утверждаютъ, будто «джинны» и «гӯли» предстаютъ передъ ними, и будто «джинны» сообщаютъ имъ о событіяхъ въ стихахъ, разсказываемыхъ, слушаемыхъ и понимаемыхъ ими. И поступаютъ они сообразно этому. И (все это) осуществляется у нихъ въ гаданіи по движенію птицъ, въ крикѣ птицъ, во встрѣчѣ съ хищнымъ звѣремъ, во (встрѣчныхъ) справа и слѣва, впереди и сзади, во

---

1) Названія различныхъ видовъ магіи (напр. عرافة, زجر, فراسة и др.) въ большомъ числѣ встрѣчаются въ настоящемъ трактатѣ. Точно разграничить значенія этихъ названій намъ въ настоящее время не представляется возможнымъ. Нѣкоторые позднѣйшіе авторы даютъ опредѣленія (напр. Ха̄джжӣ-Халифа, изд. Flügel'я, I, 34—35, IV, 194, 281, 346 и др.), но установить точное различіе по большей части не удается. Поэтому, при переводѣ, мы въ большинствѣ случаевъ ограничиваемся передачей этихъ названій синонимами, какъ впрочемъ вѣроятно понималъ ихъ и самъ авторъ трактата.

встрѣчѣ со змѣей, ехидной, червемъ, разными мелкими насѣкомыми, въ крикѣ вороновъ, воркованіи голубей, свистѣ «джинновъ», шумѣ камней, журчаніи водъ, разлитіи потоковъ, разсматриваніи тучъ и облаковъ, руководительствѣ звѣздами, познаніи созвѣздій, дождей, грома, молніи и тому подобномъ, не имѣющемся у другихъ народовъ.

У Индійцевъ — неимѣющіеся у другихъ домыслы, соображенія, предположенія, предвидѣнья, заключенія, утвержденія, толкованія, астрологія, медицина, физіономика и «джафръ» т. е. познаніе дней года, дуновенія вѣтровъ, восхожденія и нисхожденія лунныхъ стоянокъ, на которомъ они основываются въ своихъ заключеніяхъ. И говорятъ они — «джафръ» вѣтровъ, 51б
«джафръ» дождей, «джафръ» созвѣздій. «Джафръ» (также называется одна) ихъ книга, заключающая опредѣленія (относительно) года. Они дѣлятъ его на четверти, согласно частямъ его и луннымъ стоянкамъ, и каждыя семь стоянокъ, (приходящіяся) на одну четверть года, называютъ «джафръ» и изъ него выводятъ рѣшенія относительно дождей, вѣтровъ, путешествій, войны и тому подобнаго. Отъ нихъ научились Хосрои и Персы (всѣмъ) прочимъ наукамъ, отъ нихъ взяли ихъ, имъ подражали, спеціально (же) въ медицинѣ, астрологіи, математикѣ, (всякаго рода) домыслахъ, познаваніи будущаго, гаданіи, физіономикѣ, стоянкахъ луны и тому подобномъ.

Что касается до Византійцевъ, то они все взяли отъ Грековъ. У нихъ прекрасныя, тонкія издѣлія, мудрость, медицина, философія, приведеніе доказательствъ и аргументовъ, умѣнье рисовать и строить, наука о видѣ небесъ и звѣздъ; у нихъ же заговоры, заклинанія, колдовство, предчувствіе, предвидѣнье и тому подобное.

Что касается Персовъ, то они взяли все отъ Индійцевъ. У нихъ — физіономика, политика, повѣрія, предчувствія, знаніе дурныхъ признаковъ, домыслы, мнѣнія, сужденія, соображенія, аргументы, воспитаніе духа, исправленіе всего худого, рытье колодцевъ, каналовъ, водопроводовъ, ис- 52а
точниковъ, проведеніе каналовъ, наведеніе плотинъ и мостовъ, (огражденіе) отъ паденія камней и водъ, посадка деревьевъ, разнаго рода вещи, полезныя для царей и государственныхъ людей и тому подобное. Индійцы доставили имъ разнаго рода вещи. Кисра̄ Куба̄дъ, Ша̄пӯръ, Кисра̄ Анӯширва̄нъ, Бахра̄мъ Джӯръ и Ша̄ха̄нша̄хъ, царь царей. . . . . добыли изъ Индіи разнаго рода предметы, роздали обширныя средства и оказали обильныя милости индійскимъ ученымъ и мудрецамъ. И приходило ежегодно, по очереди, большое количество разнаго рода мудрецовъ, ученыхъ, математиковъ, астрологовъ, заговаривателей, заклинателей, переводчиковъ, (лицъ), дающихъ рѣшенія и приговоры (относительно разнаго рода вопросовъ), познающихъ будущее, физіономистовъ. Они предсказывали имъ и сообщали о томъ, что

случится въ этомъ году и что постигнетъ ихъ. И сообщали они о томъ, что случится въ каждый день, каждый мѣсяцъ, весь годъ. Они утверждали, что знаніе этого (происходитъ) отъ семи планетъ и двѣнадцати знаковъ зодіака, отъ восхода восходящей (звѣзды) и захода нисходящей, высоты
52б ея и низкаго положенія. Они говорили имъ: все происходящее на землѣ — движеніе и покой, противуположеніе и соединеніе, совпаденіе и раздѣленіе (находится въ зависимости) только отъ движеній на небѣ, противуположенія и соединенія звѣздъ, восхожденія счастливой и нисхожденія несчастной; Всевышній Богъ содѣлалъ для земныхъ рабовъ его знаменія, проявляющіяся при смѣнѣ годовъ [въ текстѣ два слова, означающія одно и то же понятіе—годъ], мѣсяцевъ и дней въ движеніи звѣздъ и вращеніи небесъ; все земное, — растущее и засохшее, растеніе и животное, — (находится) подъ вліяніемъ высоко стоящихъ знаковъ зодіака и блестящихъ звѣздъ; событія происходятъ вслѣдствіе совпаденія и раздѣленія, противуположенія и соединенія ихъ, и всѣ разнаго рода явленія, знаменія и событія опредѣлены раньше высшимъ вліяніемъ и небеснымъ рѣшеніемъ. И рѣшали они согласно со всѣмъ тѣмъ, что видѣли и слышали, гадали и разбирали въ разнаго рода вещахъ, обстоятельствахъ и событіяхъ, въ слушаніи рѣчи, или крикѣ птицъ, или паденіи камней, или шумѣ деревьевъ, и встрѣчѣ съ животными. И выводили они рѣшенія по признакамъ членовъ
53а людей и животныхъ, по изученію содраганія артерій или чего-нибудь другого въ тѣлѣ, разсматривая лопатки, судя по удару суставовъ и сочлененій, слѣду шага на землѣ, счету «х-с-м-и-р-джъ»,—т. е. по жребію, волхвованію и гаданію, затѣмъ по руководству медициной, ощупыванью артерій, разсматриванію водъ ихъ (?), рѣшеніямъ при помощи классификаціи вещей, приведенію въ видѣ доказательства прошлаго или будущаго и тому подобному. Всѣ обсуждавшіе дѣло или устанавливавшіе рѣшеніе, касалось ли это прошлаго или будущаго, записывали его и преподносили царю. Царь же, посмотрѣвъ его, отдавалъ въ свою тайную сокровищницу. И говорятъ, что Кисра̄ Куба̄дъ не обращалъ вниманія на то, что преподносили ему, не смотрѣлъ въ него и считалъ невѣріемъ и глупостью.

Астрологи разсматривали дни недѣли, высказывали относительно нихъ сужденія и распредѣляли ихъ царю. Они говорили: каждый день управляется (особой) восходящей (звѣздой) и эта восходящая (звѣзда) рѣшаетъ судьбу его. (Результатомъ) ихъ распредѣленія было то, что (цари) дѣлали большое собраніе и важное засѣданіе, и поручали отвѣтственное дѣло знатному человѣку — въ Субботу; затѣмъ, (что) они садились для судебнаго разбирательства, оказывали справедливость обиженному и справлялись съ (законодательными) книгами — въ Воскресенье; охотились и разсматривали все,

касающееся охоты и мѣста ея,—въ Понедѣльникъ; играли въ «поло» [букв. били въ «саулджāны» [1])], занимались скачками и борьбой, клали въ храмы 53б
огни—во Вторникъ; сводили счеты въ приходѣ и расходѣ, въ числѣ воиновъ, въ разнаго рода службахъ, въ расходованіи предметовъ, получаемыхъ отъ обработки, и прочаго, подлежащаго разслѣдованію, отправляли къ врагу шпіоновъ и лазутчиковъ, наблюдали за вышиваніемъ, выпускали серебряную и золотую монету, покупали и продавали, устраивали тайныя дѣла — въ Среду; разсматривали дѣла вельможъ, сановниковъ и «ахл-ал-буютāтъ» [семь главнѣйшихъ родовъ персидской аристократіи] и дѣла о закладкѣ городовъ, крѣпостей, замковъ и домовъ—въ Четвергъ; освобождались (отъ дѣлъ) для украшенія, омовенія, умащенія ароматами, ѣды, питья, одѣванія убранства ими и женами ихъ, приказывали приводить пѣвицу и (приносить) музыкальный инструментъ и предметы, (необходимые) для веселаго препровожденія времени, и (приводить) людей, (имѣющихъ цѣлью) развлекать (царя), и приказывали сажать и водружать деревья, и представлять плоды и (другіе), необходимые для развлеченія предметы — въ Пятницу. Этотъ день былъ названъ «днемъ украшенія». И они раздѣляли время согласно этому. И царь наблюдалъ, чтобы каждый день недѣли проходилъ согласно (вышеприведенному) распредѣленію.

Затѣмъ они [т. е. цари] разсматривали дѣла людей и обстоятельства времени. И не одобряли они того, о чемъ сообщали имъ (съ неодобреніемъ) 54а
знатоки физіономики, гаданія и познаванія будущаго, напр. считали дурнымъ знакомъ крикъ ворона, или пѣтуха, или собаки, осла, мула и тому подобное. Нѣкоторые считали неблагопріятнымъ возгласъ и крикъ пѣтуха, и говорили, что крикъ пѣтуха неблагопріятенъ при встрѣчѣ со знатными людьми, царями и сановниками. И говорили они (еще): вой хищника разлучаетъ близкихъ и друзей, и указываетъ на одиночество, отдаленность, отчужденность. И нѣкоторые изъ нихъ говорили, что эти вещи указываютъ на извѣстную причинную связь съ послѣдующимъ, и тотъ, кто не любитъ ихъ, не любитъ (собственно) эту причинную связь.

Они говорили: Кто не любитъ голоса лошадей, муловъ и ословъ, не достигаетъ желаемаго.

Кто не любитъ шума жуковъ, бываетъ безплоднымъ, алчнымъ въ душѣ.

Кто не любитъ храпа муловъ, постигается удаленіемъ съ родины, плохъ въ рѣчи своей.

---

1) Молотки для игры въ поло.

Кто не любитъ треска огня, не получаетъ дохода съ земельнаго участка.

Кто не любитъ лая собаки, все время будетъ на чужбинѣ, будутъ притѣснять его несчастья.

Кто не любитъ рева осла, не расположенъ къ злымъ, любитъ хорошихъ, (но) страдаетъ отъ несчастья.

Кто не любитъ крика лисицъ, бываетъ хорошимъ (человѣкомъ), освобождающимъ людей отъ непріятностей.

Кто не любитъ голоса ежей, не имѣетъ близкаго друга, (человѣкъ) дурной.

54б Они говорили: Кто любитъ голоса овецъ, верблюдовъ и прочаго скота, тотъ гордый, злой, ненавидящій людей (человѣкъ).

Кто любитъ голоса пѣвцовъ и музыкантовъ, упорно предается развлеченіямъ и прегрѣшеніямъ, ненавидитъ людей.

Кто любитъ свистъ змѣй, постоянно убѣгаетъ, скрывается.

Кто любитъ шорохъ муравьевъ, постоянно бываетъ плѣнникомъ въ рукахъ враговъ.

Кто любитъ кваканье лягушекъ, всегда бываетъ въ жизни безсильнымъ.

И выводили они дурныя предзнаменованія изъ (разнаго рода) вещей и считали это истиной.

Говорили они: кто выводитъ дурное предзнаменованіе изъ шума въ воздухѣ, постоянно ложно обвиняется въ обманѣ.

И все то, что считали дурнымъ знакомъ, что выводили по физіономикѣ, или по движенію птицъ, или что считали хорошимъ знакомъ, исполнялось въ два времени года—въ Михрмāхъ и Āдармāхъ.

И первое дурное предзнаменованіе произошло отъ дѣтей и глупцовъ изъ простого народа; когда народъ болтаетъ вздоръ относительно чего-нибудь и распространяется объ этомъ много пустыхъ слуховъ, или это служитъ предметомъ постояннаго разговора, то онъ убѣждается въ дѣйствительности этого, или (же) боится его и считаетъ дурнымъ знакомъ.

Они выводили дурное предзнаменованіе изъ голубоглазаго (человѣка), а особенно, когда бывалъ онъ съ рѣдкой бородой («кӯсаджъ»), или угреватъ, или когда на лицѣ его (было) много родимыхъ пятенъ. И они высказывали сужденія относительно родимыхъ пятенъ (смотря по тому), гдѣ на
55а тѣлѣ они были. Если были они на лицѣ, относительно нихъ высказывалось (опредѣленное) сужденіе; и если было одно родимое пятно, то относительно него было одно сужденіе; а если два, то относительно нихъ было другое сужденіе; и если было родимое пятно или большая веснушка или много ихъ

въ (какомъ-нибудь) мѣстѣ, то (опять таки) было относительно этого (особое) сужденіе.

И относительно сраженія (руководились они) указаніями дуновенія четырехъ вѣтровъ: когда вѣтеръ дулъ съ востока, побѣда принадлежала восточному царю, если съ запада, то побѣда принадлежала владыкѣ запада, съ юга — владыкѣ юга, съ сѣвера — подобно этому (вышеприведенному повѣрію). Это взяли они изъ Индіи и отъ индійскихъ мудрецовъ, о чемъ упомянемъ въ своемъ мѣстѣ, если пожелаетъ Всевышній Богъ.

У нихъ были предметы и вещи, по которымъ они выводили хорошія предзнаменованія въ началѣ года, (въ томъ случаѣ), когда люди много занимались ими и охотно упоминали ихъ.

Годъ, въ (началѣ) котораго они занимались выдѣлкой луковъ и стрѣлъ, бывалъ годомъ охоты, добычи, одолѣнія хищныхъ звѣрей и побѣды надъ врагомъ.

Годъ, въ (началѣ) котораго они занимались выдѣлкой «джулāхикъ» т. е. самострѣловъ, бывалъ годомъ осады и возведенія укрѣпленій.

Годъ, въ (началѣ) котораго они занимались выдѣлкой «саулджāновъ», бывалъ годомъ спора, раздора и препирательства.

Годъ, въ (началѣ) котораго они занимались выдѣлкой пращей и (метательныхъ) камней, бывалъ годомъ, обильнымъ мелкимъ и крупнымъ рогатымъ скотомъ и (другими) животными.

Годъ, въ (началѣ) котораго выдѣлывали они шары, бывалъ годомъ 556
урожая и спокойствія.

Годъ, въ (началѣ) котораго обнаруживалось много благочестія и строились святилища и храмы огня, бывалъ годомъ дружбы, согласія и любви.

Годъ, въ (началѣ) котораго было много вопля, крика, стенанія (вообще) и возгласовъ дѣтей, назывался ими годомъ землетрясеній. Люди предвидѣли, что во время него будутъ укрываться и убѣгать, и будетъ онъ годомъ падежа скота.

Годъ, въ (началѣ) котораго кувыркомъ....., бывалъ годомъ, въ который гибло много воиновъ.

Годъ, въ (началѣ) котораго было много рукобитія (?), бывалъ годомъ, обильнымъ горемъ, плачемъ, несчастіемъ.

У нихъ были признаки по хищнымъ звѣрямъ, по движеніямъ и внѣшности которыхъ они гадали.

Они говорили: когда воютъ волки съ горъ, и отвѣчаютъ имъ собаки изъ деревень, будутъ тяжелая война и пролитіе крови.

Когда воютъ деревенскія собаки, и отвѣчаютъ имъ волки съ горъ, будутъ чума, и падежъ скота, и моровая язва.

Когда хищные звѣри особенно часто появляются, бѣгаютъ и кричатъ, это указываетъ на приходъ врага.

Когда дѣлаютъ подобное этому собаки, и отвѣчаютъ имъ другія собаки, это указываетъ на бѣгство.

Когда дѣлаютъ подобное этому собаки и не отвѣчаютъ имъ другія
56а собаки, это указываетъ на бѣгство населенія города и на то, что ему (придется) прятаться.

Когда много кричатъ лисицы, колдуны увеличиваютъ свои разрушительные замыслы.

Когда лисицы кричатъ крикомъ, похожимъ на вой собаки, постигнетъ людей сильный вредъ отъ хищныхъ звѣрей.

Когда кричатъ онѣ, какъ шакалы, будетъ много совѣщаній у вельможъ и сановниковъ.

Когда кричитъ въ домѣ пѣтухъ до времени пѣтушинаго крика, бываетъ это изъ желанія устранить бѣду, надвигающуюся на этотъ домъ.

Когда кричитъ въ домѣ курица, какъ пѣтухъ, она предостерегаетъ живущихъ въ немъ отъ приближающагося несчастья.

Когда много прыгаетъ пѣтухъ на подушкѣ и ложѣ хозяина дома, онъ [т. е. хозяинъ] получаетъ большую славу, извѣстность и главенство.

Когда много прыгаетъ на подушкѣ курица, постигнетъ его неизвѣстность и уменьшеніе (достатка).

Когда пѣтухъ запачкаетъ коверъ его, получаетъ онъ хорошее, выгодное имущество и много добра.

Если запачкаетъ коверъ его курица, это указываетъ на грядущій падежъ скота.

Когда много квакаютъ лягушки, это служитъ указаніемъ на то, что смерть спустилась въ ту мѣстность, въ которой онѣ находятся.

Если же онѣ квакаютъ, а у людей смертность, это указываетъ, что смерть отдалилась отъ этой мѣстности.

56б Если клохчетъ [букв. стонетъ] пѣтухъ въ домѣ, будетъ боленъ въ немъ кто-либо изъ мужчинъ.

Если клохчетъ курица, будетъ боленъ кто-либо изъ женщинъ.

Когда пѣтухи кричатъ, какъ плачутъ, распространяется смерть среди женщинъ.

Когда курица кричитъ, какъ пѣтухи, распространяется смерть среди мужчинъ.

Когда каркаетъ черный воронъ и отвѣчаетъ ему курица, это указываетъ на разрушеніе и на (позднѣйшее) возстановленіе (разрушеннаго).

Когда кудахчетъ курица и воронъ отвѣчаетъ ей, это указываетъ на обработку (чего-либо) и на (позднѣйшее) разрушеніе (этого).

Когда крысы переносятъ въ имущество хозяина дома пшеницу или ячмень, то будетъ прибыль въ имуществѣ его самого и его дѣтей.

Если онѣ грызутъ одежды его, это указываетъ на убыль имущества его самого и дѣтей его, такъ что слѣдуетъ положить этому предѣлъ и исправить. Въ этомъ (заключается) устраненіе того, чего онъ опасается отъ этого несчастья, съ соизволенія Всевышняго Бога.

Признаки въ огняхъ.

Когда съ трескомъ пылаетъ огонь очага направо отъ сидящаго, это указываетъ на дуновеніе вѣтровъ и пыль.

Если (это бываетъ) налѣво отъ сидящаго, это указываетъ на дождь и снѣгъ, которые скоро выпадутъ.

Если огонь кружится кругомъ очага, это указываетъ на смуту и споръ въ (этомъ) мѣстѣ.

Если онъ кружится кругомъ сидящаго или передъ нимъ, это указываетъ на грядущую побѣду и приближающееся веселье, на ѣду, питье, свадьбу. 57a

Если кружится огонь передъ очагомъ, это указываетъ на отдаленіе хозяина дома отъ достоянія его.

Если кружится онъ за очагомъ, это указываетъ на болѣзнь, которая постигнетъ обитателей этого дома.

Если огонь пылаетъ, издавая звукъ, похожій на смѣхъ, это указываетъ на радость и горе.

Что касается до воспламеняющагося подъ самымъ котломъ огня, то это указываетъ на большіе дожди.

Когда ты видишь, что фитиль свѣтильника или свѣчи пускаетъ пузыри и скручивается, это указываетъ на дождь.

Когда ты видишь, что свѣтильникъ, или свѣча, или огонь, горящій въ очагѣ, бросаютъ много искръ, это указываетъ на большой дождь въ этомъ мѣстѣ или вблизи него.

Они говорили также: когда дикій фазанъ отвѣчаетъ домашнему, населеніе этой мѣстности побѣдитъ враговъ.

Когда храпитъ простой человѣкъ, постигаютъ его плѣненіе и униженіе.

Кто дуетъ во снѣ, уничтожаетъ свое имущество.

Когда кто-нибудь стучитъ зубами во снѣ, это бываетъ указаніемъ на сплетню, и слѣдуетъ ему ударить себя по рту дырявымъ башмакомъ.

Когда важный, знатный человѣкъ много чешетъ тѣло свое руками безъ того, чтобы у него была чесотка или въ одеждѣ (имѣлись бы) вши или блохи, великъ грѣхъ его.

Когда дѣлаетъ это простой человѣкъ, онъ получаетъ выгоду.

57б Испускающій во снѣ слюни постигается отчужденностью.

Когда распространяется смерть среди крупнаго рогатаго скота, бываетъ эпидемія и среди людей.

Когда распространяется смертность среди свиней, всѣ люди будутъ въ безопасности и здоровьи.

Когда распространяется смертность среди хищныхъ и дикихъ звѣрей, постигнутъ людей бѣдствіе и напасть.

Когда распространяется смертность среди крысъ, будутъ у людей дешевизна и урожай.

Говорили они также: кто считаетъ ничтожнымъ безнравственное дѣяніе и желаетъ извѣстности его, — безумецъ, слѣпецъ.

Кто порываетъ сношенія съ умнымъ и дружитъ съ глупымъ, — безумецъ, глупецъ.

Они говорили (еще): послѣ того какъ приложено стараніе къ исправленію, постигаетъ гибель только (тогда), когда она предопредѣлена. Они говорили о человѣкѣ: онъ опасается, старается и не можетъ измѣнить судьбу.

Они говорили (еще): кто сдержанъ въ рѣчи и въ проявленіи страсти [буквально вульгарнѣе] оберегаетъ себя отъ несчастій судьбы.

И говорили они (еще): когда малый не уважаетъ большого, онъ быстро гибнетъ, когда же большой не имѣетъ милости къ малому, его постигаютъ жестокое отношеніе, презрѣніе и болѣзнь.

Говорили они также: лучшее дитя то, которое (поступаетъ) согласно съ характеромъ дѣтей, и лучшій мужъ тотъ, который (поступаетъ) согласно съ характеромъ мужей, и они самые счастливые для встрѣчающихся съ ними.

Говорили они: неблагопріятна встрѣча съ человѣкомъ, домашнимъ или хищнымъ звѣремъ и птицей въ часъ рожденія, когда они еще не обра-
58а зовались и не сформировались окончательно; при встрѣчѣ съ ними надо опасаться пролитія крови; все же несовершенное въ своемъ созданіи облегчаетъ несчастье, потому что оно и разсматривается какъ нѣчто несовершенное, изъянъ котораго обратился на него самого.

Тотъ, передъ кѣмъ упадетъ съ камня змѣя, будетъ постигнутъ непріятностью.

Когда доставятъ въ домъ мертвую змѣю, вскормленную въ немъ, постигнетъ хозяина дома гибель имущества.

Говорили они: когда горныя птицы и хищные звѣри снимаются со своихъ мѣстъ, то это указываетъ на то, что зима будетъ тяжелая и суровая.

Смерть больного, похожаго на здороваго, близка, и слѣдуетъ избѣгать его.

Признаки въ камняхъ.

Говорили они: Слѣдуетъ внимательно смотрѣть на дирхемъ съ чистымъ звукомъ и тщательно изучать его, изъ опасенія, чтобы онъ не оказался изъ желтой мѣди. И (слѣдуетъ) тебѣ разслѣдовать очень желтый динаръ, можетъ быть онъ поддѣльный или не полноцѣнный. И (слѣдуетъ) смотрѣть на очень зеленый хризолитъ, можетъ быть онъ изъ стекла, равно какъ и на очень красный яхонтъ, можетъ быть онъ окрашенный хрусталь.

Такъ же (слѣдуетъ тебѣ разсматривать) измѣненіе мужчинъ и женщинъ и физіономику ихъ. (Слѣдуетъ) тебѣ разгадывать краснорѣчиваго,—можетъ быть онъ многословенъ, малополезенъ, глупъ въ работахъ и дѣлахъ; также молчаливаго, — можетъ быть онъ дурной (человѣкъ), за- 58б
вистливый, хитрый; также скромную, очень стыдливую женщину,—можетъ быть она развратна, порочна; также женщину воздержную, показывающую добродѣтель, благочестіе и праведность,—можетъ быть она строитъ козни; также человѣка богомольнаго, благочестиваго,—можетъ быть онъ хитрецъ. Разгадыванье въ этихъ вещахъ полезно. Кто свѣдущъ въ этомъ, не поддается хитрости и обману. Слѣдуетъ тебѣ знать это, если пожелаетъ Всевышній Богъ.

Они говорили: слѣдуетъ осторожному, благоразумному человѣку сохранять свое достояніе и беречь себя и тайны свои, не дружить съ (человѣкомъ), много занимающимся его достаткомъ, и не выдавать тайны разспрашивающему о нихъ и старающемуся понять дѣла его, и не довѣрять жаждущему довѣрія, такъ какъ это указываетъ на вѣроломство; развѣдыванье тайнъ (есть) желаніе повредить, довѣріе же ко всякому — слабость и разрушеніе.

Говорили они: когда всклокоченъ хвостъ породистой или простой лошади, это указываетъ на путешествіе ея владѣльца; когда всклокоченъ онъ въ наружную сторону, это указываетъ на длинное путешествіе; если же во внутреннюю,—то на продолжительныя остановку и пребываніе; если всклокочены волосы кругомъ хвоста, это указываетъ на отъѣздъ его и поспѣшное возвращеніе; если справа, — то на ущербъ въ верховыхъ живот- 59а
ныхъ его; и если слѣва,—то на увеличеніе въ верховыхъ животныхъ владѣльца ея.

Говорили они: Когда въ воздухѣ тьма и мракъ безъ причины и безъ тучъ, слѣдуетъ опасаться людямъ эпидеміи и болѣзни.

Когда на горизонтѣ темной ночью ты видишь свѣтъ, въ родѣ мерцанія огней, то на ту мѣстность, гдѣ видно это, нападетъ врагъ.

Если же видятъ это, когда врагъ находится въ мѣстности, то онъ уйдетъ отсюда.

Когда слышенъ трескъ въ крышѣ дома, живущій въ немъ уйдетъ изъ него.

Когда много кричатъ пѣтухи, это предостереженіе, предупрежденіе и сообщеніе относительно побѣды праведниковъ надъ грѣшниками.

Когда пѣтухъ хлопаетъ крыльями и не кричитъ, это значитъ, что счастье далеко отъ его хозяина.

Говорили они: когда растетъ ровно ячмень, посаженный въ началѣ года, это указываетъ на урожай этого года.

Если хорошо (растутъ) нижнія части (колосьевъ) этого ячменя, это указываетъ на урожай конца года.

Если хорошо растетъ середина его, это указываетъ на урожай середины года.

Когда растетъ лишь верхушка ячменнаго (колоса), въ этомъ году постигнутъ людей несчастья.

Когда измѣнчивъ ростъ его, измѣнчивы обстоятельства этого года.

596 Хозяинъ дома выводилъ указанія относительно самого себя изъ того, что росло прямо противъ него.

То, что было справа, указывало на положеніе жены его.

То, что слѣва, указывало на положеніе дѣтей его.

То, что сзади, указывало на положеніе слугъ его.

Когда (былъ) хорошъ ростъ (ячменя) по краямъ, то это (считалось) лучше, чѣмъ хорошій ростъ середины его [текстъ еще прибавляетъ—«и верха его» или «и до конца его»?], потому что ростъ расположеннаго по краямъ указывалъ на устраненіе несчастья.

Когда, при хорошемъ ростѣ ячменя, портили его крысы, нужно было опасаться кражи въ домѣ хозяина; и если портили его птицы, нужно было опасаться гибели цвѣта его [букв. зелени].

Если что-нибудь губило его всего, нужно было опасаться полнаго несчастья; если же что-нибудь губило часть его, нужно было опасаться частичнаго несчастья.

Если ростъ его былъ не ровенъ, то это порицалось, а если онъ былъ одинаковъ, то это благословлялось, восхвалялось.

Изъ словъ Дж-у-б-р'а Индійца относительно физіономики и (разнаго рода) признаковъ въ мужчинахъ и женщинахъ и т. п.

Говоритъ Дж-у-б-ръ Индіецъ въ книгѣ, написанной имъ для Хосроевъ и посланной имъ изъ Индіи. Она хранилась въ ихъ сокровищницахъ, они поступали согласно съ нею, сообразовывались съ нею въ поступкахъ своихъ, въ государственныхъ дѣлахъ и въ разныхъ распоряженіяхъ, и съ нею сообразовывались и знатные, и простые.

Онъ говоритъ: слѣдуетъ играющему въ шахматы быть вдумчивымъ, 60а
толковымъ, сообразительнымъ, разсчетливымъ. Вслѣдствіе вѣрнаго разсмотрѣнія онъ хорошо играетъ въ нихъ, и тотъ, кто долго думаетъ во время игры, не бываетъ занятъ ничѣмъ другимъ, а только ею.

Говоритъ онъ также: когда ты видишь человѣка забывчиваго, задумчиваго безъ причины, знай, что онъ хорошій игрокъ въ шахматы.

Когда ты видишь, что онъ движетъ рукой и сжимаетъ ее, знай, что онъ хорошо ударяетъ мечомъ.

Когда ты видишь, что онъ вертитъ правой и лѣвой руками и долго третъ ихъ, знай, что онъ хорошій стрѣлокъ (персидскими) стрѣлами.

Когда ты видишь, что онъ склоняетъ голову къ плечамъ, знай, что онъ хорошо поражаетъ копьемъ.

Когда ты видишь, что человѣкъ вращаетъ безъ причины глазнымъ бѣлкомъ и поднимаетъ его, такъ что скрывается зрачекъ, знай, что онъ хорошій стрѣлокъ (арабскими) стрѣлами.

Когда онъ дѣлаетъ это, а зубы его стучатъ, слышны хрипъ и скрежетъ, то онъ боязливый, трусъ.

Когда руки его дрожатъ и тѣло трясется, знай, что онъ храбрый, хорошій стрѣлокъ, но что у него хвастовство, сумасшествіе или болѣзнь.

Говоритъ онъ: слѣдуетъ изслѣдовать веселость человѣка, и когда ты видишь, что онъ ловокъ, подвиженъ, силенъ, то знай, что онъ (и) отваженъ.

Когда ты видишь человѣка съ закругленными членами (?), знай, что 60б
онъ отваженъ, хорошо стрѣляетъ, хорошо поражаетъ копьемъ.

Когда ты видишь человѣка разсѣяннаго, быстраго въ рѣчи, произносящаго отрывисто, заикающагося, косноязычнаго, знай, что онъ не пригоденъ для стрѣльбы и для пораженія (копьемъ); равно какъ, если у него судороги и подергиванье, а также если онъ сильно трясетъ головой; и если слаба рука человѣка или перестала дѣйствовать, не годится онъ для бѣга и движенія.

Когда ты видишь человѣка, горячо разсказывающаго и при этомъ, какъ бы вызывая на отвѣтъ, вскакивающаго къ твоимъ услугамъ, знай, что онъ опытенъ въ вопросахъ и отвѣтахъ.

Когда ты видишь человѣка, переспрашивающаго твой разсказъ, знай, что онъ желаетъ точнаго указанія и опытенъ въ тайнахъ отвѣтовъ.

Когда ты видишь человѣка, который, когда разсказываетъ тебѣ, какъ бы споритъ съ тобою, знай, что онъ ловокъ, уменъ, золъ, иногда-же это бываетъ отъ глупости и неразумія.

Когда ты видишь человѣка любезнаго и внимательнаго, знай, что онъ желаетъ отвѣта съ доводами.

Когда ты видишь человѣка, сознающагося въ невѣжествѣ, то это сознаніе хорошо для него.

Когда ты видишь кичливаго, изъявляющаго претензію на большее, чѣмъ онъ умѣетъ, знай, что онъ неразуменъ, невѣжественъ.

Къ условіямъ правильности бесѣды принадлежитъ пониманіе всту-
61а пающимъ въ бесѣду своевременности ея, такъ какъ отъ пониманія этого зависитъ правильный выборъ времени.

Когда ты видишь бесѣдующаго уравновѣшеннымъ въ рѣчи, знай, что онъ избавилъ отвѣчающаго ему отъ обиды въ отвѣтѣ и несправедливаго отношенія для того, чтобы не было препятствій (третьему), разбирающему лицу, разсудить его съ собесѣдникомъ и различить разнаго рода пріемы его въ рѣчи . . . . [1])

Говоритъ онъ: когда ты видишь его также уравновѣшеннымъ въ словахъ, знай, что онъ оставилъ лишнее въ обнаруженіи мысли и въ скрываніи ея, въ осторожности и избѣганіи настойчивости, въ суровости, благосклонности, несправедливости, поспѣшности, и что онъ бесѣдуетъ, размысливъ, хорошо обдумавъ, съ искренними, хорошими порывами.

Когда ты видишь, что (человѣкъ) говоритъ и проситъ засвидѣтельствовать рѣчь его, а иногда приводитъ клятвы, то уже смѣшалъ онъ истину съ ложью, потребовалъ свидѣтельство относительно неизвѣстнаго, и говоритъ сообразно (лишь) со своими мыслью и воображеніемъ.

Къ хорошимъ качествамъ рѣчи (принадлежатъ): признать истиной ея произнесеніе, остерегаться вреднаго въ ней и лжи, приводить доказательства и вѣрный примѣръ, выставлять одобряемое и принимаемаемое, сравнивать подходящія и сходныя вещи, начинать ее по существу, во время, правдиво [2]).

61б Говоритъ онъ: къ хорошимъ качествамъ доставленія письма (принадлежатъ) тѣ же пріемы, которые я описалъ тебѣ относительно разговора, такъ какъ онъ собственно замѣняетъ письмо, только слѣдуетъ доставляю-

---

1) Слова في حسن دعيّه остаются намъ не ясными.

2) Заключеніе фразы мы переводимъ условно, такъ какъ въ текстѣ недостаетъ глагола.

щему письмо беречь порученное ему, хотя бы и старался при разговорѣ войти въ довѣріе нуждающійся въ немъ [т. е. письмѣ].

Говоритъ онъ: когда ты видишь человѣка много интригующаго и обманывающаго въ жизни, знай, что это не можетъ быть привычкой человѣка съ характеромъ хорошимъ, смиреннымъ, уступчивымъ.

Кто привыкъ къ смиренію и покорности, не въ обычаѣ у того запрещеніе, отказъ, прикрытіе предлогами.

Въ чьемъ нравѣ—щедрость, великодушіе и т. п. . . .

Отдѣлъ о разгадываньи по произнесенію (словъ), молчанію, голосу, рѣчи и т. п.

Говоритъ онъ: Хосрои разгадывали въ пустомелѣ, многорѣчивомъ — низкаго, презрѣннаго (человѣка); въ много льстящемъ — коварнаго; въ мягко говорящемъ, тихо излагающемъ, сладкорѣчивомъ — дурного; въ долго молчащемъ, мало говорящемъ, — хитреца или порочнаго; въ быстро говорящемъ, — сердитаго; въ заикѣ, грубо и плохо говорящемъ, — упрямаго или несовершеннаго.

Они говорили: неспособность выражать свои мысли — неясность въ 62a
понятіяхъ, бормотанье въ языкѣ, изъянъ въ изложеніи.

Они говорили: всякій многорѣчивый — малопонятливый пустомеля.

Они говорили: кто много говоритъ — мало дѣлаетъ.

Они говорили: остерегайся всякаго, кто говоритъ больше, чѣмъ дѣлаетъ, и остерегайся льстеца, не основывайся на словахъ его и не вѣрь ему.

Кто много говоритъ, не хорошъ въ дѣлѣ своемъ.

Кто много молчитъ и мало говоритъ, взоръ того думаетъ и молчаніе размышляетъ.

Эти качества свойственны ученымъ и мудрецамъ.

Если же человѣкъ не бываетъ ни тѣмъ, ни другимъ, то молчаніе является неспособностью къ изложенію, размышленіе — нерадѣніемъ, соображеніе — безпечностью. Это свойства глупцовъ и невѣждъ.

Говорятъ мудрецы: для каждой вещи извѣстны смыслъ и польза, кромѣ размышленія безумцевъ: мудрый, размышляя, принимаетъ въ соображеніе и испытываетъ; невѣжда, размышляя, растеривается и смущается. Арабы говорятъ: такой-то — пустомеля и рѣчь его вздоръ и вранье, если нѣтъ отъ нея пользы. И когда порицаютъ человѣка говорятъ: онъ говоритъ больше, чѣмъ дѣлаетъ и дѣлаетъ меньше, чѣмъ говоритъ. И сказано: «Когда умолкаютъ, чтобы слушать рѣчь, они говорятъ, и хорошо говорятъ; но (часто) за хорошимъ словомъ слѣдуетъ противорѣчащее дѣяніе.

Они порицаютъ земную жизнь, а сами сосутъ ее, (поглощая) безъ остатка [букв. пока не потечетъ наростъ на вымени]».

62б Глава о физіономикѣ: (гаданію) по знакамъ тѣла человѣка, головы, волосъ и т. п.

Говоритъ Абу ʿУсмāнъ ал-Джāхизъ: Знай, что вещи, познаваемыя чувствами, познаются однимъ изъ пяти чувствъ, именно: зрѣніемъ, слухомъ, обоняніемъ, вкусомъ, осязаніемъ. И вещи, познаваемыя ими, двухъ видовъ: несомнѣнныя и доказываемыя. Доказываемый видъ тотъ, который нуждается въ приведеніи доказательства, свидѣтельства, указанія и разъясненія, чтобы упрочиться и утвердиться въ умѣ и стать, какъ бы воспринятымъ чувствами; это случается съ отвлеченными вещами. Несомнѣнный же видъ воспринимается пятью чувствами, о которыхъ мы только что упомянули. (Итакъ), въ этихъ (вещахъ во-первыхъ отмѣчаются) тѣ, относительно которыхъ (всѣ) согласны,—знатные и простые, умные и глупые—и относительно которыхъ не нужно приведенія доказательствъ, и (во-вторыхъ) тѣ, которыя ясны для однихъ и сокрыты отъ другихъ, и нуждаются въ (разборѣ) учеными, людьми опыта и сужденія. Для этого-же человѣкъ (долженъ) быть хорошо воспринимающимъ чувствами и мыслями, проницательнымъ, опытнымъ, многознающимъ; чтобы онъ, увидѣвъ (отличительный) знакъ человѣка, особен-
63а ность его темперамента или его движеніе, и услышавъ рѣчь его или увидѣвъ поступки, позналъ бы главную составную часть его, о которой и не думаетъ масса людей. Это познаетъ лишь человѣкъ съ сильной душой или долгимъ опытомъ.

Изъ этого (приведемъ слѣдующіе примѣры): Если ты видишь человѣка, быстраго въ движеніяхъ, быстро запоминающаго, то знай, что онъ забывчивъ, и пропадаетъ (изъ его ума) то, что онъ запоминаетъ.

А медленный въ движеніи всего лучше запоминаетъ вещи и наименѣе забывчивъ.

Поэтому (же) говорятъ: Когда въ темпераментѣ человѣка побѣждаетъ черная желчь, — глубока мысль его, хорошо у него сужденіе, продолжительна и устойчива (?) память, а это отъ тяжести и постоянства движеній, которыя, когда тверды, сохраняютъ (равновѣсіе) частей тѣла. Поэтому обладающій черной желчью (въ темпераментѣ) имѣетъ медленное біеніе пульса, имѣетъ тонкія вены, мало подвиженъ, и темпераментъ его имѣетъ пользу въ движеніи и силенъ въ немъ.

Когда ты видишь, что вены человѣка сильно бьются, лицо красно, волосы стоятъ, то это указываетъ на смѣлость и подвижность, и человѣкъ въ такомъ положеніи скоро подвергается болѣзнямъ, перемѣнчивъ, не

твердъ въ жизни, въ обѣщаніи, въ обязательствѣ, преобладаютъ въ немъ ложь, обманъ, неправда; много онъ совокупляется, иногда (же и) развратенъ.

Когда при этомъ дрожитъ голова его, это указываетъ на болѣзнь или путешествіе.

Если стоятъ прямо волосы на головѣ его, указываетъ это на ра- 63б
зореніе.

Если дрожитъ правая сторона и волосы стоятъ, это указываетъ на большое благо.

Влажность съ жаромъ и полнокровіемъ указываютъ на (появленіе) судорогъ.

Говоритъ онъ: И когда бываетъ въ лицѣ, щекѣ, половинѣ головы и шеѣ (судорога), это указываетъ на параличъ и апоплексію, и обладающій этимъ не бываетъ здравомыслящимъ, а ослѣпленъ въ сердцѣ, со злобой и алчностью въ душѣ, съ завистью въ печени, съ печалью въ груди, съ болѣзнью въ членахъ, со злобой во внутренностяхъ.

Говоритъ онъ: когда ты видишь, что вены человѣка быстро бьются, нѣтъ въ лицѣ его красноты, и видишь, что у него преобладаютъ желтизна и сухость губъ, то господствуетъ у него желтая желчь, онъ быстро движется, мало помнитъ, мало вспоминаетъ, быстро забываетъ, преобладаютъ у него горячность и зло, онъ — трусъ трепещущій, отчаявающійся, сильно остерегающійся. И если ты видишь при этомъ дрожь правой стороны его головы, то знай, что онъ отчаянный трусъ.

Когда на лицѣ человѣка родимое пятно, или много пятенъ, или на глазахъ и щекѣ его краснота, похожая на (получаемую отъ) пощечины или на родимое пятно, и тому подобное, слѣдуетъ остерегаться и опасаться его.

Когда передняя часть головы обнажена отъ волосъ, то этотъ чело- 64а
вѣкъ съ хорошей природой, благороденъ душой, а когда закрыта, то человѣкъ (этотъ) недостойный, тяжелый, глупый, неблагородный.

Арабы порицаютъ длинные волосы и хвалятъ недостатокъ волосъ и отсутствіе ихъ на вискахъ, и говорятъ, что это свойство благородныхъ и отважныхъ. Сказалъ поэтъ: «Если раздѣлитъ насъ судьба, не выходи ты замужъ за человѣка, съ волосами на затылкѣ и лицѣ, не лишеннаго волосъ на вискахъ». И когда волосы на затылкѣ и лицѣ, то это еще болѣе безобразно и отталкиваетъ.

Говоритъ онъ: когда ты видишь, что вены лица бьются и сильно движутся[1]), это указываетъ на большое зло.

---

1) Вставная фраза текста «и когда онѣ остаются на лицѣ (и) ты видишь ихъ бьющимися» не вполнѣ мнѣ понятна въ данномъ мѣстѣ.

Когда вены обозначаются на лицѣ краснотой, это указываетъ на дурную душу и силу ея.

Говоритъ онъ: если же это бываетъ при желтомъ цвѣтѣ (лица), то указываетъ это на ничтожество души, холодъ темперамента, холодъ ощущенія, малую способность различать (вещи). Иногда же (этотъ человѣкъ) бываетъ сильнымъ.

Ухо не движется. Когда же ты видишь человѣка, двигающаго ухомъ по желанію, знай, что онъ алченъ, съ собачьей душой, въ немъ качество дикаго звѣря (соединяется) съ ничтожностью, онъ трусъ, алченъ, низокъ.

Говорятъ нѣкоторые спеціалисты въ физіономикѣ: когда ты видишь,
64б что человѣкъ движетъ ушами, когда желаетъ, знай, что у него собачья натура съ большой трусостью и низостью души.

Говоритъ онъ: когда ты видишь, что волосы растутъ въ ухѣ, знай, что (человѣкъ этотъ) долго проживетъ.

Когда ты видишь маленькое, крошечное ухо, это указываетъ на хорошее качество души и натуры, любезность.

Когда бываетъ оно большимъ, это указываетъ на низость (натуры), и иногда бываетъ (этотъ человѣкъ) порочнымъ или вороватымъ и т. п.

Говоритъ онъ: когда вены человѣка спокойны и вѣки опущены, склонены, преобладаетъ въ немъ влажность, онъ глупый, мало думающій, изобилующій страстями и забывчивостью.

Говоритъ онъ: и если такъ, а въ глазу его ячмень или бѣльмо, то это указываетъ на глупость съ алчностью души, низостью помысла, сильной скупостью.

Когда ты видишь при этомъ, что правые щека, глазъ и (правая сторона) губы трясутся, это указываетъ на благо; если же лѣвые, то это указываетъ на зло, которое постигнетъ, и слѣдуетъ опасаться его.

Говорятъ спеціалисты въ (изученіи) судорогъ и (тому подобныхъ) знаніяхъ: когда дрожитъ шея, это указываетъ на бѣдствіе и горе, которыя постигнутъ человѣка.

Говорятъ спеціалисты въ физіономикѣ: когда длинна и узка шея, человѣкъ глупъ, мало вспоминаетъ и думаетъ.

Если она слаба или крива, то это указываетъ на заблужденіе сердца,
65а глупость, небрежность.

Говоритъ онъ: когда трясется плечо, то это указываетъ на власть, санъ, высокій постъ и т. п.

Говоритъ онъ: и когда между плечами родинка или веснушка, то это указываетъ на превосходство или на начальствованіе и высокое мѣсто.

И также когда бываютъ (онѣ) подъ мышкой, то это указываетъ на славу и достоинство.

Когда въ родинкѣ волосы, это указываетъ на силу души, крѣпость ея, на смѣлость, превосходство, отвагу.

Когда дрожитъ находящееся между плечами родимое пятно, то это указываетъ на великое дѣло, которое получитъ человѣкъ, и большое повышеніе, а иногда указываетъ на большую власть.

Говоритъ онъ: когда дрожитъ правое плечо, это указываетъ на то, что что-бниудь попадетъ человѣку въ руки и на благо, которое онъ получитъ.

А когда (дрожитъ) лѣвое (плечо), то это указываетъ на потерю, которая постигнетъ его.

Если будетъ на лѣвомъ (плечѣ) веснушка или родинка, это указываетъ на благо, равно какъ и на правомъ также указываетъ на благо.

Когда дрожитъ правый локоть, то это указываетъ на большое благо, иногда же указываетъ на отвагу и силу.

Если будетъ на немъ веснушка или родинка, то это указываетъ на силу души, высоту помысла, благо, которое получитъ человѣкъ.

Если же будетъ на лѣвомъ, то это указываетъ на обратное.

Когда дрожитъ животъ, это указываетъ на радость и большое веселіе человѣка, и если на немъ [т. е. животѣ] будутъ веснушки или родинка, то это указываетъ на благо. 65б

Говоритъ онъ: и если это женщина, то это указываетъ на обиліе потомства, и при томъ мужского.

Говоритъ онъ: если вены сухи, то преобладаютъ въ человѣкѣ холодность, сухость, глупость, забывчивость, и если у него веснушка или родинка, то это еще больше подтверждается.

Когда волосы головы закручиваются, указываетъ это на горе человѣка, большую усталость, тайную озабоченность, а иногда указываетъ и на глупость.

Говорятъ физіономисты: воспоминанія всего больше у стариковъ, память всего быстрѣе у юношей.

И говорятъ другіе: юность въ полномъ расцвѣтѣ и быстрота движенія мѣшаютъ твердости памяти и не мѣшаютъ быстротѣ ея, потому что у быстраго въ движеніи нѣтъ твердости, а у стариковъ она тверже. Поэтому ты видишь, что старикъ держится одного мнѣнія и убѣжденія, потому что опытъ старика сильнѣе опыта молодого, а быстрота молодого сильнѣе быстроты старика и сообразно съ силами его проявляется быстрота его въ усиліяхъ къ движенію.

Говоритъ онъ: когда сильно движеніе, дѣлается разжиженіе крови, потому что отъ движенія (получается) разжиженіе крови и слабость ея, а при слабости ея разливается она и высушиваетъ ее природный жаръ.

Говоритъ онъ: въ старикѣ холодъ, влажность, медлительность; ему
66а надо много воспринимать, а память его слаба, (хотя) воспоминаніе сильно, и всякій разъ, когда хочетъ онъ ускорить движеніе, оно совсѣмъ не удается ему, и овладѣваютъ имъ газы и воспаленіе, и приводятъ его къ легкомыслію и безразсудству.

Глава о знакахъ въ человѣкѣ—о родинкахъ и веснушкахъ.

Говоритъ онъ: знай, что не стираются знаки въ природѣ человѣка, и если человѣкъ старается скрыть и спрятать ихъ, природа проявляется и обнаруживается. И неизбѣжно обнаруживаетъ природу человѣка Всевышній Богъ въ дѣяніи, движеніи и жестахъ его. И Коранъ уже разъяснилъ это, и изложилъ, и указалъ объясненіе для пророка (да благословитъ его Богъ и да спасетъ!). И сказалъ Всевышній: «Если бы мы желали, мы указали бы ихъ тебѣ; ты узнаешь ихъ по знаку ихъ, ты узнаешь ихъ по тону ихъ рѣчи» [Коранъ, 47,32]. И сдѣлалъ онъ слово признакомъ, и сдѣлалъ онъ знакъ (тоже) признакомъ. Сказалъ поэтъ: «Все, что имѣется въ природѣ человѣка, хотя бы онъ считалъ это скрытымъ отъ людей, (все) узнается». Признакъ человѣка указываетъ на хорошее, дурное, низкое, честное, вѣрное и т. п. въ природѣ его.

Говоритъ онъ: это приводятъ физіономисты какъ доказательство,
66б сравнивая природу человѣка и признаки всего тѣла его.

Говорятъ они: когда велика голова, это указываетъ на обиліе головного мозга и костяного мозга, на влажность, на умъ человѣка. И когда мала голова, указываетъ это на глупость, легкомысліе. Арабы называютъ (человѣка) съ маленькой головой «са'ль»; онъ у нихъ порицается, обладающій ею не родовитъ, трусливъ, скупъ, похожъ головой на страуса, такъ какъ страусъ малоголовъ, быстро убѣгаетъ, очень трусливъ. Сказалъ поэтъ: «Малоголовый (страусъ постоянно) возвращается въ Зу-л-'Ушайру, къ своимъ яйцамъ, видомъ похожъ на носящаго длинную шубу, корноухаго раба».

Говоритъ онъ: Когда на головѣ два пучка волосъ и въ нихъ веснушка или родинка, человѣкъ будетъ утомленъ, опечаленъ.

Когда на головѣ мало волосъ, это также указываетъ на усталость, озабоченность, взволнованность.

Если будетъ родинка между глазами, надъ правой частью лба, то человѣкъ этотъ—прелюбодѣй, развратникъ, не долго живущій, съ дурными правилами.

Если будетъ она надъ лѣвой стороной лба, то человѣкъ утомится и достигнетъ власти съ усталостью, затрудненіемъ, тяготой.

Говоритъ онъ: когда родинка надъ правымъ вѣкомъ, то человѣкъ искусный мастеръ во всякомъ дѣлѣ.

Когда она надъ лѣвымъ, человѣкъ (этотъ) благочестивъ, праведенъ, 67а
богобоязненъ.

Когда она въ основаніи уха, то онъ имѣетъ злой характеръ, споритъ съ родственниками.

Если родинка черна, то онъ праведенъ и получитъ главенство, и указываетъ это на отвагу.

Если она слѣва, вся жизнь его будетъ въ печали.

Когда она въ основаніи носа, на краю глаза, у него много враговъ.

Если будетъ она на лѣвой сторонѣ лба его и надъ плечомъ, то это человѣкъ обиженный, (но) получающій главенство.

Если будетъ родинка между глазами его, онъ будетъ важнымъ, внушающимъ страхъ, любимымъ, и (вмѣстѣ съ тѣмъ) знающимъ, праведнымъ.

Если родинка будетъ надъ верхушкой плеча, праваго или лѣваго, будетъ человѣкъ долго жить и переживетъ всю свою семью.

Если будетъ она на соединеніи лѣваго плеча съ шеей или съ рукой, будетъ жизнь его гибельна и утомительна.

Если будетъ она на (соединеніи) праваго, онъ достигнетъ высокаго поста.

Если будетъ она на правой сторонѣ носа, онъ будетъ богобоязненнымъ, праведнымъ.

Если же на лѣвой, будетъ онъ усталымъ, мученикомъ.

Если будетъ она надъ правой щекой, онъ будетъ занятымъ, усталымъ, и достигнетъ блага лишь послѣ большого утомленія.

Если будетъ она на краю праваго уха, человѣкъ этотъ будетъ опечаленъ, утомленъ, слабъ.

Если будетъ она на краю лѣваго, сверху или снизу, это указываетъ на 67б
большое благо и большую радость.

Если будетъ она на краю верхней губы слѣва, указываетъ это на любовь женщинъ и страсть ихъ.

Если будетъ она на концѣ носа его, то не будутъ жить у него дѣти, а онъ (самъ) будетъ жить долго.

Если будетъ она подъ концомъ носа, онъ будетъ жертвой хитростей, (но) люди полюбятъ его (въ концѣ концовъ) и склонятся къ нему.

Если будетъ на горлѣ родинка или веснушка, то это указываетъ на большое благо, душевную радость, хорошее качество природы.

Если будетъ она на горловомъ хрящѣ, это указываетъ на путешествіе и удаленность.

Если будетъ она на правой сторонѣ шеи, то это самое сильное указаніе на путешествіе и удаленность.

Если будетъ она на задней сторонѣ шеи его[1]), слѣва, на соединеніи съ рукой, будетъ онъ богатъ, утомленъ, владѣть скотомъ, верблюдами, пашнями, хлѣбомъ.

Когда будетъ она на соединеніи съ рукой праваго плеча, указываетъ это на долгую жизнь, хорошее существованіе.

Если будетъ она на лѣвомъ, то это указываетъ на то, что онъ будетъ владѣть скотомъ, пашнями, земельными угодьями, возвышеннымъ положеніемъ.

Если будетъ она близъ праваго локтя, и при этомъ будутъ отмѣтки, это указываетъ на горе и заботу отъ родителей.

68a Если будетъ она на правомъ и лѣвомъ плечахъ, это указываетъ на большую славу, возвышеніе среди близкихъ и пользующихся извѣстностью.

Если будутъ родинка и веснушки на груди его, надъ сосцами, (темныя) всѣ какъ смола, быть ему главой дома и начальникомъ надъ сородичами.

Если будутъ родинка, или веснушки, или отмѣтки, на животѣ человѣка, онъ получитъ большое благо и избавится отъ зла, если пожелаетъ Всевышній Богъ.

Говоритъ онъ: если будетъ родинка съ лѣвой стороны задняго прохода, то это указываетъ на злобу, и достигнетъ онъ важнаго дѣла.

Если будетъ родинка на сердцѣ, и будетъ она очень чернаго цвѣта, то человѣкъ этотъ развратный, дурной, торопливый, легкомысленный, очень глупый и жадный.

Если будетъ она на животѣ, то этотъ человѣкъ прелюбодѣй, съ низкой душой, завистливый, очень хитрый.

---

1) Это значеніе رقبة я вывожу изъ слѣдующихъ словъ анатомическаго трактата въ изданіи P. de Koning, Trois traités d'anatomie arabe par Muḥammed ibn Zakariyyā al-Rāzī, ʿAli ibn al-ʿAbbas et ʿAli ibn Sīnā, texte inédit de deux traités, trad. de —, Leide, 1903, 122—123: و عظم الصلب ينقسم الى أربعة أجزآء أحدها العنق و هو الرقبة والثانى الظهر و هو العظم العريض والثالث الحقو و يقال له القطن و الرابع العجز т. е. позвоночный столбъ дѣлится на четыре части: 1) шея т. е. *ракаба*, 2) спина, 3) поясница, наз. *катанъ* и 4) крестцовая кость. См. также Bollettino italiano degli studii orientali, Nuova Serie, Num. 7, 134.

Если будетъ она на пупѣ, то этотъ человѣкъ прелюбодѣй, любимый, и получитъ власть и господство.

Если будетъ она на животѣ, въ мѣстѣ пояса, спереди, будетъ онъ со слабымъ сердцемъ, со скверным положеніемъ, съ дурной жизнью, прелюбодѣемъ.

Если будетъ она слѣва, человѣкъ (этотъ) трусъ, боязливъ, (но) благочестивъ.

Если будетъ родинка или черный знакъ подъ мышками, то человѣкъ этотъ будетъ имѣть счастье, славу, господство и властвовать надъ 68б
своими.

Если будутъ родинка или веснушки на спинѣ человѣка, то онъ педерастъ, (но) красивый и съ хорошей душой.

Если будутъ онѣ съ правой стороны спинного хребта, попадетъ онъ на языкъ враговъ своихъ.

Если будетъ черный знакъ надъ частью спины, прилегающей къ спинному хребту, то человѣкъ этотъ будетъ пораженъ въ умѣ.

Если будетъ родинка въ серединѣ спинного хребта, справа, получитъ онъ власть и славу.

И если слѣва, постигнутъ его безславіе и позоръ.

Если будетъ она на спинѣ его, съ лѣвой стороны, положеніе его будетъ затруднительно и онъ будетъ нуждаться въ людяхъ.

Если будетъ родинка на одной изъ ягодицъ его, то это указываетъ на смерть кого-нибудь изъ семьи его и на то, что онъ переживетъ ихъ.

И если это будетъ женщина, то умретъ человѣкъ, который дорогъ ей.

Если будетъ черный значекъ или черная веснушка на ляшкѣ, на сторонѣ обращенной къ другой ляшкѣ, человѣкъ будетъ богатъ, достигнетъ славы, власти, блага, возвышеннаго положенія.

Если будутъ они на правой сторонѣ, то созданъ онъ для того, чтобы быть могущественнымъ царемъ и сильнымъ правителемъ.

Говоритъ онъ: если будетъ родинка на правой сторонѣ или черная точка въ верхней части правой ляшки, то человѣкъ этотъ будетъ великодушенъ, будетъ любить славу, восхваленіе, неразуміе, глупость и будетъ считаться глупымъ, безумнымъ[1]).

Если будетъ она на правомъ колѣнѣ, ближе къ низу, указываетъ это на 69а
порокъ въ немъ.

Если будетъ она на членѣ, то человѣкъ этотъ отважный, умѣло сражающійся.

---

1) Переводъ этой фразы условенъ; возможно, что текстъ въ этомъ мѣстѣ попорченъ.

Если будетъ она на верхней части лѣвой ляшки, то человѣкъ этотъ философъ, мудрецъ.

Если будетъ она на лѣвомъ колѣнѣ, получитъ онъ важный постъ, богатство, имущество.

Если будутъ (родинки) на обоихъ колѣнахъ, будетъ онъ во главѣ своихъ, предводителемъ ихъ, владѣть достаткомъ и богатствомъ.

Если будутъ онѣ на голеняхъ его, это указываетъ на путешествіе, злополучіе, странствіе, усталость.

Если будутъ онѣ на пяткахъ его, будетъ онъ во главѣ своихъ и другихъ людей, мастеръ во всякомъ ремеслѣ, во всякомъ вопросѣ, котораго коснется, искуснымъ во всемъ, что дѣлаетъ.

Если будетъ черная точка на ступняхъ его, это указываетъ на большое утомленіе, необходимость приводить извиненія въ (исполненіи разнаго рода) дѣлъ, на незначительное количество мысли и знанія, на слѣпоту сердца.

Если будетъ она на рукахъ его, (это указываетъ на то, что) онъ переселится.

Если будетъ она на лѣвой кисти, будетъ онъ скромнымъ, праведнымъ, стыдливымъ.

Если будетъ въ нижней части ноги его черный знакъ, будетъ онъ измѣнчивъ въ своемъ мнѣніи.

И если это будетъ женщина, то она будетъ разносить сплетни или будетъ порочна.

Знаки въ женщинахъ.

Тѣ женщины, на груди которыхъ будетъ черная или красная родинка, на подобіе пуговицы рубашки, похоронятъ перваго и второго мужа и нѣкоторыхъ дѣтей.

69б Та (женщина), у которой будетъ черный знакъ, или (отмѣтка) въ родѣ маленькой пуговицы рубашки или чечевичнаго зерна, у корней рѣсницъ ея глазъ, такая женщина убѣжитъ отъ мужей и возненавидитъ ихъ, будетъ жестокосердой, грубой.

Говоритъ онъ: та, у которой на груди или на бедрѣ будетъ черный знакъ, имѣетъ хорошую душу, любитъ хорошее и благополучное для каждаго, благочестива, религіозна.

У кого изъ женщинъ или мужчинъ черный знакъ, или родинка, или точка, или черная или красная веснушка, на одной сторонѣ носа, тѣ будутъ богаты, благополучны, праведны, будутъ любить все хорошее и полезное. И Богъ знаетъ все лучше всѣхъ!

Глава о познаніи дрожанія и біенія венъ.

Говорятъ: (когда) у кого-нибудь дрожитъ темя или черепъ головы, это указываетъ на болѣзнь или путешествіе. Говорятъ нѣкоторые изъ мудрецовъ: это указываетъ на высоту помысловъ и на то, что онъ достигнетъ высокаго положенія.

Когда у кого-нибудь дрожитъ кожа на головѣ или встаютъ волосы на ней, это указываетъ на разореніе. И нѣкоторые говорятъ: это указываетъ на безсердечность, плохую природу, трусость, боязливость.

Когда дрожитъ правая сторона головы, это указываетъ на грядущее благо.

Если же лѣвая, это указываетъ на разореніе.

Когда бьются вены головы и висковъ, это указываетъ на скорую 70а
болѣзнь отъ крови и жара, и указываетъ (также) на страхъ, боязливость и безсердечіе человѣка.

Когда дрожитъ лобъ и бьются въ немъ многія вены, это указываетъ на горе и печаль или на воспаленіе глазъ, происходящее отъ крови.

Если у кого-нибудь дрожитъ правая сторона лица, это указываетъ на благо.

Если же лѣвая, то указываетъ на зло.

Когда дрожитъ середина лица, это указываетъ на горе и печаль.

Если дрожитъ глазное вѣко, это указываетъ на благо.

Когда движутся и бьются вены лица и вѣкъ, безъ дрожи (?) и безъ причины, (этотъ человѣкъ) дурной, клеветникъ, поноситель, чернящій и злословящій людей.

Когда дрожитъ край носа, это указываетъ на разореніе.

Если движутся вены губъ и носа, безъ дрожи (?), и біеніе ихъ сильно, или появляется при этомъ краснота, то это указываетъ на болѣзненныя измѣненія въ лицѣ и глазѣ.

Если (будетъ это) безъ красноты, нужно опасаться человѣку, что лицо его перекосится и свернется на сторону.

Подобное этому (бываетъ) также, если движется челюсть.

Когда дрожитъ правое ухо, это указываетъ на благо и добро.

Когда лѣвое, то это указываетъ на печаль и разореніе.

Если движутся вены его, безъ дрожи (?), это указываетъ на боль или поврежденіе, которое случится въ ушномъ каналѣ и язвы, которыя появятся въ головѣ.

Если дрожитъ шея, это указываетъ на утомленіе и усиліе. 70б

Если бьются вены ея [т. е. шеи], это указываетъ на крѣпкую (?) кровь или на грядущее событіе.

Если дрожатъ плечи, это указываетъ на власть и славу.

Если безъ дрожи трепещутъ (?) они, это указываетъ на грядущій страхъ или холодную болѣзнь.

Если дрожитъ середина бороды и трепещетъ подбородокъ, это указываетъ на благо.

Если движутся тамъ вены безъ дрожи (?), это указываетъ на то, что кровь прилила отъ головы.

Если дрожитъ правая часть рта подъ бородой, это указываетъ на благо.

Если слѣва, это указываетъ на зло, и считается дурнымъ.

Если движутся въ немъ [т. е. во ртѣ] вены, безъ дрожи (?), это указываетъ на разстройство слизей, спустившихся отъ головы къ бородѣ и къ челюстямъ, и ему хорошо пустить кровь—кровососной банкой или (простымъ) кровопусканіемъ.

Когда дрожатъ члены, это указываетъ на страхъ, боязнь, трусость.

Если же двигаются въ нихъ [т. е. въ членахъ] вены, безъ дрожи (?), или . . . . . въ локтяхъ, это указываетъ на теченіе крови въ венахъ.

Когда дрожитъ правый локоть, это указываетъ на благо.

Если же лѣвый, то указываетъ это на зло и потерю.

Когда дрожитъ животъ, это указываетъ на большую радость. И если это упрочивается въ немъ, и дѣлается привычкой, этотъ человѣкъ—похотливъ, возбудимъ, любитъ соитіе и совокупленіе.

71a И если это женщина, то она любитъ похотливость, наслажденіе, рожаетъ дѣтей мужского пола.

И также дрожаніе пупа сильнѣе указаніемъ для женщинъ, чѣмъ для мущинъ въ отношеніи совокупленія и наслажденія.

Дрожаніе ягодицъ и ляшекъ указываетъ на радость.

Дрожаніе голеней указываетъ на усталость сердца и печаль.

У кого дрожатъ ступни и лодыжки, тотъ усталъ сердцемъ, обезсиленъ душой. И Богъ знаетъ все лучше.

Глава о сужденіяхъ Индійцевъ, ихъ гаданіи, физіономикѣ, познаваніи ими будущаго.

Знай, что у Индійцевъ, въ сокровищницахъ ихъ царей (имѣется) книга сужденій, въ которой они возводятъ (эти сужденія) къ старымъ принципамъ и ученіямъ. Большая часть ея (лишь) предположеніе, фантазія, представляющаяся имъ случайность, такъ какъ нѣтъ прочнаго доказательства для большей части того, о чемъ они говорятъ. И у нихъ также книга «Джафръ», по которой они судятъ о дѣлахъ, вершающихся въ (теченіе) года,

и ищутъ они указаній для познаванія этого въ стоянкахъ луны за каждую ночь. Ихъ двадцать восемь стоянокъ, пока не сдѣлается (луна), какъ согнувшаяся старая вѣтвь пальмы. [Ср. Коранъ, 36,39: т. е. пока не станетъ она походить на засохшую вѣтвь пальмы, изгибающуюся въ видѣ серпа]. Они судятъ по ней [т. е. по лунѣ] всякій разъ, какъ она увеличивается или уменьшается, поднимается и опускается, противопоставляя (это положеніе луны) ея предшествовавшему (положенію). У нихъ сужденіе по четыремъ вѣтрамъ, по дуновенію съ сѣвера, юга, востока и запада, и по облакамъ, въ измѣненіи 71б
ихъ цвѣтовъ. Изъ этого узнаютъ они признаки голода, плодородія, дороговизны, дешевизны, благополучія, страха, измѣненія правительствъ и возбужденія мятежей.

У нихъ познаваніе будущаго, отличное отъ арабскаго. Это (различіе заключается) въ томъ, что Арабы, когда познаютъ будущее, слушаютъ воркованіе голубей, или голосъ птицъ, или внезапное появленіе животныхъ, благополучный или неблагополучный проходъ ихъ, или трескъ деревьевъ, или вѣяніе вѣтра или т. п., то судятъ по этому и не нуждаются при этомъ (еще) во второмъ доказательствѣ, — познаваніи (будущаго) изъ восходящей или заходящей звѣзды, или заходящаго (солнца), или положенія луны въ станціи счастливой или противуположной счастью т. е. злополучной, въ (положеніи) «соединенія», «учетверенія», «утроенія», и не опираются ни на что подобное, — Индійцы же познаютъ будущее, выводятъ предзнаменованія и ищутъ указаній въ земныхъ явленіяхъ, соединяя ихъ съ небесными. Они смотрятъ на луну, на ея знакъ зодіака и станцію, восходитъ ли она или заходитъ, (на то) гдѣ несчастная и счастливая (звѣзда), какъ ея «приближеніе», «соединеніе», «разъединеніе», «возвращеніе» и т. п. И не судятъ они по одному явленію, — у нихъ много положеній, изъ которыхъ познаютъ они событія. У нихъ двадцать пять положеній, называемыхъ «положеніями звѣздъ», упомянутыя въ книгахъ о звѣздахъ, и нѣкоторые считаютъ ихъ пятнадцать, — какъ то: 72а
(положенія) «соединенія», «раздѣленія», «бросанія лучей», «обращенія одной звѣзды къ другой», «дальности ея», «близости», «любви ея», «ненависти», «возвращенія ея» и т. п. И у нихъ земныя указанія расположены въ таблицу въ двадцать пять положеній. Когда происходитъ какое-нибудь изъ нихъ, они смотрятъ гдѣ луна, въ какомъ знакѣ зодіака, въ какой станціи, и судятъ о счастьи его или несчастьи, благѣ и злѣ, напр. о крикѣ ворона, воѣ осла, лаѣ собаки. И если кричитъ воронъ, и луна въ хорошемъ положеніи, судятъ по тому, что видятъ, о счастьи. И если лаетъ собака, и луна въ скверномъ положеніи, судятъ по тому, что видятъ, о несчастьи. И кто хочетъ найти эти положенія, смотритъ ихъ въ таблицахъ. И мы уже упомя-

нули ихъ какъ диковинки, не приводя рѣшенія. Это — крикъ ворона, ревъ осла, лай собаки, трескъ крыши, паденіе птицы, пыланіе огня, хрипъ мула, ржаніе лошади, крикъ пѣтуха, голосъ птицы, шелестъ дерева, вѣянье вѣтра, голосъ мыши, мяуканье кошки, грызенье мышью платья [1]), угасаніе свѣтильника, пятно на одеждѣ, входъ въ домъ животныхъ, встрѣча съ....,
72б трескъ кресла и т. п. положенія. И сдѣлали они ихъ знакомъ и доказательствомъ. И стоянокъ луны двадцать восемь, изъ нихъ четверо сухихъ, вредныхъ, гибельныхъ, во время ихъ почти никогда не удается дѣло; это—ад-Дабарāнъ [4 станція], ал-Гафръ [15 ст.], ал-Кальбъ-ал-ʿакрабъ [18 ст.], ас-Саʿд-аз-зāбихъ [22 ст.]; и (изъ нихъ) четверо счастливыхъ, онѣ влажныя, указывающія на плодородіе; это—ас-Сурайя [Плеяды, 3 станція], аз-Зубра [11 ст.], ал-Джабха [10 ст.], Батн-ал-Хӯтъ [28 ст.]. И у Арабовъ (имѣются) признаки, по которымъ они узнаютъ дожди и вызывающее ихъ созвѣздіе, но не судятъ они по нимъ о добрѣ и злѣ. И когда кто-нибудь желаетъ знать это [т. е. признакъ], онъ выводитъ указанія относительно этого изъ книгъ о созвѣздіяхъ и (лунныхъ) стоянкахъ. И книгъ познаванія будущаго, физіономики, рѣшеній, сужденій и указаній много, и рѣшенія различны, и Богъ лучше другихъ знаетъ истину.

Глава о познаваніи по физіономикѣ, знакамъ, точкамъ, прыщикамъ и прочему, собранному изъ словъ мудреца Иппократа, въ переводѣ Хунейна-ибн-Исхāка.

Онъ говоритъ: Знай, что Всевышній Богъ сдѣлалъ (особый) знакъ для каждаго члена (тѣла) животныхъ и людей. Затѣмъ сдѣлалъ Онъ для этого знака и для этого члена покровъ здоровья и безопасности, и постоянно этотъ знакъ находится сокрытымъ подъ опущенной завѣсой, со-
73а храняемымъ за спущеннымъ покровомъ невредимости. Когда появляется (какой-либо) изъ этихъ знаковъ, то это указываетъ на приближеніе бѣдствія и появленіе ущерба, или на скорую смерть, или на приближающееся событіе. Говоритъ онъ: Иппократъ назвалъ эти знаки тайнами природы и приказалъ, чтобы они были положены съ нимъ въ могилу. И были они написаны на доскѣ, и положены съ нимъ (въ могилу). Говоритъ онъ: И когда пожелалъ Кесарь видѣть могилу Иппократа, онъ пришелъ къ ней для этого. И когда она (оказалась) разрушенной, онъ приказалъ возобновить ее, и при рытьѣ нашли въ ней ящикъ изъ слоновой кости, въ которомъ (была) плита съ этими знаками. И царь приказалъ возобновить ее, объяснить и пере-

---

1) Въ текстѣ еще прибавлено: «разрыванье платья نظائر الشرّ».

вести. И была она переведена и объяснена. И значилось тамъ слѣдующее.

Говоритъ Иппократъ: Когда на лицѣ больного нечувствительная опухоль, и лѣвая рука его большую часть времени положена на грудь, знай, что онъ умретъ черезъ двадцать три дня, особенно же если онъ въ началѣ болѣзни прикасается къ ноздрямъ своимъ.

Говоритъ онъ: И когда въ колѣняхъ больного сплошь крѣпкія, толстыя опухоли, знай, что онъ умретъ черезъ восемь дней, особенно если въ началѣ болѣзни появляется обильный потъ.

Говоритъ онъ: И когда на шейной венѣ, производящей сонъ, маленькій прыщъ въ видѣ точки, знай, что этотъ больной умретъ черезъ пятьдесятъ 73б
дней отъ начала болѣзни, и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни имѣетъ сильную жажду.

Говоритъ онъ: И когда на языкѣ крошечный прыщъ, похожій на песью муху или зернышко «хирва» [клещевина], знай, что человѣкъ этотъ умретъ въ этотъ день, и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ своей болѣзни страстно желаетъ горячихъ по существу своему вещей.

Говоритъ онъ: И когда на пальцахъ маленькій черный прыщъ, въ родѣ чечевичнаго зерна, который болитъ, знай, что человѣкъ умретъ черезъ два дня послѣ заболѣванія, и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни тяжелъ тѣломъ.

И когда на большомъ пальцѣ лѣвой руки или на большомъ пальцѣ лѣвой ноги затвердѣлый, небольшой прыщъ въ родѣ боба, темно-сѣраго цвѣта, не болящій, знай, что больной умретъ черезъ шесть дней отъ начала болѣзни, и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни очень измѣняется.

И когда на среднемъ пальцѣ правой ноги прыщъ золотистаго цвѣта, знай, что человѣкъ умретъ черезъ двѣнадцать дней послѣ болѣзни, и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни имѣетъ сильное желаніе (ѣсть) пикантныя вещи.

Говоритъ онъ: И когда ногти пальцевъ темно-сѣраго цвѣта, а на лбу 74а
кровавый прыщъ, знай, что человѣкъ умретъ черезъ четыре дня отъ начала болѣзни, и признакъ этого тотъ, что у него въ началѣ болѣзни большая жажда, большая зѣвота.

Говоритъ онъ: И когда въ большихъ пальцахъ обѣихъ ногъ сильный зудъ и цвѣтъ шеи темно-сѣръ, знай, что человѣкъ этотъ умретъ на пятый день отъ заболѣванія, и признакъ этого тотъ, что онъ мочится въ началѣ болѣзни сильно, много, и моча испорчена.

Говоритъ онъ: И когда на вѣкѣ больного три прыща, одинъ черный, дру-

гой темно-сѣрый, третій рыжеватый, знай, что этотъ человѣкъ умретъ черезъ семнадцать дней отъ начала болѣзни и признакъ этого тотъ, что онъ сильно, много харкаетъ въ началѣ болѣзни.

Говоритъ онъ: И когда на одномъ вѣкѣ больного (имѣется) прыщъ въ орѣхъ, мягкій, темно-сѣраго цвѣта, знай, что онъ умретъ черезъ два дня и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни спитъ тяжелымъ сномъ.

Говоритъ онъ: И когда течетъ изъ ноздрей больного кровь рыжеватаго цвѣта и на правой рукѣ его появляется бѣлый прыщъ, не причиняющій боли, знай, что онъ умретъ черезъ два или три дня отъ начала болѣзни, и признакъ этого тотъ, что онъ совершенно не хочетъ ѣсть.

74б Говоритъ онъ: И когда появляется на лѣвой ляшкѣ больного сильная краснота, не причиняющая боли, длиной въ три пальца, знай, что онъ умретъ черезъ пятнадцать дней отъ начала болѣзни, а признакъ этого тотъ, что въ началѣ болѣзни сильный зудъ и страстное желаніе ѣсть овощи.

Говоритъ онъ: И когда за лѣвымъ ухомъ больного черный прыщъ, знай, что человѣкъ умретъ черезъ двадцать четыре дня отъ начала болѣзни и признакъ этого тотъ, что онъ страстно желаетъ въ началѣ болѣзни холодной воды.

Говоритъ онъ: И когда за лѣвымъ ухомъ твердый прыщъ въ родѣ горошины, знай, что человѣкъ этотъ умретъ черезъ двадцать дней отъ начала болѣзни въ тотъ часъ, въ который появился этотъ прыщъ, и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни много мочится.

Говоритъ онъ: И когда за правымъ ухомъ красный прыщъ, въ родѣ обжога огнемъ, величиной съ бобъ, знай, что онъ умретъ черезъ шесть дней послѣ болѣзни и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни много блюетъ.

Говоритъ онъ: У нѣкоторыхъ бываетъ боль въ кончикѣ penis'а, и когда у кого-нибудь бываетъ это, (а) затѣмъ появляется на локтѣ прыщъ темно-сѣраго цвѣта, (человѣкъ этотъ) умретъ на пятый день болѣзни,
75а и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни хочетъ много пить вина.

Говоритъ онъ: И когда подъ лѣвой мышкой является большой прыщъ, величиной съ айву, темно-сѣраго цвѣта, знай, что человѣкъ умретъ черезъ пятнадцать дней послѣ (начала) болѣзни и признакъ этого тотъ, что въ началѣ болѣзни у него тяжелый сонъ.

Говоритъ онъ: И когда на лодыжкѣ большой, темно-сѣраго цвѣта прыщъ, знай, что больной умретъ черезъ двадцать восемь дней отъ начала болѣзни, и признакъ этого тотъ, что онъ въ началѣ болѣзни страстно хочетъ холоднаго воздуха или холодной ѣды.

Говоритъ онъ: И когда на лѣвомъ вискѣ рыжеватаго цвѣта прыщъ, знай, что человѣкъ умретъ черезъ четыре дня отъ начала болѣзни и признакъ этого тотъ, что у него неизлѣчимый, сильный зудъ въ обоихъ глазахъ.

Говоритъ онъ: И когда въ серединѣ головы черная опухоль, въ родѣ орѣха, не высокая, знай, что человѣкъ умретъ черезъ сорокъ дней отъ начала болѣзни и признакъ этого тотъ, что въ началѣ болѣзни онъ много зѣваетъ.

Говоритъ онъ: И когда на груди черная опухоль, знай, что человѣкъ умретъ черезъ три мѣсяца отъ начала болѣзни, и признакъ этого тотъ, что въ началѣ ея онъ страстно хочетъ дыни и затрудняется въ испусканіи мочи, и иногда поражаетъ больного параличъ. 75б

Говоритъ онъ: И когда поражаетъ больного параличъ, и вылѣчится онъ, и снова заболѣетъ, то умретъ онъ по истеченіи полныхъ семи дней отъ начала возвратной болѣзни его. И иногда бываетъ знакъ, или прыщъ, или краснота, или что-нибудь, указывающее на это. И признакъ этого тотъ, что онъ поправляется во второмъ заболѣваніи, и при поправленіи (и) умираетъ.

Говоритъ (авторъ): я нашелъ еще слѣдующіе знаки, (взятые) изъ Иппократа и присоединяю ихъ къ этимъ отдѣламъ (книги).

Говоритъ Иппократъ: знаковъ скверпаго цвѣта семь: красный цвѣтъ, желтый, синій, черный, тусклый, темно-сѣрый, свѣтло-сѣрый.

Говоритъ онъ: Красный цвѣтъ указываетъ на изобиліе крови, иногда убиваетъ, иногда безопасенъ, (но) указываетъ на скорую болѣзнь.

Говоритъ онъ: Желтый цвѣтъ указываетъ на сильное разстройство, длинную болѣзнь, (однако) прекращающуюся.

Синій цвѣтъ — скверный знакъ; указываетъ на скорую смерть.

Говоритъ онъ: Черный цвѣтъ указываетъ на скверные знаки, (однако) проходящіе, а если съ нимъ являются прыщи, указываетъ на смерть.

Говоритъ онъ: Тусклый цвѣтъ съ зеленымъ оттѣнкомъ указываетъ на проходящую болѣзнь, а если безъ этого—указываетъ на длинную и (однако) проходящую болѣзнь.

Говоритъ онъ: Темно-сѣрый цвѣтъ указываетъ на разстройство, быстро проходящее, а если являются съ нимъ прыщи, указываетъ это на 76а
плохіе знаки и смерть. . . ., особенно если являются съ ними прыщъ, или опухоль, или нарывъ, или почесыванье, или зудъ и т. п.

Знай это и сравнивай; тогда ты поступишь правильно, если пожелаетъ Всевышній Богъ. И Богъ знаетъ лучше всѣхъ, мы разсчитываемъ на Него и Онъ лучшая опора.

Слава Богу, Господу міровъ, и да благословитъ Богъ господина нашего Мухаммеда, потомство его и благороднѣйшихъ сподвижниковъ его, и да спасетъ!

Оконченъ списокъ въ оберегаемомъ Дамаскѣ, — да защититъ его Всевышній Богъ!—въ Понедѣльникъ 8 числа славнаго мѣсяца Рамадана 757 г.

Слава Богу, Единому!

Списалъ его бѣдный предъ Всевышнимъ Богомъ рабъ Абдуллāхъ-ибн-Сулеймāнъ-ибн-ар-Райхāнī ал-Маусылī (да проститъ его Богъ!).

III.

ИЗСЛѢДОВАНІЕ.

1. Значеніе изданнаго текста. Вопросъ объ его источникахъ. Отрывки изъ Āйн-нāмэ въ арабской литературѣ. Āйн-нāмэ и отрывокъ изъ IX-ой главы Мерзбāн-нāмэ. Рамки псевдэпиграфическаго трактата Иппократа и Джāвидāн-Хиреда. Переводы съ индійскаго въ сасанидскую эпоху и ихъ значеніе въ нашемъ вопросѣ. Древне-арабскіе переводы индійскихъ и персидскихъ книгъ суевѣрнаго характера. Изученіе примѣтъ.
2. Сношенія древней Персіи съ Индіей. Характеристика индійцевъ у Джāхиза. Гаданіе, книга и астрономическій терминъ «джафръ». Различіе индійскаго и арабскаго гаданій. — Переводъ цитаты изъ Āйн-нāмэ у Ибн-Кутейбы. — Значеніе и роль автора въ изданномъ трактатѣ.
3. Группировка примѣтъ. Календарныя примѣты: 1) церемоніальный календарь недѣли — парсійскіе трактаты (Хакīкат-ī-рōджхā, Мāтīгāн-ī-сī-рōджъ) и арабскіе литературные источники (Махāсин-уа-л-аддāдъ, ʻУюн-ал-ахбāръ); примѣты церемоніальнаго раздѣленія мѣсяца въ сасанидскую эпоху; 2) примѣты по занятію въ началѣ года; 3) примѣты по росту ячменя тогда-же; 4) примѣты о побѣдѣ по дуновенію вѣтра; 5) Михрмāхъ и Āдармāхъ; связанныя съ ними примѣты; «выѣздъ безбородаго».
4. Примѣты о животныхъ; разница между ними и календарными примѣтами. Полезныя животныя. Примѣты о пѣтухѣ и курицѣ; пѣтухъ и курица въ парсизмѣ. Примѣты о собакѣ и роль ея въ парсизмѣ. Примѣты о ежѣ, лисицѣ, воронѣ, рогатомъ скотѣ, мелкомъ скотѣ, мулѣ, ослѣ. Примѣты о лошади и ея роль въ древней Персіи. Вредныя животныя. Волки, муравьи, лягушки, крысы, змѣи. Примѣты о змѣяхъ по сообщеніямъ Бīрӯнī и парсійскимъ источникамъ. Персидскія примѣты о змѣяхъ и индійскій культъ змѣй. Близость сообщеній Бīрӯнī къ «ривāйетамъ». — Примѣты объ огнѣ и культъ его въ парсизмѣ. — Остальныя примѣты; о хищныхъ звѣряхъ, о снѣ, о явленіяхъ природы, о встрѣчѣ и др.
5. Физіономическая часть трактата. Индіецъ Дж-в-б-ръ и сообщенія Джāхиза. Отношеніе физіономической части трактата къ старо-персид-

скимъ памятникамъ. — Предсказанія по родимымъ пятнамъ; сходный трактатъ Мелампода; арабскій трактатъ на ту же тему, приписываемый Иппократу. — Предсказанія по дрожанію членовъ тѣла; сходный турецкій трактатъ. — Прочія физіономическія данныя трактата. — «Могильное посланіе» псевдо-Иппократа. — Заключеніе.

1.

Настоящая работа основана на изданіи и переводѣ текста сочиненія, возводимаго къ арабскому писателю IX-го вѣка Абу ʻУсмāну ʻАмру-ибн-Бахру ал-Джāхизу[1]). Сочиненіе это, при всей краткости, представляетъ, по нашему мнѣнію, интересъ для науки. Оно интересно во-первыхъ тѣмъ, что авторомъ его считается Джāхизъ, одинъ изъ виднѣйшихъ представителей древняго періода арабской литературы, всѣ сочиненія котораго заслуживаютъ внимательнаго изученія и изданія. Во вторыхъ оно интересно потому, что по содержанію является однимъ изъ древнѣйшихъ въ арабской литературѣ и столь мало еще изученныхъ сборниковъ примѣтъ и повѣрій, коренящихся съ одной стороны въ древней наукѣ, съ другой въ народномъ міросозерцаніи. Въ третьихъ, наконецъ, интересъ къ нему увеличивается тѣмъ, что эти примѣты и повѣрья возводятся въ до-мусульманскую Персію и такимъ образомъ даютъ намъ матеріалъ для ея культурной исторіи. При ограниченности источниковъ для этой культурной исторіи, цѣненъ всякій касающійся ея литературный памятникъ. Особенно же цѣненъ такой, который, хотя-бы лишь въ нѣкоторыхъ своихъ частяхъ, можетъ быть отнесенъ къ сасанидской эпохѣ. Въ этомъ послѣднемъ отношеніи видимъ мы особенный интересъ вышеизданнаго трактата.

За изданіе сочиненій Джāхиза взялся сравнительно недавно голландскій арабистъ Г. Фан-Флотенъ, съ успѣхомъ начавшій эту работу. Къ сожалѣнію, преждевременная кончина не дала ему возможности продолжать и довести изданіе до конца. Нынѣ эта работа, трудная и сложная, ждетъ спеціалиста-филолога. Пишущій эти строки подошелъ къ изученію этого трактата не съ точки зрѣнія спеціальнаго интереса къ Джāхизу, не какъ арабистъ-филологъ; побудительной причиной являлось для него культурно-

---

1) О немъ см. C. Brockelmann, Geschichte der arabischen Litteratur, I, Weimar, 1898, 152—153. Литературная дѣятельность его послужила предметомъ подробнаго изслѣдованія въ статьѣ G. Van Vloten, Een arabisch natuurphilosof in de 9-de eeuw, Tweemaandelijksch Tijdschrift, Mei, 1897.

историческое содержаніе текста, особенно вышеуказанное значеніе его для культурной исторіи до-мусульманской Персіи.

Сочиненіе это, какъ мы уже сказали, не велико. Это небольшой трактатъ, носящій названіе «главы» о гаданіи «по взглядамъ Персовъ». Рукопись, сохранившая намъ его, содержитъ не только эту «главу» о персидскомъ гаданіи, но и арабскій переводъ книги о физіономикѣ Полемона[1]). Рукопись написана однимъ и тѣмъ же лицомъ и соединеніе въ ней двухъ однороднаго содержанія трактатовъ тѣмъ понятнѣе, что самъ Джāхизъ повидимому былъ знакомъ съ писаніями Полемона[2]). Однако, нужно отмѣтить, что содержаніе обоихъ трактатовъ лишь однородно, но далеко не тожественно. Въ то время какъ первый трактатъ имѣетъ несомнѣнную близость съ античной литературой и, являясь переводомъ греческаго сочиненія, не представляетъ особыхъ затрудненій въ вопросѣ объ источникахъ, второй трактатъ касается главнымъ образомъ до-мусульманской Персіи и источники его темнѣе и сложнѣе.

Сообщая о персидскихъ примѣтахъ и повѣрьяхъ, трактатъ не указываетъ источниковъ. Кромѣ того, мы знаемъ изъ сообщеннаго уже ранѣе извѣстія Мас'ӯдӣ[3]), что Джāхизъ нѣкоторыя свои сочиненія приписывалъ болѣе древнимъ авторамъ (напр. Ибн-Мукаффѣ), такъ что, если-бы его указанія на источники и находились въ настоящемъ трактатѣ, они нуждались бы въ предварительной критикѣ. Къ счастью, однако, мы имѣемъ другой матеріалъ для критики источниковъ. Въ извѣстной антологіи Ибн-Кутейбы 'Уӯн-ал-ахбāръ[4]), въ одиннадцатой главѣ второй книги, до насъ дошли сообщенія сходнаго содержанія (что было уже указано Броккельманомъ[5]); вся эта глава посвящена «персидскимъ взглядамъ» на разнаго рода примѣты и повѣрья. Большая часть этой главы буквально совпадаетъ съ сообщеніями трактата Джāхиза. При этомъ отмѣтимъ, что у Ибн-Кутейбы, — что особенно важно, — сохранилось точное указаніе на источникъ, изъ котораго онъ почерпнулъ свои сообщенія; онъ начинаетъ эту

---

1) Книга Полемона о физіономикѣ занимаетъ листы 2б—50а, трактатъ Джāхиза 50б—76а. Объ этомъ сочиненіи Полемона см. подъ № 1206 Catalogus codicum orientalium Bibliotecae Academiae Lugduno Batavae, III, 165—166. Арабскій текстъ книги Полемона вмѣстѣ съ латинскимъ изданъ G. Hoffmann'омъ у R. Foerster, Scriptores physiognomonici, I, 93—295, ср. LXXX—C.

2) Van Vloten, o. c. 25.

3) Brockelmann, o. c. 152—153.

4) Ibn Qutaiba's 'Ujûn al-aḫbâr, herausgegeben von C. Brockelmann, Teil I, Zeitschrift für Assyriologie, 18. Ergänzungsheft, Semitistische Studien 18, Berlin, 1900; Teil II, Zeitschrift für Assyriologie, Beiheft zum XVII Band, Strassburg, 1903; Teil III, ib., Beiheft zum XIX Band, Strassburg, 1906. Изъ десяти книгъ пока изданы три.

5) Geschichte der arabischen Litteratur, I, 153.

главу заявленіемъ: «читалъ я въ книгѣ Āйнъ». Такимъ образомъ его сообщенія являются цитатой изъ книги Āйнъ, т. е. изъ сдѣланнаго Ибн-Мукаффой перевода сасанидской Āйн-нāмэ, книги, о которой мы считаемъ необходимымъ сказать здѣсь нѣсколько словъ.

Въ ʿУюн-ал-ахбāръ сохранились цитаты изъ разнаго рода древнихъ, не арабскихъ письменныхъ источниковъ, взятыя Ибн-Кутейбой изъ арабскихъ переводовъ. Среди нихъ упоминаются не опредѣляемыя точнѣе «книги Персовъ, Индійцевъ и Византійцевъ», а также и книги съ опредѣленнымъ заглавіемъ — «Китāб-ат-Тāджъ», «Сіяр-ал-ʿАджамъ», «Китāб-ал-Āйнъ», имѣющія прямое отношеніе къ персидской, до-мусульманской старинѣ. Бар. В. Р. Розенъ въ спеціальной статьѣ, посвященной этому сочиненію Ибн-Кутейбы, въ частности первымъ двумъ книгамъ, указалъ эти цитаты по петербургской рукописи[1]). Количество этихъ цитатъ различно. Изъ «византійскихъ книгъ» дается лишь одна небольшая цитата изъ «геопоники». Цитаты изъ «индійскихъ книгъ» восходятъ всѣ къ Калилѣ и Димнѣ, лишь съ нѣкоторыми измѣненіями въ отдѣльныхъ случаяхъ[2]). Источники цитатъ изъ «персидскихъ книгъ» опредѣлить труднѣе[3]); укажемъ, однако, что въ нѣкоторыхъ случаяхъ[4]) мы, весьма возможно, имѣемъ дѣло съ отрывками изъ такъ называемой «книги завѣта Ардешīра», стихотворный, не дошедшій до насъ переводъ которой, былъ сдѣланъ современникомъ Ибн-Кутейбы Балāзурī[5]). Что касается далѣе до книгъ опредѣленныхъ авторовъ, то не разъ

---

1) Baron V. Rosen, Zur arabischen Literaturgeschichte der älteren Zeit. I. Ibn-Quteiba: Kitâb ʿUjûn al-akhbâr, Mélanges Asiatiques, VIII, 1880, 745—779 или Bulletin de l'Académie Impériale des Sciences de St.-Pétersbourg, t. 27, 1881, 55—78. Въ изданіи Brockelmann'a указаны на поляхъ страницы петербургской рукописи, такъ что справки по цитатамъ вполнѣ доступны.

2) См. въ III т. цитаты и указанія Brockelmann'a на стр. ٢٧٠,١٦; ٢٧٨,١٢; ٢٨٩,١٨; ٢٩٥,١٠; ٣١١,١٤; ٣٢٩,٨; ٣٤١,١١; ٣٧٩,١١; самъ Ибн-Кутейба приводитъ цитату изъ Калилы и Димны т. е. изъ перевода Ибн-Мукаффы, на стр. ٣٣٠,٢ слѣд. и ٩ слѣд.

3) Цитаты изъ персидскихъ книгъ въ III т. ʿУюн-ал-ахбāръ см. на стр. ٣١٩,١٤ и ٣٨٩,IV.

4) См. I, ٢٤,٥; ٣٠,٥; ١٢١,٥.

5) Фихристъ, I, ١١٣,١٤—١٥ и ٣١٩,١. Какое отношеніе имѣетъ это приписывавшееся Ардешīру сочиненіе къ упоминаемому у Масʿудī Кāрнāмаджу, написанному яко бы тѣмъ же царемъ (см. Les prairies d'or, texte et traduction par Barbier de Meynard et Pavet de Courteille, II, Paris, 1863, 162 и 449; ср. и Мирхонда у Sacy, Mémoire sur diverses antiquités de la Perse, Paris, 1793, 280), сказать трудно. Быть можетъ, это одно и то же сочиненіе. Во всякомъ случаѣ, извѣстный пехлевійскій Кāрнāмакъ нѣчто другое, такъ какъ не принадлежитъ къ области дидактической литературы, а является историческимъ преданіемъ. Эта «книга завѣта», по своему основному содержанію, могла быть вовсе не персидской; Zotenberg, L'histoire de Gal'âd et Schîmâs, Journal Asiatique (цитуется далѣе подъ иниціалами JA), IX Série, 1886, № 7, 104, признаетъ завѣты царя сыну въ извѣстной, вошедшей въ составъ Тысячи и одной ночи и близкой къ персидской дидактической литературѣ повѣсти, буддійскими по духу.

называется Ибн-Мукаффа; при цитатахъ изъ его сочиненій упоминаются иногда заглавія ихъ, иногда же просто дѣлается ссылка на его имя[1]). Изъ этихъ сочиненій его особенно отмѣчаемъ «Сіяр-ал-ʿАджамъ», т. е. переводъ персидской оффиціальной хроники, такъ наз. Худāй-нāмэ. Быть можетъ, тому же Ибн-Мукаффѣ принадлежитъ и авторство нѣсколько разъ цитованной «Китāб-ат-Тāджъ» (цитаты приводятся лишь въ первой книгѣ ʿУюн-ал-ахбāръ). Эта книга и по заглавію, и по содержанію приводимыхъ отрывковъ (ближе см. въ вышеупомянутой статьѣ бар. Розена), также была переводомъ какой нибудь старо-персидской книги. Нѣсколько цитатъ дается и изъ книги Āйнъ, тоже переведенной Ибн-Мукаффой. Въ первой книгѣ даются двѣ краткія цитаты—изреченіе персидскаго царя и нѣкоторыя правила судебныхъ постановленій. Во второй книгѣ имѣется длинный отрывокъ о теоріи военнаго дѣла, съ добавленіемъ въ одну фразу на ту же тему; затѣмъ правила о стрѣльбѣ изъ лука и игры въ поло; наконецъ вся одиннадцатая глава этой книги посвящена старо-персидскимъ примѣтамъ и повѣрьямъ, о чемъ мы уже сказали выше. Въ третьей книгѣ сообщается одинъ краткій отрывокъ[2]) о томъ, въ какую сторону направляли предпочтительно царскіе покои, при чемъ указывается, что особенно выбиралась восточная сторона, какъ благопріятная. Только отрывокъ военнаго трактата съ правилами о стрѣльбѣ изъ лука и игры въ поло, и глава о примѣтахъ и повѣрьяхъ, даютъ нѣкоторую возможность судить о характерѣ того сочиненія, изъ котораго они взяты. Прочіе отрывки слишкомъ незначительны и по объему, и по содержанію.

Извѣстій объ Āйн-нāмэ и цитатъ изъ нея сохранилось вообще не много. Пишущій эти строки въ спеціальной статьѣ, посвященной разбору отрывка военнаго трактата въ ʿУюн-ал-ахбāръ, изложилъ то, что намъ извѣстно о составѣ этой книги и тѣ соображенія, на которыя наводили сообщенія о ней[3]). Тѣ краткіе отрывки, которыми мы располагаемъ въ пока извѣстныхъ книгахъ ʿУюн-ал-ахбāръ, разумѣется не могутъ дать даже приблизительнаго представленія о характерѣ Āйн-нāмэ, книги, состоявшей, по сообщенію Китāб-ат-тенбīхъ Масʿудī, изъ нѣсколькихъ тысячъ листовъ, но все же нѣкоторыя данныя извлечь можно. Такъ, повидимому, можно установить близость ея съ Худāй-нāмэ, а потому и ея оффиціальный характеръ. Ея общій характеръ намѣчается также изъ аналогіи съ позднѣйшими, сходнаго со-

---

1) Цитаты изъ его сочиненій въ III т. ʿУюн-ал-ахбāръ, ٣٢٤,١٨ и ٣٣٩,٥.

2) См. III, ٣٤١,١٢ сл.

3) Отрывокъ военнаго трактата изъ сасанидской «Книги установленій» آئين نامه, Записки Восточнаго Отдѣленія Имп. Русскаго Археологическаго Общества (цитуются далѣе ЗВО), XVII, 249—282; объ Āйн-нāмэ: 250—252.

держанія сочиненіями (напр. Āйни-Акбарӣ Абӯ-л-Фазля). Весьма возможно, что и сообщенія о разнаго рода «установленіяхъ» сасанидскаго государства, дошедшія до насъ въ арабскихъ сочиненіяхъ, также являются позаимствованными изъ этой книги, но сказать что либо опредѣленное въ этомъ отношеніи довольно трудно. Кромѣ ʿУюн-ал-ахбāръ, до насъ дошла небольшая цитата изъ Āйн-нāмэ въ касающейся исторіи сасанидскихъ царей части сочиненія, приписываемаго Саʿāлибӣ[1]). Эта цитата, впрочемъ, не велика и незначительна по содержанію; она касается преданія о томъ, какого рода людей особенно цѣнили разные персидскіе цари, отъ Джема до Анӯширвāна. Зотанбэръ высказалъ предположеніе[2]), что нѣкоторыя сообщенія Масʿӯдӣ въ Мурӯдж-аз-захабъ о дворовомъ этикетѣ и общественной іерархіи, установленной Ардешӣромъ, равно какъ отрывокъ девятой главы извѣстнаго персидскаго сборника басенъ и притчъ Мерзбāн-нāмэ, позаимствованы изъ Āйн-нāмэ. Во всякомъ случаѣ у Масʿӯдӣ источникъ либо не указанъ, либо, поскольку намъ доступно, дошелъ въ неразборчивой формѣ[3]), и вопросъ о позаимствованіи имъ сообщеній о мѣстничествѣ при дворѣ Сасанидовъ, о генеалогіяхъ «усвāровъ», «мерзбāновъ» и пр. изъ Āйн-нāмэ, остается пока предположеніемъ. Для приведенія же въ извѣстность остатковъ этой книги имѣетъ значеніе выяснить по возможности отношеніе къ ней отрывка въ Мерзбāн-нāмэ[4]). Зотанбэръ выразился нѣсколько неопредѣленно, отмѣтивъ

---

1) H. Zotenberg, Histoire des rois des Perses par al-Tha'âlibî, texte arabe publié et traduit, Paris, 1900, 14—15.

2) O. c. XXIII. Th. Nöldeke, Geschichte der Perser und Araber zur Zeit der Sasaniden, Leyden, 1879, 8, anm. 3, считаетъ данныя у Масʿӯдӣ не ясными и ссылается также на извѣстіе Ибн-Мукаффы въ ʿУюн-ал-ахбāръ (хотя страница петербургской рукописи не указана, но приводимое имъ сообщеніе несомнѣнно то, которое въ печатномъ изданіи находится въ I-мъ т., на стр. ١٣١,٥ слѣд.) о раздѣленіи Ардешӣромъ народа на четыре класса. Сообщеніе о древнихъ четырехъ классахъ, на которое указывалъ Nöldeke въ посланіи Ардешӣра (несомнѣнно находящееся въ I-мъ т. на стр. ٣٤,٥ слѣд. печатнаго изданія ʿУюн-ал-ахбāръ), имѣется также и въ сочиненіи Бӣрӯнӣ объ Индіи,—см. Alberuni's India, edited in the arabic original by Dr. E. Sachau, London, 1887, ٤٨,١٤ слѣд.; Alberuni's India, an english edition with notes and indices by Dr. E. Sachau, I, London, 1888, 100. Письмо Ардешӣра называетъ четыре сословія—ученыхъ, «носителей вѣры»; «усвāровъ», рыцарей т. е. военное сословіе; гражданскихъ чиновниковъ, «украшеніе государства»; земледѣльцевъ, «опору страны». У Бӣрӯнӣ названы: «усвāры» и царскіе сыновья; священнослужители; врачи, звѣздочеты и прочіе ученые; земледѣльцы и ремесленники. У Масʿӯдӣ (II, 162) — гражданскіе чиновники, ученые, «усвāры» и земледѣльцы.

3) Zotenberg, o. c. XLII, n. 3. На той же страницѣ онъ высказываетъ мысль, что отъ времени составленія до Фирдоусӣ, Худāй-нāмэ значительно измѣнилась и пополнилась миѳическими и эпическими преданіями и историческими документами въ родѣ Āйн-нāмэ. Прибавимъ, что полнаго сліянія Худāй-нāмэ съ Āйн-нāмэ предполагать изъ этого, разумѣется, еще нельзя, — во первыхъ потому, что Āйн-нāмэ самостоятельно состояла изъ нѣсколькихъ тысячъ листовъ, а во вторыхъ потому, что она существовала еще въ IV-мъ вѣкѣ Хиджры (основываемся на сообщеніи Масʿӯдӣ въ Китāб-ат-тенбӣхъ).

4) О Мерзбāн-нāмэ наиболѣе полно говорится въ статьѣ Ch. Schefer, Chrestomathie

только, что быть можетъ оттуда же заимствованъ одинъ отрывокъ изъ девятой главы Мерзбāн-нāмэ, но эта неопредѣленность легко разъясняется благодаря статьѣ Шефера, гдѣ указано, что въ этой девятой главѣ, попутно, во время разговора двухъ дѣйствующихъ лицъ (двухъ куропатокъ, являющихся главными дѣйствующими лицами этой главы), упоминается «изложеніе установленія персидскихъ хосроевъ»[1]). Несомнѣнно, что заимствованіе именно этого мѣста изъ Āйн-нāмэ и предполагалъ Зотанбэръ. Имѣя въ данномъ случаѣ также дѣло съ предположеніемъ, мы обратились къ имѣющимся въ Петербургѣ двумъ рукописямъ Мерзбāн-нāмэ[2]) и арабской передѣлкѣ этого сборника, принадлежащей Ибн-ʿАрабшāху и озаглавленной Фāкихат-ал-хулафā[3]). Отрывокъ этотъ[4]) помѣщенъ въ рѣчи одной изъ куропатокъ передъ ихъ отправленіемъ ко двору орла. Куропатка сообщаетъ о томъ, какъ одинъ изъ персидскихъ хосроевъ приказалъ собрать со всѣхъ сторонъ государства всякаго рода людей и размѣстить ихъ въ опредѣленномъ порядкѣ для пира. При этомъ отдѣляется особая часть чиновниковъ для соблюденія согласнаго обычаю порядка въ этомъ размѣщеніи. Самъ хосрой садится на тронѣ. Затѣмъ выходитъ особый глашатай, призывающій всѣхъ присутствующихъ къ соблюденію установленнаго порядка; рѣчь его къ нимъ приводится[5]). Далѣе сообщается, что этотъ обычай соблюдался впослѣдствіи персидскими царями, при чемъ однако имя установившаго его хосроя не

---

persane à l'usage des élèves de l'Ecole Spéciale des langues orientales vivantes, T. II, Paris, 1885, 194—211. Литературу о ней см. V. Chauvin, Bibliographie des ouvrages arabes ou relatifs aux arabes publiés dans l'Europe chrétienne de 1810 à 1885, t. II, Liége-Leipzig, 1897, 210—216 и H. Ethé, Neupersische Litteratur, Grundriss der iranischen Philologie, II, 3, Strassburg, 1902, 328—329. Новую персидскую редакцію этого сочиненія указалъ M. Th. Houtsma, Eine unbekannte Bearbeitung des Merzbān-nāmeh, Zeitschrift der Deutschen Morgenländischen Gesellschaft (цитуется далѣе подъ инициалами ZDMG), LII, 1898, 359—393. Татарскій переводъ Мерзбāн-нāмэ, подъ заглавіемъ كتاب دستور شاهى فى حكاية پادشاهى, напечатанъ въ Казани, въ 1864 г.

1) شرح آئين خسروان پارس.

2) Рукопись Азіатскаго Музея Имп. Академіи Наукъ, № 275a, fol. 158a,14—159a,8 (датировано 25 Джумāдā-ал-авваль 1063 г. Х.; краткое упоминаніе о ней см. Mélanges Asiatiques, IV, 1863, 54); рукопись Имп. Публичной Библіотеки, № 479, fol. 180a,6—181a,8 (о ней см. B. Dorn, Catalogue des manuscrits et xylographes orientaux de la Bibliothèque Impériale Publique de St.-Pétersbourg, 1852, 406—407).

3) Liber arabicus فاكهة الخلفاء ومفاكهة الظرفاء seu Fructus imperatorum et iocatio ingeniosorum auctore Ahmede filio Mohammedis cognominato Ebn-Arabschah quem primum e codicibus edidit et adnotationibus criticis instruxit G. G. Freytag, pp. I—II, Bonnae, 1832—1852. См. и Chauvin, o. c. 188—210.

4) Въ рук. Азіатскаго Музея онъ озаглавленъ شرح آئين خسرو پارس и разсказъ ведется отъ лица куропатки Йрā; въ рук. Публичной Библіотеки онъ озаглавленъ داستان и разсказъ ведется отъ лица куропатки Āзāд-Чехрэ.

5) Ср. у Масʿудй, Мурудж-аз-захабъ, II, 158—9 о церемоніалѣ въ присутствіи хосроя и должности «хуррем-бāша» (خرّم باش) и его подручныхъ.

упоминается. Разсказъ приводится для того, чтобы убѣдить собесѣдника, другую куропатку, всегда быть довольной своимъ положеніемъ[1]). Общій характеръ его весьма неопредѣленный и онъ не только не имѣетъ точной исторической датировки, но и бытовыя подробности его не ясны, — онѣ устанавливаютъ лишь фактъ существованія мѣстничества въ сасанидскомъ государствѣ. Что подобнаго рода сообщенія могли быть въ Āйн-нāмэ весьма вѣроятно; но они могли быть также и въ другихъ близкаго содержанія книгахъ. Укажу, напр. на цитату изъ Сіяр-ал-ʿАджамъ, т. е. изъ Худāй-нāмэ, въ первой книгѣ ʿУюн-ал-ахбāръ[2]), по характеру весьма близкую къ отрывку Мерзбāн-нāмэ. Въ ней разсказывается о томъ, какъ Ардешīръ, по достиженіи власти, собралъ народъ, и какъ представитель народа говорилъ ему рѣчь съ благими пожеланіями, которая вся и приводится. Конечно, одного упоминанія слова Āйнъ, т. е. «установленіе», въ заглавіи цитаты, еще недостаточно для отнесенія ея къ Āйн-нāмэ. Она могла происходить и изъ Худāй-нāмэ, и изъ устныхъ преданій, присутствіе которыхъ возможно, не сомнѣваясь, допустить въ книгахъ, подобныхъ Мерзбāн-нāмэ. Итакъ, мы должны пока ограничиться въ цѣляхъ выясненія состава Āйн-нāмэ, вышеуказанными цитатами изъ ʿУюн-ал-ахбāръ.

Въ вопросахъ культурной исторіи сасанидской Персіи Худāй-нāмэ и Āйн-нāмэ являются источниками первостепенной важности. Поэтому особенно важно, что мы имѣемъ въ одиннадцатой главѣ второй книги ʿУюн-ал-ахбāръ сообщенія, въ значительной части тожественныя содержащимся въ изданномъ нами трактатѣ. Это указываетъ на несомнѣнную зависимость послѣдняго отъ древне-персидскихъ, сасанидскихъ матеріаловъ.

Такимъ образомъ, мы можемъ опредѣлить присутствіе древнихъ персидскихъ источниковъ въ изданномъ нами трактатѣ, а потому и возводить нѣкоторыя дошедшія до насъ въ рукописи XVI-го вѣка сообщенія арабскаго писателя IX-го вѣка къ сасанидской Персіи. Однако, какъ ни мало указывается въ этомъ трактатѣ источниковъ, мы имѣемъ возможность, кромѣ Āйн-нāмэ, отмѣтить въ немъ цитаты даже съ указаніями, откуда онѣ взяты. Въ концѣ трактата сообщается небольшой отрывокъ изъ сдѣланнаго Хунейномъ-ибн-Исхāкомъ[3]) перевода изъ Иппократа, «изъ словъ мудреца Иппократа» говорится въ текстѣ. Отрывокъ этотъ касается ряда признаковъ, по

---

1) Чины, приводимые въ Фāкихат-ал-хулафā (I, ٣٠١,٩ слѣд.), не имѣются въ персидскомъ текстѣ и весьма вѣроятно предположеніе Freytag'a (II, 118 слѣд.), что они относятся скорѣе всего къ Египту, гдѣ жилъ Ибн-ʿАрабшāхъ съ 840 г. Х. и гдѣ закончилъ это сочиненіе въ 852 г.

2) I, ١٢١,٥ слѣд.

3) О немъ см. Brockelmann, Geschichte der arabischen Litteratur, I, 205—206.

которымъ можно опредѣлить скорую смерть больного, такъ называемыхъ «знаковъ смерти». Согласно ранѣе произведеннымъ изслѣдованіямъ М. Штейншнейдера[1]), отрывокъ этотъ принадлежитъ къ такъ называемой «псевдэпиграфической» литературѣ и приписанъ Иппократу ложно. Даже переводъ его далеко не всегда приписывается Хунейну-ибн-Исхāку. Штейншнейдеръ указалъ уже, что Хунейну-ибн-Исхāку приписанъ переводъ въ индійскомъ изданіи трактата, озаглавленнаго «Рисāлатъ кабрійя», «Могильное посланіе». Заглавіе это онъ получилъ отъ особыхъ условій, при которыхъ этотъ трактатъ былъ яко-бы найденъ, о чемъ мы будемъ говорить еще дальше. Кромѣ того, этотъ же трактатъ имѣется въ арабской рукописи еврейскими буквами Монакской библіотеки. Затѣмъ имѣются версіи переводовъ латинскаго, греческаго, итальянскаго. Тѣмъ же Штейншнейдеромъ указаны и нѣкоторыя другія, вѣроятныя арабскія версіи этого трактата[2]) Нѣтъ никакого сомнѣнія, что нашъ отрывокъ есть тотъ же трактатъ. Въ небольшомъ введеніи этого отрывка разсказывается вкратцѣ исторія того, какъ это сочиненіе Иппократа дошло до потомства. Та же исторія сообщается и въ указанныхъ Штейншнейдеромъ трактатахъ, и у Ибн-Абū-Усайбі'и. Въ виду того, что она имѣетъ нѣкоторый интересъ спеціально для нашего вопроса объ источникахъ, мы сообщаемъ ее.

По этой исторіи, Иппократъ, открывшій особые признаки, указывающіе на близкую смерть человѣка, пожелалъ унести ихъ съ собою въ могилу. Они были переписаны на доску и положены въ ящикъ изъ слоновой кости, который въ свою очередь былъ поставленъ въ могилу Иппократа. Впослѣдствіи «кесарь» пожелалъ видѣть могилу великаго врача и, найдя ее разрушенной, приказалъ исправить. При раскопкахъ былъ найденъ ящикъ изъ слоновой кости съ содержащимися въ нихъ «знаками смерти». Такимъ образомъ они были найдены и стали извѣстны. Хотя въ этомъ преданіи и фигурируютъ имена Иппократа и «кесаря», въ немъ нѣтъ ничего спеціально-античнаго, такъ какъ сходныя преданія о нахожденіи знаменитыхъ книгъ мы можемъ указать и въ другой области, при чемъ отмѣчаемъ, что эта область особенно интересна въ нашемъ вопросѣ, — это область иранскихъ

1) M. Steinschneider, Manoscritti arabici in caratteri ebraici, Bollettino italiano degli studii orientali, Nuova Serie, Firenze, 1877—1882, 128—135, ср. ib., 333 слѣд. и его же, Die griechischen Aerzte in arabischen Uebersetzungen, Archiv für pathologische Anatomie und Physiologie und für klinische Medicin, herausgegeben von R. Virchow, B. 124, Berlin, 1891, 131—132.

2) Кромѣ версій и варіантовъ, указанныхъ Steinschneider'омъ, приведу еще берлинскую рукопись, которой мы пользовались при изданіи, обозначивъ ее буквой А и арабскую рукопись № 857 Лейпцигской Университетской Библіотеки, содержащей то же сочиненіе, что и рук. А, см. Katalog der Handschriften der Universitäts-Bibliothek zu Leipzig, II, Die islamischen, christlich-orientalischen, jüdischen und samaritanischen Handschriften, von K. Vollers, Leipzig, 1906, 284.

преданій. Сходное сообщается о книгѣ Джāвидāн-Хиредъ[1]), упомянуть которую здѣсь мы пользуемся случаемъ.

Сильвестръ де-Саси посвятилъ въ свое время этой книгѣ спеціальную статью, въ которой указывалъ, что это до-мусульманскій литературный памятникъ, древне-персидское философское сочиненіе, заслуживающее изданія и перевода[2]). Несмотря на то, что статья Саси была написана уже давно, это сочиненіе съ тѣхъ поръ не привлекало къ себѣ должнаго вниманія. «Джāвидāн-Хиредъ», въ переводѣ съ персидскаго «Вѣчный Разумъ»,— памятникъ дидактической литературы, весьма сложный и разнообразный по своему составу. Въ основѣ его лежали, повидимому, завѣты миѳическаго персидскаго царя Хӯшенга (араб. Ӯшханджъ). Преданіе, сообщаемое по сочиненію Джāхиза Иститāлат-ал-фахмъ, возводитъ арабскій переводъ этой книги къ эпохѣ халифа Мамӯна и Хасана-ибн-Сахла (брата везира Мамӯна Фадла-ибн-Сахла). Въ XI в. по Р. Х. Абӯ-ʿАлӣ-ибн-Мискавейхи включилъ этотъ перевод въ свою книгу «Āдāб-ал-ʿАрабъ уа-л-Фурсъ». Впослѣдствіи съ арабскаго текста дѣлались ново-персидскіе переводы[3]). Хотя рукописей этого сочиненія (въ различныхъ версіяхъ) встрѣчается достаточное количество, мы пользуемся случаемъ указать интересный кодексъ Азіатскаго Музея Академіи Наукъ за № 680[4]). Кодексъ этотъ содержитъ: «мудрыя изреченія Ӯшханджа (т.е. Хӯшенга), называемыя Джāвидāн-Хиредъ», исторію этой книги въ извлеченіи изъ Джāхиза и Ибн-Мискавейхи, совѣты мудреца Āдурбā (т. е. Āтурпāта) сыну, мудрыя изреченія Бузурджмихра, совѣты Кисры Кубāда, завѣщаніе Бузурджмихра Кисрѣ, муд-

---

1) Общія замѣчанія о ней см. Brockelmann, GAL, I, 342 и Ethé, o. c. 346 (у котораго не указан древній, до-мусульманскій, персидскій источникъ книги).

2) S. de Sacy, Mémoire sur le Djavidan Khired, Mémoires de l'Institut Royal de France, Académie des inscriptions et belles-lettres, T. IX, 1831, 1—31.

3) О рукописяхъ см. Bibliothecae Bodleianae codicum manuscriptorum orientalium catalogus anno Uri confectus, I, Oxonii, 1787, 86, № 292 и II, confecit A. Nicoll, editionem absolvit E. B. Pusey, Oxonii, 1835, 576; Catalogus codicum orientalium Bibliotecae Academiae Lugdun. Batavae auctoribus P. de Jong et M. J. de Goeje, IV, 1866, 191—192, № 1833; Catalogue of the persian manuscripts in the British Museum by Ch. Rieu II, 1881, 440—441, № Or. 457; Catalogue des manuscrits arabes de la Bibliothèque Nationale par le Bar. de Slane, Paris, 1883—1895, 643, № 3957; Catalogue of the persian etc. manuscripts in the Bodleian Library by E. Sachau — H. Ethé, I, the persian manuscripts, Oxford, 1889, 857, см. № 1417; Catalogue of persian manuscripts of the library of the India Office by H. Ethé, I, Oxford, 1903, 1202—1204, № 2210. О جاودان خرد ср. еще C. Salemann, Mittelpersische Studien, Mélanges Asiatiques, IX, 1888, 215—216 и Ahlwardt, Verzeichniss der arabischen Handschriften der königlichen Bibliothek zu Berlin, B. VII, 1895, 626, № 8727.

4) Озаглавленный كتاب ترجمة جاودان خرد من مصنّفات الإمام بن الإمام شرف الملّة والدين محمّد القروني. Кодексъ помѣченъ 759 г. Х. = 1358 г. по Р. Х.; дата написана нѣсколько инымъ почеркомъ, быть можетъ скорописью, быть можетъ другой рукой. Краткое упоминаніе объ этой книгѣ см. B. Dorn, Das Asiatische Museum, St Petersburg, 1846, 289.

рыя изреченія Анӯширвāна, мудрыя изреченія Джемшида, завѣщаніе царя Хурмуза, разныя изреченія мудрецовъ — индійскихъ, персидскихъ и арабскихъ, мудрыя изреченія Мухаммеда, ʿАлӣ, завѣты Лукмана сыну, изреченія Хасана Басрійскаго[1]). Какъ видимъ, большая часть содержащихся въ этомъ сочиненіи отрывковъ возводится къ до-мусульманской Персіи, а это, — равно какъ заглавіе «Джāвидāн-Хиредъ» (на что уже указывалъ Саси), — фактъ, съ которымъ необходимо считаться. Это нужно принять во вниманіе даже теперь, когда еще не сдѣлано подробнаго сравненія этихъ отрывковъ съ соотвѣтственными текстами въ пехлевійскихъ подлинникахъ и позднѣйшихъ мусульманскихъ переводахъ. Отрывки, возводимые къ мусульманской эпохѣ (напр. къ ʿАлӣ и Хасану Басрійскому), конечно позднѣйшія добавленія. По мнѣнію Саси даже тѣ изреченія, которыя по содержанію кажутся принадлежащими мусульманскому времени, могутъ относиться къ сасанидской Персіи, такъ какъ религіозный синкретизмъ послѣдней допускалъ большія различія во мнѣніяхъ. Саси сравнивалъ изреченія Джāвидāн-Хиреда съ этическими и политическими сентенціями какъ Хитопадеши, такъ и Калӣлы и Димны. Это сравненіе Саси мы особенно отмѣчаемъ, такъ какъ оно лишній разъ указываетъ на сильное вліяніе индійскихъ переводовъ въ сасанидской литературѣ, къ чему мы еще вернемся[2]). Не входя въ дальнѣйшее, подробное разсмотрѣніе этой книги, отмѣтимъ, что для насъ интересно преданіе о находкѣ ея и переводѣ на арабскій языкъ, сообщаемое Ибн-Мискавейхи, руководившимся въ свою очередь разсказомъ Джāхиза[3]).

Согласно этому преданію, халифъ Мамӯнъ желалъ одарить посла Ка-

---

1) Ср. содержаніе Джāвидāн-Хиреда Британскаго Музея — Rieu, o. c. нѣсколько отличающееся. Тамъ имѣются изреченія Бахмана, сына Исфендиāра, и Гермеса, а не имѣется завѣтовъ Āдурбā. Послѣдніе (въ перс. пер. въ Библ. India Office 22a сл. и 42a сл.; въ рукописи Азіатскаго Музея 28a слѣд. и 88a слѣд., въ пагинаціи кодекса л. 66 пропущенъ вовсе), заслуживаютъ вниманія и интересны для сравненія съ извѣстными пехлевійскими завѣтами Āтурпāта, доступными и непехлевистамъ благодаря работамъ парсійскихъ ученыхъ и новымъ европейскимъ переводамъ — Ch. Harlez, Le livre des conseils d'Aterpât i Mansarspendân, Le Muséon, VI, 1887, 66—79 и Fr. Müller, Beiträge zur Textkritik und Erklärung des Andarz i Āturpāt i Maḥraspandān mit einer deutscher Uebersetzung, Sitzungsberichte der Wiener Akademie der Wissenschaften (цитуются далѣе подъ иниціалами SBWA), phil. — hist. Classe, B. 136, 1897, VIII Abh., SS. 1—25. О сходной дидактической литературѣ см. еще Th. Nöldeke, Persische Studien, II, ib., B. 126, 1892, XII Abh., S. 29, anm. 2 и Ethé, o. c. 346 folg.

2) Sacy, o. c. 8, указалъ сообщеніе Ибн-Мискавейхи, который говорилъ, что долго искалъ упоминаемую въ استطالة الفهم Джāхиза старо-персидскую книгу Джāвидāн-Хиредъ и наконецъ нашелъ ее въ Фарсѣ у мōбедāн-мōбеда. Ср. съ этимъ аналогичное сообщеніе Масӯдӣ объ Āйн-нāмэ, полный экземпляръ который можно было найти въ его время лишь у мōбедовъ и другихъ, пользующихся властью лицъ.

3) Рук. Аз. Муз., л. 20б слѣд.; ср. Sacy, o. c. 10 suiv.

булистанскаго царя Дӯбāна, отказавшагося отъ денегъ и просившаго у халифа старо-персидскую книгу, хранившуюся въ ʻИрāкѣ, въ Мадāинѣ, въ сокровищницѣ хосроевъ, находившейся подъ заломъ дворца («йвāномъ»). Посланный Мамӯна нашелъ тамъ небольшой сундукъ изъ чернаго стекла. Дӯбāнъ, открывъ его, досталъ оттуда кусокъ атласной матеріи, въ которую было завернуто сто листовъ. Это и была книга Джāвидāн-Хиредъ[1]). При содѣйствіи Хасана-ибн-Сахла она была переведена на арабскій языкъ. Таково преданіе о находкѣ этой книги, сопоставляемое нами съ вышеприведеннымъ преданіемъ о находкѣ сочиненія Иппократа о «знакахъ смерти». Хотя эти преданія въ обоихъ случаяхъ не тожественны, однако мы указываемъ и сближаемъ ихъ. Мы лишній разъ отмѣчаемъ отсутствіе исторической достовѣрности извѣстія о псевдэпиграфическомъ сочиненіи «знаки смерти». Мы видимъ, что преданія о находкахъ старыхъ книгъ въ развалинахъ древнихъ построекъ, распространялись въ эпоху усиленной переводческой дѣятельности въ халифатѣ и на несомнѣнно древне-персидскія темы, а потому и не считаемъ возможнымъ рѣзко отграничивать приложенный къ нашему трактату отрывокъ псевдо-Иппократа отъ древне-персидскихъ повѣрій и примѣтъ[2]).

Кромѣ источниковъ несомнѣнно сасанидскаго происхожденія (Āйнāмэ), а также нѣкоторыхъ полу-научныхъ, полу-народныхъ традицій (трактатъ о «знакахъ смерти» псевдо-Иппократа), нашъ текстъ имѣлъ также среди своихъ источниковъ индійскіе матеріалы. Въ одномъ мѣстѣ онъ прямо называетъ цитату — «изъ словъ» нѣкоего индійца о физіономикѣ[3]).

Мы дальше будемъ говорить относительно отношеній древне-индійскихъ науки и повѣрій къ сасанидской Персіи, — о нихъ сообщаетъ трактатъ Джāхиза. Здѣсь мы отмѣчаемъ еще одинъ рядъ источниковъ — персидскіе переводы индійскихъ книгъ. Этими переводами пользовались и другіе арабскіе писатели. Мы уже указывали на цитаты изъ индійскихъ книгъ у Ибн-Кутейбы. Эти цитаты, впрочемъ, — несмотря на то, что Ибн-Кутейба всегда почти говоритъ: «читалъ я въ одной индійской книгѣ», — всѣ сводятся къ Калīлѣ и Димнѣ, и этимъ лишній разъ доказываютъ то громадное вліяніе, которое оказалъ этотъ сборникъ странствующихъ повѣстей на раз-

---

1) Рук. Аз. Муз. л. 21б,11—12: اخرجه كنجور وزير ملك إيران شهر من الحكمة القديمة.

2) Sacy, o. c. 15, считалъ возможнымъ признать, что книга даже могла быть найдена въ развалинахъ Мадāина. Къ этой части преданія мы относимся скептически, но считаемъ вполнѣ возможнымъ возводить время перевода Джāвидāн-Хиреда на арабскій языкъ къ эпохѣ Мамӯна, въ виду извѣстныхъ иранофильскихъ стремленій этого халифа.

3) Въ текстѣ онъ названъ جوبر الهندى. Въ этой же области извѣстны также сочиненія и другого индійца طمطم, о которомъ мы тоже почти ничего не знаемъ.

витіе арабской литературы. Цитаты нашего трактата слишкомъ спеціальны, чтобы восходить къ Калилѣ и Димнѣ; онѣ касаются не мудрыхъ изреченій и нравственныхъ сентенцій или странствующихъ повѣстей, а физіономики и разнаго рода примѣтъ и повѣрій. Впрочемъ, темъ подобнаго рода могла касаться и Калила и Димна, заключающая въ себѣ, какъ извѣстно, богатый фольклорный матеріалъ, а потому и нѣкоторыя цитаты нашего трактата могутъ исходить изъ нея или имѣть съ нею общій въ данномъ случаѣ источникъ. Мы встрѣчаемъ напримѣръ въ Калилѣ и Димнѣ[1]) физіономическую примѣту, по которой преобладаютъ дурныя качества у того, у кого лѣвый глазъ меньше праваго и постоянно моргаетъ, а носъ согнутъ въ правую сторону. Примѣръ изъ Калилы и Димны, по нашему мнѣнію, особенно характеренъ, такъ какъ намъ извѣстенъ путь, которымъ перешло это сочиненіе въ арабскую литературу, — именно черезъ посредство пехлевійскаго перевода, съ котораго уже переводилъ Ибн-Мукаффа. Тотъ же путь должны были конечно пройти и другія индійскія сочиненія. Поэтому имѣющіяся въ нашемъ трактатѣ цитаты изъ индійскихъ сочиненій могутъ быть даже включены въ «персидскіе взгляды» на разнаго рода повѣрья и примѣты, хотя мы въ данномъ случаѣ и не имѣемъ критерія въ видѣ сасанидскихъ памятниковъ.

Подъ сасанидскими памятниками мы разумѣемъ не только спеціально Āйн-нāмэ. Проникновеніе древне-персидскихъ матеріаловъ въ нашъ трактатъ возможно было и изъ другихъ, сходныхъ памятниковъ. Еще въ древнюю эпоху арабской литературы дѣлались переводы и писались книги о разнаго рода примѣтахъ и повѣрьяхъ[2]). Рядомъ съ извѣстной намъ физіономикой Полемона и физіономикой, ложно приписываемой Аристотелю, мы имѣемъ упоминанія о разнаго рода книгахъ о повѣрьяхъ и примѣтахъ, — среди нихъ называются и персидскія, и индійскія книги: индійская хиро-

---

1) S. de Sacy, Calila et Dimna ou Fables de Bidpaï, Paris, 1816, ١٤٨,٩ слѣд. Ср. J. Guidi, Studii sul testo arabo del libro di Calila e Dimna, Roma, 1873, 45, n. a. Хотя Бенфей (Th. Benfey, Pantschatantra, Fünf Bücher indischer Fabeln, Märchen und Erzählungen, I, Leipzig, 1859, 298) считалъ шестую главу арабской версіи (судъ надъ Димной) не-индійской, а возникшей скорѣе подъ мусульманскимъ вліяніемъ, у Ибн-Кутейбы, ʿУюн-ал-ахбāръ, III, ٢٧٠,١٦ слѣд., болѣе подробная характеристика дается какъ цитата изъ «индійской» книги. Древней Индіи были хорошо извѣстны физіономическія правила. Законы Ману, гл. VIII, 26 (G. Bühler, The laws of Manu, Sacred books of the East, XXV, Oxford, 1886, 257) говорятъ, что природа человѣка познается изъ внѣшняго вида, движеній, походки, жестовъ, рѣчи, измѣненій глазъ и лица. Ср. Панчатантру, I кн., 50 (Benfey, II, Leipzig, 1859, 12 и 372, n. 63).

2) См. Фихристъ, I, ٣١٤; ср. II, 155. Тутъ называются: كتاب زجر الفرس, كتاب خطوط, كتاب الفأل لأهل فارس, كتاب زجر العرب, كتاب زجر الهند, زجر الروم, كتاب الاختلاج على ثلثة أوجه للفرس, الكفّ و النظر فى اليد للهند. По Фихристу (I, ١٣; ср. II, 8) у древнихъ персовъ существовало особое письмо для этого рода тайныхъ наукъ.

мантія, персидскій трепетникъ и пр. Весьма вѣроятно, что не только изъ арабскаго перевода Āйн-нāмэ, сдѣланнаго Ибн-Мукаффой, но и изъ переводовъ этихъ книгъ черпалъ авторъ нашего трактата.

Прежде чѣмъ перейти къ разбору и комментарію текста, мы считаемъ нужнымъ сказать нѣсколько словъ о нашемъ отношеніи къ этой сторонѣ дѣла. «Приступая къ объясненію примѣтъ», писалъ К. Кавелинъ[1]): «прежде всего должно опредѣлить предметъ, къ которому онѣ относятся и значеніе, которое онъ имѣлъ или могъ имѣть въ языческомъ быту. Это первое и главное, иногда довольно трудное: остальное понять легко. Философскія схемы, общія начала и воззрѣнія, глубокомысленныя аналогіи тутъ не у мѣста». Дѣйствительно, не облекаясь, подобно обряду, въ опредѣленную внѣшнюю форму, примѣта, кромѣ того, гораздо короче его. Затѣмъ, она имѣетъ по большей части очень общій характеръ по своему содержанію, опредѣляющему отношеніе между двумя или нѣсколькими предметами. Вслѣдствіе этого общаго характера содержанія, очень трудно опредѣлить въ примѣтахъ элементъ культурнаго общенія, элементъ заимствованія. Также трудно опредѣлить и генезисъ ихъ. Поэтому наиболѣе правильнымъ взглядомъ на изученіе примѣтъ, является, по нашему мнѣнію, тотъ, который стремится лишь по мѣрѣ возможности опредѣлить значеніе предмета, къ которому примѣта относится. По отношенію этого вида народнаго творчества въ полной силѣ оказывается теорія однородности законовъ развитія народной психики. Мало помогаютъ объясненію примѣтъ и аналогіи. Въ нѣкоторыхъ случаяхъ онѣ, впрочемъ, могутъ служить иллюстраціей, какъ напримѣръ бытующая по сіе время примѣта можетъ иллюстрировать извѣстіе древняго автора. Весьма важнымъ вопросомъ при изученіи народныхъ примѣтъ и повѣрій является также вопросъ о взаимодѣйствіи народнаго міросозерцанія и древней науки, народной словесности и книжнаго преданія. Необходимо признать, что это общеніе было очень велико и трудно сказать, гдѣ кончается народное міросозерцаніе и начи-

---

1) К. Кавелинъ, Нѣсколько словъ о примѣтахъ, Архивъ историко-юридическихъ свѣдѣній, относящихся до Россіи, изд. Н. Калачовымъ, Кн. I, СПБ. 1876, отд. VI, стр. 3—13. Этотъ ученый задавался цѣлью опредѣлить значеніе примѣтъ и методъ ихъ изученія. Опредѣливъ примѣту какъ примѣченное человѣкомъ постоянное, но непонятное для него отношеніе между явленіями или событіями, онъ установилъ два рода ея: одинъ—основанный на опытѣ и наблюденіи, другой—на вѣрованьяхъ, при чемъ однако оба рода тѣсно связаны между собою. Кромѣ того, однѣ примѣты указываютъ на связь между различными явленіями природы, другія на связь между этими явленіями и событіями жизни человѣка или на связь между различными видами послѣднихъ. Примѣты, по его мнѣнію, не только памятники бытовые, но и памятники эволюціи народной психики. Онъ считалъ, что примѣты сохраняютъ и раскрываютъ многія изъ тѣхъ бытовыхъ подробностей, которыя исчезли изъ сказанія, обряда и пр.

нается древняя наука. Изданный нами текстъ является этому нагляднымъ примѣромъ: народныя повѣрья и примѣты тѣсно переплетаются въ немъ съ астрологіей, магіей и пр.

2.

Итакъ, нашъ текстъ признаетъ сильное вліяніе Индіи на суевѣрія и гаданія сасанидской Персіи, а также на развитіе ея научныхъ традицій; въ особомъ приложеніи говорится вкратцѣ объ индійскихъ «сужденіяхъ» относительно тѣхъ вопросовъ, которымъ посвящено содержаніе нашего текста. Рядомъ съ разнаго рода «суевѣрными знаніями», имъ называются также и нѣкоторыя заимствованныя отъ индійцевъ науки — медицина, астрологія, математика. Болѣе того, подобно тому какъ византійцы заимствовали всю культуру отъ древнихъ грековъ, такъ и персы считаются имъ позаимствовавшими всю культуру отъ индійцевъ. Ежегодно яко бы являлось ко двору хосроевъ значительное количество этихъ мудрецовъ изъ Индіи, которые и сообщали имъ о грядущихъ событіяхъ. Предсказанія ихъ носили въ себѣ рѣзко астрологическій характеръ — знаніе грядущаго, по ихъ мнѣнію, зависило отъ положенія планетъ и знаковъ зодіака, отъ восхода и захода звѣздъ. Ихъ записанныя постановленія передавались царю, а затѣмъ хранились въ особой тайной сокровищницѣ [1]).

Хотя сношенія сасанидской Персіи съ Индіей несомнѣнно должны были быть весьма оживленны, историческія извѣстія, которыми располагаемъ мы въ этомъ отношеніи, скудны. Какъ Шāх-нāмэ, такъ и арабскія историческія сочиненія не разъ упоминаютъ объ отношеніяхъ до-сасанидской Персіи къ Индіи, но всѣ эти разсказы носятъ разумѣется совершенно фантастическій характеръ [2]). По этимъ разсказамъ еще Хӯшенгъ бывалъ въ Индіи, Кейкубāдъ поручилъ Рустему управленіе Индіей, Бӣштāсфъ основалъ въ Индіи храмы огня и пр. [3]) Немногимъ впрочемъ надежнѣе и со-

---

1) То же преданіе объ этой сокровищницѣ сохранилось вѣроятно и въ преданіи о находкѣ Джāвидāн-Хиреда подъ дворцомъ Кисры.

2) J. Reinaud, Mémoire géographique, historique et scientifique sur l'Inde, Paris, 1849 (Extrait du tome XVIII, 2 partie des Mémoires de l'Académie Nationale des inscriptions et belles-lettres), 54 suiv.

3) Zotenberg, Tha'âlibi, 6, 146, 255 и др. О греческихъ врачахъ въ древней Персіи ср. цитаты въ статьѣ L. C. Casartelli, Un traité pehlevi zur la médecine, Le Muséon, T. V, 1886, 313—314. Кромѣ приведеннаго у Casartelli (черезъ Spiegel'я) извѣстія Прокопія Кесарійскаго объ изслѣдовавшемъ Кавāда врачѣ Стефанѣ (II, 26) см. еще у того же Прокопія (II, 28) о греческомъ врачѣ Тривунѣ у Анӯширвāна. (Ср. также Прокопія Кесарійскаго исторія войнъ Римлянъ съ Персами, книга II, пер. С. Дестуниса, комм. Г. Дестуниса. СПБ. 1880, 193—194, 205).

общенія о сношеніяхъ съ Индіей Сасанидовъ. По одному изъ этихъ преданій, Шāпӯръ во время болѣзни просилъ письменно индійскаго царя прислать ему хорошаго врача. Такъ совѣтовали ему поступить мōбеды и мерзбāны, не довѣрявшіе греческимъ медикамъ. Индійскій врачъ вылечилъ Шāпӯра и рекомендовалъ ему для житья Сузы, жители которыхъ ознакомились отъ него съ медициной[1]). Тотъ же царь построилъ яко бы города въ Индіи и заставилъ царей Синда и Хинда платить ему дань[2]). Цикломъ легендъ увито сказаніе о путешествіи въ Индію Бахрāма-Гӯра[3]). Какъ по поэтическимъ (Шāх-нāмэ), такъ и по историческимъ сообщеніямъ (арабскія сочиненія) власть Хосроя Анӯширвāна простиралась яко бы до Индіи[4]). Къ его царствованію возводится по преданію перенесеніе изъ Индіи въ Персію шахматной игры и извѣстнаго сборника басенъ и притчъ Калīлы и Димны. При его дворѣ находилось яко бы болѣе сотни медиковъ — греческихъ, индійскихъ и персидскихъ[5]). Какъ къ нему, такъ и къ другимъ сасанидскимъ царямъ[6]), приходили посольства отъ индійскихъ владѣтелей съ письмами и подарками[7]). Слѣды этихъ сношеній яснѣе можетъ быть сохранились въ тѣхъ переводныхъ съ индійскаго сборникахъ басенъ и сказокъ, а также въ ихъ отрывкахъ, которые прежде чѣмъ попасть въ сирійскую или арабскую литературы, должны были быть переведены при Сасанидахъ на пехлевійскій языкъ[8]).

Въ одномъ изъ сочиненій того же Джāхиза сохранилась краткая характеристика Индійцевъ и ихъ культуры, характеристика, сходная съ

---

1) Весьма возможно, что въ сасанидской Персіи переводили уже на персидскій языкъ индійскія медицинскія сочиненія,—см. J. Jolly, Indische Medicin, Grundriss der indo-arischen Philologie, B. III, Heft 10, 1901, Strassburg, 18.

2) Zotenberg, o. c. 529, 530, 531. Cp. Nöldeke, Tabari, 67.

3) Nöldeke, Tabari, 106 folg. Zotenberg, 560 suiv.

4) Reinaud, 125, Zotenberg, 615.

5) Zotenberg, 629. Cp. Nöldeke, o. c., 304 (гдѣ у Хосроя Парвīза 360 ученыхъ— предсказателей, волшебниковъ и астрологовъ).

6) Cp. Nöldeke, 371 folg.

7) О сношеніяхъ Сасанидовъ съ династіей Гупта см. замѣчанія у Lassen, Indische Alterthumskunde, II, 1874, 1007—8; объ Индіи и сасанидской Персіи см. также Spiegel, Eranische Alterthumskunde, III, Leipzig, 1878, 353 и 421. Иранскія вліянія на Индію, отсутствующія въ греко-бактрійскую и индо-пареянскую эпоху, можно точно опредѣлить съ появленіемъ индо-скиѳскаго царства: мы видимъ на монетахъ иранскія божества и иранскіе титулы, пирей и персидскій костюмъ; персидскіе маги основали въ Индіи въ VI в. храмъ солнца — см. J. Darmesteter, Points de contact entre le Mahâbhârata et le Shâh-Nâmah (JA, 8 série, X, 1887, 38 suiv.).

8) Напр. тотъ же сборникъ Калīла и Димна. Частичный примѣръ представляетъ разсказъ изъ антологіи, приписываемой тому-же Джāхизу, въ статьѣ бар. В. Р. Розена, Къ вопросу объ арабскихъ переводахъ Худâй-Нâмэ, Восточныя Замѣтки, СПБ. 1895, 153 сл. (въ изданіи Van Vloten'a см. ٣٤٣ сл.).

его сообщеніями въ нашемъ трактатѣ[1]). Индійцы, по его словамъ, занимали первое мѣсто въ астрологіи, математикѣ, медицинѣ, отличались въ изобразительныхъ искусствахъ; имъ принадлежало изобрѣтеніе шахматовъ, самой благородной, наиболѣе требующей сообразительности и размышленія игры; они выдѣлывали превосходные мечи, которыми лучше другихъ и сражались; отличались въ музыкѣ и танцахъ. Славились также индійскія поэзія, краснорѣчіе, философія, словесныя науки. Отъ нихъ была взята книга «Калīла и Димна» и отъ нихъ шло несравненное индійское алое. Такую характеристику быть можетъ индійцы получили еще со времени Сасанидовъ.

Кромѣ сообщеній о заимствованіи персами отъ индійцевъ, нашъ текстъ даетъ также нѣкоторыя извѣстія объ индійскихъ гаданіяхъ. Среди разнаго рода особыхъ, свойственныхъ индійцамъ знаній, называется, между прочимъ, особое знаніе — «джафръ», т. е. знаніе календаря и связанныхъ съ нимъ астрономическихъ и метеорологическихъ явленій. Тѣмъ же именемъ называлась и книга, заключавшая въ себѣ эти опредѣленія, альманахъ. Кромѣ того, каждыя семь лунныхъ станцій они называли этимъ именемъ. Такимъ образомъ, текстъ даетъ намъ новые матеріалы въ вопросѣ объ индійскомъ календарѣ, въ частности въ вопросѣ о такъ называемомъ лунномъ зодіакѣ, «накшатра-зодіакѣ», состоящемъ изъ 27 или 28 созвѣздій (въ нашемъ текстѣ 28). Зодіакъ этотъ существовалъ позже и у арабовъ, которымъ даже приписывается важное значеніе въ выработкѣ его[2]). Это индійское названіе, значеніе котораго нѣсколько уясняется нашимъ текстомъ, представляетъ также интересъ и въ вопросѣ о позднѣйшихъ арабскихъ книгахъ. Оно, впрочемъ, встрѣчалось уже ранѣе въ арабской литературѣ, напримѣръ въ «Ал-āсāръ ал-бāкийя» Бīрūнī[3]), сочиненіи, посвященномъ хронологіи древнихъ народовъ, — и при томъ нѣсколько разъ. Проф. Сахау,

---

1) كتاب فخر السودان على البيضان, см. Tria opuscula auctore Abu Othman Amr ibn Bahr al-Djahiz Basrensi, quae edidit G. Van Vloten, Lugduni Batavorum, 1903, ٨٤—٨٥.

2) Инд. накшатра = араб. манāзиль. Объ этомъ вопросѣ (равно какъ вообще объ индійскихъ астрономіи и астрологіи) см. G. Thibaut, Astronomie, Astrologie und Mathematik (Grundriss der indo-arischen Philologie, B. III, H. 9), Strassburg, 1899, 12 folg. Бīрūнī (India) даетъ общія свѣдѣнія объ индійскихъ астрономіи и астрологіи: индійская литература объ астрономіи и астрологіи — ٧٣,٢ сл. и I, 152 сл.; принципы ихъ — ٣٠١,١٥ сл., II, 211 сл.; имена планетъ, знаковъ зодіака, лунныхъ станцій и т. п. — ١٠٣,٢٠ сл., I, 213 сл.; лунныя станціи — ٢٤٢,١ сл., II, 81. Объ арабской астрологіи мы имѣемъ цѣнную статью O. Loth, Al-Kindi als Astrolog, Morgenländische Forschungen, Festschrift Dr. H. L. Fleischer gewidmet, Leipzig, 1875, 261—309, гдѣ пояснены и многіе термины, встрѣчаемые въ нашемъ трактатѣ — شرف, هبوط, مقارنة, مقابلة, تثليث, تربيع и т. д.

3) Chronologie orientalischer Völker von Albêrûnî, herausgegeben von Dr. E. Sachau, Leipzig, 1878. The chronology of ancient nations, an english version of the arabic text of the Athâr-ul-bâkiya of Albîrûnî, translated by Dr. E. Sachau, London, 1879.

издатель и переводчикъ этого сочиненія, отмѣтивъ тѣ мѣста, гдѣ это названіе встрѣчается[1]), указалъ на то, что словарь арабскаго языка не даетъ объясненія этого слова, что оно есть спеціальный терминъ индійской астрологической системы, стоящій въ тѣсной связи съ лунными станціями, и что оно вѣроятно означаетъ нѣкоторыя подраздѣленія этихъ станцій. Опредѣленіемъ нашего текста гипотеза проф. Сахау подтверждается, — «при индійскомъ происхожденіи понятія, весьма возможно и индійское происхожденіе слова». Это же слово извѣстно въ позднѣйшей мусульманской литературѣ еще какъ названіе книги, — преимущественно магическаго содержанія. По Ибн-Халдӯну, «джафръ» — мистическая книга, комментарій на нѣкоторыя части Корана и объясненіе ихъ скрытаго смысла[2]). Названіе книги «джафръ» дало поводъ къ народнымъ этимологіямъ, что особенно понятно при иностранномъ происхожденіи этого названія[3]).

Кромѣ упоминанія «джафра», извѣстія нашего текста объ индійскихъ гаданіяхъ интересны еще тѣмъ, что противопоставляютъ и сравниваютъ ихъ съ арабскими. Различіе между ними заключается въ томъ, что арабскія гаданія основаны непосредственно на наблюденіи разнаго рода явленій; изъ этого наблюденія выводились арабами разнаго рода заключенія, — при этомъ не представлялось необходимости во вторичномъ доказательствѣ, основанномъ на астрологическихъ данныхъ[4]). Передъ нами — типичное натуральное гаданіе. Другой характеръ имѣло, по сообщенію нашего текста, индійское гаданіе. Индійцы познавали будущее изъ земныхъ явленій, «соединенныхъ съ небесными». Они выводили заключенія изъ событій и явленій, лишь справившись съ астрологическими данными. Крикъ ворона, лай собаки и пр. имѣлъ для нихъ опредѣленное значеніе лишь тогда, когда они сопоставляли ихъ съ положеніемъ небесныхъ свѣтилъ, напримѣръ съ тѣмъ, въ какомъ знакѣ зодіака или въ какой станціи находилась луна и пр. Передъ нами, такимъ образомъ, типичная «юдиціарная» астрологія, зани-

---

1) Chronology, 371—372.

2) Prolégomènes historiques d'Ibn Khaldoun, Notices et Extraits des manuscrits, XVI, 1, 184—185, 191; XX, 1, 214—216, 224—225.

3) Уже Van Vloten, Recherches sur la domination arabe, le chiitisme et les croyances messianiques sous le khalifate des Omayades, Verhandelingen der koninglijke Akademie van Wetenschapen, Afdeeling Letterkunde, Nieuwe reeks, Deel I, Amsterdam, 1896, 56, n. 6, предполагалъ иностранное происхожденіе этого слова, коптское или греческое (γραφή). О книгѣ «джафръ» см. еще J. Goldziher, Materialien zur Kenntniss der Almohadenbewegung in Nordafrica, ZDMG, 1887, B. 41, 123 и его же, Muhammedanische Studien, I, Halle, 1889, 271; ср. Ahlwardt, o. c. III, 1891, 551. О наукѣ подъ этимъ же именемъ ср. Хāджжӣ-Халӣфа, II (1837), 603 и Dozy, Supplément aux dictionnaires arabes, II (1881), 164 (при словѣ علم).

4) Нѣкоторыя древне-арабскія примѣты, основанныя на наблюденіи луны и звѣздъ см. у A. v. Kremer, Beiträge zur Kenntniss der Geschichte und Sitten der Araber vor dem Islam (nach Teskiret Ibn Hamdûn), SBWA, phil.-hist. Classe, 1851, VI, 410—450, спец. 444 folg.

мающаяся опредѣленіемъ вліянія свѣтилъ на судьбы человѣка[1]). Существеннымъ различіемъ является, такимъ образомъ, то, что у арабовъ обычныя гаданія первобытнаго народа, тогда какъ у индійцевъ гаданію даны яко-бы научныя основы, въ видѣ астрологическихъ данныхъ[2]). Мы остановились нѣсколько на этихъ сообщеніяхъ объ индійскихъ «сужденіяхъ» потому, что нашъ текстъ приписываетъ имъ вліяніе на персидское гаданіе черезъ являвшихся ко двору хосроевъ мудрецовъ. Это вліяніе могло разумѣется проходить и инымъ путемъ, благодаря исконнымъ историческимъ связямъ этихъ странъ.

Выше мы уже указывали на то, что въ ʿУюн-ал-ахбāръ, во второй книгѣ, сохранился, съ указаніемъ источника, рядъ древне-персидскихъ примѣтъ и повѣрій, въ большинствѣ сходныхъ съ сообщаемыми въ нашемъ текстѣ. Эти сообщенія выдѣлены Ибн-Кутейбой въ особую главу (одиннадцатую), которая, помимо содержанія, особенно важна какъ одна изъ весьма немногочисленныхъ изъ извѣстныхъ намъ до сихъ поръ цитатъ изъ Āйн-нāмэ. Сравнивая содержаніе этой цитаты съ нашимъ текстомъ, мы должны указать, что въ ней можно найти лишь очень мало примѣтъ и повѣрій, отличныхъ отъ нашего текста; остальныя почти буквально совпадаютъ. Кромѣ небольшихъ отступленій, лишь заключеніе цитаты (дурная и хорошая примѣта при встрѣчѣ и царскіе обычаи) существенно отдаляется отъ нашего текста.

Въ нѣкоторыхъ случаяхъ, какъ мы убѣдились при изданіи, цитата изъ Āйн-нāмэ помогаетъ установить текстъ нашего трактата[3]), такъ что приходится сожалѣть, что она слишкомъ кратка. Для сравненія съ нашимъ текстомъ представляемъ полный переводъ этой цитаты (ʿУюн-ал-ахбāръ, II, 186,9—189,4).

---

1) По персидскимъ преданіямъ, юдиціарная астрологія положена въ основу распространенной на Востокѣ игры «нардъ» (триктракъ). Объ юдиціарной астрологіи въ Персіи вообще см. Voyages du chevalier Chardin en Perse et autres lieux de l'Orient, nouvelle édition par L. Langlès, t. II, Paris, 1811, 274 и t. IV, ib. 314 suiv. Основателями ея считаются древніе маги — ib. t. VIII, 375—376. Въ дальнѣйшемъ нашемъ изложеніи при ссылкахъ на Шардена мы будемъ имѣть въ виду именно это его изданіе.

2) Относительно указаній погоды лунными станціями и ихъ значеній ср. сообщенія нашего текста съ таблицей названій, значеній и погоды у Бīрӯнī, Chronologie, ٣٤٧—٣٤٨; Chronology, 351. Тотъ-же авторъ, ٢٣٣—219, даетъ рядъ древне-персидскихъ астрологическихъ повѣрій. Арабскія наблюденія надъ звѣздами Бīрӯнī тоже считаетъ основанными не на наукѣ, а на народномъ преданіи — тамъ-же ٢٣٨—٢٣٩, 226—227 (объ *анвā* тамъ-же 428).

3) Первая и вторая книги ʿУюн-ал-ахбāръ изданы Brockelmann'омъ по двумъ рукописямъ—Азіатскаго Музея Академіи Наукъ и медресе Кёпрюлю въ Константинополѣ.

«Взгляды Персовъ на гаданіе и руководство имъ.

Читалъ я въ книгѣ Āйнъ, что Персы говорили:

Когда горные хищные звѣри и птицы начинаютъ сниматься со своихъ мѣстъ, то это указываетъ на то, что зимовка будетъ тяжелая и суровая.

Когда крысы приносятъ хозяину дома пшеницу и ячмень, или (вообще какую-нибудь) пищу, будетъ прибыль въ имуществѣ его самого и его дѣтей.

Если же онѣ грызутъ одежды его, это указываетъ на убыль въ имуществѣ его самого и его дѣтей, такъ что слѣдуетъ ему положить этому предѣлъ и исправить.

Когда громко пылаетъ огонь, то это указываетъ на большую радость.

Когда (огонь) пылаетъ завывая [букв. пламенемъ подобнымъ плачу], то это указываетъ на горе.

Что касается до огня, воспламеняющагося подъ котломъ, то это указываетъ на большіе дожди или на прибытіе гостей.

Когда начинается падежъ быковъ и коровъ, то будетъ смертность и среди людей.

Когда начинаютъ околѣвать свиньи, то всѣ люди будутъ въ безопасности и здоровы.

Когда начинаютъ околѣвать хищные звѣри, то постигнетъ людей нужда.

Когда начинаютъ околѣвать крысы, будетъ у людей изобиліе всего.

Когда много квакаютъ лягушки, это указываетъ на грядущую смертность.

Когда клохчетъ въ домѣ пѣтухъ, будутъ больны мужчины.

Когда клохчетъ курица, будутъ больны женщины.

Когда кричатъ пѣтухи крикомъ, похожимъ на плачъ, распространяется смертность среди женщинъ.

Когда кричатъ такъ же курицы, распространяется смертность среди мужчинъ.

Когда каркаетъ черный воронъ и отвѣчаетъ ему курица, то это указываетъ на разрушеніе и на (позднѣйшее) возстановленіе (разрушеннаго).

Когда кудахчетъ курица и отвѣчаетъ ей воронъ, то это указываетъ на обработку (чего-либо) и на (позднѣйшее) разрушеніе (этого).

Когда почтенный человѣкъ храпитъ во снѣ[1]), онъ достигаетъ славы и высокаго положенія.

---

1) Читая вм. في قومه — في نومه.

Кто дуетъ во снѣ, уничтожаетъ свое имущество.

Когда кто-нибудь стучитъ во снѣ зубами, то это указаніе на сплетню, и слѣдуетъ ему ударить себя по рту дырявымъ башмакомъ.

(Когда) передъ кѣмъ-нибудь упадетъ съ камня змѣя, постигнутъ его вредъ и непріятность.

Когда въ воздухѣ тьма и мракъ безъ причины, нужно народу опасаться эпидеміи и болѣзни.

Когда на небосклонѣ ясною[1]) ночью виденъ свѣтъ, въ родѣ мерцанія огней, то на ту мѣстность, гдѣ видятъ это, нападетъ врагъ.

Если же видятъ это, а въ этой мѣстности находится врагъ, то онъ уйдетъ изъ нея.

Когда неожиданно залаетъ ночью собака, это указываетъ на то, что воры задумали ограбить имущество, находящееся въ домѣ или у сосѣдей.

Когда пѣтухъ хлопаетъ крыльями и не кричитъ, это указываетъ на то, что счастье далеко отъ его хозяина.

Когда въ домѣ много кричитъ сова, выздоровѣетъ больной, если таковой находится въ немъ.

Когда слышенъ въ жилищѣ трескъ, уйдетъ изъ него живущій въ немъ.

Когда воютъ волки съ горъ и отвѣчаютъ имъ собаки изъ деревень, будутъ тяжелая война и пролитіе крови.

Когда воютъ собаки и отвѣчаютъ имъ волки, будутъ эпидемія и повальная смертность.

Когда неожиданно начинаютъ сильно выть собаки, это указываетъ на прибытіе врага въ ту мѣстность, гдѣ онѣ находятся.

Когда кричитъ въ домѣ пѣтухъ до времени пѣтушинаго крика, то это бываетъ изъ желанія устранить бѣду, надвигающуюся на этотъ домъ.

Когда кричитъ въ домѣ курица, какъ пѣтухъ, она предостерегаетъ живущихъ въ немъ отъ приближающагося несчастья.

Когда много прыгаетъ пѣтухъ на подушкѣ хозяина дома, онъ [т. е. хозяинъ] получаетъ славу и извѣстность.

Если дѣлаетъ это курица, постигаютъ его неизвѣстность и презрѣніе.

Когда пѣтухъ запачкаетъ коверъ его, онъ получитъ обильное имущество и большое богатство; и это (даже) въ томъ случаѣ, когда слуги уберутъ съ ковра (оставшееся на немъ).

---

1) Читай ясною вм. «темной» также въ трактатѣ Джāхиза.

Если запачкаетъ коверъ его курица, получитъ отъ него большое благо жена его.

Говорили они (еще): Близка смерть больного, похожаго на здороваго.

Здоровый, похожій на больного, подверженъ болѣзни, и необходимо избѣгать его.

Слѣдуетъ познать говорливаго (человѣка),—быть можетъ онъ не хорошо дѣлаетъ дѣло.

(Необходимо познать) молчаливаго, сдержаннаго,—быть можетъ онъ коваренъ.

И считали они дурнымъ встрѣтить новорожденнаго въ часъ его рожденія, если только онъ не былъ съ какимъ-нибудь недостаткомъ: такъ какъ въ такомъ случаѣ его несчастіе и горе обратились противъ него самого.

Считали они (также) дурнымъ встрѣтить хронически больного, неблагопріятнаго именемъ, дѣвушку—дѣвственницу, мальчика—идущаго въ школу.

Считали они (также) дурнымъ (встрѣтить) связанныхъ быковъ, (вообще) связанное животное, ведомое въ поводу верховое животное и несущее питье, дрова и....[1])

Считали они хорошимъ знакомъ (встрѣтить) здороваго тѣломъ, благопріятнаго именемъ, красивую и бывшую замужемъ женщину, мальчика — идущаго изъ школы, животныхъ, нагруженныхъ пищей, соломой или навозомъ.

Не отстраняли они отъ царскаго слуха пѣсенъ пѣвицъ, скрипа мачтъ, ржанія лошадей [букв. породистыхъ и простыхъ лошадей].

Въ мѣстѣ ночлега его [т. е. царя] держали пѣтуха и курицу.

Когда дарили ему лошадей, вели ихъ къ нему слѣва направо, равно какъ мелкій и крупный скотъ; невольниковъ же, хищныхъ звѣрей и пр. вели къ нему справа налѣво».

Персидскія примѣты и повѣрья составляютъ весьма древній слой нашего трактата[2]). Древни, вѣроятно, также и сообщенія объ индійскихъ вліяніяхъ на древне-персидскую науку и древне-персидскій фольклоръ.

---

1) Въ текстѣ стоитъ الكلب «собаку». У Dozy, Supplément, II, 482, приведено слово كلبا, «сортъ ячменя», но изъ Ибн-'Аввāма, языкъ котораго сильно отличается отъ языка Ибн-Кутейбы.

2) Цѣнный матеріалъ о персидскомъ гаданіи имѣется у Шардена, IV, 430 suiv.

Какъ увидимъ ниже, «физіономическая» часть нашего трактата, значительнѣйшая часть его, труднѣе возводится къ опредѣленному источнику. Нужно, при этомъ, помнить, что трактатъ дошелъ до насъ на арабскомъ языкѣ, какъ памятникъ арабской литературы. Въ этомъ отношеніи онъ не лишенъ интереса и для арабскаго фольклора; недаромъ, во введеніи, авторъ указываетъ на арабовъ, какъ на народъ, болѣе всѣхъ прочихъ преданный разнаго рода суевѣріямъ: общенію съ «джиннами» и «гулями» и всякимъ гаданіямъ [1]). Эти гаданія даже перечисляются въ трактатѣ и мы можемъ сравнить ихъ съ другими дошедшими до насъ матеріалами [2]). Отмѣтимъ тѣ источники арабскаго фольклора, которые упоминаетъ авторъ: поэзію, гаданія и поговорки, т. е. именно тѣ матеріалы, которые и по сіе время являются первостепенными нашими источниками для изученія древне-арабскаго фольклора. Этимъ сообщеніемъ, до извѣстной степени, характеризуется отношеніе автора трактата къ его матеріаламъ [3]). Передавая суевѣрія, онъ оговаривается, что «истины въ нихъ мало», «вѣрность ихъ не надежна», что они происходятъ отъ дѣтей и невѣжественной массы. Передъ нами, такимъ образомъ, ученый книжникъ, стоящій или старающійся стоять выше того, что онъ передаетъ.

---

1) Нѣкоторые античные писатели приписывали птицегаданію арабское происхожденіе—A. Bouché-Leclercq, Histoire de la divination dans l'antiquité, T. I, Paris, 1879, 132, ср. впрочемъ 139.

2) О древне-арабскомъ фольклорѣ см. статьи A. v. Kremer, Studien zur vergleichenden Culturgeschichte nach arabischen Quellen, SBWA, phil.-hist.Classe, B. CXX, 1890, Abhandl. III и VIII, G. van Vloten, Dämonen, Geister und Zauber bei den alten Arabern, Wiener Zeitschrift für die Kunde des Morgenlandes, VII, 1893, 169—188, 233—248, VIII, 1894, 59—74, 290—293 (объ арамейскихъ, набатейскихъ и индійскихъ вліяніяхъ на арабскій фольклоръ см. стр. 235) и книги J. Wellhausen, Reste arabischen Heidentums, Berlin, 1897 и J. Goldziher, Abhandlungen zur arabischen Philologie, I—II, Leiden, 1896—1899. Сообщенія объ арабскомъ гаданіи см. у Маćудй, Prairies d'or III, 1864, pp. 333 suiv. Примѣры разнаго рода гаданія у древнихъ арабовъ (فراسة, قيافة, كهانة, عرافة) приводятся въ извѣстной космографіи Казвйнй, Cazwini's Kosmographie, II Theil, herausgegeben von F. Wüstenfeld, Göttingen, 1849, ٣١٧ сл. Различныя толкованія древне-арабскихъ способовъ гаданія въ европейскихъ сочиненіяхъ см. напр. H. L. Fleischer, Kleinere Schriften, III, Leipzig, 1888 (= Berichte über die Verhandlungen der Königl. Sächs. Gesellschaft der Wissenschatten, phil. hist. Classe, 1849), 201—202; G. Flügel, Die Loosbücher der Muhammadaner, Berichte über die Verhandlungen der Königl. Sächs. Gesellschaft der Wissenschaften zu Leipzig, phil.-hist. Classe, XIII, 1861, 29, 37, 40; E. W. Lane, Arabian Society in the middle ages, London, 1883, 86 сл.; E. Rehatsek, Magic, Journal of the Bombay branch of the Royal Asiatic Society, XIV, 1886, 216—219; J. Wellhausen, o. c. 205—206.

3) Въ كتاب التربيع و التدوير того же Джāхиза имѣется также перечисленіе ряда арабскихъ магическихъ знаній; среди нихъ называются الزجر, الفراسة, الفأل, الطيرة, النجوم (علم), الخيلان (علم), أسرار الكفّ, النظر فى الأكتاف и др.; среди примѣтъ и физіономическихъ наблюденій указываются имѣющіяся и въ нашемъ трактатѣ (دوائر, قرض الغارة, الرأس и др.)—см. Tria opuscula etc., ||| . Въ виду склонности Джāхиза повторять въ различныхъ своихъ произведеніяхъ одну и ту же тему (ср. напр. ЗВО, XVII, 281, пр. 1), облегчается вопросъ о принадлежности ему того или иного сочиненія.

Этотъ характеръ автора сказывается и во введеніи къ физіономическому отдѣлу, гдѣ имъ классифицируются «познаваемыя чувствами вещи». Въ этой классификаціи, въ этихъ мимоходомъ брошенныхъ замѣчаніяхъ, мы только и можемъ видѣть личность автора, арабскаго натуръ-философа, по выраженію Фан-Флотена. Нужно, однако, прибавить, что этого очень мало, и трактатъ, подобно тому какъ выписанная Ибн-Кутейбой цитата изъ арабскаго перевода персидской книги, представляетъ главнымъ образомъ запись народныхъ примѣтъ и повѣрій, а также преданій древней науки. Даже изрѣдка встрѣчающіяся объясненія примѣтъ (напр. встрѣча съ новорожденнымъ, имѣющимъ какой-нибудь физическій недостатокъ, находящаяся и въ отрывкѣ изъ Āйн-нāмэ), никоимъ образомъ не могутъ быть отнесены на долю автора и въ этомъ ихъ особенный интересъ.

3.

Среди многихъ и разнообразныхъ примѣтъ и повѣрій, находящихся въ нашемъ трактатѣ, можно отмѣтить нѣкоторыя, имѣющія между собою сходство, а потому и поддающіяся группировкѣ.

При этой группировкѣ мы прежде всего должны выдѣлить повѣрья и примѣты, относящіяся къ опредѣленному времени и потому имѣющія въ нѣкоторыхъ случаяхъ календарный характеръ. Съ нихъ мы и начнемъ наши объяснительныя замѣчанія, во-первыхъ потому, что опредѣленія времени даютъ иногда указанія на мѣсто, а во-вторыхъ потому, что съ календарныхъ повѣрій и примѣтъ начинаетъ и нашъ трактатъ.

Послѣ разсказа о посѣщеніяхъ сасанидскихъ царей индійскими мудрецами, нашъ текстъ сообщаетъ о томъ, что астрологи «распредѣляли царямъ дни недѣли», руководясь мнѣніемъ, что каждый день находится подъ вліяніемъ особой звѣзды. Затѣмъ слѣдуетъ перечисленіе дней въ порядкѣ мусульманскаго календаря, отъ Субботы до Пятницы. Суббота была предназначена для собраній и совѣщаній царей; Воскресенье — для суда; Понедѣльникъ — для охоты; Вторникъ — для военныхъ упражненій (игры въ поло, скачекъ, борьбы) и возжиганія священныхъ огней; Среда — для вершенія разнаго рода государственныхъ дѣлъ: финансовыхъ операцій, чеканки монетъ, наблюденія за промышленными и торговыми дѣлами и пр.; Четвергъ — для спеціальныхъ занятій дѣлами высшихъ классовъ населенія и для построекъ всякаго рода; Пятница, «день украшенія», — для отдыха и

праздниковъ. За соблюденіемъ подобнаго рода распредѣленія цари наблюдали съ особымъ вниманіемъ.

Передъ нами такимъ образомъ не обычный календарь, а календарь царей, своего рода церемоніальный календарь, регулировавшій придворную жизнь. Хотя это необходимо имѣть въ виду при комментаріи, все же названія дней связаны съ общимъ календарнымъ распредѣленіемъ, а потому намъ необходимо вспомнить характеръ иранскаго календаря[1]). Иранскій годъ распадался на 12 мѣсяцевъ, по 30 дней въ каждомъ; соотвѣтственные дни каждаго мѣсяца назывались одинаково; каждый день имѣлъ своего духа-покровителя; именемъ этого духа день и назывался. Мѣсяцъ не дѣлился на недѣли, хотя первый, восьмой, пятнадцатый и двадцать третій дни были особенно посвящены Аурамаздѣ[2]). Въ Авестѣ имѣются два небольшихъ трактата — большой и малый Спрōза, два молитвенныхъ календаря изъ тридцати частей (по числу дней), въ которыхъ призываются духи каждаго дня[3]). Въ пехлевійской литературѣ также существуетъ небольшой трактатъ объ особенностяхъ тридцати священныхъ существъ, именемъ каждаго изъ которыхъ названъ каждый день мѣсяца[4]). Кромѣ того, имѣются два трактата, описывающіе дѣйствія, особенно предпочитаемыя для совершенія въ каждый день мѣсяца: Хакīкат-ī-рōджхā и Мāтīгāн-ī-сī-рōджъ[5]). Первый трактатъ даетъ лишь самыя краткія наставленія[6]); подробнѣе касается этихъ вопросовъ второй трактатъ. Дастуръ Пешотанджи Санджана сдѣлалъ въ свое время переводъ на англійскій языкъ этого второго трактата или версіи его для исторіи Парсовъ, написанной Досабхай Фрамджи Карака[7]). Нѣкоторыя изъ дѣйствій имѣютъ прямое отношеніе къ «дѣя-

---

1) Общія свѣдѣнія объ иранскомъ календарѣ у L. H. Gray, Der iranische Kalender, Grundriss der iranischen Philologie, B. II, Strassburg, 1904, 675—678. Прибавимъ, что относительно отсутствія недѣль у древнихъ Персовъ весьма рѣшительно высказываются Бīрӯнī, Chronologie, ٨٠,١٩ слѣд., Chronology, 58 и Казвīнī—Cazwini's Kosmographie, I Theil, herausgegeben von F. Wüstenfeld, Göttingen, 1849, ٧٩,٢٥ слѣд.

2) Бīрӯнī, Chronologie, ٨٠—٩٠; Chronology, 58 сообщаетъ, что въ древности персы не имѣли недѣли и что ихъ примѣру (равно какъ согдійцевъ и хорезмійцевъ) слѣдуютъ копты.

3) J. Darmesteter, Le Zend-Avesta, traduction nouvelle, vol. II, Paris, 1892 (Annales du Musée Guimet, vol. XXII), 294 suiv. (цитуется далѣе подъ иниціалами ZA).

4) West, Pahlavi literature, 116 (ср. и 108). Переводъ его-же въ Sacred Books of the East, V, 1880, 404—406.

5) West, Pahlavi literature, 110—111.

6) Переводъ West'а помѣщенъ въ Muséon, VI, 1887, 268—272 (статья Notes sur quelques petits textes pehlevis, 263—273).

7) Dosabhai Framji Karaka, History of the Parsis, vol. I, London, 1884, 132—144. Переводъ этотъ не указанъ въ пехлевійской литературѣ West'а. У Karaka трактатъ названъ Madegane-lak-Yom. Въ виду того, что въ современной жизни Парсовъ подобнаго рода предписанія ежедневныхъ поступковъ не извѣстны, естественно относить ихъ въ древнее время—Karaka, 144.

ніямъ царей»; нѣкоторыя имѣютъ къ нимъ косвенное отношеніе. Изъ дней перваго рода отмѣчаемъ слѣдующіе: во второй день мѣсяца Бахманъ царямъ рекомендуется собирать совѣщанія; четвертый день Шахрīваръ вообще благопріятенъ для царей, хорошъ для назначенія высшихъ должностныхъ лицъ, для выдачи имъ жалованья, для суда преступниковъ, для всякаго рода благодѣяній; въ девятый день Āдаръ хорошо молиться въ храмахъ огня и одарять ихъ (это рекомендуется впрочемъ не исключительно царямъ); въ десятый день Āбāнъ хорошо проводить каналы, сажать деревья, вообще производить посѣвы (это рекомендуется впрочемъ не исключительно царямъ); въ семнадцатый день Срōшъ царямъ рекомендуется омывать лицо и чесать волосы (?); двадцатый день Бахрāмъ особенно хорошъ для охоты (не исключительно для царей). Большинство же рекомендуемыхъ дѣйствій не имѣетъ отношенія къ царямъ. Въ этихъ трактатахъ всѣ дѣйствія распредѣлены на 30 дней и мы не находимъ даже намека на какія-нибудь иныя подраздѣленія мѣсяца. Съ другой стороны, какъ мы уже отмѣтили, нашъ трактатъ называетъ лишь семь дней и притомъ именуетъ ихъ арабскими названіями, тогда какъ ему вообще не чужды древне-персидскія названія, какъ увидимъ дальше. Нужно однако отмѣтить, что, какъ мы упомянули, сообщенія нашего текста отличаются отъ пехлевійскихъ трактатовъ тѣмъ, что даютъ не обычный календарь, а распредѣленіе дней царя. Съ другой стороны, въ нѣкоторыхъ другихъ древнихъ памятникахъ арабской литературы до насъ дошли стоящія въ связи съ иранскими сюжетами распредѣленія дней. Кромѣ сообщенія Бīрūнī[1]) о томъ, что персы дѣлятъ всѣ дни года на счастливые и несчастные, въ приписываемой тому-же Джāхизу антологіи «Китāб-ал-махāсин-уа-л-аддāдъ», вслѣдъ за сообщеніями несомнѣнно заимствованными изъ источниковъ, стоявшихъ въ связи съ сочиненіями сасанидской эпохи, мы встрѣчаемъ слѣдующее «описаніе дней», какъ выражается текстъ[2]): «Сказалъ Кисрā: вѣтряный день (предназначенъ) для сна, облачный — для охоты, дождливый — для веселья и питья. И говорятъ другіе: Суббота — день хитрости и обмана, Воскресенье — день посадки и постройки, Понедѣльникъ — день путешествія и исканія выгоды, Вторникъ — день кровопусканія, Среда — день затрудненія и несчастія, Четвергъ — день хожденія на поклоненіе, Пятница —

1) Chronologie, ٢٣٠,١٩-٢٠; Chronology, 217.

2) Le livre des beautés et des antithèses, attribué à Abu-Othman Amr ibn Bahr al-Djahiz de Basra, texte arabe publié par G. van Vloten, Leide, 1898, ٣٤٥,٨ слѣд. Переводъ связанныхъ съ днями повѣрій изъ этого сочиненія былъ данъ по вѣнской рукописи въ статьѣ J. Goldziher, Ueber Tagewählerei bei den Mohammedanern, Globus, LX, 1891, 257—259, въ которой собраны нѣкоторыя любопытныя повѣрья относительно счастливыхъ и несчастныхъ дней у мусульманскихъ народовъ.

день мечети, женщинъ и (одѣванія праздничныхъ) одеждъ [или богопочитанія]». Въ ʿУюн-ал-ахбāръ, во второй книгѣ, въ короткой второй главѣ, трактующей о наилучшемъ времени для путешествія и войны, сообщается версія того-же текста[1]): «Говорятъ: Суббота — день хитрости и обмана, Воскресенье — день посадки и постройки, Понедѣльникъ — день путешествія и исканія выгоды, Вторникъ — день войны и крови, Среда — день, въ который ничего не берутъ и ничего не даруютъ[2]) [т. е. день несчастія], Четвергъ — день посѣщенія важныхъ лицъ и удовлетворенія желаній, Пятница — день проповѣдей и брака». Прибавимъ, что въ этой главѣ, при всей ея краткости, имѣется сообщеніе изъ персидскаго сочиненія[3]). Этотъ недѣльный календарь въ обѣихъ своихъ версіяхъ нѣкоторыми изъ распредѣленій имѣетъ сходство съ нашимъ текстомъ. Кромѣ того, мы знаемъ изъ другихъ источниковъ, что, въ цѣляхъ церемоніала, мѣсяцъ дѣлился на части (таковы Фарвардīнъ и Михрмāхъ, дѣлившіеся на шесть частей); при празднованіи Наурӯза первые шесть дней мѣсяца имѣли особое значеніе — получалась какъ бы шестидневная церемоніальная недѣля[4]). Такимъ образомъ, хотя въ обычномъ персидскомъ календарѣ и не было недѣли, мы встрѣчаемъ примѣры существованія опредѣленной группы дней въ церемоніалѣ, отголоски извѣстій о чемъ мы имѣемъ и въ позднѣйшихъ арабскихъ извѣстіяхъ.

Къ такимъ же календарнымъ повѣрьямъ и примѣтамъ относятся далѣе и наблюденія надъ предметами и поступками, которыми было ознаменовано начало года. Такъ, годъ, въ началѣ котораго много занимались выдѣлкой луковъ и стрѣлъ, бывалъ годомъ удачной охоты и побѣды надъ врагомъ; годъ, въ началѣ котораго вершили много благочестивыхъ дѣлъ, бывалъ

---

1) См. II, ١٠٣,١٢ слѣд.

2) Варіантъ «день взятія и врученія». Мы переводимъ по варіанту рук. P по аналогіи съ вышеприведеннымъ сообщеніемъ въ Китāб-ал-махāсинъ уа-л-аддāдъ, гдѣ «день затрудненія и несчастія».

3) Въ этихъ характеристикахъ дней нѣтъ, по нашему мнѣнію, также близости къ господствующему нынѣ у мусульманъ представленію о дняхъ недѣли — Понедѣльникъ, Среда (ср. однако Goldziher, ц. с. 258), Четвергъ и Пятница счастливые дни, остальные несчастные — ср. Th. P. Hughes, A dictionary of Islam, London, 1895, 79 (сообщеніе Hughes'а касается впрочемъ главнымъ образомъ индійскихъ мусульманъ). По сообщенію Шардена, среда у Персовъ вообще счастливый день (IV, 444); ср. о дняхъ у него же еще IX, 90. О нѣкоторыхъ примѣтахъ, связанныхъ съ днями, въ мусульманской Персіи см. замѣчанія въ Kitabi Kulsum Naneh ou le livre des dames de la Perse contenant les règles de leur moeurs, usages et superstitions d'intérieur, traduit et annoté par J. Thonnelier, nouv. éd., Paris, 1891, 106, 108, 122, 124. Нѣкоторыя свѣдѣнія о счастливыхъ и несчастныхъ дняхъ въ персидскомъ фольклорѣ см. и у Ella C. Sykes, Persian folklore, Folk-lore, vol. XII, 1901, 264, 265.

4) См. нашу статью «Древнѣйшія арабскія извѣстія о празднованіи Наурӯза въ сасанидской Персіи», ЗВО, XVI, 020—046, спеціально 029—030.

годомъ «дружбы, согласія и любви» и т. д. Таковыхъ наблюденій приводится девять. Бирūнī даетъ намъ извѣстія о повѣрьяхъ и примѣтахъ, близкихъ по существу къ сейчасъ приведеннымъ. Такъ, онъ приводитъ слова «заклинателей»[1]) относительно перваго дня новаго года[2]): «кто утромъ, прежде чѣмъ сказать что-либо, прихлебнетъ трижды меда и надушитъ комнату тремя кусками воска, избавитъ себя отъ болѣзней», и относительно шестого дня[3]): «кто утромъ, прежде чѣмъ сказать что-либо, трижды вкуситъ сахара и умаститъ себя масломъ, отстранитъ отъ себя на этотъ годъ несчастья». Хорошимъ предзнаменованіемъ считалось, по его словамъ, смотрѣть на утреннюю зарю въ первый день[4]); въ шестой день счастье было яко-бы распредѣлено среди людей, а потому этотъ день и назывался «днемъ надежды»[5]). Казвīнī сообщаетъ сходное[6]).

Къ этому же разряду примѣтъ и повѣрій принадлежатъ и сообщаемыя въ нашемъ трактатѣ извѣстія о гаданіи по росту ячменя. Древнѣйшіе арабскіе источники объ иранскомъ фольклорѣ, каковы Кисравī и Бирūнī, сообщили намъ о постройкѣ столбовъ изъ кирпича, засѣвавшихся разнаго рода зернами, по росту которыхъ гадали о томъ, что случится въ предстоящемъ году. Извѣстія эти мы разобрали и комментировали въ другомъ мѣстѣ[7]). Оба сообщившихъ объ этомъ обычаѣ автора отмѣтили, что наибольшее вниманіе удѣлялось посѣву ячменя. Ритуальное значеніе ячменя находитъ себѣ полное объясненіе въ томъ, что онъ является однимъ изъ древнѣйшихъ культурныхъ растеній народовъ индо-европейскаго племени вообще, иранцевъ особенно[8]). Шестнадцать примѣтъ относительно ячменя, сообщенныхъ въ нашемъ трактатѣ, подробно разбираютъ различныя состоянія его роста.

Къ этимъ же календарнымъ повѣрьямъ и примѣтамъ можно отнести и возводимыя къ индійскимъ мудрецамъ заключенія относительно побѣды въ сраженіи въ зависимости отъ дуновенія вѣтра. Быть можетъ, примѣта относительно побѣды того, съ чьей стороны дулъ вѣтеръ, была основана на практикѣ: сасанидская военная теорія настойчиво рекомендовала, чтобы при

---

1) أصحاب النيرنجات.

2) Chronologie, ٢١٦,١–٢; Chronology, 200.

3) Chronologie, ٢١٧,٩–١٠; Chronology, 201—202.

4) Chronologie, ٢١٥,١٢; Chronology, 199.

5) Chronologie, ٢١٧,٨–٩; Chronology, 201.

6) Kosmographie, I, ٨٠,١٧ слѣд.

7) См. вышеупомянутую статью нашу о древнѣйшихъ арабскихъ извѣстіяхъ о празднованіи Наурūза, 041—043.

8) O. Schrader, Reallexicon der indogermanischen Altertumskunde, Strassburg, 1901, 289—290.

сраженіи вѣтеръ, равно какъ и солнце, приходились въ тылъ войска[1]). Въ зависимость отъ направленія вѣтра ставитъ постройку царскихъ покоевъ и отрывокъ изъ Āйн-нāмэ у Ибн-Кутейбы[2]).

Наконецъ, къ этимъ же календарнымъ примѣтамъ, относится наблюденіе относительно того, что все загадываемое исполнялось въ два мѣсяца персидскаго года — въ седьмой мѣсяцъ Михрмāхъ и въ девятый Āдармāхъ. Бīрӯнī[3]) оставилъ намъ сообщенія относительно этихъ мѣсяцевъ персидскаго года, при чемъ эти его сообщенія касаются и фольклора. Въ Михрмāхъ приходился большой праздникъ осенняго равноденствія Михраджāнъ, по значенію своему равнявшійся празднику весенняго равноденствія Наурӯзу. Распредѣленіе этого праздника было то же, что и Наурӯза, только начало его приходилось не на первое, а на шестнадцатое число; «великимъ Михраджāномъ» именовалось двадцать первое число, Рāмрӯзъ. Какъ относительно Наурӯза, такъ и относительно Михраджāна, «заклинатели» высказываютъ опредѣленныя соображенія: «Кто отвѣдаетъ гранаты и понюхаетъ розовой воды въ день Михраджāна, отстранитъ отъ себя много горя»[4]). Такъ-же какъ въ Наурӯзъ, и въ этомъ случаѣ Хурмузъ, сына Шāпӯра, Смѣлый соединилъ, по преданію, оба дня — Михраджāнъ и Рāмрӯзъ, сдѣлавъ праздникомъ все время между этими двумя днями; такъ-же какъ въ Наурӯзъ, весь мѣсяцъ былъ раздѣленъ на шесть частей, по пяти дней въ каждой, при чемъ каждая часть была праздникомъ особаго класса. Что касается до описанія Āдармāха, то начало его, къ сожалѣнію, утрачено въ текстѣ Бīрӯнī; тѣмъ не менѣе въ сохранившейся части дошли нѣкоторыя, любопытныя свѣдѣнія. Такъ, «заклинатели» считали время на утренней зарѣ перваго числа этого мѣсяца особенно благопріятнымъ и говорили, что тотъ, «кто утромъ, прежде чѣмъ сказать что-либо, отвѣдаетъ айвы и понюхаетъ цедръ, будетъ счастливъ весь годъ». Персы въ древности пили медъ, если луна была въ «огненной станціи» и воду, если она была въ «водяной»,— вообще, по словамъ Бīрӯнī, они сообразовывались съ лунными станціями. Персы, далѣе, считали хорошимъ знакомъ разсматривать облака и по тому, были ли они темныя или свѣтлыя, густыя или тонкія, заключали будетъ ли годъ счастливый или несчастный, плодородный или неурожайный. Девятый день этого мѣсяца — день огня, названный именемъ духа, властвующаго надо всѣми огнями; это время — разгаръ зимы; по закону Зардушта, на-

---

1) См. вышеупомянутую статью нашу объ отрывкѣ военнаго трактата изъ сасанидской «Книги установленій», 255 и 266—267.

2) III, ٣٩١,١٢.

3) Chronologie, ٢٢٢,٦ слѣд., ٢٢٥,٢ слѣд.; Chronology, 207—210, 211.

4) Ср. Казвīнī I, ٨٢,٧—٨.

родъ посѣщалъ въ этотъ день храмы огня и даровалъ туда приношенія. Сходныя, но болѣе краткія описанія даетъ и Казвīнī [1]).

Въ описаніи Āдармāха у этого послѣдняго автора сохранилось въ празднованіи перваго дня мѣсяца описаніе такъ называемаго «выѣзда безбородаго». Сообщеніе объ этомъ сохранилось не только у Казвīнī, но и у другихъ арабскихъ авторовъ, напр. у Масʿūдī (въ Мурūдж-аз-захабъ и Китāб-ат-тенбīхъ) и Димашкī [2]). Въ Китāб-ат-тенбīхъ мы имѣемъ лишь краткое упоминаніе объ этомъ праздникѣ, но въ Мурūдж-аз-захабъ имѣется небольшое описаніе его, озаглавленное «праздникъ выѣзда безбородаго». Въ это время, по разсказу Масʿūдī, персы ѣли согрѣвающую пищу и пили согрѣвающіе напитки, такъ какъ время это было самое холодное; «безбородый» представлялъ собою врага холода, на котораго лили холодную воду; въ отвѣтъ на это онъ долженъ былъ кричать: «жарко, жарко!». Сахау, при переводѣ Бīрūнī, вставилъ небольшой отрывокъ изъ сочиненія того же автора «Ал-кāнūн-ал-масʿūдī» о той же церемоніи, ничего существеннаго къ опубликованнымъ уже извѣстіямъ не прибавляющій [3]). По Казвīнī, «безбородый», поѣвъ горячей пищи, намазавъ себя мазями и одѣвъ на себя рубища, выѣзжалъ на ослѣ, дѣлалъ видъ, что ему очень жарко и опахалъ себя вѣеромъ, съ криками: «гермъ, гермъ!» т. е. «жарко, жарко!». Народъ при этомъ лилъ на него воду и бросалъ снѣгъ и ледъ. У «безбородаго» была съ собою настойка изъ красной глины, которой онъ мазалъ одежды тѣхъ, которые не давали подачекъ. По разсказу Димашкī, за нѣсколько времени до праздника, «безбородаго» плотно кормили и поили хмельными напитками. Въ началѣ мѣсяца его одѣвали въ платье изъ хорошей матеріи и сажали на корову; въ рукѣ у него былъ воронъ, народъ сопровождалъ его, лилъ на него воду, бросалъ снѣгъ, размахивалъ вѣерами, а онъ кричалъ: «жарко, жарко!». Такъ продолжалось семь дней, при чемъ народная толпа, сопровождавшая «безбородаго», грабила и буйствовала. По окончаніи семи дней, все успокаивалось. Съ этимъ обрядомъ «симпатической магіи», кромѣ упоминанія объ Āдармāхѣ, нашъ текстъ связывается еще тѣмъ, что непосредственно за

---

1) I, ٨١,٣٠—٨٢,١١; ٨٢,١٩—٨٣,١.

2) Prairies d'or, III, 413—414; Kitâb at-tanbîh, Bibliotheca Geographorum Arabicorum, VIII, Leyde, 1894, ٣١٥,٨٩; B. Carra de Vaux, Le livre de l'avertissement et de la revision de Maçoudi, Paris, 1896, 288; A. F. Mehren, Cosmographie de Chems ed-din Abou Abdallah Mahommed ed-Dimichqi, texte arabe publié d'après l'edition commencée par M. Frähn et d'après les manuscrits par—, St.-Pétersbourg, 1866, ٣٧٩,١١ слѣд.; A. F. Mehren, Manuel de la cosmographie du moyen âge, traduit de l'arabe et accompagnée d'eclaircissements par, — Copenhague, 1874, 406.

3) Chronology, 211 и 423.

этимъ упоминаніемъ приводитъ слѣдующую примѣту: считалась неблагопріятной встрѣча съ безбородымъ человѣкомъ (равно какъ съ голубоглазымъ и угреватымъ) [1]).

Таковы тѣ, находящіяся въ нашемъ трактатѣ примѣты и повѣрья, которыя имѣютъ связь съ календаремъ. Возможно, что повѣрья и примѣты о дняхъ, приведенныя въ порядкѣ мусульманской недѣли, основаны на старо-персидскомъ церемоніальномъ распредѣленіи дней. Заслуживаютъ далѣе вниманія гаданья, связанныя съ началомъ года, указывающія лишній разъ на значеніе Наурӯза въ старо-персидской обрядности. Это подтверждается и другими источниками, отчасти уясняющими нашъ трактатъ,—напр. такъ называемые «сады Адониса» [2]) заставляютъ предполагать, что гаданье по ячменю производилось не только по полю или отдѣльнымъ колосьямъ, но и по особымъ посѣвамъ на глиняныхъ столбахъ, сооружавшихся спеціально для цѣлей гаданья. Наконецъ, заслуживаютъ вниманія указанія на роковое значеніе мѣсяцевъ свѣта и огня, Михрмāха и Āдармāха, во время которыхъ исполнялись гаданья.

4.

Въ предъидущей главѣ мы разсмотрѣли нѣкоторыя повѣрья и примѣты, имѣющія связь съ календаремъ. Дошедшія до насъ арабскія извѣстія, переводныя или заимствованныя изъ персидскихъ источниковъ, заставляютъ предполагать близость этихъ повѣрій и примѣтъ къ сасанидской эпохѣ. Возводить ихъ ко времени, предшествовавшему этой эпохѣ, у насъ нѣтъ основаній, хотя нѣкоторыя изъ нихъ и могутъ быть весьма древни (напр. гаданье по ячменю). При разсказѣ объ индійскихъ мудрецахъ, посѣщавшихъ Персію, называются имена нѣкоторыхъ царей; имена эти царей Сасанидскихъ — Кобāда, Шāпӯра, Анӯширвāна, Бахрāма-Гӯра. Распредѣленіе дней имѣетъ непосредственное отношеніе къ церемоніалу двора; нѣкоторые предметы, выдѣлкой которыхъ знаменуется начало года, также относятся къ сравнительно высокой культурѣ и при томъ особенно типичны именно для сасанидской Персіи (напр. «саулджāны», палки или молотки для игры въ поло); обрядъ гаданія по росту растеній, согласно арабскимъ извѣстіямъ, былъ общепринятымъ въ сасанидской Персіи.

---

1) По Прокопію Кесарійскому (I, 11), персидскимъ царемъ не могъ быть одноглазый или вообще человѣкъ съ тѣлеснымъ недостаткомъ. Ср. Nöldeke, Tabari, 45, anm.

2) Ср. ЗВО, XVI, 027 и 042.

Держась по возможности порядка изложенія въ нашемъ трактатѣ, мы должны перейти къ инымъ старо-персидскимъ повѣрьямъ и примѣтамъ, древность которыхъ можетъ быть возведена въ болѣе отдаленную эпоху. Эти повѣрья и примѣты касаются разнаго рода животныхъ и древность ихъ подтверждается въ значительной части персидскими литературными памятниками. Нашъ трактатъ называетъ цѣлый рядъ животныхъ, по которымъ гадали персы; мы встрѣчаемъ — пѣтуха и курицу, собаку и волка, крысъ, змѣй, лисицъ, лягушекъ и т. д. Форма этихъ примѣтъ и повѣрій чрезвычайно архаична. Большая часть цитаты изъ Āйн-нāмэ у Ибн-Кутейбы содержитъ именно эту часть нашего трактата. Разборъ мы начнемъ съ одного изъ важнѣйшихъ животныхъ до-мусульманской Персіи—пѣтуха.

Примѣты относительно пѣтуха, сообщаемыя въ нашемъ текстѣ, слѣдующія: 1) пѣтушиный крикъ до времени есть предостереженіе, 2) прыганье пѣтуха на подушкѣ и ложѣ хозяина дома — предсказаніе славы, 3) экскрементъ пѣтуха на коврѣ—предсказаніе счастія, 4) клохчетъ пѣтухъ—болѣзнь мущины (или мущинъ), 5) заунывный восклик пѣтуха — смерть женщинъ, 6) хлопанье крыльями безъ крика—несчастье хозяина, 7) частый крикъ—предостереженіе и предсказаніе побѣды, 8) крикъ пѣтуха неблагопріятенъ при встрѣчѣ со знатными людьми и царями. Въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ также сообщаются повѣрья относительно пѣтуха, совпадающія съ приведенными въ нашемъ трактатѣ, за исключеніемъ двухъ послѣднихъ изъ вышеуказанныхъ; кромѣ того, въ ней приводится еще извѣстіе объ обычаѣ держать въ мѣстѣ ночлега царя пѣтуха и курицу. Въ связи съ примѣтами относительно пѣтуха, стоятъ таковыя же и относительно курицы. Въ нашемъ трактатѣ сообщается: 1) крикъ курицы, похожій на пѣтушиный, есть предостереженіе, 2) прыганье курицы на подушкѣ хозяина дома — предсказаніе безславія и ущерба, 3) экскрементъ курицы на коврѣ — предсказаніе падежа скота, 4) клохчетъ курица—болѣзнь женщины (или женщинъ), 5) заунывный восклик курицы—смерть мущинъ, 6) когда курица отвѣчаетъ карканью ворона—что-нибудь будетъ разрушено, а затѣмъ возстановлено, 7) когда воронъ вторитъ кудахтанью курицы — что-нибудь будетъ воздѣлано, а затѣмъ разрушено. Въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ сообщаются тѣ же повѣрья и относительно курицы, съ той лишь разницей, что экскрементъ ея на коврѣ означаетъ не предсказаніе падежа скота, а полученіе богатства женой хозяина дома.

Пѣтухъ имѣлъ и имѣетъ особенное значеніе въ маздеизмѣ[1]). Гейгеръ въ своей книгѣ о древней восточно-иранской культурѣ далъ очеркъ той

---

1) О пѣтухѣ и курицѣ въ индо-европейской древности см. Schrader, Reallexicon, 322—325.

роли, которую пѣтухъ игралъ въ вѣрованіяхъ иранцевъ[1]). Особенно почитался пѣтухъ потому, что онъ поддерживалъ людей въ ихъ стремленіи къ бодрости; пробуждая, онъ побуждалъ ихъ снова возжечь огонь очага. Въ восемнадцатомъ «фаргардѣ» (главѣ) Вендидада подробно излагается значеніе пѣтуха[2]). Пѣтухъ, ближайшій пособникъ Сраоши[3]), добраго духа, защищающаго міръ отъ демоновъ ночи. Въ часъ зари онъ взываетъ къ людямъ, онъ побуждаетъ ихъ пробудиться, чтобы не набросился на нихъ злой духъ сна, склоняющій людей къ дурнымъ мыслямъ, дурнымъ словамъ и дурнымъдѣяніямъ[4]). Въ первую треть ночи Ātаръ, сынъ Аурамазды, (т. е. огонь) призываетъ хозяина дома встать, опоясаться, омыть руки, взять дерево, принести его, затѣмъ зажечь это чистое дерево, взятое чистыми руками. Во вторую треть ночи Ātаръ взываетъ къ земледѣльцу—встать, опоясаться, омыть руки, взять дерево, принести его, затѣмъ зажечь это чистое дерево, взятое чистыми руками. Въ третью треть ночи Ātаръ зоветъ на помощь Сраошу и тогда пѣтухъ будитъ людей своимъ крикомъ. Тотъ, кто даетъ вѣрующему пару этихъ птицъ, пѣтуха и курицу, какъ бы дастъ ему рай, такъ какъ пѣтухъ не позволитъ ему забыть время молитвы. По Бундахишу[5]) пѣтухъ созданъ для борьбы съ демонами и колдунами, дѣйствуя вмѣстѣ съ собакой; пѣтухъ и собака, согласно откровенію, болѣе всѣхъ остальныхъ созданій помогаютъ Срōшу (т. е. Сраошѣ) въ уничтоженіи враговъ. Шāястъ-лā-шāястъ (X, 30)[6]) указываетъ, что не слѣдуетъ убивать курицу, кричащую по пѣтушиному; этому дому угрожаетъ несчастіе со стороны колдуновъ, — пѣтухъ не въ состояніи отстранить его, и курица своимъ крикомъ помогаетъ ему, особенно въ томъ случаѣ, когда нужно принести въ этотъ домъ для устраненія несчастія еще одного пѣтуха. Саддаръ (XXXII)[7]) развиваетъ положеніе, указанное въ Шāястъ-ла-

---

1) W. Geiger, Ostīrānische Kultur im Altertum, Erlangen, 1882, 365—368.

2) Darmesteter, ZA, II, 244—247. Ср. также послѣдній переводъ этого фаргарда у K. F. Geldner, Vendidad, Fargard XVIII въ Avesta, Pahlavi and Ancient Persian Studies in honour of the late Shams-ul-ulama Dastur Peshotanji Behramji Sanjana, I Series, Strassburg-Leipzig, 1904, 201 folg.

3) О Сраошѣ, Срōшѣ см. ZA, I, Paris, 1892, 357—358 и извѣстія Бīрūнī, Chronologie, ٣١٨ и Chronology, 204.

4) Переводъ возгласа пѣтуха данъ и у Geiger'a, 366.

5) XIX, 33, Pahlavi texts translated by E. W. West, I, Oxford, 1880, 73 (Sacred books of the East, V). Это мѣсто приведено и у Darmesteter'a, ZA, II, 244, n. 24.

6) West, Pahlavi texts, I, 330—331.

7) Въ мусульманской Персіи несвоевременное пѣніе пѣтуха имѣетъ дурное значеніе; по крайней мѣрѣ въ Кульсūм-нэнэ, Thonnelier, o. c. 19—20, несвоевременно поющему пѣтуху рекомендуется свернуть шею. Сходное сообщеніе приводится у L. Dubeux, La Perse, Paris, 1841, 400 (по Морьеру), а также у E. Sykes, o. c. 265. Это примѣръ реакціи ислама противъ старо-персидскихъ вѣрованій.

шāястъ: когда кричитъ курица или не во время кричитъ пѣтухъ, ихъ не слѣдуетъ убивать и считать это дурнымъ знакомъ [1]). Этотъ крикъ является слѣдствіемъ того, что «врагъ нашелъ дорогу въ этотъ домъ»; курица или пѣтухъ въ одиночку не могутъ удалить его и курица идетъ на помощь пѣтуху; нужно принести другого пѣтуха, который помогъ бы первому. Когда пѣтухъ кричитъ не во время, его не слѣдуетъ убивать, такъ какъ причина та-же, что и крикъ курицы. Въ каждомъ домѣ, гдѣ имѣется младенецъ, надо держать пѣтуха для устраненія врага отъ этого дома. Въ другомъ мѣстѣ той-же книги (XXXIV) [2]), сообщается о грѣхѣ убивать животныхъ— ягненка, козленка, упряжного въ соху быка, военную лошадь, ласточку, уничтожающую скорпіоновъ, и пѣтуха, — но самый большой грѣхъ убійство пѣтуха.

Другимъ очень важнымъ животнымъ сасанидской Персіи является собака, о которой нашъ текстъ также сообщаетъ повѣрья и примѣты. Прежде всего, отмѣчается, что тотъ, кто не любитъ лая собакъ, будетъ жить на чужбинѣ, будетъ несчастенъ. Изъ примѣтъ указываются: 1) вой волковъ въ горахъ и отвѣтный вой собакъ въ деревняхъ—предсказаніе тяжелой войны; 2) вой собакъ въ деревняхъ и отвѣтный вой волковъ въ горахъ—предсказаніе эпидеміи на людей и домашнихъ животныхъ; 3) когда однѣ собаки обнаруживаютъ безпокойство (бѣгаютъ, лаютъ и пр.), а другія не вторятъ имъ — предсказаніе бѣгства; 4) впрочемъ на то-же указываетъ, по нашему тексту, и то, что другія собаки вторятъ имъ. Въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ, кромѣ приведеннаго въ нашемъ текстѣ, сообщается еще слѣдующее: 1) неожиданный лай собаки ночью указываетъ на замыслы воровъ противъ даннаго дома или сосѣдей; 2) неожиданный вой собакъ указываетъ на прибытіе врага.

Очеркъ значенія собаки въ древней восточно-иранской культурѣ былъ также данъ Гейгеромъ въ вышеназванномъ его сочиненіи [3]). Собака являлась тогда вѣрнымъ спутникомъ и другомъ человѣка; она охраняла безопасность его и его имущества, особенно стада. 13, 14 и часть 15-го Фаргарда Вендīдāда посвящены собакѣ и родственнымъ ей животнымъ [4]). Перечисляются наказанія, слѣдуемыя за убійство или просто ударъ собакѣ, при чемъ называются разныя собаки: охраняющая стада [5]), охраняющая

---

1) E. W. West, Pahlavi texts, III, Oxford, 1885 (Sacred books of the East, v. XXIV), 293—294. Это мѣсто вкратцѣ указано и у Darmesteter'a, ZA, II, 244, n. 24.

2) Ib. 295.

3) Geiger, o. c. 368—373.

4) Darmesteter, o. c. 192 suiv.

5) Ср. Дīнкардъ, VIII, 23—West, Pahlavi texts, IV, Oxford, 1892 (Sacred books of the East, vol. XXXVII), 81 сл.

домъ, бродячая собака, собака дрессированная т. е. охотничья [1]). Собака, охраняющая стада, бѣгаетъ вокругъ усадьбы, высматривая вора или волка. Домашняя собака бѣгаетъ съ той-же цѣлью вокругъ дома. Бродячая собака уничтожаетъ вредныхъ животныхъ и изгоняетъ злого духа. Указываются наказанія, слѣдуемыя за дарованіе собакамъ плохой пищи и та пища, которая слѣдуетъ собакѣ. Говорится о леченіи больной собаки. Аурамазда излагаетъ назначеніе собаки — она создана беречь имущество человѣка отъ вора, отъ волка. Относительно помѣсей собаки съ волками указывается, что помѣсь собаки съ волчицей опаснѣе, вреднѣе, чѣмъ помѣсь волка съ собакой. Подробно описываются качества этого животнаго. Приказывается давать свободный доступъ къ дому какъ пастушеской, такъ и домашней собакѣ. Далѣе, согласно персидскимъ вѣрованіямъ, послѣ смерти, душа собаки переходила въ выдръ,—изъ одной собаки образовывались двѣ выдры,—отсюда святость выдръ. Даются разнаго рода предписанія относительно обращенія съ собакой, когда ей нужно ощениться. И въ позднѣйшей литературѣ маздеизма восхваляется собака. Въ Бундахишѣ [2]) собака является сотрудницей пѣтуха въ борьбѣ со злыми духами и колдунами. Саддаръ (XXXI) [3]) предписываетъ ласково обращаться съ собакой, не бить и не гнать ее; совпадая съ сообщеніями нашего текста, Саддаръ указываетъ, что лай собаки прогоняетъ враговъ. Съ собакой связана и особая часть въ погребальномъ обрядѣ, не указанная впрочемъ прямо въ Авестѣ. Часть эта носитъ названіе «Сагдидъ» и состоитъ въ томъ, что къ трупу подводятъ собаку [4]), которая своимъ взглядомъ отгоняетъ злого духа. Въ Артā-Вирāфъ-Нāмакѣ сообщается о жестокихъ мукахъ, постигающихъ человѣка, не давшаго пищи, ударившаго или убившаго собаку [5]).

По древне-персидскимъ вѣрованіямъ ежъ принадлежалъ также къ собачьей породѣ и поэтому также пользовался почетомъ. Начало тринадцатаго Фаргарда Вендидада считаетъ ежа однимъ изъ созданій Аурамазды, каждую ночь, отъ полночи до восхода солнца, уничтожающимъ злыя существа. Большой вредъ наноситъ себѣ человѣкъ, убивающій ежа [6]). По Бундахишу, ежъ созданъ на погибель муравьевъ, уничтожающихъ посѣвы. Дармсте-

---

1) Различныя породы собакъ упоминаются въ 5-мъ Фаргардѣ — Darmesteter, 76. Ср. Бундахишъ (XIV, 19)—West, o. c. 48—49.

2) XIX, 33 — West, o. c. 73.

3) West, o. c. 292—293.

4) Darmesteter, o. c. 149.

5) M. A. Barthélemy, Artâ Vîrâf-Nâmak ou livre d'Ardâ Vîrâf, Paris, 1887, chap. XLVIII.

6) Darmesteter, o. c. 192 suiv.

теръ [1]) указалъ параллельныя къ Вендидаду мѣста изъ Бундахиша, Шаястъ-ла-шаяста и Саддара, а также интересное мѣсто у Якута, по которому въ Седжестанѣ каждый домъ имѣлъ своего ежа, истреблявшаго пресмыкающихся. Древне-персидское вѣрованіе отразилось и въ нашемъ текстѣ—тотъ, кто не любитъ ежей, не будетъ имѣть друга и есть вообще человѣкъ порочный.

Къ собачьей-же породѣ относилась и лисица. Бундахишъ [2]) называетъ десять видовъ собачьей породы: пастушья собака, домашняя собака, бродячая собака, охотничья собака, выдра, лисица, ихневмонъ, ежъ, дикобразъ и цибетная кошка. Понятно такимъ образомъ, что вмѣстѣ съ собакой, выдрой и ежомъ, и лисица называется среди твореній Добраго Духа (ср. Фаргардъ 13).

Въ нашемъ текстѣ сообщаются слѣдующія повѣрья и примѣты относительно лисицы: 1) хорошій человѣкъ тотъ, который не любитъ крика лисицъ; 2) когда много кричатъ лисицы, надо опасаться бѣдствій отъ колдуновъ; 3) когда крикъ лисицъ походитъ на вой собакъ, постигнетъ людей вредъ отъ хищныхъ звѣрей; 4) когда крикъ ихъ походитъ на вой шакаловъ, то много будетъ дѣла вельможамъ.

Воронъ, священная птица Авесты [3]), воплощеніе духа побѣды, царской славы, также упоминается въ древне-персидскихъ повѣрьяхъ. Карканье ворона и отвѣтное кудахтанье курицы указываютъ на разрушеніе чего-нибудь и на позднѣйшее возстановленіе разрушеннаго, тогда какъ кудахтанье курицы и отвѣтное карканье ворона указываютъ на обработку чего-либо и на позднѣйшее разрушеніе этого. Это же повѣрье приводится и въ цитатѣ изъ Айн-намэ.

Упоминаются также въ нашихъ текстахъ и нѣкоторыя домашнія животныя, имѣвшія большое значеніе въ восточно-иранской культурѣ. Мы находимъ примѣту относительно крупнаго рогатаго скота: когда распространяется среди него смертность, то будетъ эпидемія и среди людей. Корова играетъ очень важную роль во всѣхъ частяхъ Авесты; Гейгеръ въ вышеупомянутомъ сочиненіи своемъ подробно говорилъ о роли рогатаго скота въ восточно-иранской культурѣ [4]). Упоминается также и мелкій скотъ, впрочемъ въ одномъ случаѣ: кто любитъ слушать голоса овецъ, верблюдовъ и пр. скота—грубый и злой человѣкъ. Овцы и козы, какъ уже ука-

---

1) О. с. 194, n. 5.

2) XIV, 19 — о. с. 48—49. Ср. Darmesteter, о. с. 76, n. 63, а также ib. 197—198.

3) ZA, II, 149, n. 16, 560, 566, 571, 624—625. Ср. Schrader, Reallexicon, 769.

4) О. с. 343—350. О подраздѣленіи животныхъ вообще см. Бундахишъ, XIV — West, о. с. 48 сл.

залъ Гейгеръ[1]), имѣютъ гораздо меньше значенія въ Авестѣ, чѣмъ крупный скотъ, что объясняется тѣмъ же ученымъ особенной пользой послѣдняго рода домашнихъ животныхъ, а также тѣмъ, что Авеста была составлена главнымъ образомъ для осѣдлаго населенія, въ жизни котораго крупный скотъ былъ важнѣе, чѣмъ болѣе близкія кочевому быту овцы и козы. Быть можетъ, этимъ объясняется краткое и пренебрежительное отношеніе нашего текста къ любящимъ голоса овецъ[2]). Относительно муловъ и ословъ говорится, что не любящій ихъ голосовъ не достигаетъ желаемаго; не любящій храпа муловъ, удаляется съ родины, лишенъ возможности свободно объясняться; не любящій ослинаго рева, хотя и имѣетъ хорошія качества, несчастливъ[3]). Въ Артā-Вīрāфъ-Нāмакѣ описываются жестокія пытки умершихъ, при жизни «закрывавшихъ рты» вьючнымъ домашнимъ животнымъ[4]) и вообще мучившихъ ихъ[5]); хорошее обращеніе съ домашними животными наоборотъ ведетъ къ блаженству въ загробной жизни[6]). Въ повѣрьяхъ и примѣтахъ упоминаются также и нѣкоторыя другія, менѣе часто встрѣчающіяся въ древне-персидской культурѣ животныя и птицы: жуки (не любящій ихъ шума безплоденъ и алченъ), фазаны дикій и домашній (перекликанье ихъ предсказываетъ побѣду надъ врагами), совы (только въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ, — когда много кричатъ совы, это указываетъ на выздоровленіе больного)[7]), свиньи (ихъ падежъ предсказываетъ безопасность людей).

Прежде чѣмъ перейти къ животнымъ, признававшимся съ точки зрѣнія маздеизма вредными и дурными, мы остановимся еще на одномъ животномъ, считавшемся важнымъ и полезнымъ. Это животное — лошадь, игравшая громадную роль въ древней Персіи[8]).

---

1) O. c. 362—365, ср. 344—345.

2) Тутъ же, впрочемъ, говорится и о верблюдахъ, о которыхъ см. Geiger, o. c. 356—361.

3) Объ ослѣ см. Geiger, o. c. 361—362.

4) Barthélemy, ch. LXXV.

5) Ib., ch. XXX, LXXIV, LXXVII.

6) Ib., ch. XV.

7) Въ значительномъ числѣ народныхъ примѣтъ сова пользуется дурной славой. Относительно мусульманской Персіи укажу напр. на мѣста въ Гулистāнѣ Са'дī (Константинопольское изданіе, ١٢٩١, ٢١ и ٢٠٣), въ которыхъ сова называется птицей, не оказывающей покровительства и приносящей дурную вѣсть. См. также Sykes, o. c. 265.

8) О лошади въ древней Персіи, кромѣ Geiger, o. c. 350—356, см. еще C. A. Piétremont, Les chevaux de l'Avesta, Revue de Linguistique, 1880, 315—325 и его же Les chevaux dans les temps préhistoriques et historiques, Paris, 1883; Modi, The bas-relief of Beharâm Gour at Naksh-i-Rustam, and the horse in ancient Irân, two papers read by—, Bombay, 1895; Schrader, o. c. 622—627; J. von Negelein, Das Pferd im arischen Altertum, Königsberg, 1903. По русски — А. К. Марковъ, О неизданныхъ Арсакидскихъ монетахъ, Вѣстникъ Археологіи и Исторіи, изд. СПБ. Археологическимъ Институтомъ, вып. XI, 1899, 161—176, о лошадяхъ: 162—169.

Въ нашемъ текстѣ, кромѣ предсказанія, что тотъ кто не любитъ ржанія лошадей, не получаетъ желаемаго, имѣется цѣлый рядъ повѣрій относительно гаданія по всклокоченнымъ волосамъ лошади. Таковыхъ повѣрій шесть: 1) всклокоченный хвостъ лошади предсказываетъ путешествіе ея владѣльца, 2) если онъ всклокоченъ наружу—предстоитъ длинное путешествіе, 3) если онъ всклокоченъ внутрь — долгая остановка, 4) всклокоченные волосы кругомъ хвоста предсказываютъ отъѣздъ и быстрое возвращеніе, 5) если съ правой стороны — убыль въ верховыхъ животныхъ, 6) если съ лѣвой—увеличеніе ихъ. Не смотря на спеціальный характеръ этого гаданія, можно указать въ позднѣйшей персидской литературѣ сходнаго содержанія сочиненія. Казартелли [1]) привелъ въ свое время персидскую рукопись съ двумя трактатами о лошади и гаданіи по ней. Рукопись эта индійскаго происхожденія, и по мѣсту написанія, и по содержанію. По словамъ Казартелли [2]), также въ санскритской литературѣ упоминается «āварта», локонъ, который считается счастливымъ или несчастнымъ предзнаменованіемъ смотря по тому мѣсту, гдѣ онъ находится. Можно отмѣтить нѣкоторыя примѣты, близкія къ нашему тексту: такъ, хозяинъ лошади будетъ богатъ и счастливъ, если сзади, на боку ея, будутъ такіе волосы; равно какъ будетъ у него много такихъ лошадей, если такіе волосы будутъ подъ копытомъ лошади [3]). Такимъ образомъ лишній разъ подтверждается близость нашего трактата къ индійскимъ мотивамъ.

Переходя къ вреднымъ животнымъ, начнемъ съ волковъ. О нихъ сообщаются примѣты, связанныя съ собаками: будетъ война, когда воютъ волки съ горъ и вторятъ имъ собаки изъ деревень; будетъ эпидемія, падежъ скота, когда воютъ деревенскія собаки и вторятъ имъ съ горъ волки; частые набѣги хищныхъ звѣрей предсказываютъ приходъ врага, но когда распространяется среди нихъ смертность, постигнутъ людей бѣдствія; когда горные хищные звѣри и птицы начинаютъ приходить въ движеніе, это указываетъ на суровую зиму. Сходное мы находимъ и въ Āйн-нāмэ. Волкъ, врагъ стадъ, считался Авестой вреднымъ животнымъ; его желательно было увидѣть первымъ [4]); противъ него говорили заклинанія [5]). Кромѣ волковъ, нашъ текстъ упоминаетъ еще слѣдующихъ вредныхъ живот-

---

1) L. Casartelli, Sâlûtar; la pierre de-touche du cheval, traduit du persan, Le Muséon, IX, 1890, 96—105, 185—192, 402—411.

2) O. c. 98. Въ первомъ трактатѣ глава III говоритъ о счастливыхъ случаяхъ, отд. 4 главы IV — о несчастныхъ (103 suiv., 187 suiv.); во второмъ о подобнаго рода гаданіи говорится въ гл. II (p. 408).

3) O. c. 103, 104.

4) Darmesteter, ZA, I, 92.

5) O. c. II, 353, 355.

ныхъ: муравьевъ, лягушекъ, крысъ, змѣй. Любящій шорохъ муравьевъ, всегда будетъ попадаться въ руки враговъ. Кто любитъ кваканье лягушекъ, постоянно терпитъ въ жизни; когда онѣ много квакаютъ, то это является предсказаніемъ смерти; когда же онѣ квакаютъ, а смертность уже распространилась, то это указаніе на то, что смертность эта скоро прекратится. Смертность крысъ предсказываетъ дешевизну и урожай; когда онѣ приносятъ съ собою зерна пшеницы или ячменя, будетъ прибыль въ имуществѣ; когда онѣ грызутъ одежды, это указываетъ на убыль имущества. Кто любитъ свистъ змѣй, осужденъ на бѣгство; постигнетъ непріятность того, передъ кѣмъ упадетъ змѣя; постигнетъ гибель имущества того, кому принесутъ мертвой вскормленную въ его домѣ змѣю. Эти животныя считаются вредными и въ Вендидадѣ, гдѣ въ видѣ искупленія требуется избіеніе ихъ, равно какъ и черепахъ и мухъ [1]). Въ Саддарѣ цѣлая глава (XLIII) посвящена дурнымъ животнымъ и ихъ истребленію; изъ нихъ называются — лягушка, змѣя, муравей, мышь [2]). Въ Арта-Вирафъ-Намакѣ указывается, что часть грѣховъ простится тому, кто при жизни уничтожалъ муравьевъ, змѣй и т. под. животныхъ [3]). Съ однимъ изъ этихъ животныхъ, именно со змѣей, связанъ вопросъ, о культурныхъ вліяніяхъ въ повѣрьяхъ древней Персіи, вопросъ задѣтый и нашимъ текстомъ. Кромѣ того, примѣты о змѣяхъ дошли до насъ и въ другихъ источникахъ. Поэтому мы позволяемъ себѣ нѣсколько остановиться на этомъ вопросѣ.

Бируни въ концѣ своего изложенія праздниковъ персидскихъ мѣсяцевъ даетъ таблицу, указывающую какой день каждаго мѣсяца считался Персами счастливымъ или несчастнымъ, а также что означало увидѣть змѣю въ каждый день мѣсяца [4]). Мы, разумѣется, не имѣемъ никакого основанія сомнѣваться въ достовѣрности этого сообщенія, хотя бы змѣя и считалась вреднымъ и дурнымъ животнымъ по Авестѣ. Болѣе того, въ позднѣйшей парсійской литературѣ имѣются сообщенія сходнаго содержанія. Сохранился на персидскомъ языкѣ небольшой стихотворный трактатъ о томъ, что означаетъ каждый день встрѣча со змѣей [5]). Трактатъ этотъ, озаглавленный Мар-намэ, былъ изданъ съ переводомъ въ 1893 г. въ Бомбеѣ ученымъ парсомъ Д. Д.

---

1) Darmesteter, ZA, II, 212—213, 254—255. О черепахахъ см. тамъ же, 195, о мухѣ (спеціально трупной мухѣ) 98 (ср. XI, 146).

2) West, Pahlavi texts, III, 306—307.

3) Barthélemy, ch. LX. Еще Геродотъ (I, 140) писалъ, что маги вмѣняютъ себѣ въ заслугу умерщвленіе муравьевъ, змѣй и прочихъ пресмыкающихся и летающихъ животныхъ.

4) Chronologie, ۲۳۱—۲۳۲; Chronology, 218.

5) Краткое упоминаніе о немъ West, Pahlavi literature, 128.

Моди[1]). Текстъ былъ изданъ по имѣющимся въ Индіи «ривайетамъ» т. е. сборникамъ религіозныхъ преданій. Въ небольшомъ введеніи Моди коснулся вопроса о значеніи змѣи въ древне-персидскихъ вѣрованіяхъ [2]). Онъ указалъ священные тексты, касавшіеся змѣи въ персидскихъ вѣрованіяхъ: какъ жрецъ, такъ и простой вѣрующій долженъ былъ имѣть палку для избіенія змѣй и змѣя являлась синонимомъ злого духа. Однако, Моди признавалъ способъ гаданія по виду змѣй чуждымъ древнимъ Персамъ, хотя мы и имѣемъ трактаты о значеніи встрѣчъ со змѣей въ каждый день мѣсяца. Такимъ образомъ, хотя Мāр-нāмэ парсійская книга на персидскомъ языкѣ,— что она парсійская доказывается парсійскими названіями дней и тѣмъ, что она входитъ въ составъ ривайетовъ,—Моди считалъ ее не древней (около четырехъ вѣковъ существованія) [3]) и возникшей вѣроятно подъ чуждымъ вліяніемъ. Благодаря тому, что мы находимъ у Бīрӯнī извѣстія вполнѣ сходныя съ Мāр-нāмэ, мы можемъ древность этихъ повѣрій отодвинуть въ болѣе отдаленное время. Различія между текстами весьма не велики: у Бīрӯнī счастливыхъ дней 13 [4]), переходный день 1 (Мāхъ—до полудня хорошо встрѣтить, послѣ полудня худо), несчастныхъ дней 11 [5]), неопредѣленнаго характера 5 (Джӯшъ—питаніе только четырехногими животными; Дай-ба-михръ—болѣзнь, сопровождаемая поправленіемъ; Сурӯшъ — путешествіе и возвращеніе; Аштāдъ—постройка новаго дома; Мāрасфандъ — короткое путешествіе); въ Мāр-нāмэ счастливыхъ дней 14 [6]), несчастныхъ дней 12 [7]), неопредѣленнаго характера 4 (Гӯшъ и Михръ—предстоящее путешествіе; Сурӯшъ — отправленіе домой и одѣванье новаго платья; Бахрāмъ — отворачиваться отъ этого дня). Эти несущественныя различія сво-

---

1) J. J. Modi, The persian Mâr-nâmeh or the book for taking omens from snakes, Bombay, 1893.

2) По вѣрованіямъ языческихъ арабовъ змѣи являются духами; Мухаммедъ различалъ два рода змѣй—хорошихъ и дурныхъ; о культѣ же змѣй у арабовъ нѣтъ слѣдовъ— см. Th. Nöldeke, Die Schlange nach arabischem Volksglauben, Zeitschrift für Völkerpsychologie und Sprachwissenschaft, I, 1860, 412—416.

3) Текстъ изданъ Моди безъ соблюденія размѣра стиховъ; размѣръ этотъ متقارب, основываясь на которомъ вносимъ нѣкоторыя поправки — ст. 4а بشهریور вм. بشهرور; ст. 5а بینی вм. ببینی; ст. 9а بدیپادر вм. بدپدار; ст. 10а ببینی вм. بینی; ст. 14а بینی تو در вм. بینی در; ст. 16а دیبمهر вм. دپمهر; ст. 25а دیبدین вм. دپدین; ст. 32а ببینی вм. بینی. Кромѣ того не выдержанъ размѣръ въ ст. 1а, 21а и 31а.

4) Хурмуздъ, Шахрīваръ, Исфандāрмадъ, Хурдāдъ, Дай-ба-āдаръ, Āдаръ, Āбāнъ, Хӯръ, Тīръ, Михръ, Фарвардīнъ, Рāмъ, Дīнъ.

5) Бахманъ, Ардīбахиштъ, Мурдāдъ, Рашнъ, Бахрāмъ, Бāдъ, Дай-ба-дīнъ, Ардъ, Āсмāнъ, Зāмьядъ, Анīрāнъ.

6) Хӯрмуздъ, Шахрīваръ, Сифандāрмадъ, Хӯрдадъ, Дай-ба-āдаръ, Āдаръ, Āбāнъ, Хӯръ, Тīръ, Дай-ба-михръ, Фарвардīнъ, Дīнъ, Āстāдъ, Замьядъ.

7) Бахманъ, Ардīбахиштъ, Мурдāдъ, Мāхъ, Рашнъ, Рāмъ, Бāдъ, Дай-ба-дīнъ, Ардъ, Āсмāнъ, Мāраспандъ, Анīрāнъ.

дятся къ слѣдующимъ. Māхъ (12-й день), по Бīрӯнī, хорошъ до полудня, плохъ послѣ полудня, по Māр-нāмэ вообще несчастливъ; Джӯшъ (14-й день) по Бīрӯнī, — питаніе исключительно четырехногими животными (неопредѣленнаго характера), по Māр-нāмэ—путешествіе (тоже неопредѣленнаго характера); Дай-ба-михръ (15-й день) знаменуется у Бīрӯнī болѣзнью, отъ которой потомъ поправляются (неопредѣленнаго характера); въ Māр-нāмэ удовлетвореніемъ желаній человѣка; Михръ (16-й день) — у Бīрӯнī новое пріобрѣтеніе, въ Māр-нāмэ—предстоящее путешествіе; Рāмъ (21-й день)— по Бīрӯнī знаменуетъ путешествіе и побѣду надъ врагами, въ Māр-нāмэ— постоянную вражду и борьбу; Аштāдъ (28-й день) — у Бīрӯнī постройка новаго дома (неопредѣленный характеръ), въ Māр-нāмэ—веселье; Замьāдъ (28-й день)—у Бīрӯнī горе, по Māр-нāмэ—полученіе справедливаго; Māраспандъ (29-й день)—по Бīрӯнī краткое путешествіе (неопредѣленнаго характера), по Māр-нāмэ—стѣснительное положеніе; Анīрāнъ (30-й день)— по Бīрӯнī наказаніе за прелюбодѣяніе, по Māр-нāмэ — горе и раздумье. Другія различія, которыя можно замѣтить между обоими текстатами, настолько незначительны, что отмѣчать ихъ врядъ-ли имѣетъ какое-либо значеніе. Итакъ, изъ сравненія обоихъ текстовъ мы можемъ сказать, что гаданія по встрѣчѣ со змѣей, съ положительнымъ и отрицательнымъ характеромъ, можно встрѣтить въ иранскомъ фольклорѣ не только въ болѣе новыхъ ривāйетахъ, но и въ памятникахъ XI-го вѣка, а въ виду того, что большая часть сообщеній Бīрӯнī касается сасанидской Персіи и основана на сасанидскихъ матеріалахъ, у насъ нѣтъ основаній отрицать присутствіе ихъ и въ сасанидской Персіи. Съ другой стороны, какъ мы уже говорили, Моди считалъ эти вѣрованья настолько чуждыми маздеизму, что предполагалъ чуждое вліяніе и такимъ образомъ выдвигалъ вопросъ о заимствованіи и культурныхъ вліяніяхъ.

Изданный нами трактатъ, говоря о вліяніяхъ на персидскія примѣты и повѣрья, приписывалъ ихъ главнымъ образомъ Индіи. Есть указаніе на то, что въ позднѣйшее время, въ мусульманскую эпоху, арабы переводили съ индійскаго различныя книги, а между ними и книги о змѣяхъ [1]). Съ другой стороны, мало странъ, которыя были бы такъ богаты змѣями и змѣинымъ культомъ, какъ Индія [2]). Подобно народамъ античнаго міра, Индійцы по сіе время вѣрятъ въ то, что каждый домъ имѣетъ свою домашнюю змѣю [3]) (ср. въ нашемъ трактатѣ повѣрье о

1) Sachau, Alberuni's India, translation, I, XXXIV.

2) M. Winternitz, Der Sarpabali, ein altindischer Schlangencult (Mittheilungen der anthropologischen Gesellschaft in Wien, XVIII Band, 1888, 25—53, 250—265), 25 и 34.

3) Winternitz, 257.

змѣѣ, «вскормленной въ домѣ»). Такимъ образомъ, если, принимая предположеніе Моди о чуждомъ вліяніи, говорить о заимствованіи, приходится обращаться къ Индіи [1]). Относительно змѣй и змѣинаго культа въ Индіи мы имѣемъ рядъ работъ, которыя заключаются изслѣдованіемъ Винтерница о Сарпабали, древне-индійскомъ культѣ змѣй. Прежніе изслѣдователи, какъ Фергюссонъ и др., полагали, что культъ змѣй былъ заимствованъ арійскимъ населеніемъ Индіи отъ аборигеновъ и появился поздно. Новыя данныя, собранныя Винтерницемъ, опровергаютъ эти утвержденія и отодвигаютъ этотъ культъ въ болѣе отдаленное время [2]). Для насъ интересно сообщеніе, по которому брахманы избѣгали змѣи и встрѣчу съ ней считали дурнымъ знакомъ; однако они принимали и принимаютъ участіе въ культѣ змѣй, культѣ, весьма развитомъ. Такимъ образомъ, получается явленіе, сходное съ разбираемымъ нами: съ одной стороны, культъ животнаго не препятствуетъ считать дурнымъ знакомъ встрѣчу съ нимъ, съ другой—въ нѣкоторыхъ случаяхъ встрѣча можетъ считаться приносящей счастье, хотя бы животное и считалось дурнымъ. Не отрицая возможности вліянія Индіи на сасанидскую Персію, мы имѣемъ въ данномъ случаѣ слишкомъ сложный матеріалъ, чтобы высказываться съ несомнѣнной опредѣленностью.

Въ заключеніе укажемъ еще одинъ, близкій къ только что разобранному примѣръ зависимости сообщеній Бирūнй отъ тѣхъ же источниковъ, что и позднѣйшіе персидскіе ривайеты. Эта близость источниковъ лишній разъ подтвердитъ достовѣрность извѣстій Бирūнй. Въ Ал-āсāр-ал-бāкійя [3]) сохранился любопытный заговоръ противъ скорпіоновъ. Въ пятый день Исфандāрмадрūзъ, между зарей и восходомъ солнца, писали на четыреугольныхъ листахъ бумаги слѣдующій заговоръ: «Во имя Бога Всемилостиваго, Всемилосерднаго! Исфандāрмадмāхъ и Исфандāрмадрūзъ! Я завязалъ идущее и приходящее, — внизу и наверху, — за исключеніемъ коровъ, — во имя Язāтъ и во имя Джема и Афрūдūна, — во имя Бога, — клянусь Адамомъ и Евой, — на одного Бога полагаюсь я!» На три стѣны дома клали по три такихъ листка, а четвертую оставляли пустой для выхода скорпіоновъ. Тотъ же Д. Д. Моди опубликовалъ пехлевійскій текстъ и англійскій переводъ заговора [4]), искореняющаго изъ дома насѣкомыхъ и

---

1) Повѣрья о змѣяхъ, какъ хранительницахъ кладовъ, у мусульманскихъ народовъ— Defrémery, Gulistan ou le parterre de roses par Sadi, traduit du persan, Paris, 1858, 238—239, note, считалъ индійскими по происхожденію (богъ сокровищъ Кувера и охраняющія его гротъ змѣи).

2) Winternitz, 262 folg.

3) Chronologie ۲۲۹; Chronology, 216.

4) Болѣе краткая версія этого же заговора была издана, транскрибирована и переведена M. Haug, An old pahlavi-pazand glossary, edited by Dastur Hoshangji Jamaspji Asa,

также входящаго въ составъ ривайетовъ [1]). Текстъ заговора слѣдующій: «Во имя творца Ормузда! Въ день Спендармадъ мѣсяца Спендармада я замкнулъ уста всѣмъ вреднымъ созданіямъ, злымъ духамъ мужского и женскаго пола, волшебникамъ, волшебницамъ, злоумышляющимъ, «кавіямъ» и «карапамъ» (тоже злыя существа, вѣроятно еретическое духовенство), злодѣямъ, разбойникамъ, волкамъ, притѣснителямъ,—славой Бога, славой героя Ферīдūна, славой звѣзды Тиштара (Сиріуса), славой звѣзды Сатвēса, славой звѣзды Ванада, славой звѣзды Хафтōранга» [2]). Заговоръ этотъ долженъ писаться шафрановой водой на оленьей кожѣ или на бумагѣ и приклеиваться на главную дверь дома. Отмѣчаемъ близость этихъ заговоровъ.

Къ этимъ же повѣрьямъ, восходящимъ еще къ отдаленной древности, къ эпохѣ восточно-иранской культуры, мы относимъ и находящійся въ нашемъ трактатѣ рядъ повѣрій, связанныхъ съ огнемъ. Повѣрій этихъ гораздо меньше, чѣмъ повѣрій, связанныхъ съ разнаго рода животными, но они выдѣлены за то въ особую небольшую главу подъ названіемъ «признаки въ огняхъ». Отдѣльно отмѣчена только одна небольшая примѣта, — кто не любитъ треска огня, не получаетъ дохода съ земли. «Признаковъ въ огняхъ» всего десять: изъ нихъ восемь касаются очага съ горящимъ въ немъ огнемъ, одинъ касается какъ очага, такъ и свѣтильника или свѣчи, и наконецъ одинъ касается лишь свѣтильника или свѣчи. Трескъ огня [3]) на очагѣ направо отъ

---

revised and enlarged, with an introductory essay on the pahlavi language by—, Bombay-London, 1870, 23—24, Appendix IV Nirange kharfastar zadan (an incantation for the destruction of vermin). Относительно этого текста ср. Pand-nāmak i Zaratušt, der Pehlevitext mit Uebersetzung, kritischen und Erläuterungsnoten von A. Freimann, Wiener Zeitschrift für die Kunde des Morgenlandes, XX, 1906, 154—155.

1) Jivanji Jamshedji Modi, Two amulets of ancient Persia. Nirang-i-Jashan-i-Burzigarân (a religious formula used as a charm on the day of the festival of the cultivators, the 5-th day of the 12-th Parsee month) and an Avesta amulet. Two papers read before the Anthropological Society of Bombay, Bombay, 1901, 3—6. Тѣмъ же авторомъ изданъ и переведенъ заговоръ противъ болѣзни глазъ изъ ривайетовъ, см. J. J. Modi, Charms or amulets for some diseases of the eye, and a few ancient beliefs about the eclipse being two papers read before the Anthropological Society of Bombay, Bombay, 1894, 1—9.

2) К. Г. Залеманъ, просмотрѣвшій текстъ и переводъ Моди, обратилъ мое вниманіе на два короткія, новоперсидскія гаданія по змѣямъ, изданныя имъ въ статьѣ Ueber eine Parsenhandschrift der Kaiserlichen Oeffentlichen Bibliothek zu St.-Petersburg, Travaux de la troisième session du Congrès International des Orientalistes à St.-Pétersbourg, Tome II, St.-Pétersbourg—Leyde, 1879, 497—498. Первое гаданіе сообщаетъ чего нужно ожидать, если встрѣтить змѣю въ тотъ или другой день,—при этомъ приводятся дни семидневной недѣли. Второе гаданіе касается юдиціарной астрологіи, соединенной со встрѣчей со змѣей. Оно предсказываетъ событія изъ встрѣчи со змѣей при нахожденіи луны въ одномъ изъ двѣнадцати знаковъ зодіака.

3) Заговоръ противъ треска огня въ мусульманской Персіи см. Кульсūм-нэнэ, Thonnelier, o. c. 103.

сидящаго—предсказываетъ вѣтеръ и пыль, налѣво—дождь и снѣгъ; когда огонь очага кружится кругомъ него—предсказаніе смуты и спора, когда же передъ сидящимъ—побѣда и радость; когда кружится онъ передъ очагомъ—отъѣздъ хозяина, когда за очагомъ—болѣзнь въ домѣ; когда звукъ пылающаго на очагѣ огня напоминаетъ смѣхъ, быть и радости, и горю; когда огонь подходитъ подъ самый котелъ очага—будутъ большіе дожди; также будетъ дождь, когда скручивается и пузырится фитиль свѣтильника или свѣчи; также будетъ дождь, когда огонь въ очагѣ бросаетъ много искръ. Въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ у Ибн-Кутейбы мы также находимъ сходныя повѣрья: громко пылаетъ огонь—большая радость; пылаетъ завывая—горе; когда огонь очага подходитъ подъ самый котелъ—большіе дожди или прибытіе гостей.

Шрадеръ указалъ уже ту громадную роль, которую игралъ огонь въ индо-европейской древности [1]). Почитаніе огня на очагѣ, этого «господина дома», являлось отличительной чертой древней религіи Грековъ и Римлянъ, Индійцевъ и Иранцевъ. Особенно въ маздеизмѣ, этой религіи огня по преимуществу, мы находимъ развитой культъ его. По Гейгеру [2]), огонь былъ для народа Авесты священнѣйшимъ и чистѣйшимъ элементомъ, отраженіемъ Аурамазды; огонь создавалъ свѣтъ и изгонялъ злыхъ духовъ; изъ дыма и пламени огня узнавали велѣнія божества. Дармстетеръ указалъ, что огонь, сынъ Аурамазды, является въ различныхъ формахъ, небесныхъ и земныхъ, и что тексты, давая различныя классификаціи, различаютъ особенно естественные огни (по ихъ различнымъ проявленіямъ и происхожденію, числомъ 5) и соціальные огни (числомъ 3, по числу трехъ главныхъ классовъ авестійскаго общества) [3]). Подробную классификацію огней даетъ Бундахишъ [4]). Шāястъ-лā-шāястъ (XII, 3) [5]) совѣтуетъ держать въ домѣ огонь и удалять остывшіе уголья; тамъ же (XII, 11) [6]) указывается, что въ домѣ, въ которомъ имѣется беременная женщина, необходимо поддерживать огонь для отогнанія злыхъ духовъ. Послѣднее рекомен-

---

1) O. c. 367 и 674. Нѣкоторыя интересныя переживанія культа огня въ современной Персіи были отмѣчены у N. de Khanikoff, Mémoire sur l'éthnographie de la Perse, Paris, 1866, 91—92 (ср и К. Риттеръ, Иранъ, ч. I, перевелъ и дополнилъ Н. Ханыковъ, СПБ. 1874, 519—520).

2) O. c. 353—355.

3) Darmesteter, ZA, I, 149—158. Здѣсь приведены мѣста, касающіяся огня, изъ Ясны и Спрōза. Вендидāдъ (ZA, II, 69 и 136 suiv.) говоритъ о невинности огня и объ очищеніи его.

4) West, o. c. 61—65.

5) O. c. 339—340.

6) O. c. 343.

дуется и въ Саддарѣ (XVI) [1]); тамъ-же (XXXIX и XCП) [2]) совѣтуется поддерживать священный огонь въ домѣ—ночью воспламенять его одинъ разъ, днемъ дважды; тамъ-же (XLIX) [3]) указываются правила относительно сохраненія огня и золы.

Понятно, что объ огнѣ, элементѣ, который далъ даже свое имя почитателямъ маздеизма, огнепоклонникамъ [4]), долженъ былъ существовать въ сасанидскую эпоху рядъ повѣрій и примѣтъ, изъ которыхъ до насъ дошло нѣкоторое количество. Эти повѣрья и примѣты, дошедшія до насъ и въ изданномъ нами трактатѣ, и въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ, относятся не только къ священному огню въ храмахъ, но и къ древнѣйшей стадіи почитанія огня, къ огню домашняго очага.

Кромѣ примѣтъ и повѣрій, относящихся къ опредѣленнымъ животнымъ и къ огнямъ, въ нашемъ трактатѣ и въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ имѣются нѣкоторыя примѣты и повѣрья общаго характера, по содержанію своему однако близкія къ только-что приведеннымъ. И самые тексты признаютъ ихъ повидимому сходными, такъ какъ приводятъ рядомъ. Изъ такихъ примѣтъ отмѣтимъ: 1) вой хищныхъ звѣрей разлучаетъ близкихъ и предсказываетъ одиночество (только въ нашемъ трактатѣ), 2) когда хищные звѣри начинаютъ безпокойно бѣгать и кричать, это предсказаніе прихода врага (только въ нашемъ трактатѣ), 3) когда горные хищные звѣри и птицы обнаруживаютъ безпокойство, это предсказаніе суровой зимы (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ), 4) когда начинается падежъ хищныхъ звѣрей, постигаетъ людей нужда (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ),—эти примѣты касаются хищныхъ звѣрей вообще; далѣе слѣдуютъ примѣты относительно сна: 5) когда храпитъ простой человѣкъ, его постигаютъ плѣнъ и униженіе (только въ нашемъ трактатѣ), 6) когда-же знатный, то онъ получаетъ возвышеніе и почести (лишь въ Āйн-нāмэ), 7) указаніемъ на сплетню служитъ скрежетъ во снѣ зубами; для исправленія этого рекомендуется ударить себя по рту дырявымъ башмакомъ (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ); 8) пускающій во снѣ слюни, будетъ постигнутъ отчужденностью (только въ нашемъ трактатѣ); 9) дующій во снѣ, уничтожаетъ имущество (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ); затѣмъ 10) когда много чешетъ себя знатный человѣкъ—великъ грѣхъ его (только въ нашемъ трактатѣ); 11) когда дѣлаетъ это простой, онъ

---

1) O. c. 277.
2) O. c. 301, 355—356.
3) O. c. 311—312.
4) Darmesteter, ZA, I, LIX слѣд.

получаетъ большую выгоду (только въ нашемъ трактатѣ); сюда же относятся нѣкоторыя наблюденія надъ природными явленіями: 12) тьма безъ причины и безъ тучъ—предсказаніе эпидеміи (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ)[1]; 13) мерцающій ясною ночью свѣтъ на небосклонѣ — предсказаніе нападенія врага (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ); 14) а если видятъ это, когда врагъ находится въ данной мѣстности, то онъ уйдетъ оттуда (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ)[2]; затѣмъ 15) повѣрье о трескѣ въ крышѣ дома,—предсказаніе отъѣзда живущаго въ немъ (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ); 16) повѣрья относительно неблагопріятной встрѣчи: а) считалось несчастливымъ увидѣть только-что рожденное существо, за исключеніемъ того случая, когда оно бывало съ какимъ-нибудь недостаткомъ, такъ какъ тогда, по любопытному объясненію текстовъ, несчастіе его природы обращалось противъ него самаго[3] (и въ нашемъ трактатѣ, и въ Āйн-нāмэ), б) хронически больного, в) неблагопріятнаго именемъ, г) дѣвушку дѣвственницу[4], д) мальчика, идущаго въ школу[5], е) связанныхъ животныхъ, ж) вообще животныхъ съ опредѣленной ношей (все это только въ Āйн-нāмэ); 17) повѣрья относительно благопріятной встрѣчи: а) считалось счастливымъ увидѣть здороваго, б) человѣка съ благопріятнымъ именемъ, в) замужнюю женщину, г) мальчика, идущаго изъ школы, д) животныхъ съ опредѣленной ношей (только въ Āйн-нāмэ); наконецъ только въ Āйн-нāмэ сохранилось 18) повѣрье о веденіи къ царю лошадей и пр. домашнихъ животныхъ слѣва направо, а невольниковъ и хищныхъ звѣрей

---

1) Повѣрья древнихъ персовъ о несчастьи затменія въ полнолуніе и новолуніе для посѣвовъ см. у Бīрӯнī, Chronologie, ٢٣٣, Chronology, 219. Ср. данныя въ статьѣ J. J. Modi, A few ancient beliefs about the eclipse въ Charms or amulets for some diseases of the eye and a few ancient beliefs about the eclipse, Bombay, 1894, 9—24.

2) По Бīрӯнī (Chronologie, ٢١٥; Chronology, 199—200), на горѣ Дамā въ Фарсѣ каждую ночь въ Наурӯзъ виденъ далеко распространяющійся и сильно сіяющій свѣтъ.

3) Очевидно считалось, что новорожденное существо (изъ текста нашего трактата выясняется, что безразлично—человѣкъ или животное), появившись на свѣтъ, передаетъ все свое несчастье тому, кто первый увидитъ его. Повѣрье персовъ о зачатіи ребенка несовершеннаго вида въ день новолунія см. у Бīрӯнī, Chronologie, ٢٣٣ и Chronology, 219. По позднѣйшимъ мусульманскимъ примѣтамъ красивый скорѣе подверженъ сглазу, чѣмъ уродъ — см. E. Quatremère, Proverbes arabes de Meïdani, JA, III série, V, 1838, 235—236. Ср. примѣту, сообщенную Dorn'омъ въ ZDMG, X, 810.

4) Въ параллель къ этому повѣрью приведемъ примѣту изъ персидской книги у Ибн-Кутейбы (ʿUjūn al aḫbār, II, ١٨٤,٢—٥), по которой считалось дурнымъ признакомъ вынуть изъ колчана стрѣлу, съ написаннымъ на ней женскимъ именемъ.

5) Это повѣрье, равно какъ нижеслѣдующее о благопріятной встрѣчѣ съ мальчикомъ, идущимъ изъ школы, основаны, вѣроятно, на взглядахъ маздеизма на пользу просвѣщенія см. Саддаръ, LI—о. с. 313—314; объ обязанностяхъ школьника см. небольшой текстъ, изданный и переведенный у J. Darmesteter, Les devoirs de l'écolier, JA, 1889, XIII, 355—363.

справа налѣво [1]). Въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ сообщается также обычай не устранять отъ слуха царей пѣсенъ, скрипа мачтъ, ржанья лошадей. Въ нашемъ трактатѣ говорится лишь о симпатіи къ музыкѣ, которая однако повидимому осуждается: кто любитъ музыку, предается прегрѣшеніямъ, ненавидитъ людей. Наконецъ, въ томъ-же отдѣлѣ нашего трактата, который содержитъ вышеразобранныя повѣрья и примѣты, содержится нѣкоторое количество нравственныхъ сентенцій и совѣты относительно опредѣленія драгоцѣнныхъ камней. Что нравственныя сентенціи могли входить въ составъ сасанидскихъ книгъ, вполнѣ допустимо; болѣе того, даже сходство ихъ съ однородными мусульманскими сентенціями не исключаетъ возможности возводить ихъ къ сасанидскому источнику [2]). Нѣкоторыя изъ этихъ сентенцій имѣются и въ цитатѣ изъ Āйн-нāмэ (напр. о молчаливомъ и говорливомъ), что лишній разъ подтверждаетъ возможность перехода сасанидскихъ дидактическихъ сочиненій въ письменность мусульманскихъ народовъ.

5.

Кромѣ вышеприведенныхъ, носящихъ на себѣ слѣды несомнѣнной древности и несомнѣнно-же, въ виду совпаденія съ цитатой изъ Āйн-нāмэ, заимствованныхъ изъ сасанидскаго источника примѣтъ и повѣрій, нашъ текстъ занятъ въ значительной части физіономикой. Послѣ гаданій по росту ячменя, идетъ цитата изъ нѣкоего индійца Дж-у-б-р'а относительно физіономики и разнаго рода «признаковъ». Книга Дж-у-б-р'а была яко-бы написана для хосроевъ, прислана изъ Индіи и хранилась въ сокровищни-

---

1) Объ индо-европейскомъ представленіи о правой и лѣвой сторонахъ см. Schrader, o. c. 663—664 (краткую замѣтку объ этомъ см. еще у H. Arbois de Jubainville въ Revue Celtique, XXVII, № 2, 1906, Avril, 170—171). Объ арабскихъ аналогичныхъ представленіяхъ о سانح и بارح, о которыхъ упоминаетъ и нашъ текстъ, см. напр. J. Wellhausen, o. c. 202. Близкую примѣту къ арабскимъ سانح и بارح, независимо или подъ вліяніемъ ихъ, мы находимъ въ древнѣйшемъ памятникѣ испанскаго народнаго эпоса, въ поэмѣ о Сидѣ, въ самомъ началѣ ея. «При выѣздѣ изъ Бивара — вороны были имъ направо, при въѣздѣ-же въ Бургосъ—налѣво. Увидя это, мой Сидъ пріободрился и поднялъ голову: Слава Богу! Альваръ Фаньезъ, это доброе предзнаменованіе. . .».

2) Ср. Sacy, Mémoire sur le Djavidan Khired, 25. Въ этомъ отношеніи было бы интересно внимательное изученіе сочиненія Ибн-Мукаффы الدرّة اليتيمة, изданнаго въ Каирѣ и переведеннаго Van Vloten'омъ въ голландскомъ журналѣ Tweemaandelijksch Tijdschrift, 1902. Съ этого голландскаго перевода былъ сдѣланъ французскій—La perle incomparable ou l'art du parfait courtisan de Abdallah ibn al-Mokaffa, traduction française d'après la version néerlandaise de M. van Vloten, Bruxelles, 1906.

цахъ персидскихъ царей. Тутъ мы имѣемъ то же, что ранѣе сообщалось вообще объ индійскихъ мудрецахъ и сочиненіяхъ, служившихъ руководствомъ для Сасанидовъ. Только послѣ этого введенія начинаются собственныя слова Джāхиза. Джāхизъ также говоритъ о физіономикѣ; двѣ особыя главы посвящены гаданіямъ по родимымъ пятнамъ и по дрожанію членовъ тѣла. Въ заключеніе помѣщены два дополненія; одно, уже ранѣе нами упомянутое, о разнаго рода индійскихъ гаданіяхъ и другое, псевдэпиграфическій трактатъ о «знакахъ смерти», т. е. рядъ сообщеній о томъ, по какимъ признакамъ опредѣляется смерть больного, рядъ своеобразныхъ діагнозовъ смерти. Все это, за исключеніемъ краткаго сообщенія объ индійскихъ гаданіяхъ, относится къ физіономикѣ [1]).

Въ физіономическихъ наблюденіяхъ, кромѣ сравненій разнаго рода проявленій душевной жизни съ характеромъ человѣка, нужно отмѣтить двѣ значительныя группы наблюденій: одна — гаданіе по родимымъ пятнамъ, другая—гаданіе по дрожанію членовъ [2]). Каждой группѣ посвященъ даже особый отдѣлъ. Мы остановимся на нихъ подробнѣе въ виду того, что имъ отдано особое вниманіе, а также потому, что только онѣ представляютъ собою нѣчто цѣлое, тогда какъ другія физіономическія наблюденія отрывочны. Эти послѣднія, поскольку они заслуживаютъ вниманія, будутъ отмѣчены нами далѣе.

Прибавимъ, что въ данномъ случаѣ мы не имѣемъ вспомогательнаго текста, какимъ являлась для насъ ранѣе цитата изъ Āйн-нāмэ, не только помогавшая при пониманіи текста и замѣнявшая другія рукописи, но и удостовѣрявшая съ несомнѣнностью сасанидское происхожденіе примѣтъ и повѣрій. Однако, въ той-же цитатѣ имѣются двѣ примѣты этого порядка. Мы ра-

---

1) Кромѣ упомянутаго нами выше сборника R. Förster'a, имѣется еще изданіе XVIII-го вѣка—J. S. F. Franzius, Scriptores physiognomoniae veteres, Altenburgi, 1780. Кромѣ двухъ небольшихъ трактатовъ Мелампода,—о гаданіи по дрожанію членовъ и по родимымъ пятнамъ, о которыхъ мы будемъ говорить далѣе,—изданіе Franz'a заключаетъ физіономическіе трактаты псевдо-Аристотеля, Полемона и Адамантія, имѣющіеся и въ изданіи Förster'a.

2) Bouché-Leclercq, o. c., 160 suiv. говоритъ объ этого рода гаданіи у античныхъ народовъ съ приведеніемъ нѣкоторыхъ данныхъ древней и новой литературы о немъ. Этому «пальмическому» гаданію въ его санкціонированной формѣ онъ приписываетъ позднее происхожденіе, считая введшимъ его стоика Посидонія (II—I в. до Р. Х.), 68 и 165. Это «пальмическое» гаданіе онъ дѣлитъ на три группы: гаданія по судорогамъ, по чиханію и по шуму въ ушахъ. Изъ этихъ трехъ группъ, по отношенію къ мусульманскимъ народамъ, больше всего привлекала вниманіе вторая—см. напр. рядъ интересныхъ сообщеній въ замѣткѣ Defrémery, Sur quelques opinions singulières des musulmans (Comptes rendus de l'Académie des inscriptions et belles-lettres, 2-e série, VII, 1871). О гаданіи по родимымъ пятнамъ въ античномъ мірѣ см. краткія замѣчанія у Bouché—Leclercq, 174—175.

зумѣемъ слѣдующія двѣ примѣты: близка смерть больного, похожаго на здороваго и здоровый, похожій на больного, подверженъ болѣзни. Первая изъ нихъ имѣется и въ нашемъ текстѣ, при чемъ она находится не въ отдѣлѣ физіономики, а вмѣстѣ съ тѣми повѣрьями и примѣтами, которыя находятся и въ Āйн-нāмэ, именно послѣ примѣты о передвиженіяхъ горныхъ хищныхъ звѣрей и птицъ [1]). Далѣе, нашъ текстъ, говоря объ индійскихъ мудрецахъ при сасанидскомъ дворѣ, называетъ ихъ знатоками физіономики. Тутъ же находитъ себѣ мѣсто спеціальная группа гаданій по родимымъ пятнамъ. Наконецъ отмѣтимъ, что въ нѣкоторыхъ пехлевійскихъ рукописяхъ имѣются рядомъ съ чисто фольклорнымъ матеріаломъ, какъ заговоры противъ лихорадокъ, сообщенія относительно значенія разнаго рода природныхъ знаковъ на тѣлѣ т. е. именно сообщенія физіономическаго характера, которыя еще ждутъ спеціалиста-изслѣдователя [2]). Нашъ текстъ, упоминая персидскія гаданія, говоритъ, что при этомъ имѣло значеніе расположеніе и число родимыхъ пятенъ,—если было оно на лицѣ, это имѣло опредѣленное значеніе; если было одно или было ихъ нѣсколько, это также имѣло опредѣленное значеніе и т. д. Такъ какъ эта группа упоминается какъ существовавшая въ древне-персидскомъ гаданіи, мы начнемъ съ ея разбора [3]).

Заключенія по родимымъ пятнамъ о будущемъ человѣка находятся въ той части трактата, которая дается какъ сообщеніе самого Джāхиза. Кромѣ особой части, спеціальной главы о родимыхъ пятнахъ, эти заключенія упоминаются и ранѣе въ сообщеніяхъ Джāхиза [4]). Такъ упоминается: 1) когда на лицѣ человѣка одно пятно или много ихъ, или же на глазахъ или на щекѣ краснота, то онъ опасенъ, 2) родинка между плечами знакъ превосходства, (по мусульманскому преданію это даже «печать пророчества»), 3) то-же значеніе имѣетъ и родинка на подмышкѣ, 4) волосы въ родинкѣ указываютъ на силу души, 5) родинка на плечахъ предсказываетъ благо, 6) родинка на

---

1) Фраза изъ Āйн-нāмэ помогаетъ намъ отдѣлить эту примѣту нашего текста отъ предъидущей, такъ какъ безъ этой фразы ее можно было бы въ нашемъ текстѣ связывать и ставить въ зависимость отъ первой части предъидущей.

2) West, Pahlavi texts, I, XLVI.

3) Отмѣтимъ, что у современныхъ гебровъ существуютъ наблюденія надъ движеніями кожи и членовъ тѣла см. A. Houtum-Schindler, Die Parsen in Persien, ihre Sprache und einige ihrer Gebräuche, ZDMG, XXXVI, 1882, 84. На угадыванье характера по строенію рта въ Месневī Джелāл-ед-дīна Рӯмī указывалъ Hammer, Traces de la buccomancie chez les Persans, JA, 4-me série, t. 19, 1852, 289—290.

4) Мы не будемъ здѣсь останавливаться на возможной связи примѣтъ надъ родимыми пятнами съ излюбленной въ позднѣйшемъ мусульманскомъ бытѣ «мушкой», خال (о ней въ новоперсидской поэзіи см. Anîs-el-ochchâq, traité des termes figurés relatifs à la description de la beauté, traduit du persan et annoté par Cl. Huart, Paris, 1875, 49 suiv.).

правомъ локтѣ предсказываетъ высокія внутреннія качества человѣка и благо, 7) родинка на лѣвомъ локтѣ предсказываетъ обратное. Примѣты, относящіяся къ родимымъ пятнамъ, очень кратки; онѣ только опредѣляютъ мѣсто пятна и выводятъ заключеніе. Въ концѣ слѣдуютъ еще четыре примѣты подъ рубрикой «знаки въ женщинахъ», также касающіяся родимыхъ пятенъ, при чемъ однако четвертая примѣта говоритъ одинаково какъ о мущинахъ, такъ и о женщинахъ. Съ другой стороны, изъ шестидесяти двухъ примѣтъ главы о родимыхъ пятнахъ, двѣ относятся спеціально къ женщинамъ. Такимъ образомъ, у насъ нѣтъ основанія отдѣлять эти части трактата одну отъ другой, хотя дѣйствительно никакихъ иныхъ различій въ лицахъ нашъ трактатъ въ данномъ случаѣ не даетъ,—мы имѣемъ различія въ толкованіяхъ лишь при упоминаніи мущинъ и женщинъ. Значительное число примѣтъ опредѣляетъ часть тѣла, на которомъ находится родимое пятно и выводитъ свои заключенія. Въ перечисленіи членовъ тѣла замѣчается несомнѣнная послѣдовательность. Текстъ начинаетъ со лба, переходитъ къ вѣкамъ, ушамъ, носу, глазамъ, плечамъ, щекамъ, губамъ, горлу, шеѣ, плечамъ, локтямъ, груди, животу, сердцу, спинѣ, ляшкамъ, колѣнамъ, голенямъ, пяткамъ, ступнямъ, затѣмъ возвращается къ рукамъ и кистямъ ихъ. Изъ этого перечисленія мы видимъ, что нашъ текстъ, хотя и съ отступленіями, выдерживаетъ извѣстный порядокъ—описаніе примѣтъ спускается отъ головы къ ногамъ. Отступленія не существенны: такъ, онъ возвращается къ примѣтѣ о родимомъ пятнѣ на лбу, вставляетъ примѣту о родимыхъ пятнахъ на плечѣ между примѣтой о глазахъ и примѣтой о носѣ, примѣту о локтѣ между примѣтами о плечахъ и отдѣльно отъ рукъ, примѣту о рукахъ относитъ на самый конецъ. Эти отступленія могутъ также объясняться перестановками переписчиковъ. Кромѣ того, мы должны помнить неустойчивость примѣты, которая имѣетъ въ разное время и въ разномъ мѣстѣ разное значеніе. Изъ такого рода примѣтъ укажемъ напр. на примѣту о родинкѣ на животѣ—въ одномъ случаѣ человѣкъ получитъ большое благо и избавится отъ зла, въ другомъ — онъ оказывается прелюбодѣемъ и вообще человѣкомъ низкихъ качествъ; или на родинку на одной сторонѣ носа,—въ одномъ случаѣ указывается, что родинка на правой сторонѣ его предсказываетъ праведность человѣка, на лѣвой мученичество, въ другомъ же случаѣ говорится, что родинка на одной сторонѣ носа (различіе между сторонами не указывается) предсказываетъ богатство, благополучіе, праведность. Отмѣчаемъ также различіе между правой и лѣвой сторонами, дѣлаемое нашимъ текстомъ, при чемъ въ одномъ случаѣ дается преимущество одной сторонѣ, а въ другомъ—другой, такъ что нельзя установить съ опредѣленностью предпочтеніе одной стороны другой.

Заключенія по родимымъ пятнамъ о будущихъ событіяхъ и о характерѣ человѣка не представляются чѣмъ-то исключительнымъ въ физіономической литературѣ. Мы имѣемъ напр. небольшой греческій трактатъ, приписываемый нѣкоему Меламподу, жившему яко-бы при Птолемеѣ Филадельфѣ [1]). Содержаніе этого трактата тожественно только что разобранной главѣ нашего трактата,—онъ касается заключеній о будущемъ по родимымъ пятнамъ. Построеніе его очень сходно съ главой нашего трактата, только наблюденій меньше. Безъ всякаго введенія, трактатъ прямо начинаетъ съ перечисленія наблюденій. Порядокъ частей тѣла тотъ же, что и въ нашемъ трактатѣ: начиная съ головы, онъ переходитъ на тѣло и кончаетъ ногами. Въ большинствѣ случаевъ упоминается—что означаетъ такая-то примѣта у мущинъ и что у женщинъ. Въ отношеніи сторонъ, на которыхъ находятся родимыя пятна, текстъ Мелампода отличается отъ нашего: въ заключеніи онъ прямо говоритъ, что родинка на правой сторонѣ означаетъ счастье, а на лѣвой — несчастье; повѣрье, вполнѣ отвѣчающее древне-греческимъ представленіямъ о правой и лѣвой сторонахъ. Обращаясь къ сравненію нашего текста съ текстомъ Мелампода отмѣчаемъ, что большинство тѣхъ частей тѣла, которыя приведены у Мелампода, упомянуты и въ нашемъ трактатѣ. Сходство, однако, можно отмѣтить лишь въ меньшинствѣ изъ нихъ; большинство же не сходится. Отмѣтимъ примѣту о родинкѣ на сердцѣ: и тутъ, и тамъ указывается, что человѣкъ этотъ дурной; далѣе нѣкоторое сходство имѣютъ напримѣръ примѣты — о шеѣ (у Мелампода—богатство, въ нашемъ трактатѣ тоже богатство, но только въ томъ случаѣ, когда на задней сторонѣ шеи), о животѣ (у Мелампода—ненасытность, въ нашемъ трактатѣ—прелюбодѣяніе), о подмышкѣ (у Мелампода богатое супружество, въ нашемъ трактатѣ — счастье и слава) и нѣкоторыя другія. Прочія примѣты не имѣютъ даже относительнаго сходства. Отмѣтимъ, наконецъ, что въ нашемъ трактатѣ опредѣленія гораздо развитѣе, гораздо подроб-

---

1) Μελάμποδος ἱερογραμματέως περὶ ἐλαίων τοῦ σώματος μαντικὴ πρὸς Πτολεμαῖον Βασιλέα изданъ у Franz'a, 501—509. О времени ср. однако 501, п. 1. Какъ на образецъ подобнаго рода литературныхъ памятниковъ укажу еще на переведенный по французски у J. Nicolaïdes, Les livres de divination, traduits sur un manuscrit turc inédit, Collection internationale de la Tradition, Paris, 1889, 87—88 мусульманскій литературный памятникъ, — небольшой трактатъ о значеніи родимыхъ пятенъ по Льву Мудрому. Примѣты идутъ въ опредѣленномъ порядкѣ, начиная со лба, но доходятъ, если судить по изданному переводу, лишь до рукъ и груди; примѣты въ значительной части относятся къ мущинѣ; въ одномъ случаѣ сдѣлано различіе между значеніями родимаго пятна у мущинъ и у женщинъ. Отмѣчаемъ еще особый видъ существующихъ въ мусульманскихъ литературахъ примѣтъ—по ранамъ и контузіямъ или ушибамъ, см. A. Certeux, Sobriquets et superstitions militaires, IV, Livres populaires dans les armées musulmanes, Revue des traditions populaires, II, 1887, 182—183.

нѣе, гораздо разнообразнѣе, чѣмъ у Мелампода, у котораго кругъ наблюденій и заключеній гораздо уже. При вышеуказанныхъ различіяхъ имѣется однако сходство общаго построенія трактатовъ: и здѣсь, и тамъ никакого различія между лицами, по которымъ выводятся примѣты нѣтъ, — указываются лишь мущины и женщины; и здѣсь, и тамъ отмѣчаются правая и лѣвая сторона; и здѣсь, и тамъ перечисленіе располагается въ опредѣленномъ порядкѣ—отъ головы къ ногамъ.

Въ заключеніе этихъ примѣтъ о родимыхъ пятнахъ укажемъ, что и относительно нихъ арабскіе литературные памятники ссылаются на античную традицію. Въ физіономическомъ трактатѣ, берлинской рукописью котораго мы пользовались для сличенія того мѣста нашего текста, въ которомъ говорится о «знакахъ смерти» Иппократа, тому-же греческому ученому приписано небольшое разсужденіе о родимыхъ пятнахъ (43а—45а)[1]. Всѣ признаки расположены почти въ томъ же порядкѣ, что и примѣты въ нашемъ трактатѣ и у Мелампода: отъ головы къ ногамъ. По содержанію, примѣты также просты—указывается часть тѣла, на которой имѣется родимое пятно и отмѣчается затѣмъ, что послѣдуетъ. Можно даже сказать, что этотъ трактатъ еще проще по формѣ, такъ какъ не различаетъ примѣтъ у мущинъ и у женщинъ.

Кромѣ главы о гаданіи по родимымъ пятнамъ, въ физіономической части нашего трактата имѣется также особая глава о гаданіи по дрожанію членовъ. Сборники съ подобнаго рода примѣтами не являются рѣдкостью въ позднѣйшей мусульманской литературѣ. Флейшеръ издалъ въ свое время переводъ одного подобнаго, турецкаго трактата, снабдивъ его цѣнными вступительными замѣчаніями[2]. Отмѣтивъ трактатъ Мелампода[3], сравненный имъ съ переведеннымъ имъ текстомъ на ту-же тему, Флейшеръ указалъ на большую распространенность сочиненій на эту тему въ мусульманскихъ литературахъ. Какъ выяснилось позже, по тому же вопросу въ греческой литературѣ имѣется еще одинъ трактатъ,

---

1) من كلام إبقراط فى دلائل الخيلان و الشامات. Ср. еще берлинскій каталогъ Ahlwardt'a, IV, 557, № 5373.

2) H. L. Fleischer, Ueber das vorbedeutende Gliederzucken bei den Morgenländern (Berichte über die Verhandlungen der königl. sächs. Gesellschaft der Wissenschaften, phil.—hist. Classe, 1849, 244—256 = Kleinere Schriften, B. III, Leipzig, 1888, 199—212). См. еще Nicolaïdes, o. c. VIII—IX.

3) Μελάμποδος ἱερογραμματέως περὶ παλμῶν μαντικὴ πρὸς Πτολεμαῖον Βασιλέα—Franz, 451—501. Если редакція этого трактата старше редакціи трактата о родимыхъ пятнахъ, то содержаніе этого послѣдняго своей простотой какъ будто указываетъ на большую сравнительно съ первымъ древность.

меньшихъ размѣровъ, чѣмъ трактатъ Мелампода, и повидимому болѣе древній, приписываемый Гермесу Трисмегисту[1]). Уже Флейшеръ совершенно справедливо отмѣтилъ, что напрасно искать происхожденіе или путь заимствованія этого рода наблюденій; мысль, которая вполнѣ примѣнима вообще къ изученію примѣтъ. Съ другой стороны, тотъ же Флейшеръ указалъ, что въ александрійскую эпоху несомнѣнно значительное количество восточныхъ суевѣрій перешло въ греко-римскій міръ и обратно. Тогда же возникъ въ восточныхъ литературахъ рядъ псевдэпиграфическихъ трактатовъ съ именами Платона, Аристотеля и др., трактатовъ, никогда не существовавшихъ на греческомъ языкѣ. Восточныя вліянія въ позднѣйшей византійской гадальной литературѣ несомнѣнны: мы имѣемъ напр. извѣстія о переводѣ съ персидскаго на греческій геомантіи персидскаго философа Занаты и о несомнѣнно восточнаго происхожденія сонникѣ Ахмета[2]). Въ частности гаданіе по трепету членовъ тѣла нельзя, однако, относить на долю восточныхъ заимствованій при присутствіи ихъ въ произведеніяхъ, близкихъ къ народной жизни (напр. у Ѳеокрита и Плавта, какъ указалъ Флейшеръ[3]), хотя въ отдѣльныхъ случаяхъ и возможно общеніе. Это же гаданіе существовало далѣе и въ древней Индіи, примѣры чего мы находимъ въ Сакунталѣ (указано Флейшеромъ); оно же имѣется и въ Калилѣ и Димнѣ[4]). Такимъ образомъ, литературные памятники, весьма близкіе къ сасанидской эпохѣ и къ древнему періоду арабской литературы, упоминаютъ объ этихъ примѣтахъ.

Обращаясь къ главѣ о примѣтахъ этого рода въ нашемъ текстѣ, отмѣчаемъ прежде всего, что эти примѣты, какъ и примѣты о родинкахъ, имѣются не только въ спеціальной главѣ, но упоминаются и раньше. Почти съ самаго начала главы о физіономикѣ, приводимой со словъ самого Джāхиза, мы

---

1) Трактатъ этотъ изданъ полностью вмѣстѣ со славянскими «трепетниками» и съ указаніями предшествующей литературы М. Сперанскимъ, Изъ исторіи отреченной литературы, II, Трепетники, СПБ., 1899 (Памятники древней письменности и искусства, изд. Общества Любителей Древней Письменности, CXXXI), см. 18 сл. и тексты 35—36. Сходный съ изданными Сперанскимъ трепетниками еврейскій текстъ, «книга членотрясеній» (въ рукописи и изданіи XVI-го вѣка въ Азіатскомъ Музеѣ Имп. Академіи Наукъ), былъ указанъ В. Н. Перетцемъ, Матеріалы къ исторіи апокриѳа и легенды, I, Къ исторіи Громника, СПБ., 1899 (Зап. Ист.-Фил. Фак. СПБ. Унив., ч. LIV, вып. 1), 82.

2) K. Krumbacher, Geschichte der byzantinischen Litteratur, München, 1897, 630 и 631. Литература о физіономикѣ въ византійской литературѣ приведена тамъ же, 620.

3) Отрывки физіономическаго содержанія изъ писателей античнаго міра собраны въ вышеупомянутомъ изданіи Förster'a, II, 233 слѣд.

4) См. вышеприведенныя наши замѣчанія по этому поводу. Указанія мѣстъ, касающихся примѣтъ по трепету членовъ тѣла, въ различныхъ памятникахъ индійской литературы см. у Hultzsch, Prolegomena za Vasantarâja's Çâkuna, Leipzig, 1879, 56.

встрѣчаемся съ примѣтами о трепетѣ. Онѣ приводятся въ безпорядкѣ, между примѣтами надъ родимыми пятнами и другими, но даютъ матеріалы, которые необходимо сопоставить съ сообщаемыми въ спеціальной главѣ. Изъ этихъ наблюденій отмѣчаемъ слѣдующія: 1) сильно бьющіяся вены, красное лицо и стоящіе прямо волосы указываютъ человѣка подвижного, быстро подвергающагося болѣзнямъ, не надежнаго, живого; 2) дрожаніе при этомъ головы, предсказываетъ болѣзнь либо путешествіе; 3) дрожь правой стороны головы, при стоящихъ прямо волосахъ, предсказываетъ большое благо; 4) дрожь въ лицѣ, щекѣ, половинѣ головы и шеѣ предсказываетъ параличъ, обнаруживаетъ мало здравомыслящаго, озлобленнаго человѣка; 5) быстрое біеніе венъ, желтый цвѣтъ лица, сухость губъ предсказываютъ забывчивость, горячность, трусость, увеличивающуюся еще, если дрожитъ правая сторона головы; 6) сильное біеніе венъ указываетъ на зло; 7) дрожаніе правой щеки, праваго глаза и правой стороны губы предсказываетъ благо; 8) дрожаніе лѣвой щеки, лѣваго глаза и лѣвой стороны губы предсказываетъ зло; 9) дрожаніе шеи—предсказаніе горя; 10) дрожаніе плеча—предсказаніе власти; 11) дрожаніе находящагося между плечами родимаго пятна (т. е. знака пророчества)—предсказаніе важнаго дѣла и большой власти; 12) дрожаніе праваго плеча—предсказаніе блага; 13) дрожаніе лѣваго — горя; 14) дрожаніе праваго локтя—большое благо; 15) дрожаніе живота—радость и благо; 16) дрожаніе живота женщины предсказываетъ обиліе мужского потомства. Сюда же относятся и наблюденія надъ движеніемъ ушей. Спеціальная глава «о познаніи дрожанія и біенія венъ» состоитъ, какъ глава о родимыхъ пятнахъ, изъ ряда примѣтъ, въ данномъ случаѣ тридцати семи. Расположеніе ихъ — отъ головы къ ногамъ, какъ и въ той главѣ, при чемъ порядокъ ихъ нарушенъ лишь одинъ разъ,—между примѣтами, касающимися лица, вставлены шея и плечи. Наибольшее количество примѣтъ относится къ головѣ и лицу. Такъ же какъ въ примѣтахъ о родимыхъ пятнахъ различаются правая и лѣвая стороны. Въ нѣкоторыхъ случаяхъ указывается также различіе въ примѣненіи примѣты по отношенію къ мущинѣ и женщинѣ. Противорѣчія въ примѣтахъ отмѣчаются самимъ текстомъ: въ началѣ его сообщается, что по мнѣнію однихъ дрожаніе темени или черепа предсказываетъ болѣзнь или путешествіе, а по мнѣнію другихъ высоту помысловъ; когда дрожитъ кожа на головѣ или встаютъ волосы, это по мнѣнію однихъ предсказаніе разоренія, а по мнѣнію другихъ безсердечность, дурныя качества натуры, трусость. Въ отношеніи сторонъ, текстъ отдаетъ преимущество правой, такъ какъ, въ случаѣ различія, дрожаніе правой стороны предсказываетъ благо, а лѣвой — зло. Членовъ тѣла, упоминаемыхъ въ этой главѣ, значительное число. Большинство изъ нихъ упо-

мянуто одинъ разъ, немногіе два раза. Общій характеръ примѣтъ тотъ же, что и примѣтъ о родинкахъ—незамысловатость и простота.

Въ настоящемъ случаѣ мы также имѣемъ матеріалъ для сравненія. Мы имѣемъ не только два греческихъ, румынскій и нѣсколько славянскихъ текстовъ, но и восточный-же, хотя и позднѣйшій, въ вышеупомянутомъ изслѣдованіи и переводѣ Флейшера. Число примѣтъ въ турецкомъ сборникѣ значительно больше—123. Въ такомъ количествѣ примѣтъ несомнѣнно должны встрѣчаться части тѣла, названныя и въ нашемъ трактатѣ. Такъ, мы находимъ здѣсь правую и лѣвую стороны головы, правое и лѣвое уши, правое и лѣвое вѣки, носъ, верхнюю и нижнюю губы, подбородокъ, шею, правое и лѣвое плечи, правый и лѣвый локти, ляшку, животъ и стороны его, пупокъ, ягодицы, правую и лѣвую голени, правую и лѣвую лодыжки. Однако, большинство примѣтъ, связанныхъ съ этими частями тѣла, не совпадаетъ съ примѣтами нашего трактата. Нѣкоторое сходство можно отмѣтить лишь въ примѣтахъ, связанныхъ съ правой и лѣвой сторонами: такъ, по нашему трактату, дрожаніе правой стороны головы предсказываетъ благо, лѣвой—разореніе, по трактату же Флейшера—дрожаніе правой стороны предсказываетъ превосходство надъ людьми, лѣвой—благополучное окончаніе путешествія; дрожь праваго уха, по нашему трактату, предсказываетъ благо, лѣваго—печаль, по трактату же Флейшера—хорошій и дурной разговоръ о человѣкѣ; дрожаніе праваго локтя предсказываетъ у насъ благо, а лѣваго зло и потерю, тогда какъ у Флейшера—полученіе пользы и озабоченность отъ врага; дрожаніе ягодицъ и тутъ, и тамъ указываетъ на радость. Этими примѣтами почти и исчерпывается сходство этихъ трактатовъ, не позволяющее заключать о ихъ близости и происхожденіи изъ одного источника. Оба эти трактата, однако, принадлежатъ несомнѣнно къ одному типу литературныхъ произведеній и представляютъ собою два варіанта этого типа въ мусульманской литературѣ. Мы не будемъ останавливаться дольше на другихъ, извѣстныхъ намъ подобнаго рода сочиненіяхъ,—на двухъ греческихъ трактатахъ, сравненныхъ г. Сперанскимъ[1]), на румынскомъ, выводившемся г. Гастеромъ изъ вышеупомянутаго турецкаго[2]), и др. Отмѣтимъ лишь, что по характеру къ нашему трепетнику ближе короткій трепетникъ, приписываемый Гермесу Трисмегисту, чѣмъ болѣе развитой трепетникъ Мелампода.

---

1) О. с. 18 слѣд.

2) M. Gaster, Das türkische Zuckungsbuch in Rumänien, Zeitschrift für Romanische Philologie, B. IV, 1880, 65—72. Предположеніе Gaster'а отвергалось А. Н. Веселовскимъ (Archiv für Slavische Philologie, V, 469—470) и Сперанскимъ, о. с. 76, пр. 3.

Нѣкоторыя части послѣдняго (напр. примѣты о дрожаніи темени, о стоящихъ прямо волосахъ, о дрожаніи правой и лѣвой сторонъ головы, лба и нѣкоторыя другія) имѣютъ впрочемъ нѣкоторое сходство съ нашими примѣтами. Интересно, что въ этомъ трактатѣ Мелампода среди источниковъ его называются «египтяне», что указываетъ на признаваемое самимъ трактатомъ восточное вліяніе (см. напр. стр. 461)[1]).

Прочія физіономическія правила сообщаются либо какъ цитата изъ индійца Дж-у-б-р'а, либо со словъ Джāхиза. Цитаты изъ Дж-у-б-р'а, кромѣ нѣсколькихъ постановленій (объ игрѣ въ шахматы, о своевременности разговора, о хорошихъ качествахъ рѣчи) касаются исключительно наблюденій надъ дѣйствіями человѣка для познанія его характера. Такимъ образомъ, собственно гаданія устраняются изъ этой части. Что касается далѣе состава наблюденій, то здѣсь мы замѣчаемъ весьма детальное разграниченіе: указываются особенности характера хорошаго игрока въ шахматы, внѣшнія отличія умѣющихъ хорошо владѣть мечомъ, копьемъ, разнаго рода стрѣлами[2]), а у этого рода лицъ еще наблюдаются разнаго рода физіономическія проявленія (скрежетъ или хрипъ, дрожаніе и пр.). Главнымъ же содержаніемъ этихъ наблюденій является рѣчь человѣка, по которой познается характеръ его. Цитата изъ этой индійской книги даже завершается особымъ отдѣломъ, касающимся опредѣленія характера по молчанію, голосу, рѣчи и пр. Намекъ на сасанидскую Персію встрѣчается именно въ началѣ этого отдѣла, когда упоминается, что хосрои обращали яко-бы спеціальное вниманіе на разговоръ и манеру его у человѣка. Цитата эта заключается арабскими стихами, принадлежащими конечно не индійскому сочиненію. Вполнѣ впрочемъ возможно, что и самое это индійское сочиненіе является псевдэпиграфическимъ, какъ напр. сходнаго содержанія сочиненіе, приписываемое Томтому, тоже индійцу[3]) и тоже почти неизвѣстному лицу.

Собственныя сообщенія Джāхиза, кромѣ двухъ спеціальныхъ отдѣловъ, — о гаданіи по родимымъ пятнамъ и по дрожанію членовъ, — также заключаютъ въ себѣ наблюденія надъ проявленіями человѣка для познанія

---

1) О личности Мелампода см. еще Сперанскій, о. с. 16, прим. 6.

2) Однимъ изъ этихъ наблюденій мы воспользовались уже въ нашей статьѣ объ отрывкѣ военнаго трактата изъ Айн-нāмэ, о. с. 276—277.

3) См. Fleischer, о. с. 203. Упоминанія этого лица طمطم у Хāджжӣ-Халӣфы см. въ указателѣ, при VII-мъ томѣ, 1242 (ср. D. Chwolsohn, Die Ssabier und der Ssabismus, I, St. Petersburg, 1856, 712—713).

его характера. Эти наблюденія открываются небольшимъ введеніемъ, классифицирующимъ познаваемыя чувствами вещи въ двѣ группы — вещей, непосредственно воспринимаемыхъ чувствами и вещей, воспринимаемыхъ лишь послѣ доказательства. Для познанія второй группы вещей необходимо быть особо выдающимся человѣкомъ, для истолкованія ихъ другимъ нужны ученые, «люди опыта и сужденія». Среди примѣровъ этой второй группы вещей называется значительное количество примѣтъ, касающихся родимыхъ пятенъ и дрожаній членовъ тѣла, приведенныхъ нами уже выше. Изъ другихъ внѣшнихъ признаковъ, опредѣляющихъ характеръ, кромѣ дѣйствій человѣка, отмѣчаются чисто медицинскія наблюденія, напр. присутствіе черной желчи въ темпераментѣ, или физическія особенности — волосы въ ухѣ, длина шеи и пр. Изъ бытовыхъ данныхъ сообщается о томъ, что арабы порицали длинные волосы и одобряли недостатокъ ихъ, въ подтвержденіе чего приводится стихъ изъ ʿАнтары. Персовъ Джāхизъ въ данномъ мѣстѣ не упоминаетъ ни разу и у насъ нѣтъ прямыхъ указаній, чтобы возводить эти сообщенія его къ сасанидской эпохѣ. Въ общемъ вступленіи къ этому трактату, упоминающемъ персидскую традицію въ этомъ отношеніи, приводимыя здѣсь наблюденія также не упоминаются. Въ арабской же литературѣ и эта часть является однимъ изъ древнѣйшихъ видовъ этого рода памятниковъ[1]).

Минуя приложеніе объ «индійскихъ сужденіяхъ», о которомъ мы уже говорили ранѣе, переходимъ ко второму и послѣднему приложенію, касающемуся такъ называемыхъ «знаковъ смерти». Этотъ псевдэпиграфическій трактатъ Иппократа дошелъ до насъ, какъ мы уже говорили, не только въ нашей рукописи, но и въ иныхъ. Въ цѣляхъ изданія текста мы имѣли подъ

---

1) И въ позднѣйшее время продолжаетъ существовать традиція древней физіономической литературы. Какъ примѣръ укажу небольшой персидскій трактатъ, написанный для османскаго султана Бāязīда II-го и имѣющійся въ не-древней рукописи въ Библіотекѣ Учебнаго Отдѣленія Министерства Иностранныхъ Дѣлъ (описанъ вкратцѣ у Bar. V. Rosen, Collections scientifiques de l'Institut des langues orientales, III, Manuscrits persans, St.-Pétersbourg, 1886, 320, № 129). Физіономическія наблюденія даны въ опредѣленномъ порядкѣ, начиная со лба (4а), переходя къ бровямъ, глазамъ, носу, рту, губамъ, зубамъ, подбородку, усамъ и бородѣ, лицу, ушамъ, общему виду человѣка, тальѣ, голосу, дыханію, шеѣ, плечамъ, рукамъ, пальцамъ, ладонямъ, ногтямъ, животу и кончая боками и спиною; въ заключеніе наблюденій сообщается еще о мясѣ тѣла и смѣхѣ (10б—11а). Довольно обширное заключеніе трактуетъ о «возможности измѣненія несовершенства»; въ немъ приводится между прочимъ (13а сл.) разсказъ о Платонѣ и *индійскомъ* мудрецѣ, являющемся большимъ знатокомъ физіономики.

руками во первыхъ физіономическій трактатъ нѣкоего Мухаммеда-ибн-Абӯ-Та̄либа ад-Димашкӣ (жилъ въ XIII-мъ вѣкѣ), въ Берлинской рукописи XVI-го вѣка, въ заключеніи котораго помѣщены приписываемые Иппократу знаки, по которымъ предсказывалась смерть больного. Во вторыхъ, мы имѣли индійское изданіе арабскаго текста, также содержащаго перечисленіе тѣхъ-же знаковъ смерти и приписываемаго Иппократу. Эти трактаты, при нѣкоторыхъ различіяхъ, настолько сходны, что могутъ быть названы варіантами и несомнѣнно восходятъ къ общему источнику. Изъ различій отмѣтимъ неравное число примѣтъ въ этихъ трехъ варіантахъ. Въ нашей рукописи 23 примѣты; въ берлинской—24 (по счету самой рукописи, но собственно 25, такъ какъ подъ 23-й примѣтой указаны 2 примѣты); въ индійскомъ изданіи — 25. Далѣе, въ нашей рукописи довольно подробно разсказывается преданіе о нахожденіи этихъ примѣтъ въ могилѣ Иппократа[1]); берлинская рукопись не говоритъ объ этомъ, — она лишь указываетъ, что эти признаки возводятся къ Иппократу; индійское изданіе лишь очень кратко сообщаетъ, что эти примѣты были найдены въ могилѣ Иппократа и переведены съ греческаго на арабскій при Мамӯнѣ Хунейномъ-ибн-Исха̄комъ. Что касается до содержанія примѣтъ, то онѣ отличаются въ нѣкоторыхъ случаяхъ въ опредѣленіяхъ сроковъ, черезъ которые примѣта должна сбыться. Въ нѣкоторыхъ случаяхъ различно построеніе фразъ — въ одномъ трактатѣ болѣе краткое, въ другомъ болѣе подробное. Порядокъ примѣтъ выдерживается почти одинаковый. Такъ, примѣты берлинской рукописи и индійскаго изданія одинаковы; въ нашей рукописи не имѣется семнадцатой, девятнадцатой и двадцать пятой примѣтъ берлинской рукописи и индійскаго изданія, а въ послѣднихъ нѣтъ двадцать третьей примѣты нашей рукописи. Переходя далѣе къ частностямъ отмѣчаемъ слѣдующее. Въ первой примѣтѣ какъ наша рукопись, такъ и А (Берлинская; примѣты и время выражены цифрами) даютъ срокъ времени въ 23 дня, тогда какъ В (индійское изданіе; примѣты и время выражены словами) называетъ 13 дней; А при этомъ поясняетъ еще, что значитъ прикосновеніе къ ноздрямъ[2]). Во второй примѣтѣ наша рукопись и А даютъ 8 дней, а В — 3. Въ третьей примѣтѣ нашъ текстъ называетъ 50 дней, А и В — 52. Въ пятой примѣтѣ нашъ текстъ считаетъ признакомъ болѣзни «тяжесть тѣла», А «тяжесть рукъ», В «блужданіе» (?)[3]). Въ седьмой примѣтѣ нашъ текстъ и В называютъ 12

---

1) Ср. Steinschneider, Manoscritti arabici etc., 129.

2) كالحاك لهما و المدخل أصبعه فى أحدهما.

3) А — ثقيل اليدين قليل الحسّ بهما, В — يضلّ (?).

дней, А — 22. Въ девятой примѣтѣ нашъ текстъ и В называютъ обѣ ноги и шею, А — одну ногу и лицо; А опредѣляетъ смерть «во время захода солнца», В—«до захода солнца»[1]). Въ одиннадцатой примѣтѣ А и В приводятъ какъ признакъ не тяжелый сонъ, а «сонливость»[2]). Въ двѣнадцатой примѣтѣ нашъ текстъ даетъ 2 или 3 дня, А и В — 3. Въ тринадцатой примѣтѣ въ нашемъ текстѣ упомянуты 15 дней, въ А и В—25. Въ В четырнадцатая и пятнадцатая примѣты поставлены въ обратномъ порядкѣ съ нашимъ текстомъ и съ А. Въ А, въ четырнадцатой примѣтѣ, упоминается какъ признакъ «сильная жажда»[3]). Въ пятнадцатой примѣтѣ нашъ текстъ и В (четырнадцатая примѣта) даютъ 20 дней, А—2. Въ шестнадцатой примѣтѣ нашъ текстъ даетъ 6 дней, А и В—7. Семнадцатая примѣта А и В не имѣется въ нашемъ текстѣ; она гласитъ[4]), что красный прыщъ величиной съ бобъ подъ бородой предсказываетъ смерть черезъ 52 дня и признакъ этого обильное выдѣленіе мокроты. Слѣдующая въ нашемъ текстѣ примѣта (17) совпадаетъ со слѣдующей въ А и В (18). Девятнадцатая примѣта въ А и В отсутствуетъ въ нашемъ текстѣ и гласитъ[5]), что темный, не причиняющій боли прыщъ на правой рѣсницѣ предсказываетъ смерть— по А черезъ 7 дней, по В черезъ 9, до восхода солнца, при чемъ признакомъ этого является зѣвота. Въ слѣдующей примѣтѣ (18 нашего текста и 20 А и В) число дней у насъ и въ А 15, въ В—25; признакъ—въ нашемъ текстѣ тяжелый сонъ, въ А — больной много спитъ, въ В — больной спитъ много и тяжело[6]). Примѣта относительно опухоли на серединѣ головы (у насъ 21, А и В—23), даетъ въ нашемъ текстѣ 40 дней и какъ признакъ зѣвоту,

---

1) A — و كان لون الوجه كمدًا ; B — على إبهامى الرجلين , A — فى إبهام الرجل ,
B — وكان لون الرقبة كمدًا ; A — وقت مغيب الشمس ; B — قبل مغيب الشمس.

2) A — كثير النوم , B — نومًا كثيرًا.

3) لا يكاد يروى.

4) A — وإذا كانت تحت اللحية بثرة حمرآء فى عظم الباقلآء المصريّة فإنّه صاحبها (рук. صابها) يموت فى ٥٢ يومًا من مرضه بها وآية ذلك أن ينفث بلغمًا كثيرًا فى أوّل مرضه ذلك , B — إذا كانت تحت اللحية بثرة حمرآء فى عظم الباقلآء فاعلم أن صاحبها يموت الى اثنين و خمسين يومًا وآية ذلك أنّه ينفث فى بدء مرضه.

5) A — وإذا كان على الحاجب الأيمن بثرة كمدة اللون ولا توجع صاحبها فإنّه يموت ٧ يومًا من مرضه بها قبل طلوع الشمس آية ذلك أن يكون كثير التثاؤب فى أوّل مرضه (рук. الثناوب) ; B — إذا كانت على الحاجب (текстъ الجانب) الأيمن بثرة كمدة اللون فاعلم أن صاحبها يموت بعد تسعة أيّام من مرضه قبل طلوع الشمس وآية ذلك أنّه يُكثر فى بدء مرضه التثاؤب الشديد.

6) A — نوم كثير ; B — نوم كثير ثقيل.

въ А — 4 дня и какъ признакъ забытье, въ В — 90 дней и какъ признакъ забытье, желаніе ѣсть дыню, обильное мочеиспусканіе[1]). Примѣта (у насъ 22, А вторая часть 23-й, В — 24) относительно опухоли на груди (въ В високъ, возможно впрочемъ, что тутъ описка)[2]) даетъ въ нашемъ текстѣ и въ В 3 мѣсяца, а въ А 8; признаки во всѣхъ трехъ случаяхъ различны[3]). Послѣдняя примѣта нашего текста относительно паралича не имѣется ни въ А, ни въ В; заключительная примѣта А и В слѣдующая[4]): прыщи подъ шеей и на нижнемъ вѣкѣ лѣваго глаза предсказываютъ смерть черезъ 11 ночей или 1 ночь по А и черезъ 21 ночь по В, и признакъ этого позывъ на сладкое. Мы не указываемъ нѣкоторыхъ иныхъ мелкихъ различій, не имѣющихъ большого значенія для характеристики варіантовъ.

Для выясненія изводовъ и вообще литературной исторіи этого псевдэпиграфическаго трактата требуется сопоставленіе всѣхъ имѣющихся версій его, какъ западныхъ, такъ и восточныхъ; при незначительной роли его въ основной темѣ изданнаго нами сочиненія, мы заботились лишь объ исправленіи и правильной передачѣ текста этого трактата въ нашемъ изданіи, предоставляя сличеніе версій тому, кто спеціально этимъ вопросомъ заинтересуется. Приведенныя различія достаточно указываютъ, думаемъ мы, на несомнѣнную и въ данномъ случаѣ, какъ и въ примѣтахъ о родимыхъ пятнахъ и трепетахъ, неустойчивость примѣтъ и ихъ записей. Прибавимъ, что нашъ текстъ заканчиваетъ свою цитату изъ псевдо-Иппократа еще примѣтами относительно цвѣта лица, также приписываемыми имъ тому-же ученому древности.

---

1) A — يعرض له فى مبدء مرضه سبات شديد و — B ;يعرض له فى مرضه سبات يشتهى البطّيخ شهوةً شديدةً و يشتاق اليه و يبول بولًا كثيرًا.

2) صدغ вм. صدر.

3) A — وآية ذلك أن يأخذ فى مبدء مرضه الحصر و عسر البول — B ;وآية ذلك أنّه فى أوّل مرضه يقع عليه شهوة البطّيخ و الماء الكثير و يكون غريز البول كالّذى ذكره باقل (глосса — أى موضوع فى البقول الباردة).

4) A وإذا كان تحت الرقبة بثرة و فى الجفن الأسفل من العين اليسرى بثرة بيضآء فإنّه يموت بهذه (?) لإحدى عشر ليلة من ظهور ذلك او قال لأوّل ليلة من ظهورها — B وآية ذلك شدّة شهوة المريض الى الحلوآء. إذا كانت تحت الرقبة بثرة و فى الجفن الأسفل من العين اليسرى بثرة أيضًا بيضآء فاعلم ان صاحبها يموت الى إحدى و عشرين ليلة من بدء مرضه وآية ذلك أنّه يعرض له فى أوّل مرضه شهوة الحلو و الأغذية الردئة.

См. также Steinschneider, Manoscritti arabici, 134.

Разборъ изданныхъ нами текста и перевода законченъ. Какъ изъ вступительныхъ замѣчаній, такъ и изъ порядка этого разбора видно, надѣемся, ясно, что мы разсматривали этотъ трактатъ какъ нѣчто составное, а потому разложили и нашъ комментарій на нѣсколько главъ.

Въ физіономической части трактатъ все же является однимъ изъ древнѣйшихъ памятниковъ этого рода въ арабской литературѣ. Мы позволимъ себѣ повторить сказанное выше — не имѣя прямыхъ указаній на заимствованіе этого отдѣла изъ сасанидскихъ источниковъ, мы не можемъ считать эти сообщенія, относящимися несомнѣнно къ до-мусульманской Персіи. Однако, возможность вліянія сасанидскихъ традицій на подобнаго рода полу-научныя примѣты вполнѣ имѣетъ мѣсто. И въ западной литературѣ мы имѣемъ подобнаго рода трактаты (Мелампода, Гермеса Трисмегиста), выводимые изъ эпохи сильнѣйшихъ восточныхъ, а слѣдовательно и персидскихъ, вліяній. Въ этомъ же отдѣлѣ мы имѣемъ и псевдэпиграфическое сочиненіе «знаки смерти» Иппократа, имѣющееся и въ западныхъ литературахъ, но весьма возможно восточнаго происхожденія. По крайней мѣрѣ, рамка его имѣетъ нѣчто общее съ рамкой персидскаго Джāвидāн-Хиреда. Если по внѣшней формѣ примѣтъ судить объ ихъ древности, то физіономическія примѣты нашего трактата обнаруживаютъ несомнѣнную древность, такъ какъ онѣ очень не сложны; съ другой стороны, онѣ не даютъ именно благодаря своей простотѣ никакого мѣстнаго колорита и тѣмъ лишаютъ возможности подмѣтить въ нихъ источники.

Сообщенія нашего трактата объ индійскомъ фольклорѣ приближаютъ его къ старой Персіи, особенно потому, что вообще многіе индійскіе мотивы должны были пройти въ арабскую литературу черезъ сасанидскіе памятники. Напомнимъ, что въ началѣ трактата объясняется почему въ немъ вообще приводятся индійскія суевѣрія, — они важны для выясненія персидскихъ суевѣрій.

Но особенно важны для культурной исторіи до-мусульманской Персіи тѣ матеріалы, которые по своему содержанію, либо по соотвѣтствію съ данными Āйн-нāмэ, уже несомнѣнно обнаруживаютъ сасанидскій источникъ. Однако, и здѣсь передъ нами не однородный матеріалъ. Нѣкоторыя (напр. календарныя) примѣты ведутъ насъ иногда къ придворному церемоніалу, иногда къ сравнительно культурнымъ условіямъ жизни,—все это возводитъ ихъ къ сасанидской эпохѣ и у насъ въ данномъ случаѣ нѣтъ необходимости отодвигать ихъ далѣе. Но нѣкоторыя изъ нихъ производятъ впечатлѣніе еще болѣе отдаленной старины. Эти примѣты, дошедшія до насъ въ сасанидскомъ памятникѣ, существовали въ сасанидское время, но условія,

рисуемыя ими, могутъ быть возведены къ болѣе отдаленной эпохѣ. Мы разумѣемъ эпоху древней, такъ называемой восточно-иранской культуры [1]), элементы которой не только продолжали существовать въ сасанидскую эпоху, но существуютъ и до сихъ поръ у принявшихъ исламъ иранскихъ племенъ.

К. Иностранцевъ.

---

1) Характеристику ея см. напр. у H. Oldenberg, Aus Indien und Iran, Berlin, 1899, 143—144.

Письма изъ Туркестана.

II.

Не только на окраинахъ, но и въ нашихъ сѣверныхъ центрахъ можно встрѣтить чисто русскихъ людей, которые безъ всякаго интереса лично для себя начинаютъ увлекаться инородцами и, теряя всякую мѣру, приносятъ туземнымъ и инородческимъ интересамъ въ жертву интересы Россіи и русскаго народа. Въ нихъ туземные аппетиты находятъ даровыхъ горячихъ ходатаевъ, заступниковъ и пропагандистовъ того, что имъ выгодно. Весьма яркимъ примѣромъ такого увлеченія является г. Дурново и его единомышленникъ г. Гренъ, пропагандирующіе очень вредную для русскихъ интересовъ идею автокефаліи грузинской церкви, не останавливаясь передъ явной клеветой на честныхъ русскихъ дѣятелей, которые дерзаютъ возвышать свой голосъ противъ этой затѣи грузинскихъ политикановъ и представляютъ дѣло въ его настоящемъ видѣ.

Здѣсь, въ Туркестанѣ, тоже создался свой контингентъ „любителей" туземнаго, или, какъ ихъ называютъ, „сартофиловъ" и „киргизофиловъ". Къ сожалѣнію, „сартофильское" и „киргизофильское" теченіе захватило не только низшихъ служащихъ въ нашемъ краѣ, но и нѣкоторыхъ, занимающихъ весьма высокое положеніе. Между „сартофилами" попадаются типы, совершенно осартившіеся: домашній разговорный языкъ у нихъ сартовскій, дѣти лучше говорятъ по сартовски, чѣмъ по-русски, и т. д. Но если одни увлекаются сартофильствомъ платонически, то для другихъ это увлеченіе имѣетъ болѣе реальную подкладку...

Такъ или иначе, отъ этого пристрастія къ туземнымъ интересамъ туркестанской администраціи сильно пострадали государственные интересы Россіи и особенно въ земельномъ отношеніи. „Сартофилы" и „киргизофилы" закрѣпляли за населеніемъ щедрой рукой, елико возможно, большія площади земли, не справляясь, нужна она имъ или нѣтъ. Туземное населеніе вполнѣ использовало сартофильскіе импульсы начальства и фактически сдѣлалось хозяиномъ Туркестана, наживая хорошія деньги путемъ сдачи въ аренду или продажи подаренной ему да-

ромъ казенной земли русскимъ переселенцамъ.

Но тутъ случилось одно непредвидѣнное обстоятельство: податная инспекція, не зараженная исключительно сартофильствомъ, стала облагать и всѣ туземныя земли налогами. Подсчитавъ плюсы и минусы, туземцы во многихъ случаяхъ этого рода пришли къ весьма благоразумному заключенію, — они отказались отъ излишнихъ земель и сдали ихъ обратно въ казну. Благодаря этому, въ распоряженіи правительства оказался земельный фондъ въ нѣсколько десятковъ тысячъ десятинъ поливной и вполнѣ пригодной для культуры земли, который могъ бы быть предоставленъ русскимъ переселенцамъ, ожидающимъ уже по нѣскольку лѣтъ земли. Такихъ, проживающихъ въ краѣ и чающихъ земли, насчитывается свыше 7.000 семей, т. е. 35.000 душъ обоего пола.

Вполнѣ естественно, что, когда появился этотъ фондъ, немедленно стали поступать просьбы заждавшихся русскихъ переселенцевъ поселить ихъ на освободившихся земляхъ. Эта перспектива не на шутку перепугала административныхъ сартофиловъ, и „невѣроятному факту бросанія населеніемъ земель“ оффиціозная газета „Туркестанскія Вѣдомости“ удѣлила нѣсколько строкъ.

Опуская излишнія подробности, мы приведемъ фактическую сторону дѣла, какъ ее опубликовала газета, ибо она даетъ матеріалъ для сужденія о возмутительной сторонѣ дѣйствій поземельно-податныхъ комиссій.

„Не многимъ, говоритъ газета, извѣстно одно ненормальное явленіе въ земледѣльческой (?!) жизни Туркестанскаго хозяина. Это явленіе имѣетъ мѣсто въ Ташкентскомъ уѣздѣ и носитъ названіе: „отказы отъ земель сельскимъ населеніемъ“. Въ Ганбо-Атинской, Джамель-Тюбинской, Османатинской и Булатовской волостяхъ зарегистрированы оффиціально цѣлыя тысячи десятинъ поливныхъ полей, болѣе всего занятыхъ культурой риса, отъ которыхъ населеніе отказалось еще въ 1901 году (!!) и предоставило ихъ въ распоряженіе казны. Что сдѣлано администраціей въ этомъ направленіи, пока достовѣрно неизвѣстно, извѣстно лишь то, что накопившіяся на брошенныхъ земляхъ недоимки государственнаго поземельнаго налога и прочихъ сборовъ состоятъ за населеніемъ уѣзда и, выражаясь не однимъ десяткомъ тысячъ, лежатъ на немъ тяжелымъ бременемъ“.

Можно ли не возмущаться тѣмъ, что съ 1901 года, т. е. уже около 8 лѣтъ, населеніе предоставило въ распоряженіе казны многія тысячи десятинъ поливной земли въ одномъ Ташкентскомъ уѣздѣ, и однако эта земля до сихъ поръ не только пустуетъ, но даже „достовѣрно неизвѣстно, что сдѣлано администраціей въ этомъ направленіи"? А между тѣмъ 8 лѣтъ администрація Туркестана твердитъ, что свободныхъ земель для поселенія русскихъ нѣтъ, и за это время тысячи русскихъ семей разорялись въ Туркестанѣ, ожидая, пока администрація скажетъ, наконецъ, что земля для нихъ есть. На оставленной туземцами землѣ могло быть устроено нѣсколько крупныхъ русскихъ селеній, но въ теченіе 8 лѣтъ администрація не удосужилась сдать ихъ въ вѣдѣніе переселенческаго управленія!

Поразительная заботливость о русскихъ государственныхъ интересахъ! Но совершенно иная была бы картина, если бы отъ земли отказались не туземцы, а русскіе поселяне,—г. г. сартофилы давнымъ давно уже заселили бы ихъ сартами, а, можетъ быть, и армянами.

Но возвратимся къ разсужденіямъ Туркестанскаго оффиціоза:

„Отказы отъ земель, незнакомые земледѣльцу Европейской Россіи, имѣли мѣсто у насъ, въ Ташкентскомъ уѣздѣ, лишь въ виду того поземельнаго устройства, которое производилось въ 1892 году, и дефекты котораго нынѣ призвана исправлять бывшая самаркандская (?) поземельно-податная комиссія. Интересы фиска, преслѣдовавшіеся почти исключительно при работахъ того времени, заставляли привлекать къ обложенію поземельнымъ налогомъ всякія культурныя земли безъ утвержденія ихъ за населеніемъ. Тогда не интересовались и не считались съ тѣмъ, въ состояніи ли извѣстная группа сельскихъ хозяевъ справиться съ обработкой всѣхъ тѣхъ полей, которыя поземельно-податная комиссія сняла на планы и обложила налогомъ. Отъ молодого, сравнительно, Туркестана истратившаяся значительно на него казна ждала доходовъ, и, когда въ высшихъ финансовыхъ сферахъ узнали, что, по окончаніи поземельно-податныхъ работъ, ожидается полмилліонное поступленіе въ казну государственнаго поземельнаго налога съ одного лишь Ташкентскаго уѣзда, настроеніе ихъ сдѣлалось достаточно радужнымъ, и ожидалось лишь фактическое поступленіе денегъ въ казначейство. Въ первое время оклады поземельнаго налога поступали исправно, но прошло лѣтъ шесть, и за населеніемъ уѣзда стали накопляться

недоимки, при чемъ одной изъ этихъ причинъ, какъ впослѣдствіи выяснилось, были тѣ земельные надѣлы, которые размежеваны населенію поземельно-податной комиссіей. *Надѣлы* эти, въ большинствѣ, были настолько велики, что хозяева обрабатывать ихъ были не въ состояніи; они справлялись лишь съ частью ихъ (?!), оставляя *излишки* необработанными, а слѣдовательно, и не приносившими никакого валоваго дохода. Между тѣмъ, оклады поземельнаго налога, исчисленные въ размѣрѣ 10% со средней валовой доходности всей замежеванной земли, взыскивались и съ необработанныхъ земель, и населеніе, такимъ образомъ, должно было уплачивать въ казну уже не 10 законныхъ процентовъ, а часто до 50 (?!). Понявъ, въ концѣ концовъ, что такія ненормальныя ставки налога явились вслѣдствіе обложенія земель необработанныхъ и, будучи не въ состояніи обработать таковыя, населеніе обратилось къ администраціи и просило ее взять эти излишки въ казну, избавивъ его отъ излишняго налога и накопляющихся все болѣе и болѣе недоимокъ".

Сущность дѣла изложена газетой съ полной ясностью: поземельно-податная комиссія, увлекаясь желаніемъ надѣлить туземное населеніе, насколько возможно, большимъ количествомъ земли, отмежевала ему такіе огромные надѣлы, что оно ихъ обрабатывать не могло, и изъ нихъ получились излишки даже поливной земли. Но, благодѣтельствуя туземцамъ, комиссія упустила изъ виду, что налогъ придется платить и за эти излишки. Правда, оффиціозъ Туркестанскаго края старается замаскировать столь ясно имъ констатированное положеніе вещей совершенно излишней экскурсіей въ область податного обложенія: вѣдь, вполнѣ ясно и очевидно, что, если бы комиссія выдѣлила туземцамъ лишь то количество земли, которое ему было нужно, и которую оно бы имѣло возможность обработать, то не было бы и тяжести податного обложенія и недоимокъ. Суть дѣла не въ податномъ обложеніи, а въ томъ, что населенію дано болѣе земель, чѣмъ ему нужно. Аналогичное явленіе можно констатировать и въ другихъ мѣстностяхъ Туркестана.

Какой-же выводъ дѣлаетъ оффиціозный органъ Туркестанской администраціи? Повидимому, онъ долженъ былъ бы настоятельно требовать передачи подобныхъ пустующихъ земель, отъ которыхъ отказалось само населеніе, въ колонизаціонный фондъ немедленно... Ничуть не бывало!.. Вотъ что рекомендуетъ оффиціозъ:

„Работающая въ настоящее время поземельно-податная комиссія, несомнѣнно, обратитъ на это явленіе достодолжное вниманіе, а центральный органъ мини-

стерства финансовъ — наша казенная палата, въ рукахъ которой вотъ уже 7 лѣтъ сосредоточенъ матеріалъ по этимъ отказамъ, по всей вѣроятности, найдетъ способъ сложить со счетовъ населенія Ташкентскаго уѣзда подобнаго рода недоимки, образовавъ изъ брошенныхъ земель казенно-оброчныя статьи, которыя принесутъ казнѣ въ будущемъ несомнѣнные доходы".

Оказывается, Туркестанскій оффиціозъ абсолютно позабылъ о возможности болѣе правильно использовать оказавшійся земельный фондъ, предоставивъ его русскимъ переселенцамъ, которые современемъ, и даже очень близкомъ, будутъ платить казнѣ поземельный налогъ. Такое забвеніе, несомнѣнно, свидѣтельствуетъ о томъ, что заботы о водвореніи русскихъ нѣтъ, и что для оффиціоза наличности 7.000 русскихъ семей, ожидающихъ земли въ Туркестанѣ, не существуетъ.

Къ чему, несомнѣнно, приведетъ предполагаемое газетой образованіе оброчныхъ статей? Къ тому, что эти цѣнныя земли, столь необходимыя для русской колонизаціи, будутъ сданы въ аренду съ торговъ и попадутъ въ руки армянъ, нѣмцевъ, туземцевъ, а, можетъ быть, и бухарскихъ евреевъ, которые будутъ ихъ передавать отъ себя въ аренду голодному русскому люду.

Допустить нѣчто подобное нельзя, — но это практикуется въ Туркестанѣ постоянно, и огромное большинство свободныхъ казенныхъ земель, орошаемыхъ и пригодныхъ для культуры, сдается за сравнительно ничтожную плату туземцамъ-спекулянтамъ, армянамъ, нѣмцамъ и другимъ инородцамъ.

Настоятельно необходимо немедленно положить этому предѣлъ и прекратить столь ненормальное положеніе вещей, являющееся результатомъ туземнофильскихъ увлеченій лицъ, приставленныхъ прежде всего охранять русскіе государственные интересы.

Наблюдатель.

На здѣшней окраинѣ приходится встрѣчаться со многими странными и подчасъ съ точки зрѣнія здраваго смысла совершенно непонятными явленіями. Къ числу таковыхъ относится и то огульное осужденіе русскихъ переселенцовъ, которое приходится слышать на каждомъ шагу и притомъ не отъ туземцевъ, а отъ представителей русской интеллигенціи и здѣшней администраціи, за которыми это обвиненіе повторяется съ особымъ злорадствомъ и представителями петербургскихъ бюрократическихъ сферъ, и такимъ образомъ создается какое-то предубѣжденіе противъ этого совершенно безобиднаго, смирнаго и во всѣхъ отношеніяхъ полезнаго элемента. Но еще болѣе приходится удивляться,

что у многихъ сравнительно высокихъ представителей администраціи, къ стыду сказать—русскаго происхожденія, эти осужденія превратились въ какую-то ненависть къ русскому переселенцу, и постоянно приходится встрѣчаться съ заявленіями, которыя дѣлаются даже и на офиціальныхъ засѣданіяхъ, въ родѣ слѣдующихъ: «переселенцы, которыхъ я до сихъ поръ видѣлъ въ Туркестанѣ, это такая дрянь, такіе пропойцы, что не селить ихъ надо, а метлой гнать изъ края вонъ», или: «русскіе переселенцы исключительно пьяницы и ничего не дѣлаютъ и только докучаютъ своими жалобами, не только имъ нечего помогать, а надо ихъ выгнать изъ края».—«Русскіе переселенцы—это чистое бѣдствіе для Туркестаяа—это пьяницы, рвань, насильники! Надо на границѣ Туркестана поставить непрерывный кордонъ войскъ и штыками не пускать ихъ въ край» и т. д. въ томъ-же родѣ безъ конца. Если бы дѣло ограничивалось только выраженіемъ личныхъ чувствъ, то это не имѣло бы значенія, но дѣло обстоитъ гораздо серіознѣе и ограничивается не одними словами, а переходитъ и въ сферу воздѣйствія въ случаяхъ соприкосновенія съ переселенческимъ дѣломъ, въ высшей степени вреднаго и тяжело отзывающагося на укрѣпленіи и расширеніи русскаго переселенія. Благодаря этому отношенію, проникающему и въ нижніе слои администраціи, много горя приходится претерпѣвать здѣсь русскому люду, и что только не продѣлывает-

ся здѣсь съ этимъ несчастнымъ русскимъ людомъ, котораго съ мѣста родины гонятъ въ здѣшній благодатный край горькая нужда.

Для иллюстраціи приведемъ слѣдующій весьма рельефный примѣръ. Въ Ташкентскомъ уѣздъ въ 1889—91 г.г. производились поземельно-податныя работы, имѣющія цѣлью закрѣпить за туземнымъ населеніемъ въ собственность земли, которыми они всегда пользовались въ видѣ податного обложенія его, которыя въ сущности являлись и землеустроительными.

Эти работы производятся подъ руководствомъ особыхъ комиссаровъ, которымъ предоставлены такія огромныя права, что въ сущности отъ ихъ усмотрѣнія зависитъ признать за населеніемъ данную землю въ собственность или нѣтъ. Эти комиссары, а за ними и члены поземельно-податныхъ комиссій обыкновенно отличаются замѣчательнымъ мягкосердечіемъ и сердоболіемъ къ туземцамъ и при поземельно-податныхъ работахъ обыкновенно, какъ здѣсь принято говорить, «замежевываютъ» за населеніемъ не только то, чѣмъ оно фактически пользуется для сельско-хозяйственной эксплоатаціи, какъ это требуетъ законъ, а все, что только можно сдать ему изъ государственныхъ земель. Поэтому, обыкновенно, до начала работъ поземельно-податной комисссіи въ данной мѣстности казнѣ принадлежатъ огромныя площади совершенно свободныхъ земель, послѣ-же окончанія работъ этихъ комиссій оказывается, что у казны нѣтъ ни пяди земли, зато сарты и киргизы вдругъ становятся счастливыми собственниками земель, которыми никогда не владѣли и не пользовались.

Но въ данномъ случаѣ, какъ ни старалась поземельно-податная комиссія отликвидировать государственную собственность, но все-же окончательно этого ей сдѣлать не удалось, и вдоль одного изъ главныхъ арыковъ, т. е. ирригаціонныхъ каналовъ, такъ называемаго «Боссу», построеннаго еще Китайцами, между землями волостей Чиназской, Алтыновской и другими, недалеко отъ желѣзной дороги нѣсколько южнѣе Ташкента, уцѣлѣлъ великолѣпный по плодородію и положенію казенный участокъ, мѣрою около 23000 дес. земли, который и

сданъ былъ въ вѣдѣніе уѣздной администраціи, до сихъ поръ завѣдывающей и управляющей государственными имуществами въ краѣ.

При недостаткѣ земель для русскаго населенія, казалось-бы за этотъ случай надо было ухватиться и немедленно поселить здѣсь русскихъ переселенцевъ, которыхъ по существующимъ нормамъ земельнаго надѣла можно было бы поселить свыше 1000 семей. Но русскихъ переселенцевъ туда не пустили, а когда въ 1908 г., наконецъ, возникъ вопросъ о водвореніи ихъ здѣсь, то оказалось, что съ 1891 по 1908 г. мѣстная администрація была такъ занята разными дѣлами, что и не замѣтила, какъ въ этой обширной степи водворились туземцы, изъ которыхъ нѣкоторые пришли сюда чуть не за 500 верстъ. Втерлись, конечно, въ глубь степи и сосѣди-сарты и стали производить тамъ посѣвы хлѣбовъ. Казалось бы, что разъ обнаружилось самовольное вторженіе въ государственную собственность насильниковъ, надо было немедленно удалить ихъ и возстановить въ своихъ правахъ казну. Но... этого сдѣлано не было.

Мало того, оказалось, что всѣ 9 лѣтъ туземцы самовольно пользовались совершенно безплатно землями, которыя имъ угодно было засѣвать, и никакихъ попытокъ обложенія ихъ арендной платой дѣлаемо не было. Невольно напрашивается сопоставленіе столь великаго благодушія администраціи къ туземцамъ на Боссу съ той строгостью, которая проявляется ею по отношенію къ русскимъ: несомнѣнно, что если бы только на Боссуйскихъ земляхъ засѣли бы не сарты, а русскіе, то немедленно были бы обложены или согнаны.

Когда, какъ указано было выше, возникъ вопросъ о водвореніи русскихъ переселенцевъ, то дѣло обстояло такъ: весной 1908 года появилась группа русскихъ поселянъ, просившая о разрѣшеніи имъ взять въ аренду 180 десятинъ земли на одинъ годъ. Послѣ долгихъ обсужденій и колебаній просьба эта была удовлетворена и, такимъ образомъ, на Боссуйскихъ земляхъ, кромѣ самовольныхъ поселенцевъ-сартовъ, очутилась и небольшая группа русскихъ арендаторовъ. Вполнѣ естественно, что при офиціальной наличности 23.000 десятинъ свободной казенной земли возникъ вопросъ о поселеніи этой небольшой группы русскихъ людей. Пока шла переписка объ этомъ, здѣсь появилась

вторая группа русскихъ арендаторовъ, которымъ тоже была отведена временно земля. Такимъ образомъ временно было водворено около 100 семей русскихъ арендаторовъ, относительно которыхъ возбужденъ былъ вопросъ о поселеніи ихъ. Тутъ-то и начались затрудненія: администрація никакъ немогла рѣшиться разстаться съ Боссуйскою дачей и стала изыскивать всевозможные способы какъ-нибудь не допустить передачи ея въ переселенческій фондъ. Вскорѣ лазѣйка была найдена: вся дача оказалась совершенно необходимой для устройства туземцевъ и на счастье съ 2-хъ сторонъ не была въ свое время проведена межа, такъ что можно было потребовать производство межеванія. Особую заботливость возбудило и одно сельское общество, которое администрація непремѣнно хочетъ надѣлить землей изъ Боссуйской дачи. Между тѣмъ администрація совершенно забыла, что это сельское общество въ свое время было настолько обезпечено землей, что продало за ненадобностью 1000 десятинъ своей великолѣпной поливной земли Каучинскому свеклосахарному заводу, который и поднесь владѣетъ этой землей. Казалось бы, что при такихъ условіяхъ не могло бы быть и рѣчи объ отдачѣ вновь безплатно казенной земли туземцамъ, продавшимъ уже разъ данную имъ землю... Но это обстоятельство совершенно забыто...

И вотъ подъ напоромъ всѣхъ этихъ соображеній возникло прямо Соломоново рѣшеніе: въ виду необходимости использовать Боссуйскія земли для туземцевъ—выселить русскихъ арендаторовъ. Насилу удалось въ концѣ концовъ добиться оставленія ихъ и выдѣленія имъ земли для окончательнаго водворенія.

А время все шло и идетъ, и несчастной горсточкѣ русскихъ людей приходится уже болѣе года жить въ землянкахъ, при самыхъ неблагопріятныхъ условіяхъ и ждать, пока, наконецъ, переписка и препирательства окончатся, и для поселенія ихъ найдено будетъ мѣсто. Въ довершеніе всѣхъ бѣдъ въ этомъ году налетѣла массами саранча и почти совершенно уничтожила ихъ посѣвы, такъ что хлѣба они собрали настолько мало, что имъ не хватитъ до будущаго года для пропитанія. Съ другой сто-

роны, между дѣтьми открылись острыя заболѣванія вслѣдствіе жары и плохого питанія...

Такъ вотъ что приходится претерпѣвать русскимъ людямъ при самомъ благопріятномъ положеніи дѣла, даже тогда, когда генералъ-губернаторомъ приказано ихъ водворить. Въ томъ же родѣ и еще худшія бѣдствія приходится имъ испытывать при всякомъ случаѣ водворенія. И вотъ этихъ-то тружениковъ и мучениковъ поворачивается у иныхъ русскихъ интеллегентовъ языкъ называть пьяницами и дрянью! Больно и обидно за такой упадокъ національнаго самознанія.

Но не только въ данномъ случаѣ, но и во всѣхъ остальныхъ, когда водворяются русскіе люди, самому предвзятому переселенцефобу нельзя не убѣдиться въ полной несправедливости предубѣжденія противъ русскихъ переселенцевъ и выдвигаемыхъ противъ нихъ нареканій: вездѣ въ своихъ поселкахъ русскіе устраиваются прочно и хорошо и проявляютъ тонкую наблюдательность и большую иниціативу и изобрѣтательность, превращаясь постепенно во вполнѣ прочный и матеріально обезпеченный элементъ, который являетъ собой примѣръ туземцамъ, заимствующимъ у нихъ пріемы и орудія обработки почвы и т. д.

Несомнѣнно, скорѣйшее заселеніе Туркестана русскими, когда численность русскаго элемента будетъ достаточно велика, дастъ большой толчокъ къ прогрессу на пути къ культурности мѣстнаго туземнаго населенія, пребывающаго еще погруженнымъ весьма глубоко въ трясину азіатской дикой культуры и невѣжества, благодаря которому оно чутко прислушивается къ пропагандѣ разныхъ фанатиковъ и эмисаровъ изъ Китая. Наружно оно спокойно и, привыкнувъ къ престижу русской власти, оно покорно. Но и только. Если бы, однако, въ настоящее время явилась бы въ Туркестанѣ какая либо враждебная намъ сила, которая хотя бы временно взяла надъ нами верхъ—и это нынѣ на видъ столь покорное и смирное населеніе ростомъ превратится во враждебную намъ дикую азіатскую орду, способную на всякія звѣрства по отношенію къ русскому населенію.

Здѣсь передаютъ весьма странное, высказанное однимъ изъ ревизовавшихъ Туркестанскій край лицъ, мнѣніе по данному вопросу, ярко характеризующее, конечно, полное непониманіе имъ дѣйствительнаго положенія вещей: туземное населеніе монархически настроено и желаетъ быть въ подданствѣ Россіи и управляться ею. Но, если между этими нѣсколькими милліонами смирныхъ и преданныхъ Россіи туземцевъ разселить 100.000 русскихъ „пьяницъ", то это преданное Россіи населеніе бросится въ объятья Китая, простирающаго уже свою пропаганду сюда". Въ воображеніи автора этой безсмертной фразы „русскій переселенецъ" и „пьяница" понятія эквивалентныя, но такое сопоставленіе есть вопіющая несправедливость по отношенію къ русскому народу и совершенно незаслуженное оскорбленіе здѣшнихъ русскихъ переселенцевъ.

Нѣтъ, не опасаться водворенія 100.000 русскихъ надо, а, напротивъ, всѣ усилія надо употребить, чтобы вселить ихъ нѣсколько милліоновъ. Тогда никакіе китайскіе эмисары не страшны, и Туркестанская окраина будетъ навѣки прочно закрѣплена за Россіей, а туземное населеніе сживется и сдружится съ русскимъ населеніемъ и, дѣйствительно, превратится во вполнѣ преданныхъ Россіи людей.

Въ настоящемъ письмѣ я коснусь случая, въ высокой степени интереснаго и имѣющаго значеніе не только для Туркестана, такъ какъ проливаетъ свѣтъ на отношеніе армянской и еврейской народности къ Русскому Государству вообще, а также и на тотъ безпримѣрный упадокъ сознанія долга и національнаго самосознанія, который проявляетъ мѣстная служилая интеллигенція.

Во время своего послѣдняго служебнаго объѣзда, начальникъ края генералъ-лейтенантъ Самсоновъ, между прочимъ, посѣтилъ въ г. Самаркандѣ четырехклассное мужское городское училище и женскую гимназію, и вотъ какіе невѣроятные случаи констатируетъ приказъ № 190, опубликованный въ № 3511 «Туркест. Вѣдом.»:

«Въ 4-омъ отдѣленіи по моему предложенію былъ пропѣтъ учениками русскій народный гимнъ; несмотря на отсутствіе участія регента, „Боже, Царя храни" было исполнено стройно и вполнѣ заслужи-

вало одобренія. Находившійся въ классѣ ученикъ-еврей не пѣлъ; на мой вопросъ, почему онъ не поетъ, онъ отвѣтилъ, что онъ еврей».

Далѣе въ женской гимназіи «спрошенныя объ именахъ Государя Императора, Государыни Императрицы и Наслѣдника Цесаревича, армянки не знали именъ этихъ Высочайшихъ Особъ и заявили, что онѣ армянки».

Итакъ, евреи не считаютъ себя едиными съ каждымъ русскимъ, и для нихъ Русскій Царь не ихъ Царь, и русскій народный гимнъ—чужой для нихъ гимнъ. Точно также и для армянъ Русскій Царь не существуетъ, и они даже не желаютъ знать имени Государя Императора...

Конечно, можно возразить, что въ данномъ случаѣ были только дѣти. Но, несомнѣнно, что если бы въ ихъ семьяхъ относились къ данному вопросу иначе, то ученику-еврею не пришло бы въ голову уклоняться отъ пѣнія народнаго гимна, а армянкамъ—не знать имени благополучно царствующаго Государя Императора.

Поэтому, констатированные приказами случаи являются показателями того настроенія умовъ, которое господствуетъ среди туркестанскихъ евреевъ и армянъ и, ergo, среди евреевъ и армянъ въ Россіи вообще. Это необходимо принять во вниманіе русскому народу. Имъ надо твердо помнить, что ни та, ни другая національность не признаютъ Россію, какъ свое государство.—Они живутъ и пользуются всѣмъ въ Россіи и настойчиво требуютъ себѣ все большихъ и большихъ выгодъ, но въ ихъ понятіяхъ—они сами по себѣ, а Русскіе сами по себѣ, и для нихъ она интересна только, какъ объектъ для дѣятельности и для эксплоатаціи.

Нельзя не отмѣтить также, что въ существѣ между обоими народами, т.-е. евреями и армянами, много общаго—та же сплоченность, тотъ же культъ мамоны, та же наклонность къ торговлѣ, къ банковымъ операціямъ, ростовщичеству, гешефтамъ и т. д. Это проистекаетъ, конечно, отъ того, что въ армянахъ имѣется весьма значительная примѣсь еврейской крови. Сходство усугубляется еще тѣмъ,

что оба народа потеряли свои царства, но армяне ближе стали къ своему будущему, принявшись создавать себѣ територію не въ томъ мѣстѣ, гдѣ нѣкогда было ихъ царство, а въ мѣстѣ спокойномъ и безопасномъ, подъ сѣнью крыльевъ могучаго Русскаго орла.

Приверженцы армянъ охотно выдвигаютъ на видъ, что армяне стремятся не къ политической самостоятельности, а лишь къ экономическому преобладанію. Пусть такъ. Но и такое положеніе вредно и опасно, особенно на окраинахъ: здѣсь, вмѣсто того, чтобы создать экономическое и политическое преобладаніе русскаго народа, мы создаемъ экономическое преобладаніе и ставимъ въ экономическую зависимость туземное населеніе отъ двухъ народностей, враждебныхъ нашему государству. При такихъ условіяхъ, закабаляя населеніе экономически, они естественно станутъ вожаками его и въ политическомъ отношеніи и, конечно, постараются привить въ его средѣ тѣ чувства, которыя сами питаютъ къ русскому народу и государству. Опасность велика. Сейчасъ туземное населеніе Туркестана носитъ личину полной преданности Россіи и настолько подчинено и покорно администраціи, что далеко отъ мысли проявить какія либо освободительныя стремленія. Но не трудно предвидѣть, въ какомъ направленіи сложится въ его средѣ настроеніе умовъ, когда разсѣянная по всему краю довольно таки густая сѣть евреевъ и армянъ, уже почти совершенно захватившая въ свои тенета всю экономическую жизнь туземнаго и русскаго населенія, постепенно вольетъ въ душу туземца ядъ своей политической пропаганды. Если въ училищѣ и гимназіи главному начальнику края юные представители обоихъ счастливыхъ націй не постѣснились подчеркнуть свою отдѣльность отъ Россіи, то можно представить себѣ, что проповѣдуется ими въ нѣдрахъ народа, внѣ поля зрѣнія администраціи!

Необходимо зорко слѣдить за тѣмъ, что дѣлается и всѣми мѣрами парализовать дѣятельность армянъ и евреевъ, охранивъ отъ ихъ пропаганды туземное населеніе. Хороши, однако, г. педагоги, допустившіе подобное демонстративное незнаніе.

Послѣ приказа, упомянутаго выше, всѣ спохватились—и родители, и педагоги, и уже когда начальникъ

края предполагалъ посѣтить гимназію въ Ташкентѣ, учительскій персоналъ усиленно занялся провѣркой знанія учащимися имени Государя Императора, Государыни Императрицы и Наслѣдника, и то только передъ посѣщеніемъ его начальникомъ края, сказавшимъ въ своемъ приказѣ: «Царствующихъ особъ Императорской Фамиліи долженъ знать каждый вѣрноподданный русскаго Государя, къ какой бы онъ національности ни принадлежалъ».

Возможно-ли предположить, напримѣръ, чтобы въ Германіи пришлось въ какой нибудь школѣ спеціально заставлять учениковъ зубрить имя Царствующаго Императора?

Глубокое разложеніе гражданственности оставило послѣ себя освободительное движеніе и короткое, но въ высокой степени вредное правленіе генерала Субботича. Много труда и усилій придется потратить новому начальнику края для водворенія правильнаго пониманія своихъ гражданскихъ обязанностей здѣшней интеллигенціи.

Но отрадно, что, наконецъ, и здѣсь, въ Туркестанѣ, раздался властный голосъ русскаго государственнаго человѣка, вѣрнаго исконнымъ началамъ русскаго народа.

Сельскохозяйственные и промышленные итоги Туркестана.

Минувшій 1909 годъ во многихъ отношеніяхъ будетъ памятенъ для Туркестана.

Въ сельскохозяйственномъ отношеніи въ 1909 г. долженъ быть признанъ счастливымъ и выдающимся для Туркестанскаго края.

Благосостояніе нашей окраины зиждется главнымъ образомъ на хлопководствѣ. Обычно, за вегетаціонный періодъ хлопчатника, какъ наши земледѣльцы (декханы), такъ, преимущественно, фирмы, занимающіяся скупкой и перепродажей хлопка, а также переработкой хлопковаго волокна, съ тревогой слѣдятъ за малѣйшими климатическими измѣненіями въ Туркестанѣ, могущими вредно отразиться на успѣшномъ ростѣ хлопчатника. Мѣстныя газеты, московская печать, ближе стоящая къ мануфактурнымъ предпріятіямъ, и „Торг.-Пром. Газ." въ Петербургѣ въ своихъ спеціальныхъ отдѣлахъ, подъ заголовкомъ „Хлопокъ", неустанно печатаютъ свѣдѣнія о ростѣ туркестанскаго хлопчатника, о подувшемъ горячемъ вѣтрѣ (гармъ-силь) и т. п. Миновало лѣто, подходитъ осень и снова страхи и тревога за хлопокъ, какъ бы осенніе дожди не попортили качество волокна, какъ-бы заморозки не погубили посѣвовъ хлопка и т. д.

И вотъ минувшій 1909 годъ въ этомъ отношеніи былъ самымъ благопріятнымъ для туркестанскаго хлопководства. Ростъ хлопчатника, его цвѣтеніе и, наконецъ, сборъ раскрывшихся коробочекъ съ бѣлоснѣжнымъ волокномъ протекли совершенно нормально и успѣшно. Маленькое исключеніе было: прилетѣлъ въ Фергану отрядъ марокской кобылки (саранчевое насѣкомое) и заложилъ тамъ свои яички, вызвавъ своимъ появленіемъ чуть-ли не паническій страхъ. Но объ этомъ событіи поговоримъ особо...

Надежды на хорошій сборъ хлопка оправдались.

По произведенному Кокандскимъ биржевымъ комитетомъ подсчету, урожай хлопка въ Туркест. краѣ за 1909 г. выразился въ суммѣ 10.250,000 п.

Урожай отличный и, по увѣренію нѣкоторыхъ, даже небывалый...

Когда мнѣ пришлось въ одной изъ статей выразить, что въ среднемъ урожай хлопка въ Туркестанѣ можетъ достичь 10—15 милл. пуд., то меня обвинили въ преувеличеніи. Цифра урожая минувшаго года подтверждаетъ, что я былъ близокъ къ истинѣ, тѣмъ болѣе, что отъ учета ускользаетъ количество хлопковаго волокна, идущаго на мѣстныя потребности.

Не смотря на хорошій урожай, московскіе капиталисты (представители текстильной промышленности) подняли въ печати вопросъ о хлопковомъ кризисѣ. Дѣло въ томъ, что въ потребленіи хлопковаго волокна Россія, какъ и

другія Европейскія государства, находится въ полной зависимости отъ Соед. Штатовъ Сѣв. Америки, являющихся всемірнымъ поставщикомъ хлопка. Въ минувшемъ году урожай хлопка въ Сѣв. Америкѣ былъ плохъ (ниже всѣхъ за послѣдніе 15 лѣтъ!), а потому цѣны значительно повысились, при чемъ часть урожая была оставлена американцами у себя дома въ запасѣ. Такимъ образомъ, москвичамъ бумаго-прядильщикамъ пришлось поплатиться немного своими карманами при покупкѣ заграничнаго хлопка. Отсюда вопль о кризисѣ... Отсюда требованіе о скорѣйшемъ орошеніи новыхъ земель въ Туркестанѣ и на Кавказѣ за счетъ казны и обывателей... Подъ вліяніемъ русскихъ текстильщиковъ главное управленіе землеустр. и землед. внесло уже законопроектъ о налогѣ въ 50 коп. съ пуда отечественнаго хлопка для образованія спеціальнаго фонда на улучшеніе хлопководства и на оживленіе новыхъ пространствъ подъ посѣвы хлопчатника... Въ данномъ случаѣ устанавливается не только налогъ на потребителя хлопчатобумажныхъ тканей, но и за счетъ того-же потребителя намѣрены производить орошеніе Туркестана. Подробно объ этомъ у насъ сказано въ статьѣ „Золотыя розсыпи въ Туркестанѣ“ и въ № 283 «Туркест. Кур.» („Столичныя газеты о хлопковомъ кризисѣ“). Конечно, избавленіе отъ хлопковаго ига Сѣв. Америки крайне желательно, но вовсе не путемъ налога на потребителей и обывателей.

Что касается саранчи (марокскской кобылки), то обильное ея отрожденіе въ минувшемъ 1909 г., а также появленіе ея на поляхъ Ферганской долины заставили правиеельство и общественныя организаціи серьезно заняться вопросомъ объ истребленіи саранчи. Кокандскій биржевой комитетъ поднялъ этотъ вопросъ, настоятельно указывая на необходимость лучшей постановки борьбы съ саранчею. Въ Ташкентѣ созвано было, подъ предсѣдательствомъ генералъ-губернатора А. В. Самсонова, особое совѣщаніе для обсужденія мѣръ борьбы съ саранчею, въ которомъ приняли участіе военные губернаторы и уѣздные начальники трехъ коренныхъ областей края, чины управленія земл. и госуд. имущ. и представители Кокандскаго биржевого комитета. Всего зарегистрировано 111.000 десятинъ залежей саранчевыхъ кубышекъ. На Фергану приходится всего только 1.500 десятинъ залежей. Сумма расходовъ на истребленіе въ 1910 г. саранчи въ Туркестанѣ исчислена была въ 925.000 руб. Борьбу съ саранчей рѣшено вести всѣми способами, при чемъ на 80 проц. залежей будетъ примѣняться истребленіе кобылки путемъ опрыскиванія растительности инсектисидомъ (смѣсь парижской зелени съ известью) изъ аппаратовъ Вермореля. Въ обширныхъ размѣрахъ будетъ примѣнено сжиганіе кобылки особыми ап-

паратами „сжигалками". Для этой цѣли, послѣ тщательной экспертизы, былъ избранъ аппаратъ конструкціи г. г. Сѣдова и Бильдина. Изготовляется около 200 сжигалокъ. При всемъ томъ обращено вниманіе на то, что, истребивъ саранчу въ Катта-Курганскомъ уѣздѣ, мы не гарантированы отъ того, что, при слабыхъ попыткахъ борьбы съ саранчей въ Бухарскомъ ханствѣ, отродившаяся въ Бухарѣ саранча не перекочуетъ въ наши предѣлы. Въ виду этого, имѣется вѣроятіе, что въ предѣлы ханства будетъ командированъ особый чиновникъ для руководства истребленіемъ саранчи въ предѣлахъ Бухары. Въ общемъ къ борьбѣ съ саранчею готовятся весьма серьезно и организація этого дѣла проводится планомѣрно.

Въ непосредственной связи съ хлопководствомъ стоитъ дѣло по орошенію новыхъ земель подъ посѣвы хлопка.

Въ этой отрасли минувшій годъ ознаменовался лишь проектами. Пока только единичными личностями на ихъ собственныя средства орошены, сравнительно, малые участки. Въ Закасп. обл. къ такого рода предпріятіямъ относятся орошеніе земель инженеромъ Асріанцемъ (съ субсидіей отъ правительства) и торг. домомъ К. Аррисъ и К°. Въ Самаркандской обл. къ орошенію приступили туземецъ Касымбаевъ и инж. техн. А. А. Рудинскій. Въ Ферганской обл. для орошенія земель организовалось спеціальное «промышленное и оросительное товарищество» во главѣ съ горн. инж. Арутюновымъ. Въ минувшемъ году казна продолжала сооруженіе магистральнаго канала для орошенія 45 тыс. десятинъ въ Голодной степи (постройка начата въ 1901 г.) Окончанія этого сооруженія еще не видно. Созданные инж. Воейковымъ, Ермолаевымъ, Миндеръ и др. грандіозные проекты оживленія громадныхъ пространствъ земли, повидимому, не будутъ осуществлены. Отмѣчаемъ развитіе частнаго почина въ орошеніи новыхъ земель.

Выдающимся событіемъ въ сельскохозяйственно-промышленной жизни Турк. края надо признать устройство въ минувшемъ году въ Ташкентѣ сельскохозяйственной, промышленной, художественной и научной выставки, названной юбилейною по случаю исполнившагося 25-лѣтія существованія туркест. общества сельск. хоз. Выставка эта дала полное представленіе о значительномъ развитіи всѣхъ отраслей сельскаго хозяйства, торговли и промышленности въ Туркестанѣ. Наша окраина въ этомъ отношеніи далеко шагнула впередъ, занявъ видное мѣсто въ общегосударственной жизни. Детально разсматривать значеніе юбилейной выставки не представляется необходимымъ, такъ какъ этому вопросу были посвящены въ мѣстной и столичной печати подробныя статьи. Къ сожалѣнію, выставка въ матеріальномъ отношеніи дала, насколько извѣстно, отрицательные

результаты. Между тѣмъ, устроители ея (сельскохоз. общество) ожидали хотя-бы даже незначительный доходъ.

Минувшій годъ ознаменовался возбужденіемъ весьма серьезнаго вопроса о соединеніи Сибири и Туркестана желѣзнодорожнымъ путемъ и проектомъ постройки Семирѣченской жел. дор. (Арысь или Ташкентъ-Пишпекъ-Вѣрный). Проектъ этотъ выдвинулся въ связи съ вопросомъ о расширеніи въ Туркестанѣ посѣвовъ хлопка и доставленіи, взамѣнъ этого, къ намъ дешеваго хлѣба изъ Семирѣчья. Въ Петербургѣ была образована особая междувѣдомственная комиссія (предсѣдатель инж. Гіацинтовъ) для разсмотрѣнія проекта Семирѣч. жел. дор., Турк.-Сиб. пути и другихъ проектовъ. Въ виду особой важности для края вопроса о постройкѣ Туркест.-Сиб. жел. дор. въ Петербургѣ были командированы городскіе головы г. Ташкента и Вѣрнаго для отстаиванія названнаго проекта. Принципіально комиссія высказалась за этотъ проектъ. Нашлись уже и концессіонеры для осуществленія его.

К. Тимаевъ.

О земствѣ въ Ферганѣ.

КРАТКІЙ ПРОТОКОЛЪ.

Областного совѣщанія по вопросу объ организаціи мѣстнаго земскаго самоуправленія, состоявшагося 10 ноября 1909 г., подъ предсѣдательствомъ и. д. военнаго губернатора Ферганской области, генералъ-маіора А. И. Гиппіусъ.

На совѣщаніи присутствовали: За прокурора Ц.-Ларисс. окруж. суда тов. прок. Р. П. Цишкевичъ, областной врачъ А. А. Шеманскій, совѣтники областного правленія Е. Н. Тейхъ и В. А. Васильевъ, штабъ-офицеръ для ос. пор. при военномъ губернаторѣ П. Р. Крошковъ, завѣдывающій переселенческимъ дѣломъ въ Сыръ-Дарьинскомъ раіонѣ Н. Н. Шавровъ, комисаръ позем.-подати. комиссіи Ю. А. Шпелевъ.

Представители отъ Маргеланскаго уѣзда: Уѣздный начальникъ Е. М. Гоштовтъ, П. Н. Архангельскій, П. А. Казанскій, прис. пов. В. П. Ильницкій, канд. юрид. наукъ Г. В. Покровскій и Ассакинскій волост. управитель Рахматуллабаевъ;

Отъ Кокандскаго уѣзда: А. Г. Гавриловъ, И. А. Парадизовъ, А. С. Токаревъ и С. К. Мухамеджановъ.

Отъ Кокандскаго биржевого комитета: Старшина комитета Ф. М. Меленевскій и Л. Ф. Кистяковскій.

От Андижанскаго уѣзда: Уѣздный начальникъ Д. П. Краснослободскій, врачъ А. В. Мали, податной инспекторъ М. Р. Рухалисъ и П. Ф. Ревякъ.

От Наманганскаго уѣзда: Участковый врачъ П. К. Рутковскій.

Открывъ засѣданіе, г. предсѣдательствующій доложилъ собранію о цѣляхъ областного совѣщанія и указалъ, что задачею этого совѣщанія является первоначальное обсужденіе всѣхъ тѣхъ вопросовъ, которые касаются организаціи мѣстнаго земскаго самоуправленія въ Ферганской области на основныхъ началахъ положенія о земскихъ учрежденіяхъ 12 іюня 1890 г., съ выясненіемъ тѣхъ измѣненій и отступленій отъ этого закона, которыя вызываются особенностями Ферганской области, а также выработка программы, которой слѣдовало бы руководствоваться уѣзднымъ совѣщаніямъ по тѣмъ-же вопросамъ.

Затѣмъ областное совѣщаніе избрало изъ своей среды 3-хъ секретарей: г.г. Тейха, Ильницкаго и Рутковскаго.

Далѣе, по предложенію г. предсѣдательствующаго, были оглашены отношеніе канцеляріи главнаго начальника края отъ 2 іюня с. г. за № 8666 и приложенная къ нему выписка изъ журнала совѣта туркестанскаго генералъ губернатора отъ 16 марта с. г. за № 17.

По прочтеніи указаннаго матеріала и по обмѣнѣ мнѣніями, областное совѣщаніе пришло къ заключенію, что вопросъ о введеніи мѣстнаго земскаго самоуправленія въ Ферганской области примѣнительно къ началамъ положенія 1890 г. уже предрѣшенъ, и обсужденію совѣщаній подлежитъ лишь выясненіе тѣхъ измѣненій и отступленій отъ него, которыя вызываются мѣстными условіями.

Г. Кистяковскій, обращаясь къ основнымъ началамъ положенія 1890 г., указалъ, что мѣстныя условія вызываютъ необходимость расширенія компетенціи земства (2 ст.), пониженія имущественнаго ценза (15, 16, и 24 ст.) и, въ виду послѣдняго, введенія мелкой земской единицы.

Г. Рутковскій высказался, между прочимъ, за измѣненіе положенія 1890 г. въ смыслѣ усиленія состава земскихъ учрежденій представителями интеллигенціи и мѣстной администраціи.

Г. Ильницкій обратилъ вниманіе на то, что одно изъ основныхъ началъ положенія 1890 г., именно сословность земскихъ учрежденій, мѣстными условіями анулируется.

Г. Тейхъ высказалъ, что главная задача настоящаго засѣданія областного совѣщанія заключается въ томъ, чтобы установить, что именно является основными началами положенія 1890 г., т. к. это облегчитъ работу уѣздныхъ совѣщаній, внесетъ въ нее большую системность и облегчитъ сводку уѣздныхъ проектовъ для будущаго областного совѣщанія; затѣмъ, сообразно сказанно-

му нужно намѣтить опредѣленную программу вопросовъ, которые и предложить на обсужденіе уѣздныхъ совѣщаній; причемъ указалъ, что такими началами являются, напримѣръ, высокій имущественный цензъ, выборы по сословіямъ, (которые, по мѣстнымъ условіямъ, имѣютъ быть замѣнены выборами по народностямъ), и др.

Г. Цишкевичъ указалъ на то, что въ виду отсутствія сословныхъ учрежденій у всего мѣстнаго населенія сословные выборы въ области невозможны.

Г. Меленевскій полагаетъ, что основными началами, подлежащими обсужденію совѣщаній, такимъ образомъ, являются вопросы о сословности, цензѣ, куріяхъ, а также языкѣ.

Г. предсѣдательствующій поднялъ вопросъ, не должно ли быть поставлено условіемъ для земскихъ гласныхъ-туземцевъ знаніе русскаго языка.

Г. Кистяковскій указалъ, какъ на примѣръ, что въ Ташкентской городской думѣ отъ гласныхъ-туземцевъ знанія русскаго языка закономъ не требуется, и что практика не обнаружила какихъ-либо неудобствъ отъ этого.

Г. Архангельскій, соглашаясь, что сословность является однимъ изъ основныхъ началъ положенія 1890 г., замѣтилъ, что въ виду отсутствія въ краѣ сословной дворянской организаціи всѣ статьи этого закона, трактующія объ участіи въ земствѣ дворянства, можетъ быть станутъ примѣнимы, но лишь въ будущемъ, теперь же все туземное населеніе области по закону дѣлится лишь на сельскихъ и городскихъ обывателей.

Г. предсѣдательствующій обращаетъ вниманіе областного совѣщанія на 13, 14 и 15 ст. ст. положенія 1890 г.

Г. Покровскій по поводу 13 ст. положенія 1890 г., въ которой имѣется ссылка на 1 ст., высказалъ пожеланіе объ организаціи мелкой земской единицы, въ видѣ участковой или волостной, указывая на отсутствіе въ области волостныхъ правленій, являющихся въ Россіи необходимымъ дополненіемъ къ системѣ земскихъ учрежденій.

Г. Шпелевъ возразилъ, что организація мелкой земской единицы въ области невозможна за недостаткомъ людей, которые могли-бы проводить въ жизнь задачи земскаго самоуправленія, и даже нежелательна, такъ какъ въ составъ ея входили бы исключительно туземцы.

Г. Архангельскій указалъ, что зерно мелкой земской единицы въ области по закону существуетъ и теперь, а именно сходы сельскихъ обществъ, вѣдующіе вопросы податные, выборы для этихъ и др. нуждъ разныхъ должностныхъ лицъ и пр.

Г. Кистяковскій обратилъ вниманіе на то, что и теперь земскимъ хозяйствомъ волости въ сущности завѣдываетъ мѣстный волостной управитель, но единолично, и земское хозяйство воло-

сти идетъ, организація же мелкой земской единицы, какъ учрежденія коллегіальнаго и находящагося подъ постояннымъ и непосредственнымъ контролемъ мѣстнаго общества, наиболѣе заинтересованнаго въ надлежащемъ и добросовѣстномъ веденіи этого хозяйства, будетъ гарантировать, конечно, только лучшую постановку всего дѣла, облегчая задачи уѣздныхъ и губернскихъ земствъ, причемъ относительно территоріи мелкой земской единицы, г. Кистяковскій полагалъ-бы взять не волость, а административный участокъ.

Г. Гавриловъ, ссылаясь на примѣръ Европейской Россіи, гдѣ до сихъ поръ нѣтъ мелкой земской единицы, не видитъ въ ней надобности и для Ферганской области.

Г. Цишкевичъ полагаетъ, что та-же цѣль, которую имѣетъ въ виду организація мелкой земской единицы, можетъ быть достигнута и другими способами, какъ напримѣръ: отдѣльными для туземцевъ куріями, особымъ цензомъ, пропорціональностью выборовъ и т. п.

Г. Тейхъ высказывается за необходимость введенія въ области мелкой земской единицы въ виду слѣдующихъ крайне существенныхъ мѣстныхъ особенностей: 1) Ферганская область имѣющая 2 милліона населенія, дѣлится всего лишь на 5 уѣздовъ, причемъ, если откинуть мало населенный Ошскій уѣздъ, то на каждый изъ остальныхъ уѣздовъ приходится свыше 400,000 жителей, (тогда какъ, напримѣръ, въ губерніяхъ центральной Россіи почти не встрѣчается уѣздовъ съ населеніемъ даже въ 200,000 жителей), вслѣдствіе чего, при отсутствіи мелкой земской единицы, веденіе мѣстнаго земскаго хозяйства для областного и уѣздныхъ земствъ будетъ крайне затруднительно, такъ какъ мѣстные интересы и нужды были-бы представлены въ нихъ слишкомъ недостаточно; 2) все мѣстное хозяйство зиждется на искусственномъ орошеніи, поддержаніе, умучшеніе и развитіе котораго явится одной изъ важнѣйшихъ задачъ земства, каковую задачу, при дробности землевладѣнія и большомъ развитіи существующей уже и нынѣ оросительной сѣти, земство сможетъ выполнить только при наличности мелкой земской единицы.

Г. Парадизовъ, не возражая принципіально противъ организаціи мелкой земской единицы, обратилъ вниманіе, что ирригаціонныя системы не совпадаютъ съ существующимъ административнымъ дѣленіемъ уѣздовъ на участки.

Г. предсѣдательствующій замѣтилъ, что едва-ли цѣлесообразно создавать новое дѣленіе уѣзднаго земства на участковыя, когда уже существуетъ дѣленіе уѣздовъ въ хозяйственномъ отношеніи на волости, тѣмъ не менѣе находитъ нужнымъ предложить уѣзднымъ совѣщаніямъ высказаться, необходима-ли мелкая земская единица, какая именно—участковая или волостная—и возможно-ли связать ее съ ирри-

гаціонной системой.

Г. Рутковскій къ высказаннымъ мотивамъ добавилъ, что мелкая земская единица при указанныхъ мѣстныхъ особенностяхъ будетъ гарантировать полноту и всесторонность земскихъ работъ и облегчать работу уѣздныхъ земствъ по составленію мѣстныхъ смѣтъ.

Г. Гавриловъ выразилъ пожеланіе, чтобы къ предметамъ вѣдомства земства (2 ст. Полож. 1890 г.) было отнесено и завѣдываніе ирригаціей.

Г. Шавровъ заявилъ, что подымать въ данномъ случаѣ вопросъ объ ирригаціи совершенно излишне, такъ какъ предстоитъ изданіе воднаго закона.

Г. предсѣдательствующій пояснилъ, что совѣщанія по необходимости должны руководствоваться дѣйствующими законами и возможность изданія новыхъ законовъ, какъ напримѣръ воднаго, не должна отражаться на ходѣ работъ совѣщаній.

Г. Пльницкій полагалъ-бы необходимымъ обсудить вопросъ, подойдутъ-ли туземные евреи подъ третье примѣч. 16 ст. Положенія 1890 г.

Обсужденіе этого вопроса, какъ второстепеннаго, совѣщаніемъ отложено.

Г. Гавриловъ предлагаетъ расширить кругъ земскихъ гласныхъ представителями россійскихъ торговыхъ фирмъ, хотя бы онѣ и не имѣли въ области недвижимыхъ имуществъ.

Г. предсѣдательствующій полагаетъ необходимымъ предложить уѣзднымъ совѣщаніямъ разсмотрѣть каждую статью Положенія 1890 г. и по каждой изъ нихъ представить свои замѣчанія, подробно мотивируя желательныя измѣненія и дополненія этого закона.

Г. Тейхъ предложилъ поставить на обсужденіе уѣздныхъ совѣщаній порядокъ голосованія при рѣшеніи вопросовъ въ земскихъ собраніяхъ области: по куріямъ (по народностямъ) или просто по извѣстному большинству голосовъ.

Г. предсѣдательствующій признаетъ нужнымъ предложить уѣзднымъ совѣщаніямъ приводить подробныя цифровыя данныя о возможномъ числѣ выборщиковъ и гласныхъ въ земствѣ по народностямъ при предполагаемой ими той или иной системѣ организаціи земскихъ учрежденій въ уѣздѣ и выборовъ въ нихъ.

Такимъ образомъ, областное совѣщаніе, во исполненіе журнала совѣта Туркестанскаго генералъ-губернатора отъ 16 марта 1909 г. за № 17, находитъ необходимымъ, какъ программу для уѣздныхъ совѣщаній, предложить имъ слѣдующее:

Намѣтить проектъ положенія земскихъ учрежденій въ уѣздѣ, отправляясь отъ основныхъ началъ Положенія о земскихъ учрежденіяхъ 1890 г. и сообразуясь съ мѣстными особенностями, причемъ большее вниманіе удѣлить на разработку слѣдующихъ вопросовъ:

1) Учрежденіе мелкой земской единицы.

2) Организація земскихъ собраній.

и 3) Организація земскихъ управъ.

Затѣмъ областное совѣщаніе поручило секретарямъ подписать настоящій протоколъ, а копіи его, какъ заключающаго въ себѣ программу, разослать уѣзднымъ совѣщаніямъ.

Для предварительной разработки матеріаловъ, имѣющихъ поступить отъ уѣздныхъ совѣщаній, областное совѣщаніе избрало комиссію въ лицѣ г.г. Тейха, Крошкова, Ильницкаго и Покровскаго, предсѣдательствованіе въ которой принялъ на себя Его Превосходительство А. И. Гиппіусъ.

Подлинный за надлежащими подписями.

Кто заплатитъ новый хлопковый налогъ.

Въ приложеніи къ всеподданнѣйшему отчету за 1903 г. тогдашній военный губернаторъ Ферганской области г.-м. Арендаренко утверждалъ, что земледѣльческое населеніе управляемой имъ области платитъ въ казну не одну десятую отъ урожаевъ своихъ полей, а всего лишь $^1/_{62}$.

Провѣрить этотъ выводъ мы не могли, но тѣ данныя, какими мы располагали убѣждали насъ въ томъ, что дѣйствительно, обложеніе не достигаетъ установленной закономъ нормы. Это вообще, въ частности же приходится сказать, что населеніе не только двухъ сосѣднихъ волостей, но часто двухъ сосѣднихъ аульныхъ обществъ, владѣющихъ почти совершенно одинаковыми и смежными сельскохозяйственными угодіями обложены не только не одинаково, но обратно: одинъ аулъ съ единицы площади обрабатываемой земли платитъ на много больше своего сосѣда. Слѣдовательно, наблюдается съ одной стороны недостаточное обложеніе, —съ другой—его неуравненность. Мы здѣсь не станемъ распространяться о причинахъ этого явленія, скажемъ только, что правильное обложеніе могло бы явиться лишь результатомъ правильнаго кадастра, котораго не сдѣлано. При этомъ замѣтимъ, что тогда, какъ всѣ культуры были обложены, хотя бы въ принципѣ, одной десятой валоваго дохода, для хлопчатника сдѣлано исключеніе, ради поощренія этой новой, въ моментъ изданія инструкціи для податныхъ комиссаровъ культуры и это цѣнное растеніе обложено по преобладающему сухому посѣву, которымъ всюду оказалась, почему то, пшеница. И вотъ, если бы допустить, что дѣйствительно отъ пшеницы населеніе платитъ $^1/_{62}$ вмѣсто $^1/_{10}$, то какой долей выразилось бы обложеніе хлопчатника? Въ наши дни хлопчатникъ приноситъ доходъ, по крайней мѣрѣ, въ 5 разъ выше пшеницы, откуда оказалось бы, что обложенъ онъ лишь $^1/_{310}$ долей дохода. Отсюда ясно, — во-первыхъ, что г. Арендаренко ошибся, что выводы его значительно преувеличены, но также ясно и то, что хлопчатникъ, сдѣлавшійся самъ преобладающей культурой, если не по площади, то экономическому значенію, не долженъ

облагаться по пшеницѣ, такъ какъ это противорѣчитъ закону, а государству дастъ значительные убытки, оцѣниваемые милліонами рублей ежегодно.

Но поощреніе культуры хлопчатника за счетъ земской кассы и государственнаго казначейства на этомъ не оканчивалось.

Ради ея развитія и упроченія введена пошлина на американское волокно, которая, постепенно увеличиваясь, въ наши дни доведена до 4 р. золотомъ за пудъ американскаго товара (брутто, или что тоже, 4 р. 15 коп. нетто).

Подъ вліяніемъ этой пошлины, цѣна на американское сырье возросла почему и нашъ хлопководъ получилъ возможность продавать свой продуктъ значительнодороже чѣмъ это обусловливается расходами производства и другими, включая сюда даже дорогой почти ростовщическій (но, конечно, не хищническій) кредитъ, какъ явленіе у насъ, пока нормальное. Такимъ образомъ среднеазіатскій хлопководъ почему то до сего времени пользовался поощреніемъ съ двухъ сторонъ,—съ одной его охраняла мѣстная власть, облагавшая хлопокъ какъ пшеницу,—съ другой въ его же интересахъ установлена высокая пошлина на товаръ конкуррента. Послѣдняя, несомнѣнно, мало согласована съ интересами жителя оскудѣвшаго центра, отвыкшаго сѣять ленъ и коноплю и свою пестрядинную рубаху замѣнившаго легкой и красивой бумажной.

Съ повышеніемъ же цѣнъ на ситецъ вслѣдствіе вздорожанія пряжи русскій крестьянинъ принужденъ, нести свои трудовыя копейки за мануфактуру съ чувствительными для него приплатами. Но кромѣ этихъ двухъ заинтересованныхъ сторонъ— есьтеще и третья. Обложеніе 10 милл. пудовъ американскаго волокна пошлиной въ 4 р., госуд. казначейству дастъ 40 милл. р.,—но въ то же время, чтобы купить эти 10 мил. пудовъ должно изъ золотой своей наличности ежегодно выдѣлить втрое большую сумму. Это не въ интересахъ, конечно, государства, которое, обезпечивая свою золотую валюту, должно ревниво оберегать и свой запасъ золота, прибѣгая въ случаяхъ надобности даже къ займамъ его заграницей.

Выгодны ли для Россіи эти займы, мы много объ этомъ слышали въ послѣднее время, и изъ свѣдѣній сообщенныхъ прессой могли убѣдиться, что каждый изъ нихъ то же сопряженъ со значительными жертвами изъ кармана плательщиковъ податей. Отсюда естественно и стремленіе освободиться отъ займовъ для пополненія казначейства и отъ ввоза американскаго волокна опустошающаго золотую казну; у насъ въ Туркестанѣ стремленіе это реализуется орошеніемъ новыхъ площадей земли, въ чаяніи, что полученный на нихъ хлопокъ со временемъ покроетъ весь нашъ спросъ на этотъ товаръ. Ничего несбыточнаго въ этихъ надеждахъ нѣтъ. Закавказье и Туркестанъ, дѣйствительно, обладаютъ почти 2 мил. дес. годной для орошенія въ хлопковомъ климатическомъ поясѣ, и если что либо

тормозить дѣло ихъ оживленія, такъ только наша бѣдность, — отсутствіе въ казначействѣ свободныхъ денежныхъ средствъ.

Въ такихъ обстоятельствахъ не вправѣ ли государство вспомнить, что у него на окраинѣ есть населеніе, которое какъ и воспользовавшееся и еще пользующееся всѣми мѣрами поощренія могло бы и должно бы прійти съ помощью въ этомъ дѣлѣ, уступивъ въ казну только незначительную часть, не болѣе 12 проц., того дохода, который является результатомъ одной только пошлины на конкуррирующее сырье. И не съ потребителя, а именно съ хлопковода-плантатора и проектируетъ правительство получить необходимый для дальнѣйшаго роста того же дѣла капиталъ.

Что это намѣреніе и здѣсь на мѣстѣ въ Туркестанѣ понято именно такъ, о томъ писали въ „Туркестанскомъ Курьерѣ" изъ Ферганы, сообщая, что новый налогъ, который при посредствѣ фирмъ скупающихъ сырье и желѣзнодорожныхъ кассъ будетъ взысканъ съ населенія, уменьшитъ покупательныя его способности и... прощай хозяйскіе горшки; хлопководы перестанутъ покупать мануфактуру.

Такъ же понимало вопросъ объ обложеніи и совѣщаніе 8-го августа прошл. года, искавшее въ этомъ же обложеніи средствъ на борьбу съ саранчевыми,—о чемъ свидѣтельствуетъ протоколъ совѣщанія, въ которомъ въ совершенно категорической формѣ выражено, что пятачки, (а теперь полтинники) внесетъ черезъ кассы фирмъ само населеніе сѣющее хлопчатникъ. Оно и понятно, нѣтъ такой повинности и такого расхода котораго бы торговецъ посредствомъ простой коммерческой калькуляціи не сумѣлъ-бы переложить на производителя—продавца.

Теперь г.г. хлопкопромышленники будутъ платить за пудъ хлопка сырца 1-го сорта на 15 коп. дешевле при покупкѣ. Вотъ и все несложное рѣшеніе вопроса.

Иное дѣло, конечно, тема: „цѣль оправдываетъ средство".

На эту тему можно говорить сколько угодно. Здѣсь найдется мѣсто и лирическому пафосу и холодному силлогизму, продукту неумолимой логики. Конечно, въ дѣлахъ коммерческой выгоды, въ разсужденіяхъ о пользѣ Россіи и Туркестана, мы больше склонны прибѣгать къ разуму, а потому находя, что общеимперская выгода, заключающаяся въ развитіи у насъ отечественнаго хлопководства, какъ цѣль вполнѣ совпадаетъ и съ интересами населенія Туркестана, которое, вносяя въ казну новый налогъ должно получить за счетъ хлопковаго налога капиталъ совершенно спеціальнаго назначенія, находимъ, что хлопковый налогъ представляетъ собой пока единственное средство провести въ жизнь всю ту массу мѣропріятій, въ осуществленіи которыхъ заинтересованы прежде всего сами, такъ усиленно поощряемые, хлопководы. И если за счетъ хлопковаго фонда наши плантаторы, получатъ: или бы сел.-хоз. школы оп. поля

улучшенныя сѣмяна хлопчатника, склады с.-х. машинъ и удобреній благоустройства уже существующихъ системъ орошенія дороги, мелкій и дешевый сельско-хоз. кредитъ и, наконецъ, цѣлыя новыя оросительныя системы и милліоны десятинъ новой орошенной земли, къ которой приложатъ свой трудъ будущія наши поколѣнія, то казалось бы и противъ избраннаго средства возражать не приходилось-бы. Существуютъ, однако, и здѣсь какъ вездѣ несогласные, которымъ кажется, недопустимымъ чтобы за денежн. взносы А. орошали землю которой воспользуется Б. съ точки зрѣнія интересовъ каждаго плательщика въ отдѣльности это быть можетъ и такъ, но съ точки зрѣнія общихъ интересовъ всего населенія это вовсе не вѣрно. Въ данный, напримѣръ, моментъ почти четверть населенія Ферганы представляетъ собой безземельный пролетаріатъ—и для нихъ то особенно важно предпринимаемое орошеніе новыхъ земель.

С. Понятовскій.

Переселенческія невзгоды въ Туркестанѣ.

«Баринъ и мужикъ» давно уже, испоконъ-вѣковъ, привыкли у насъ въ Россіи считаться съ перемѣнчивыми взглядами начальства.

Представители бюрократіи, какъ-бы нарочно, вселяли во всѣхъ убѣжденіе, что вся сила не въ законѣ, не въ очевидной пользѣ для дѣла, не въ устойчивости извѣстнаго положенія, а нѣчто въ иномъ...

Характерной иллюстраціей подобнаго положенія вещей является краткая исторія переселенцевъ-арендаторовъ въ Голодной Степи, въ предѣлахъ Ходжентскаго уѣзда, Самарк. обл., разсказанная корреспондентомъ въ „С.-Пет. Вѣд." (№ 277 за 1909 г.).

Сущность дѣла состоитъ въ слѣдующемъ.

Бывшій Туркестанскій генералъ-губерн. генералъ адъютантъ П. И. Мищенко, разрѣшилъ отдать переселенцамъ и отставнымъ нижнимъ чинамъ въ аренду въ Голодной Степи, въ раіонѣ орошенія изъ канала Импер. Николая 1-го, до полутора тысячъ десятинъ земли на 3 года, съ платою по 4 р. 40 к. съ десятины. Это было въ 1908 г.

Явилась масса желающихъ, которымъ, въ числѣ 86 лицъ, было нарѣзано по 10 десятинъ. Эти переселенцы, уплативъ аренду за первую половину сельскохоз. года (1908—1909 г.г.), обсадили свои участки деревьями, окопали канавами и къ осени 1909 г возвели 56 жилыхъ построекъ. Однимъ словомъ устраивались домовито, надѣясь, что отведенные имъ участки останутся за ними навсегда, какъ за переселенцами.

Съ уплатой аренды за вторую половину года произошла заминка и вотъ по какой причинѣ.

Сдѣланные посѣвы уничтожила весною 1909 г. саранча. Тогда переселенцы посѣяли яровые. Но и тутъ вышла незадача. Вслѣдствіе медленности работъ по устройству «обвода», произошелъ подмывъ р. Сыръ-Дарьею канала Имп. Николая I-го, и переселенцы „почти на цѣлый мѣсяцъ остались безъ воды и вслѣдствіе безводія посѣвы ихъ на половину, а мѣстами и больше посохли".

Таково увѣреніе корреспондента „С.-Пет. Вѣд.".

Я нарочно взялъ эти слова въ ковычки, потому что лицо, завѣдывавшее въ то время названнымъ каналомъ, опровергало медленность порученныхъ ему работъ и убытки отъ безводія.

Конечно, при такихъ тяжелыхъ условіяхъ, когда озимые посѣвы были съѣдены саранчей, а яровые посохли, арендаторы-переселенцы не могли быть исправными въ платежѣ аренды. Часть переселенцевъ разсѣялась по городамъ нашего края, часть вернулась въ Россію, а часть бросила участки на произволъ судьбы.

Для оставшихся на землѣ переселенцевъ управленіе земл. и госуд. имущ. устроило отсрочку взноса арендной платы до 1 янв. текущаго 1910 года.

Въ настоящее время эти переселенцы-арендаторы находятся въ неустойчивомъ положеніи: весною ожидается снова массовое отрожденіе саранчи, а вмѣстѣ съ тѣмъ нѣтъ никакой гарантіи, что каналъ Имп. Николая I-го снова не будетъ размытъ...

„Нѣсколько разъ они (переселенцы-арендаторы), пишетъ корреспондентъ „С.-Пет. Вѣд.", просили генералъ-губернатора и всѣхъ другихъ чиновниковъ сдѣлать ихъ настоящими переселенцами: отвести имъ арендованную землю въ собственность,—но на всѣ эти ходатайства получали одинъ отказъ. Эти отказы объясняютъ тѣмъ, что въ *высшихъ сферахъ гор. С.-Петербурга измѣнилось отношеніе къ переселенческому вопросу въ Голодной Степи*".

Имѣю возможность къ этому напомнить, что помянутые переселенцы, отчаявшись въ закрѣпленіи за ними участковъ по каналу Имп. Николая I-го, чрезъ своихъ ходоковъ просили въ Ташкентѣ власти устроить ихъ на земляхъ близъ озера Окманъ-куль, въ 8 верст. отъ ст. «Сыръ-Дарья» Средне-Аз. жел. дор. Къ такимъ желающимъ присоединилась 91 семья изъ сел. Спасскаго, что около ст. «Голодная Степь» той-же дороги.

Наше вниманіе останавливаетъ то обстоятельство, что тяжелое положеніе переселенцевъ-арендаторовъ, по словамъ корреспондента «С.-Пет. Вѣд.», объясняется измѣненіемъ во взглядахъ высшей петербургской бюрократіи на переселенческій вопросъ въ Голодной Степи.

Создавшееся положеніе «С.-Пет. Вѣд.» называютъ трагикомическимъ...

Не знаю, конечно, какъ на это дѣ-

ло смотритъ начальникъ главн. переселенческаго управленія въ Петербургѣ г. Глинка и завѣдывающій переселенческимъ дѣломъ въ Туркестанѣ Н. Н Шавровъ, но полагаю, что комичнаго въ настоящемъ случаѣ очень и очень мало, а также, что они обязаны были всѣми зависящими отъ нихъ средствами вывести переселенцевъ-арендаторовъ изъ трагическаго положенія.

Какія мѣры названными начальниками приняты для устройства упомянутыхъ переселенцевъ, мы, конечно, узнаемъ изъ ихъ объясненій въ Государств. Думѣ, гдѣ, несомнѣнно, будетъ сдѣланъ запросъ по настоящему дѣлу.

На-дняхъ мнѣ доставлены новыя свѣдѣнія относительно переселенцевъ-арендаторовъ въ Голодной Степи, но объ этомъ въ слѣдующій разъ.

К. Тимаевъ.

Съ засѣданій и по поводу засѣданій о земствѣ.

Засѣданія продолжаются и усердно посѣщаются. Комиссія подъ предсѣдательствомъ генерала Глушановскаго работаетъ около 9 ти час. въ сутки. И все больше и больше выясняется, какой невѣроятной трудности задача возложена на болѣе чѣмъ скромныя силы участниковъ засѣданія. Справятся ли они хоть въ малой мѣрѣ съ этой задачей? Поймутъ ли они, какую великую отвѣтственность передъ судомъ исторіи и потомства берутъ на себя въ качествѣ піонеровъ-законодателей наступающей „эпохи великихъ реформъ" въ Туркестанѣ. Пока работы засѣданій даютъ не много утѣшительнаго. Пока участники ихъ успѣли только познакомиться поверхностно и въ самыхъ общихъ чертахъ съ положеніемъ о земствѣ 1890 года и съ тѣми матеріалами, которые оказались у нѣкоторыхъ членовъ засѣданій. Но вѣдь положеніе о нынѣшнемъ земствѣ во внутренней Россіи не можетъ быть принято у насъ, какъ это признано давно рѣшительно всѣми, безъ глубокихъ и серьезныхъ измѣненій,—*и не только въ виду бытовыхъ и административныхъ особенностей края.* Слѣдовательно, прежде всего необходимо ясно и умѣло выяснить, руководствуясь вполнѣ опредѣленными соціально-экономическими и политико-юридическими критеріями, всѣ особенности жизни края, къ которымъ долженъ быть приспособленъ вводимый принципъ самоуправленія, уже заложенный здѣсь въ своихъ зачаткахъ еще великимъ устроителемъ края покойнымъ ген. Кауфманомъ.

Въ этомъ отношеніи могли бы быть полезны тѣ матеріалы о реформахъ въ краѣ, съ которыми знакомилась и знакомится комиссія. Къ сожалѣнію, всѣ оказавшіяся въ распоряженіи комиссіи печатныя и писанныя данныя не даютъ того, что надо, и неудовлетворительны во многихъ отношеніяхъ.

На засѣданіи 5 января былъ прочитанъ вторично длинный, но

очень поверхностно компилятивный докладъ администратора г. К., а затѣмъ юристъ по спеціальности г. Б. прочелъ и познакомилъ въ общихъ чертахъ съ большой его работой, помѣщенной въ 1909 г. въ „Турк. Вѣд.". Оба эти доклада породили цѣлую кучу горячихъ безтолковыхъ, безсвязныхъ дебатовъ, въ которыхъ противники не понимали другъ друга и даже, видимо, не уясняли себѣ своихъ собственныхъ точекъ зрѣнія. Объ общей почвѣ, на которой можно было бы объединить невольныя противорѣчія, нечего было и думать.

Докладъ г. К. можно назвать добросовѣстнымъ разсужденіемъ на тему: „Взглядъ и нѣчто". Здѣсь были наивно смѣшаны (извѣстно, что смѣшеніе это бываетъ и очень не наивное) въ кучу самые разнообразные принципы и начала, а съ другой стороны, авторъ пытался однимъ взмахомъ пера подогнать несовершенныя нормы положенія 1890 года къ безконечно сложному и своеобразному строю жизни Туркестана. Можно только одобрять планъ, положенный авторомъ въ основу его работы...

Сообщеніе г. Б.—гораздо болѣе серьезнаго характера. Въ немъ сказался юристъ, прошедшій школу строгихъ научныхъ дисциплинъ, и потому въ докладѣ только изрѣдка попадались мелкія логическія и теоретическія противорѣчія; въ немъ не было и грубаго смѣшенія несовмѣстимаго. Но за то этотъ докладъ, достаточно стройный въ литературно-научномъ отношеніи, явно носилъ на себѣ слѣды кабинетнаго и въ значительной степени легковѣснаго—въ вопросѣ столь ужасающей сложности—творчества, пытавшагося ни больше, ни меньше, какъ нормировать чуть не всю соціальную жизнь населенія и реформировать весь административный механизмъ. Вмѣсто картины широкихъ и эластичныхъ формулъ закона и права, въ которыхъ легко и свободно умѣщалось бы все разнообразіе жизненныхъ укладовъ, получились сухія схемы, которыя насильственно и произвольно упрощали пеструю реальность быта и изъ которыхъ со всѣхъ сторонъ высовывались дискредитировавшія примѣнимость этихъ схемъ противорѣчія практики жизни, столь своеобразной, какъ жизнь нашего туземца.

Какъ бы то ни было оба доклада представляютъ извѣстный интересъ и будутъ, вѣроятно, съ той или другой точки зрѣнія интересовать будущихъ работниковъ. Пока же доклады, какъ сказано, вызвали только бурю споровъ обо всемъ и не о чемъ. Но въ этой безплодности преній авторы докладовъ виноваты въ самой не значительной степени. Надо сознаться, что сами члены засѣданій никакъ не умѣютъ до сихъ поръ подняться на высоту созданнаго для нихъ положенія. Въ своихъ работахъ они мечутся изъ стороны въ сторону, отъ основныхъ принципіальныхъ вопросовъ незамѣтно переходятъ къ неважнымъ деталямъ; не умѣютъ оріентироваться въ поставленныхъ передъ ними цѣляхъ работы, пута-

ются, какъ въ лѣсу, въ ворохѣ высказываемыхъ мыслей, пожеланій, заявленій. Казалось бы, что вмѣсто немножко поспѣшной критики своеобразно-аристократического самоуправленія болѣе чѣмъ трезвыхъ британцевъ Индіи, которыхъ смѣлые ораторы готовы ставить на одну доску съ современными клерикалами Испаніи; вмѣсто стремленія объять необъятное, слѣдовало бы попробовать сдѣлать, что по силамъ и отвѣтить на цѣлый рядъ такихъ вопросовъ, которые понятны и близки каждому администратору. Надо только не забывать, что вопросъ о земствѣ выдвинутъ не теоретическими пожеланіями либеральныхъ публицистовъ или благожелательныхъ администраторовъ, а самой жизнью, ибо современная администрація края физически не въ состояніи удовлетворять большинства потребностей усложняющейся, развивающейся съ каждымъ годомъ жизни. Земство должно не упразднить весь нынѣшній административный механизмъ,—хотя серьезныя реформы въ немъ необходимы,—механизмъ, оказавшійся и передъ судомъ исторіи, и передъ строгими глазами ревизоровъ графа Палена (припоминаю лично слышанныя мною слова графа), значительно выше всѣхъ порсформенныхъ бюрократическихъ институтовъ внутренней Россіи *); земство призвано облегчить и улучшить культурно-политическую работу администраціи. Надо, кромѣ того, еще помнить, что вопросъ чрезвычайно осложняется, ибо приходится законодательствовать и творить новыя формы жизни въ странѣ, гдѣ 90 проц. населенія мусульмане, а частью даже „язычники".

Исторія ставитъ передъ командующими классами края одну изъ величайшихъ и труднѣйшихъ проблемъ.

Но будемъ утѣшаться, что англичане, турки, японцы уже начали разрѣшать аналогичныя задачи и разумно положили главнымъ содержаніемъ своего культурно-политическаго творчества начала самодѣятельности населенія, административной децентрализаціи, широкого просвѣщенія и строгой законности. Z.

*) Не будемъ серьезно считаться съ явно предвзятыми отзывами скоропалительныхъ публицистовъ, спеціально «изучившихъ» Туркестанъ въ теченіе недѣльнаго пребыванія въ вагонѣ Ташкентской ж. д.

Судъ присяжныхъ въ Туркестанѣ.

Въ настоящее время въ Ташкентѣ и въ другихъ областныхъ городахъ нашего края обсуждается вопросъ о земской реформѣ.

Вопросъ этотъ возникъ подъ извѣстнымъ вліяніемъ формулы перехода Государственной Думы къ очереднымъ дѣламъ, въ которой было указано, что веденіе земскаго хозяйства въ Туркестанѣ нуждается въ реформѣ.

Сейчасъ еще трудно предугадать, въ какомъ видѣ и съ какими измѣненіями,

примѣнительно къ мѣстнымъ условіямъ, будетъ введено у насъ земское положеніе, но, казалось бы, что настоящій моментъ необходимо признать самымъ удобнымъ, чтобы довести до желательнаго конца введенную въ Туркестанѣ въ 1899 г. судебную реформу...

По всѣмъ признакамъ наступило время, когда можно заявить: «пора даровать Туркестану судъ присяжныхъ!»

Сибирь добивалась суда присяжныхъ въ теченіи 50 лѣтъ и только въ октябрѣ минувшаго 1909 г. получила «судъ милостивый, правый и скорый». Съ глубокимъ чувствомъ благодарности и восторженности приняла Зап. Сибирь этотъ судъ. Этотъ свѣтлый праздникъ коснулся не всей Сибири, а только Тобольской и Томской губ. и Акмолинской и Семипалатинской обл.

У насъ-же въ Туркестанѣ суда присяжныхъ совсѣмъ нѣтъ.

Въ третью сессію Госуд. Думы 3-го созыва былъ законченъ разсмотрѣніемъ законопроектъ о мѣстномъ судѣ. Въ силу этого законопроекта населеніе Россіи оказывается раздѣленнымъ по правамъ на три разряда: 46 земскихъ губерній будутъ обладать выборнымъ судомъ, 9 западн. губерній и губерніи Астрах., Ставропольск. и Оренбургская —мировымъ судомъ по назначенію, а Сибирь и Туркестанъ—судомъ крестьянскихъ начальниковъ ..

О томъ, что въ нашемъ Туркестанѣ существуютъ крестьянскіе начальники, я узналъ изъ газеты „Утро Россіи", которая впрочемъ, совершенно справедливо замѣтила, что съ каждымъ новымъ законопроектомъ, улучшающимъ правовыя нормы населенія Европ. Россіи, разница между Сибирью, а также Туркест. краемъ и остальной страной становится все рѣзче и рѣзче... Такой важный законопроектъ, какъ о мѣстномъ судѣ, совершенно не упоминаетъ Сибири и Туркестана.

Въ виду этого, группа сибирскихъ депутатовъ въ Госуд. Думѣ сдѣлала, чрезъ В. А. Караулова, слѣдующее заявленіе: «При всѣхъ реформахъ интересы Сибири игнорируются. Реформа мѣстнаго суда въ Сибири еще болѣе неотложна, чѣмъ въ Европ. Россіи. Между тѣмъ судебная реформа на Сибирь не распространяется. Въ виду этого, Дума должна указать на необходимость приступить къ выработкѣ законопроекта о реформѣ мѣстнаго суда въ Сибири».

Закономъ 3 іюня 1907 г. Турк. край лишенъ представительства въ Гос. Думу, а потому въ Думѣ некому было сдѣлать подобное заявленіе и вообще отстаивать въ данномъ случаѣ интересы обширной и богатой окраины. Если-бы въ Госуд. Думѣ были депутаты отъ городского и сельскаго населенія Туркест. края, то они, несомнѣнно, сдѣлали-бы такое-же заявленіе, какъ и сибирскіе депутаты.

Дѣйствительно, должно признать анахронизмомъ, что наши окружные суды функціонируютъ до сего времени безъ присяжныхъ засѣдателей.

Раньше, когда населеніе туркест. городовъ состояло лишь изъ военнослужащихъ и чиновниковъ, существованіе окружн. судовъ безъ присяжныхъ засѣдателей было еще допустимо. Но теперь въ городскомъ населеніи превалируетъ совершенно частный элементъ. Города наши разрослись въ обширные торгово-промышленные пункты, съ прочно осѣвшимъ кореннымъ европейскимъ населеніемъ. Лишать это населеніе права пользоваться, наравнѣ съ населеніемъ Европ. Россіи, окружными судами въ полномъ объемѣ, т. е. съ присяжными засѣдателями, было-бы несправедливо.

Если признано необходимымъ, хотя-бы и подъ вліяніемъ постановленія Госуд. Думы, приступить къ обсужденію вопроса о введеніи въ Туркестанѣ земствъ, то безошибочно можно сказать, что Туркестанъ дозрѣлъ до введенія суда присяжныхъ.

Эта настоятельная для края судебная реформа не такъ сложна, какъ земская реформа, и не можетъ потребовать на свое осуществленіе много времени и не вызываетъ вмѣстѣ съ тѣмъ никакихъ политическихъ опасеній.

Одновременно съ обсужденіемъ вопроса о введеніи въ Туркестанѣ суда присяжныхъ желательно разсмотрѣть и устранить существующее въ нашихъ судебныхъ учрежденіяхъ нарушеніе единства кассаціонной инстанціи.

По дѣйствующему законоположенію, разсмотрѣніе просьбъ объ отмѣнѣ окончательныхъ рѣшеній мировыхъ судей въ Туркест. краѣ предоставлено мѣстнымъ окружн. судамъ, а разсмотрѣніе просьбъ объ отмѣнѣ рѣшеній окружн. судовъ, которые замѣняютъ у насъ мировые съѣзды, возложено на ташкент. судебн. палату. Это обстоятельство является принципіальнымъ отступленіемъ отъ начала единства кассаціонной инстанціи, и слѣдуетъ разсмотрѣніе упомянутыхъ жалобъ поручить по принадлежности Сенату. Дозволить принесеніе жалобъ на окончательныя рѣшенія въ суд. палаты, а не въ Сенатъ, значило-бы, по мнѣнію составителей судебныхъ уставовъ, допустить столько-же толкованій закона, сколько существуетъ палатъ!

Населеніе Туркестана ждетъ суда присяжныхъ, суда «милостиваго, скораго и праваго»...

К. Тимаевъ.

Возрастаніе интереса къ Туркестанскому краю.

Туркестанъ сталъ жить широкою торгово-промышленною жизнью... Въ виду этого, интересъ къ нему возрастаетъ съ каждымъ годомъ... Туркестанъ сталъ неузнаваемъ, сбросивъ съ себя вѣковые оковы, въ которые онъ заключенъ былъ много столѣтій азіатскимъ владычест-

вомъ...

Громадный толчекъ къ возбужденію интереса ко всѣмъ отраслямъ хозяйства и жизни Туркест. края дала бывшая въ Ташкентѣ въ сент.—окт. минувшаго 1909 г. юбилейная сельскохоз., промышленная, художеств. и научная выставка. Она дала богатый матеріалъ для изученія современнаго положенія нашей обширной окраины.

Въ столичныхъ и другихъ газетахъ появились за послѣднее время многочисленныя сообщенія о Туркестанѣ. Въ научныхъ обществахъ, общественныхъ организаціяхъ и въ правительственныхъ комиссіяхъ дѣлаются доклады о Туркестанѣ. О Туркестанѣ пишутся книги. Изъ туркестанскихъ газетъ, главнымъ образомъ ташкентскихъ, дѣлаются перепечатки. Однимъ словомъ, интересъ къ Туркестану охватилъ широкіе круги общества.

Раньше Туркест. краемъ занимались лишь изслѣдователи, люди науки. Теперь наступила очередь изслѣдованію Туркестана въ торгово-промышленномъ отношеніи. Ташкентъ и другіе города нашего края притягиваютъ вниманіе представителей торговли и промышленности; разнаго рода комми-вояжеры усердно посѣщаютъ насъ, даже заграничныя фирмы стремятся завязать сношенія съ Средней-Азіей.

Въ качествѣ примѣра того, какъ столичныя газеты интересуются Туркестаномъ, укажу, что въ № 293 „Торг.-Пр. Газ". (31 дек. 1909 г.) напечатана корреспонденція А. К. изъ Ходжента. „Орошеніе казен. земель на частныя средства". Въ слѣдующемъ номерѣ той-же „Тор.-Пр. Газ." (1 янв. 1910 г. № 1) Туркестану посвящены двѣ статьи: С. Л. „Переселенческое дѣло въ раіонѣ проектируемыхъ въ Сибири и Туркестанѣ жел. дорогъ" и корреспонденція изъ Намангана Л. І. „Коканд-Наманганская ж. д."

Въ послѣдней корреспонденціи сообщается о направленіи жел. дороги, о цѣли и значеніи ея, о пользѣ, которую она можетъ принести, особенно увеличеніемъ площади посѣва хлопка и развитіемъ горнаго дѣла.

Что касается докладовъ о русскихъ владѣніяхъ въ Ср. Азіи, то никогда не было такого обилія ихъ, какъ за послѣднее время.

Недавно мы отмѣтили докладъ кн. В. И Массальскаго, въ которомъ затронуты были нужды хлопководства, ирригаціи, агрономической помощи населенію и т. д. 3 дек. минувш. 1909 г. въ первомъ отдѣленіи Имп. вольно-экономическ. общества Н. П. Верховскаго „О хлопководствѣ въ Туркестанѣ". Чистый доходъ съ десятины хлопка докладчикъ опредѣляетъ въ 75 р. *Львиная доля попадаетъ въ руки посредниковъ скупщиковъ, держащихъ въ кабалѣ производителя.* („Нов. Вр." 5 дек. 1909 г. № 12118). Въ числѣ мѣръ, направленныхъ къ подъему хлопководства, г. Верховскій указываетъ: изданіе законовъ о пользованіи водою, основанныхъ на мѣстныхъ обычаяхъ, постановку мелкаго креда и мелліораціоннаго кредита, учрежденіе казен.

опытныхъ станцій съ инструкторами, усиленіе провозной способности Ташкентской ж. д. и увеличеніе капитала казен. склада землед. машинъ и орудій. Орошеніе новыхъ земель докладчикъ предпочитаетъ произвести при помощи государства.

17 дек. 1909 г. Н. П. Верховскимъ былъ сдѣланъ въ Имп. россійскомъ обществѣ плодоводства докладъ „Плодоводство въ Туркестанѣ". Въ докладѣ сообщены: историческій очеркъ туркест. садоводства, почва и климатъ, скорость роста деревьевъ, сравненіе отправки крымскихъ плодовъ съ туркестанскими, виноградъ и винодѣліе, консервированіе плодовъ и винограда, приготовленіе фруктовъ и винограда къ отправкѣ по жел. дорогѣ, цифровыя данныя о перевозкѣ фруктовъ и винограда по Ташк. жел. дор., о фруктовыхъ вагонахъ, о рынкахъ сбыта фруктовъ и фруктовой биржѣ. Въ послѣдней главѣ доклада указаны нужды плодоводства и мѣропріятія для ихъ удовлетворенія со стороны желѣзныхъ дорогъ и самихъ плодоводовъ.

Въ заключеніе кличъ Н. П. Верховскаго, обращенный къ садоводамъ: *„Садоводы Туркестана соединяйтесь! Образуйте союзъ Туркестанскихъ плодоводовъ!"*

Подобный лозунгъ былъ провозглашенъ въ 1907 г. Н. П. Слюсаревымъ въ журналѣ „Туркест. сельск. хоз." До сего времени однако садоводы не объединились, если не считать особаго отдѣла плодоводства при Туркест. общ. сельск. хоз.

Однимъ изъ послѣднихъ докладовъ въ Петербургѣ о Туркестанѣ былъ докладъ ташк. городского головы Н. Г. Меллицкаго въ междувѣдомственной комиссіи инж. Гіацинтова и касался сооруженія Семирѣченской жел. дор. Этотъ докладъ изобилуетъ цифровыми данными о грузообороте между Туркестаномъ и Семирѣчьемъ.

Пишутся о Туркест. краѣ и книги.

Секретаремъ Петерб. хлопкового комитета Н. И. Малаховскимъ составлена и издана книга „Производительныя силы Туркестана". Пока вышелъ выпускъ 1-ый. Трудъ г. Малаховскаго вполнѣ является научнымъ изслѣдованіемъ экономической жизни Туркест. края. Съ послѣдующими выпусками авторъ дастъ полную картину развитія производительныхъ силъ нашей богатой окраины.

Книга-брошюра „Рыбопромышленность Аральскаго бассейна" принадлежитъ перу неутомимаго Н. П. Верховскаго, бывшаго непремѣнн. члена совѣта при управленіи Ташк. жел. дор. отъ министерства пут. сообщ. Къ этой книгѣ я вернусь особо.

Вышедшій недавно въ свѣтъ „Адресъ - справочникъ Туркест. края", составленный секретаремъ С.-Дар. обл. статист. комитета, несомнѣнно, долженъ быть причисленъ къ книгамъ, имѣющимъ цѣлью ознакомленіе съ Туркестаномъ. Статьи этого справочника: „Туркест. край" и автора А. Г. „Нѣсколько мыслей о томъ, выгоденъ-ли для Россіи Турке-

станъ" являются цѣнными вкладами въ сокровищницу по изученію нашего края.

Журналъ „Средняя Азія", номеръ 1-ый котораго долженъ выйти на этихъ дняхъ, также долженъ быть причисленнымъ къ книгамъ, интересъ къ которымъ съ каждымъ днемъ возрастаетъ со стороны мѣстнаго общества и со стороны Европ. Россіи.

Въ заключеніе необходимо отмѣтить, что въ самомъ Туркестанѣ въ настоящее время происходитъ серьезная созидательная работа. Во первыхъ, по иниціативѣ и при личномъ участіи главнаго начальника Туркест. края А. В. Самсонова предпринято научное и статистическое обслѣдованіе Туркестана. Во вторыхъ, обсуждается въ созванныхъ совѣщаніяхъ вопросъ о введеніи въ Туркестанѣ земскихъ учрежденій. Въ третьихъ, гдѣ-то въ Петербургѣ членами бывшей у насъ сенаторской ревизіи составляются доклады о разнаго рода реформахъ въ Туркестанѣ, при чемъ во главу этого дѣла положена, по всей вѣроятности, мысль сенатора гр. Палена: „въ Туркестанѣ нужно срыть все до основанія, а потомъ вводить реформы!"

Мнѣ много разъ приходилось слышать тирады скептиковъ: „ну, что вашъ Туркестанъ! хлопокъ, хлопокъ и хлопокъ, больше ничего! никакого развитія не вижу... а ваша юбилейная выставка! Это смѣхъ только... видали мы выставки, тѣ получше"! и т. д. въ такомъ-же духѣ.

Скептицизмъ хорошъ, но въ мѣру. Когда-же онъ идетъ врозрѣзъ съ очевидными фактами, которые мною приведены вкратцѣ въ настоящей статьѣ, то онъ уже становится легкомысленной бравадой.

Ж. Тимаевъ.

Изъ засѣданій о земствѣ.

Послѣ праздничнаго перерыва 7-го января работа засѣданій возобновилась. На утреннемъ засѣданіи послѣ незначительныхъ переговоровъ и преній, комиссія прямо перешла къ сущности намѣченной для нея задачи, и вполнѣ резонно перенесла свою работу на единственно правильную почву,—составленія программы для уѣздныхъ совѣщаній. Если и эта задача требуетъ большого умѣнья разбираться въ общихъ началахъ административнаго права и политики, то во всякомъ случаѣ не въ такой степени, какъ тѣ многосложныя и глубокія темы, которыя поднимались безсистемно и безпринципно на предыдущихъ засѣданіяхъ, во время ознакомленія съ положеніемъ 1890 года.

Тогда смѣло смѣшивались самыя принципіально противоположныя вещи. Теперь работа сразу была введена въ болѣе узкія рамки вопросовъ, возбуждаемыхъ предполагаемымъ приспособленіемъ земскаго положенія къ особенностямъ края; и многолѣтній административный опытъ членовъ засѣданія давалъ имъ возможность выдвинуть очень много та

кого, что продиктовано было окружающей ихъ практикой повседневной жизни уѣздовъ и волостей. Правда, еще Наполеонъ сказалъ по поводу успѣховъ Евгенія Савойскаго, что съ однимъ опытомъ, хотя-бы и весьма почтеннымъ, съ одной практикой далеко не уѣдешь. И замѣчаніе это снова подтвердилось на засѣданіи 7-го. Оказалось, что даже возможна болѣе узкая, практическая постановка обсужденія программы требовала то и дѣло возвращенія къ самымъ общимъ принципамъ, вплоть до ссылки на знаменитый англійскій „Актъ о правахъ" 1679 года. Самая практическая постановка вопросовъ все таки неизбѣжно приводила къ необходимости прежде всего выяснить, что такое централизація и децентрализація власти; требовала строгаго разграниченія между властью *твердой и сильной*, потому что она *закономѣрна*, и властью дискреціонной, носящей въ самой себѣ зародышъ произвола и его слѣдствія—анархіи.

Во всѣхъ этихъ столь-же тонкихъ, какъ и сложныхъ вопросахъ всѣ безъ исключенія члены засѣданія не могли разобраться и столковаться. Получались такіе курьезы, когда ораторъ, начавши за здравіе какого-нибудь опредѣленнаго важнаго жизненнаго принципа, неожиданно кончалъ за упокой его. Естественно, что при такихъ условіяхъ очень и очень многія постановленія и предложенія засѣданій отличались неясностью, неточностью, сбивчивостью и противорѣчивостью. Очевидно, что для той великой реформаторской работы, къ которой призваны члены засѣданій, необходима большая подготовка; необходимо совмѣстить ту широту и стройность теоретическаго базиса съ глубокимъ знаніемъ самыхъ корней быта, которыми отличались незабвенные дѣятели великой эпохи въ Россіи: гр. Ростовцевъ, Унковскій, Зарудный, Милютинъ, Арцимовичъ и др.

Иллюстраціей невыработанности и неопредѣленности руководящихъ точекъ зрѣнія участниковъ засѣданія могутъ служить горячіе дебаты о земскомъ самообложеніи, въ результатѣ котораго такъ и не былъ правильно формулированъ этотъ кардинальный вопросъ, составляющій больное мѣсто Положеній о Земствѣ и 64 года, и 90 г., и парализующій вотъ уже 50 лѣтъ земскую работу Россіи. Столь-же своеобразна и судьба вопроса о языкѣ для будущихъ органовъ самоуправленія. Вопросъ этотъ, раздирающій въ политикѣ народы и партіи, не обратилъ на себя вниманія, несмотря на настоянія г. Ф. А заявленіе, сдѣланное г. Б, болѣе чѣмъ странное по своей категоричности въ устахъ юриста, только еще болѣе спуталъ отношеніе къ этому жгучему политическому вопросу. Впрочемъ, въ данномъ случаѣ нѣкоторымъ объясненіемъ и утѣшеніемъ для насъ, туркестанцевъ, является предположеніе, что странно спокойное и неопредѣленное отношеніе къ большому вопросу есть органическій, такъ сказать результатъ того, что у насъ на окраинѣ, слава Богу, нѣтъ пока причинъ для

тѣхъ уродливыхъ острыхъ формъ человѣконенавистничества, какія пышно расцвѣтаютъ въ другой обстановкѣ.

Исходнымъ пунктомъ занятій на засѣданіи 7-го января послужилъ проектъ программы, написанный г. Б. Эта почтенная работа значительно облегчила труды засѣданія. Составленная съ усердіемъ по схемѣ положенія 1890 года, эта программа вопросовъ была прочтена, обсуждена и дополнена слушателями тамъ, гдѣ это было признано нужнымъ. Къ сожалѣнію, вольно или невольно, сознательно или безсознательно, г. Б. сузилъ свою задачу, и очень многіе основные кардинальные вопросы о формѣ реализаціи идеи самоуправленія въ краѣ остались не затронутыми. Можетъ быть это произошло отъ „ненавистящихъ обстоятельствъ", а можетъ быть авторъ не умѣлъ овладѣть своей трудной задачей. Изъ проекта г. Б. видно, что авторъ почти рабски слѣдовалъ духу Положенія 90 года. А между тѣмъ нѣтъ сомнѣнія, что исторія земскаго самоуправленія въ Россіи безспорно доказала крайнее несовершенство и дѣйствующаго положенія, и всѣхъ связанныхъ съ нимъ институтовъ. Неразумно и легкомысленно вводить принципы отжившаго, отвергнутаго жизнью, того, коренная реформа чего давно выяснена въ общественномъ сознаніи лучшихъ русскихъ людей.

Туркестанъ съ его своеобразнымъ строемъ, корни котораго восходятъ отчасти къ сѣдой старинѣ, отчасти заложены государственнымъ умомъ Кауфмана, во многихъ отношеніяхъ стоялъ и стоитъ впереди „реформированнаго" 80—90-хъ годахъ, по плану гр. Толстого и Пазухина, строя губерній Россіи.

И теперь стыдно, грѣшно и исторически преступно пятиться намъ назадъ.

Х.

——

Переселенческій вопросъ въ раіонѣ Туркест.-Сибирск. ж. д.

Ташкентскимъ городскимъ головой Н. Г. Маллицкимъ, въ бытность его въ Петербургѣ для участія въ междувѣдомственной комиссіи, занимавшейся разсмотрѣніемъ выдвинутыхъ за послѣднее время проектовъ желѣзнодорожнаго строительства, была напечатана, на правахъ рукописи, докладная записка, представленная имъ какъ предсѣдателю комиссіи, такъ и министрамъ и другимъ высокопоставленнымъ лицамъ. Записка эта содержитъ въ себѣ цифровыя данныя, коими было-бы возможно оправдать не только государственное значеніе проектируемой Семирѣченской жел. дор., составляющей южную часть Турк.-Сибирск. магистрали, но и сравнительную практическую прибыльность линіи.

Авторъ докладной записки не коснулся соображеній о государственной важности проектируемаго пути, потому что важность эта въ достаточной сте-

пени уже выяснена заявленіями крупнѣйшихъ представителей хлопковой промышленности и неоднократными по этому дѣлу представленіями туркест. генералъ-губернатора и командующаго войсками туркест. воен. округа.

Въ виду этого, мы не находимъ въ запискѣ Н. Г. Маллицкаго свѣдѣній и данныхъ относительно серьезнаго значенія, которое должна имѣть проектируемая Семирѣч. жел. дор. для переселенческаго дѣла въ раіонѣ этой дороги.

Однако, въ заключительной части своей записки авторъ говоритъ: «мы не можемъ замалчивать великаго національно-политическаго значенія магистрали Туркестано-Сибирской. Постройка ея не можетъ быть откладываема на долгій срокъ. *Турк.-Сиб. магистраль должна наполнить русскимъ населеніемъ пустующіе донынѣ массивы тянь-шаньской горной страны; она должна сдѣлать изъ Тянь-шаня русскій форпостъ въ Средней Азіи, если мы не желаемъ, чтобы тянь-шаньскія твердыни превратились въ передовой оплотъ Китайской имперіи.* Если мы успѣемъ колонизовать Тянь-Шань, русское дѣло въ Средней Азіи будетъ выиграно... Если-же мы, предоставивъ укрѣпляться въ благодныхъ долинахъ и предгоріяхъ Тянь-шаня туземцамъ и китайцамъ, займемся исключительно колонизаціей киргизскихъ степей, то, не смотря на весь размахъ желѣзнодорожнаго строительства, это будетъ неполнымъ рѣшеніемъ русской государственной и національной задачи въ Средней Азіи».

Приведенныя нами соображенія ясно показываютъ, какое громадное государственное значеніе имѣетъ проектируемая Семирѣч. жел. дор. въ цѣляхъ колонизаціи этого раіона.

Особенно это значеніе должно быть поставлено на первый планъ въ настоящее время, когда замѣчается пробужденіе Китая, когда чрезъ Китай на иностранные капиталы проводится великая Монгольская жел. дор., когда на нашихъ окраинахъ ощущаются признаки тревожнаго состоянія...

Припомнимъ по этому поводу, что при постройкѣ Сибирской жел. дор. былъ созданъ особый комитетъ для постройки, состоявшій подъ Высочайшимъ предсѣдательствомъ. Комитетъ этотъ главнымъ образомъ озабоченъ былъ колонизаціей раіона, по которому проводился рельсовый путь. Для этого особыми партіями обслѣдовалась полоса по 100 верстъ въ сторону отъ строющейся дороги. Заполненію этого раіона русскимъ населеніемъ придавалось политическое значеніе.

Въ той-же степени, несомнѣнно, важна и постройка Семирѣч. жел. дор., которая дастъ возможность быстро заселить долины и отроги Тянь-шаня русскимъ элементомъ, превративъ эту страну въ передовую естественную твердыню противъ поступательнаго движенія сосѣда.

Раіонъ проектируемой Туркест.-Сиб.

магистрали представляетъ собою главнѣйшій переселенческій земельный фондъ. Обширное Семирѣчье болѣе другихъ мѣстностей пригодно для занятій сельскимъ хозяйствомъ. Къ сожалѣнію, мы не имѣемъ подъ руками точныхъ цифръ, дающихъ представленіе о емкости Семирѣч. обл. для переселенія. Въ статьѣ С. Л., напечатанной въ № 1 «Торг.-Пр. Газ.» и посвященной этому вопросу, находятся свѣдѣнія лишь о самомъ сѣверномъ, Лепсинскомъ, уѣздѣ. Въ этомъ уѣздѣ за 1907—1909 г. г. отведено для переселенцевъ 27.847 душевыхъ надѣловъ и предположено отвести въ 1910—1912 г. г. 28.000 надѣловъ.

Весь раіонъ Семирѣч. жел. дор. (считая Арысь-Вѣрный) обнимаетъ собою 378 356 кв. верстъ съ населеніемъ 1.418,623 челов., т. е. менѣе 4 челов. на квадр. версту.

Эти цифры даютъ понятіе о значительной емкости Семирѣчья для колонизаціонныхъ цѣлей.

По всѣмъ признакамъ, дѣло съ постройкою Семирѣч. жел. дор. не будутъ откладывать, ибо серьезное ея государственное и стратегическое значеніе признано въ высшихъ сферахъ, а также имѣются солидные концессіонеры для постройки. Вслѣдствіе этого, полагалось-бы необходимымъ теперь-же, не теряя времени, приступить къ болѣе энергичному изслѣдованію пригодныхъ для колонизаціи мѣстностей въ Семирѣч. обл., усиливъ для этого, если требуется, Семирѣченскую переселенческую партію. Было-бы позорно, если бы переселенческое вѣдомство опоздало со своими подготовительными работами и ко времени сооруженія названной жел. дороги участки для переселенцевъ оказались-бы еще не намѣченными и не разбитыми подъ селенія.

К. Тимаевъ.

Историческая справка къ судебной реформѣ въ Туркестанѣ.

Въ связи съ начавшимся обсужденіемъ проекта введенія земскихъ учрежденій въ Туркест. краѣ, мнѣ пришлось въ № 5 „Туркест. Кур.“ (8 янв. с. г.) высказать свой взглядъ о необходимости завершить судебную реформу на нашей окраинѣ учрежденіемъ судовъ съ присяжными засѣдателями.

До 1899 г., когда въ краѣ введены были окружные суды и судебная палата, дѣйствовали областные суды, которые далеко не могли удовлетворять потребностямъ населенія.

Какъ увидимъ ниже, еще въ 1879 г. устроитель Туркестана, первый турк. генералъ-губернаторъ генералъ-адъютантъ К. П. фонъ Кауфманъ лелѣялъ мысль о преобразованіи мѣстныхъ судебныхъ учрежденій стараго образца. Чтобы осуществить эту мысль понадобилось долгихъ 20 лѣтъ.

Теперь жизнь идетъ быстрѣе. Прогрессивныя ея требованія растутъ съ

каждымъ годомъ. Старыя формы становятся несоотвѣтствующими современному состоянію, современнымъ потребностямъ населенія и значительно тормазятъ развитіе соціальной жизни.

Надо полагать, что въ настоящую минуту было-бы совершенно своевременнымъ приступить къ обсужденію вопроса о введеніи у насъ въ Туркестанѣ суда присяжныхъ, чтобы не повторилась та медлительность, которая обнаружена была съ преобразованіемъ въ краѣ областныхъ судовъ.

25 мая 1879 г. въ Петербургѣ прапорщикомъ лейбъ-гвардіи сапернаго баталіона К. Ландсбергомъ было совершено убійство надв. совѣтн. Власова и его кухарки Семенидовой. Мотивомъ къ убійству, совершеннымъ блестящимъ, принятымъ въ высшихъ кругахъ, гвардейскимъ офицеромъ, послужила необходимость для К. Ландсберга такъ или иначе уничтожить, во избѣжаніе скомпрометтированія себя предъ начальствомъ и обществомъ, росписки въ полученіи 5000 р., данныхъ ему взаймы Власовымъ и которыхъ онъ не могъ возвратить въ назначенный срокъ.

Ранѣе К. Ландсбергъ служилъ въ туркестанскихъ войскахъ и за личное участіе въ бояхъ при штурмѣ крѣпости Махрамъ въ Кокандскомъ ханствѣ и при истребленіи, подъ начальствомъ М. Д. Скобелева, скопищъ Автобаги былъ награжденъ орденами съ мечами.

По просьбѣ защитника К. Ландсберга, прис. повѣрн. Войцеховскаго, въ засѣданіи петерб. окружн. суда по этому громкому и выдающемуся дѣлу, подъ предсѣдательствомъ знаменитаго судебнаго дѣятеля А. Ѳ. Кони, былъ допрошенъ въ качествѣ свидѣтеля временно находившійся тогда въ Петербургѣ по дѣламъ службы туркест. генералъ-губернаторъ Константинъ Петровичъ фонъ-Кауфманъ, который могъ объяснить обстоятельства жизни К. Ландсберга и бросить свѣтъ на мотивы преступленія.

Крайне интересныя воспоминанія А. Ѳ. Кони объ этомъ дѣлѣ, о впечатлѣніи, произведенномъ появленіемъ заслуженнаго генералъ-адъютанта К. П. фонъ Кауфмана и его отвѣтами на судъ и публику, а также о впечатлѣніи самого Константина Петровича отъ суда, напечатаны въ «Русск. Стар.» за декабрь 1908 г.

Для насъ самое важное слѣдующее мѣсто изъ этихъ воспоминаній А. Ѳ. Кони.

«Дня черезъ два по окончаніи процесса (К. Ландсберга *), при свиданіи моемъ съ К. П. Кауфманомъ, онъ сказалъ мнѣ, что судебное засѣданіе и отношеніе къ нему суда произвели самое благопріятное на него впечатлѣніе, о чемъ онъ упомянулъ въ бесѣдѣ съ Государемъ послѣ обѣда въ Царскомъ

---

*) К. Ландсбергъ былъ приговоренъ къ 15-лѣтнимъ каторгѣ, которую отбылъ на о. Сахалинѣ, исполняя тамъ, по порученію начальства, серьезныя инженерныя работы.

Селѣ... Онъ (К. П. Кауфманъ) поднялъ также очень его интересовавшій вопросъ о преобразованіи существовавшихъ въ Туркестанѣ мѣстныхъ судебныхъ учрежденій стараго образца, и мы довольно долго разсуждали о томъ, съ какими наименьшими измѣненіями могъ бы быть введенъ новый судъ въ недавно завоеванномъ краѣ съ мусульманскимъ населеніемъ, съ муллами и казіями, судящими по шаріату и адату. При этомъ Кауфманъ обѣщалъ прислать мнѣ тѣ предположенія о судебномъ преобразованіи, которыя будутъ выработаны у него на мѣстѣ, и просилъ написать ему по поводу ихъ свое заключеніе».

На преобразованіе судебн. учрежденій стараго образца потребовалось 20 лѣтъ: окружные суды и судебная палата были введены въ Туркестанѣ въ 1899 г. Въ настоящее время остается еще закончить эту реформу учрежденіемъ судовъ съ присяжными засѣдателями, въ чемъ ощущается настоятельная потребность.

Реформа эта, какъ я уже говорилъ, не вызываетъ никакой особенной ломки существующаго, не требуетъ на свое осуществленіе значительныхъ затратъ времени и денегъ и не можетъ повлечь за собою какихъ-либо треній въ отношеніи мусульманъ.

Туркестанъ уже настолько сроднился съ своей метрополіей, что ему пора пользоваться такими-же судебными учрежденіями, которыя существуютъ въ Европ. Россіи.

К. Тимаевъ.

Кровавое столкновеніе въ Бухарѣ.

По телеграфу.

Второй день между мусульманами суннитами и шеитами въ столицѣ Бухары на религіозной почвѣ происходятъ кровавыя столкновенія. Есть жертвы, разгромлено нѣсколько магазиновъ персовъ. Зачинщики студенты Медрессе. Сунниты ходятъ толпами по улицамъ, разыскиваютъ персовъ и чиновниковъ шеитовъ. Бухарскимъ правительствомъ приняты рѣшительныя мѣры к водворенію порядка.

* * *

По частнымъ свѣдѣніямъ, полученнымъ редакціей возникшія на религіозной почвѣ столкновенія, приняли широкіе размѣры. Массы бѣглецовъ спасаются въ Русскую Бухару. Многіе скрываются въ зданіяхъ принадлежащихъ русскимъ. Опасаются, что волненія могутъ принять угрожающій существующему строю характеръ. Изъ Самарканда для охраны русскихъ подданныхъ и банковъ посланы войска.

* * *

Нашъ бухарскій корреспондентъ сообщаетъ намъ слѣдующія подробности.

Сегодня 9 го января въ началѣ 3 го часа пополудни нашъ городъ сдѣлался ареной кровавой

бойни многочисленной кадры сартовъ, такъ называемыхъ, студентовъ надъ маленькой кучкой живущихъ здѣсь беззащитныхъ персовъ.

Бойня разыгралась по слѣдующему поводу, относительно котораго существуютъ различныя версіи. По одной—дѣло представляется въ слѣдующемъ. Сегодня день оплакиванія пророка Али, почитаемаго всѣми персами во всѣхъ частяхъ свѣта, день „Шахсей-Вахсей". Когда послѣдніе въ видѣ траура совершали свою траурную процессію (въ данномъ случаѣ за предѣлы города) въ присутствіи сартовъ между которыми находились и ихъ „муллы", между тѣми и другими произошли какіе-то споры и пререканія на почвѣ той-же церемоніи, при чемъ персы будучи обижены въ своей религіозной формѣ обряда и, будучи подъ вліяніемъ фанатическаго изступленія, по увѣренію сартовъ, нанесли послѣднимъ увѣчья, при чемъ даже одного изъ числа находившихся „муллу" изрубили на смерть. Насколько этотъ фактъ имѣетъ за собою положительные результаты я лично не ручаюсь, т. к. передаю эту версію со словъ самихъ же сартовъ.

Послѣднее обстоятельство послужило сигналомъ со стороны сартовъ оскорбленныхъ за своего же единовѣрца для умерщвленія всѣхъ поголовно живущихъ персовъ и вызвало кровавую месть обиды!

Началась дикая расправа надъ бѣгущими беззащитными персами, которыхъ ловили какъ зайцевъ, избивая палками которыми толпы молодежи студентовъ запаслись какъ орудіемъ нападенія.

Несчастныхъ ловили по пятамъ забѣгая въ дома въ которыхъ предполагалось присутствіе послѣднихъ и куда персы устремлялись ища убѣжища. Забѣгали въ дома, бѣгая по улицѣ, по крышамъ и гдѣ только казалось возможнымъ достигнуть своей добычи!

Несчастные метались со стоны въ сторону нигдѣ не находя для себя защиты отъ многочисленной вооруженной толпы.

Тѣ немногочисленные европейцы живущіе здѣсь и на глазахъ которыхъ происходила эта безчеловѣчная расправа были безпомощны помочь несчастнымъ чувствуя свое безсиліе передъ разсвирѣпѣвшей дикой толпой.

Число убитыхъ на смерть пока еще неизвѣстно но говорятъ, что число убитыхъ 10 человѣкъ и много раненыхъ. Послѣдніе мертвые и раненые не могли быть убранными и получить помощь изъ за боязни самосуда той-же толпы. По другой версіи, болѣе вѣроятной, дѣло представляется въ слѣдующемъ видѣ, при чемъ послѣдняя, помимо религіозной причины, имѣетъ и національную и даже политическую. Дѣло въ томъ, что намѣстникъ эмира на станц. Бухарѣ—Кушъ Беги по національности персіянинъ, въ лицѣ котораго сарты видѣли всегда лицо, несоотвѣтствующее по ихъ взглядамъ тому, который бы долженъ ими управлять, видя въ этомъ личное національное оскорбленіе и противъ котораго были всегда враждебно настроены. Итакъ,

считая такой постъ въ лицѣ персіянина Кушъ Беги не соотвѣтствующимъ своей національной идеѣ и видя въ немъ для себя прямую обиду, а въ отношеніи живущихъ здѣсь персовъ снисхожденіе къ своимъ соплеменникамъ, особенно на почвѣ религіозныхъ обрядовъ, сарты, пользуясь случаемъ, сочли для себя удобный моментъ открытаго неудовольствія (возстанія) противъ Кушъ-Беги, требуя его удаленія. Послѣдній, въ видѣ рѣшительныхъ мѣръ противъ обступившей толпы дворецъ, состоящей главнымъ образомъ изъ молодежи-студентовъ, приказалъ войскамъ эмира стрѣлять. Видя это толпа пришла еще въ большее изступленіе и совершила самосудъ надъ нѣсколькими солдатами изъ числа стрѣлявшихъ. Изъ числа же толпы оказались ранеными б. ч. въ ноги, ниже колѣнъ, т. к. войска стрѣляли внизъ. Вмѣстѣ съ тѣмъ тѣми же возставшими, какъ говорятъ, былъ предъявленъ протестъ противъ Кушъ Беги и, между прочимъ, противъ европейцевъ наѣзжающихъ сюда, а также и въ отношеніи евреевъ-бухарцевъ якобы не соблюдающихъ своего унизительнаго отличія—ношеніе веревки вмѣсто пояса!

На сколько эти требованія вѣрны и имѣютъ ли онѣ право быть опубликованными какъ достовѣрный фактъ, не берусь утверждать въ положительномъ смыслѣ, т. к. передаю то, что слышалъ изъ устъ тѣхъ же сартовъ, а потому предоставляю самимъ читателямъ судить и тѣмъ, которые заинтересованы въ общемъ ходѣ политико-экономическаго устройства Бухарскаго ханства!

Но что такія требованія возможны со стороны сартовъ въ отношеніи здѣшнихъ европейцевъ въ лицѣ которыхъ сарты видятъ людей обогащающихся за ихъ счетъ и за ихъ трудъ, нѣтъ никакого сомнѣнія. Тѣже самыя чувства сарты питаютъ и къ своему ставленнику Кушъ Беги, въ чемъ и выражаютъ открыто свое неудовольствіе!

Возвращаясь къ описываемому событію, долженъ сказать насколько въ этомъ дикомъ происшествіи проявилъ себя мѣстный народный судья—„Кази Каленъ“—съ разсвирѣпѣвшей толпой.

Послѣдній со слезами на глазахъ умолялъ тысячную толпу сбѣжавшихся студентовъ просъ ихъ именемъ Аллаха прекратить ненужное и кровавое избіеніе но послѣдніе остались глухи къ мольбамъ „судьи“.

Многіе изъ успѣвшихъ уцѣлѣть персовъ спасались, уѣзжая въ Новую Бухару гдѣ ихъ ждала защита со стороны русскихъ властей. А оставшіеся еще здѣсь не увѣрены за свою жизнь и представлены на волю судьбы, т. к. еще неизвѣстно, чѣмъ все происшедшее можетъ кончиться.

Сегодня Бухара измѣнила свой всегдашній видъ, т. к. уже послѣ начавшагося избіенія всѣ лавки закрылись и движеніе по улицамъ прекратилось. Отданъ по словамъ нѣкоторыхъ, приказъ въ силу котораго лавки должны быть завтра закрыты, т. ч. приходится придти къ тому заключенію, что фактъ этотъ представ-

ляется очень серьезнымъ и могущимъ еще имѣть другія последствія!

Сообщая объ этомъ выдающемся случаѣ, какъ фактѣ столкновенія съ кровавыми послѣдствіями между двумя національностями на почвѣ религіозныхъ обрядовъ и вѣроученій я хотѣлъ бы своимъ слабымъ перомъ указать на всю дикость и нелѣпость безсмысленной травли одной націи противъ другой. Не мнѣ со своими слабыми силами касаться тѣхъ глубокихъ причинъ и их послѣдствій язвъ и ранъ переполняющія весь населяющій земной шаръ! Но пусть хоть лишній разъ этотъ дикій и ненужный кровавый споръ напомнить и „нашимъ" человѣконенавистникамъ каковы могутъ быть послѣдствія травли одной націи противъ другой!

Рука пишущая эти строки невольно дрожитъ передавая эти грустныя и скорбныя извѣстія когда приходится быть невольнымъ свидѣтелемъ убійства и избіенія людей и въ то же время чувствуешь все безсиліе помочь чѣмъ либо положительнымъ.

Невольно задумаешься надъ слабой человѣческой силой; невольно опускаются руки и тѣло холодѣетъ при видѣ братской крови, крови безсмысленной и невинной.

Миръ праху вамъ, несчастные и замученные страдальцы!

А вы фанатики и научившіе васъ другъ друга ненавидѣть, остановитесь и не давайте разгораться именуемому религіознымъ вопросомъ, искру котораго успѣли бросить тѣ, которые не предполагали послѣдствій ея. Ваши зерна которыя вы роняли попали на дурную почву и вмѣсто жатвы любви и братства произвели на свѣтъ Божій человѣконенавистничество! Остановитесь, фанатики! Еще не поздно. Пусть *новая* заря взойдетъ подъ *старымъ* міромъ и своимъ сіяніемъ освѣтитъ тотъ мракъ насилія и невѣжества которыми и понынѣ еще питаются народы на почвѣ религіозной вражды!

Къ свѣту! Ближе къ свѣту!

Второй день безпорядковъ въ Старой Бухарѣ.

Съ утра было какъ-будто тихо. Часу въ одиннадцатомъ проѣзжалъ по городу начальникъ города съ приказомъ открыть лавки и магазины. Къ часу дня по городу раздалось провозглашеніе муллъ, что на базарѣ—Хіабанъ—собралось много вооруженныхъ персовъ. Вслѣдъ затѣмъ по всѣмъ улицамъ проскакалъ верховой гонецъ отъ муллъ возвѣщая о необходимости поголовнаго вооруженія и слѣдовать къ базару Хіабанъ. Въ третьемъ часу дня всѣ улицы были запружены возставшими сартами бѣжавшими по направленію къ базару Хіабанъ

вооруженные кольями, палками, бревнами, топорами, кинжалами, шашками, серпами, револьверами и винтовками. Вслѣдъ затѣмъ раздались во всѣхъ концахъ базара Хіабана выстрѣлы. И началось ужаснѣйшее избіеніе мужчинъ, женщинъ и дѣтей. Тысячная толпа съ дикимъ ревомъ набрасывалась на отыскиваемыхъ ими персіянъ и избивала ихъ на смерть звѣрскими пріемами. Персіяне ища спасенія прятались у русскихъ жителей, во дворахъ, конторахъ, въ квартирахъ; по всюду на нихъ набрасывались съ бѣшенствомъ дикихъ звѣрей, вламывались въ квартиры русскихъ обывателей съ требованіемъ выдать спрятавшихся, съ угрозой разнесенія въ пухъ и прахъ русскихъ за укрывательство.

Вообразите хоть на минуту такую картину. Вотъ врывается къ вамъ въ домъ одинъ —два человѣка, преслѣдуемые озвѣрѣлыми разбойниками, предчувствуя вѣрную смерть, ища спасенія. Падаетъ въ ноги, цѣлуетъ ихъ, обливая слезами, съ мольбами „ради Бога спасите меня", а вслѣдъ за нимъ толпа бѣшенныхъ людей съ невыразимымъ ревомъ и угрозами требуетъ выдать спрятавшагося, и въ силу спасенія своей собственной шкуры многіе вынуждены были насильно выталкивать изъ квартиры спрятавшихся—на истязаніе разсвирѣпѣвшимъ фанатикамъ. И на глазахъ семьи и дѣтей, человѣка кромсаютъ кинжалами, колотятъ топорами. И всю эту безумную кровавую драму пришлось пережить мнѣ, всему моему семейству и прочимъ русскимъ обывателямъ. Вся терраса моей квартиры залита кровью. Убитые трое никѣмъ не убираются.

Во всѣхъ концахъ города и улицахъ, гдѣ только сарты настигали персіянъ происходили такія же драмы. Всѣ русскіе обыватели спѣшать выѣхать изъ города въ новую Бухару, бросая склады, магазины и банки на произволъ судьбы. Паника ужасная. Что будетъ дальше неизвѣстно. Отправлена 9 полурота солдатъ, но ихъ дальше воротъ не пускаютъ

Сегодня отправлено учениками своимъ родителямъ и родственникамъ много воззваній во всѣ стороны Средней Азіи умоляя о защитѣ. Муллы и старѣйшины возлѣ каждой мечети ораторствуютъ о поголовномъ возстаніи.

Больше не въ состояніи писать; память путается отъ всѣхъ

потрясеній и пережитыхъ ужасовъ.

Н. Нѣжинскій.

БУХАРСКАЯ РѢЗНЯ.

Корреспонденція изъ Новой Бухары.

9-го января, въ день праздника „Шахсей-Вахсей" произошло столкновеніе между персами и сартами Стараго Города.

Сартскіе муллы начали уговаривать персовъ не идти на праздникъ „Шахсей Вахсей", такъ какъ, по персидскому обычаю въ этотъ день они должны рубить себя кинжалами и бить цѣпями. Персы возмущенные этой пропагандой, тутъ-же на мѣстѣ убили одного изъ муллъ. Это дало толчекъ къ дальнѣйшимъ кровавымъ столкновеніямъ. Сарты цѣлыми толпами разсѣялись по городу и стали убивать персовъ. Послѣдніе въ свою очередь, защищаясь, убивали сартъ. Персидскія лавки разгромлены; товаръ выброшенъ на улицу; много убитыхъ и раненыхъ.

10-го января рѣзня приняла еще болѣе кровавый характеръ. Многотысячная толпа сартъ, во главѣ съ муллами ходила по городу искала персовъ—и, настигнувъ ихъ убивала самымъ безпощаднымъ образомъ. Часть сартъ набросилась на крѣпость, гдѣ находится намѣстникъ бухарскаго правительства, Кушъ-Биги, съ намѣреніемъ убить его, такъ какъ онъ по происхожденію персъ. Кушъ-Биги выставилъ своихъ солдатъ и открылъ стрѣльбу по сартамъ. Среди сартовъ много раненыхъ, а среди солдатъ нѣсколько убитыхъ.

Персы собираются группами, громятъ сартовскія мечети, убиваютъ муллъ, по улицамъ и дворамъ масса убитыхъ и раненыхъ. Къ вечеру изъ Новой-Бухары отправлены солдаты для охраны русскихъ учрежденій. Рѣзня продолжается. Паника ужасная. Русскіе оставляютъ старый городъ и съ семействами бѣгутъ въ Новую-Бухару.

Д. К.

Кровавое столкновеніе въ Бухарѣ.

(По телеграфу).

НОВАЯ БУХАРА. Мусульмане сунниты стекаются въ Бухару изъ окрестностей и требуютъ смѣщенія намѣстника эмира въ Бухарѣ шіита Османъ-Кула-Куш беги и назначенія на его мѣсто суннита Казикаляна. По просьбѣ бухарскаго пра-

вительства высланъ отрядъ русскихъ войскъ, расположенный въ Новой Бухарѣ. Вчера къ вечеру рѣзня притихла; убитыхъ около ста. Туземцы вооружены ружьями Бердана и револьверами разныхъ системъ; для охраны русскихъ учрежденій, банковъ и транспортныхъ конторъ въ Старой Бухарѣ поставлены караулы изъ русскихъ войскъ. Изъ Самарканда выслыны въ Бухару рота стрѣлковъ, сотня казаковъ и четыре пулемета.

Кровавое столкновеніе въ Бухарѣ.

(По телеграфу).

НОВАЯ БУХАРА. Съ прибытіемъ вызванныхъ изъ Самарканда роты пѣхоты и сотни казаковъ при пулеметахъ, въ городѣ стало спокойнѣе. За городомъ около полудня произошло столкновеніе суннитовъ съ шіитами. 10 казаковъ съ офицеромъ, неприбѣгая къ оружію быстро разсѣяли толпу человѣкъ въ 500, на мѣстѣ обнаружено три трупа. Больше столкновеній не было. Русскій банкъ и другія учрежденія охраняются войсками.

НОВАЯ БУХАРА. Утромъ началась торговая дѣятельность. Въ полдень толпа снова напала на персіянъ. Убитъ персидскій врачъ съ семьей. Вообще число жертвъ значительно. Суниты заявляютъ, что не успокоятся до тѣхъ поръ, пока у власти останется хоть одинъ сановникъ и чиновникъ персидскаго происхожденія. Хлопкатоочистительные заводы пріостановили работы, за отсутствіемъ рабочихъ-мусульманъ.

Волненія въ Бухарѣ.

Отъ нашихъ корреспондентовъ.

Третій день волненій въ Старой Бухарѣ. 11 января по нѣкоторымъ даннымъ извѣстно, что за вчерашній день оказалось убитыми со стороны сартовъ до тысячи и со стороны персовъ до пяти сотъ.

Сегодня съ ранняго утра началось нападеніе и розыски персіянъ. Весь день продолжались частичныя убійства. Къ 12 часамъ дня прибыли русскія войска изъ Катта-Кургана съ пулеметами и были разставлены для охраны во всѣхъ русскихъ учрежденіяхъ. Но тѣмъ не менѣе убійства персіянъ продолжались. Въ 3 часа дня прибыли войска, пѣхота и казаки изъ Самарканда, которые и расположились на станціи возлѣ бухарскихъ воротъ, но участія никакого въ подавленіи безпорядковъ не принимаютъ.

Русскіе жители всѣ покинули Старую Бухару, переѣхали въ Новую. Ожидается наплывъ со всѣхъ городовъ Бухары родителей и родственниковъ учениковъ-муллъ, по воззваніямъ муллъ-учениковъ для защиты и подкрѣпленія возстанія.

О торговой и нормальной жиз-

ни Бухары въ данное время не можетъ быть рѣчи.

Всѣ русско-подданные въ подавленномъ состояніи.

Н. Нѣжинскій.

* * *

11 января. Рѣзня продолжается. Посланные вчера вечеромъ солдаты не были впущены сартами въ городъ. Сегодня въ 11 часовъ утра прибыло нѣсколько ротъ солдатъ съ пулеметами—изъ Каттыкургана для охраны русскихъ учрежденій.

Товаръ, выбрасываемый изъ лавокъ тутъ же убирается праздношатающимися. Тамъ и сямъ слышатся ружейные выстрѣлы. Всѣ европейцы оставляютъ старый городъ. На вокзалѣ сидитъ масса семействъ европейцевъ, ожидаютъ прихода поѣзда въ Новую Бухару.

Персы торговцы такъ же оставляютъ старый городъ.

Были случаи, когда убѣгающіе персы платили сартамъ большія деньги, чтобы ихъ выпустили изъ города. Всѣхъ русскихъ подданныхъ охраняетъ конвой солдатъ. По городу нельзя пройти. Масса труповъ валяется по улицамъ,—все это наводитъ неописуемый страхъ на зрителей. Кушъ-беги устраненъ. Избранъ новый изъ сартовъ.

По слухамъ дѣти стараго Кушъ-беги всѣ перебиты. Въ городѣ чувствуется уже недостатокъ въ провіантѣ. Съ окрестностей никакихъ продуктовъ не подвозятъ. Къ полудню перестрѣлка принимаетъ серьезный характеръ. Тутъ и тамъ падаютъ убитые и раненые. Къ вечеру прибыли казаки изъ Самарканда.

Мнѣ пришлось быть очевидцемъ нѣсколькихъ печальныхъ происшествій. На пути изъ Бухары—Старой я встрѣтилъ одного полковника перса, ведущаго бухарскихъ солдатъ. Вдругъ, съ крыши раздался выстрѣлъ, и полковникъ палъ мертвымъ. Второй случай произошелъ при слѣдующихъ обстоятельствахъ.

Въ контору Цинделя пришли нѣсколько персовъ, умоляя укрыть ихъ отъ сартовъ. Въ виду ихъ печального положенія они были укрыты въ квартирѣ. Черезъ нѣкоторое время пришли сарты и потребовали выдачи персовъ. Въ противномъ случаѣ они грозили убить и укрывателей и укрывающихся. Пришлось волей неволей выдать персовъ и они тутъ же на нашихъ глазахъ были растерзаны.

Д. К.

* * *

Старая Бухара 9-го января.

Девятое января ознаменовалось и въ Старой Бухарѣ... Въ этотъ день, персы, населяющіе Бухару, праздновали свой праздникъ Сахсей Вахсей. Жители востока знаютъ религіозные обряды праздника—Сахсей Вахсей, представляющаго собой не очень пріятное зрѣлище...

И вотъ, во время шествія персидской религіозной процессіи, съ воемъ и плачемъ, и во время остановки этого шествія противъ дворца Кушъ-Беги намѣстника эмира,—къ процессіи подошли человѣкъ пять учениковъ муллъ, любопытства ради и начали

смѣяться надъ ихъ религіознымъ обрядомъ. Въ этотъ моментъ нѣсколько изъ самыхъ ярыхъ фанатиковъ персовъ истязавшихъ себя большими отточенными кинжалами по бритому черепу, и находившихся въ сильнѣйшемъ религіозномъ экстазѣ набросились на смѣющихся и въ одинъ моментъ одинъ изъ муллъ былъ заколотъ кинжаломъ.

Вѣсть объ убійствѣ муллы моментально разнеслась по всему городу, поднялось невообразимое смятеніе и волненіе во всѣхъ медрассахъ. Прекративъ свои занятія, студенты стали собираться большими группами и здѣсь видно, зародилась идея поголовнаго избіенія персіянъ. Начались такіе ужасы, что трудно все передать на бумагѣ... Тысячи учениковъ и учителей муллъ студентовъ присоединившагося сброда, вооружившись палками, кольями, бревнами, камнями, съ ревомъ дикихъ звѣрей цѣлыми лавами набрасывались на беззащитныхъ персовъ избивали ихъ звѣрски и безчеловѣчно. Нападали на персидскія лавки, магазины. Находили прятавшихся на крышахъ и оттуда сбрасывали.

Съ 12 ч. дня всѣ магазины и лавки по всему городу были закрыты. Часа въ два дня не было ни одного перса въ городѣ. Озвѣрѣвшія толпы муллъ тысячами стали стекаться ко дворцу Кушъ-Беги, вооружаясь по пути кто чѣмъ попало, взламывая бревенчатыя лавченки. Десятки тысячъ народа окружили дворецъ и стали ломиться въ ворота крѣпости съ цѣлью захватить Кушъ-Беги и охраняемыхъ имъ персіянъ. Кушъ-Беги, приказалъ войскамъ разогнать толпу. Но муллы набрасывались на солдатъ и началось форменное сраженіе.

Послѣ чего получено было распоряженіе—стрѣлять. Послѣ трехъ четырехъ безпорядочныхъ залповъ толпа заволновалась, шарахнулась въ сторону. Къ этому времени подоспѣлъ къ крѣпости эшелонъ кавказцевъ казаковъ.

Лишь тогда толпа разсѣялась въ разныя стороны, гонимая прикладами и нагайками оглушаемая холостыми выстрѣлами. Къ пяти часамъ вечера, площадь передъ дворцомъ была очищена и занята войсками.

Выяснить же сколько именно было убито и ранено персовъ мнѣ не удалось. Но очевидцы разсказываютъ, что число ихъ громадно.

Н. Н.

Заключительное засѣданіе совѣщаній о земствѣ.

9 января подъ предсѣдательствомъ генерала Романова состоялось общее засѣданіе всѣхъ, принимавшихъ участіе въ обсужденіи вопроса о земствѣ, и были доложены труды особой комиссіи. Сначала былъ доложенъ протоколъ комиссіи, а затѣмъ г. предсѣдатель прочелъ „проектъ программы вопросовъ для уѣздныхъ совѣщаній". Вопросы, выработанные комиссіей, выслушивались очень внимательно, и какъ самая

постановка, такъ и редакція этихъ вопросовъ вызвали оживленный обмѣнъ мнѣній. Были мнѣнія интересныя и умныя; были сужденія и малоцѣнныя и легкомысленныя. Но и въ тѣхъ и другихъ повторился старый первородный грѣхъ всѣхъ совѣщаній. Не было опредѣленныхъ, руководящихъ точекъ зрѣнія, не было отправного пункта; логически правильно построеннаго, отъ котораго бы исходили всѣ оцѣнки pro и contra. И предсѣдателю трудно было свести въ одну плоскость разношерстныя заявленія; ему съ трудомъ удавалось найти не вполнѣ точный, неполный выходъ изъ создававшихся теоретическихъ противорѣчій, облеченныхъ при томъ въ форму многогранныхъ, конкретныхъ фактовъ дѣйствительности, только затемняющихъ для людей мало привыкшихъ къ отвлеченному мышленію принципіальную сущность.

Съ другой стороны, приходится сказать, что иногда члены совѣщанія вносили подчасъ достаточно странныя заявленія. Казалось бы, что при выработкѣ программы вопросовъ необходимо возможно шире ставить задачу: лучше поставить лишній, ничтожный вопросъ, лучше обратить вниманіе на самую ничтожную деталь, чѣмъ оставить хоть что либо въ тѣни. А между тѣмъ г. П. предложилъ собранію совершенно исключить вопросъ объ отношеніи будущаго земства къ ирригаціи на томъ де основаніи, что, какъ это всѣмъ извѣстно (?), водой, ирригаціоннымъ хозяйствомъ должна вѣдать и управлять администрація, болѣе умѣлая, болѣе энергичная, болѣе способная къ быстрымъ репрессивнымъ мѣрамъ. Разумѣется, предложеніе было отклонено, и г. П. мягко замѣтили, что онъ забѣгаетъ впередъ и предрѣшаетъ вопросъ.

Нѣсколько озадачило собраніе и заявленіе, сдѣланное г. Ф. Послѣдній предложилъ поставить вопросъ о мѣрахъ къ тому, чтобы въ земскихъ органахъ кулаки, міроѣды и пр. нежелательные элементы (?) не оказывали давленія. Разумѣется, вопросъ прошелъ непонятымъ во всей его ужасающей глубинѣ и сложности теоретической и практической, а его скользкая политическая почва даже не была замѣчена. Самъ г. Ф., нѣтъ сомнѣнія, внесъ свое заявленіе отъ чистаго сердца. Но извѣстно, что добродѣтель мало помогаетъ уясненію тонкихъ и спорныхъ вопросовъ теоріи; еще меньше спасаетъ она тамъ, гдѣ политико-соціальная конъюктура навязываетъ свои масштабы полезности справедливости и даже возможности.

Я точно не помню выраженій г. Ф. но заявленіе это ясно показывало, что г. Ф. совсѣмъ не уяснилъ себѣ всей трагичности тѣхъ антиномій которыя таились въ этомъ благожелательномъ вопросѣ, продиктованномъ желаніемъ элементарной справедливости и общаго блага. Совѣщаніе отклонило предложеніе не столько по теоретическимъ соображеніямъ, сколько по непосредственному, такъ сказать, инстинктивному чутью неразрѣ

шимости его.

Дебатировались въ засѣданіи еще и другіе, очень трудные и спорные проекты и вопросы о краевомъ земствѣ, судьбѣ города Ташкента, роли гор. думы и пр. Естественно, что мимолетный обмѣнъ мыслей не привелъ ни къ чему. Въ 10 мъ часу г. предсѣдатель закрылъ засѣданіе и обѣщалъ начальникамъ уѣздовъ дать большій срокъ для болѣе серьезнаго и вдумчиваго отношенія къ вопросамъ, предложеннымъ уѣзднымъ совѣщаніемъ.

—.—

Въ заключеніе да позволитъ мнѣ читатель нѣсколько словъ pro domo sua.

На меня нападаютъ, меня обвиняютъ и добросовѣстно, и недобросовѣстно и въ печати и въ обществѣ. Меня укоряютъ, что въ своихъ замѣткахъ я только критиковалъ и не давалъ ничего положительнаго. Господа строгіе судьи, неужели же вы не знаете, что и въ критикѣ самой суровой и придирчивой, если только она не сводится къ личнымъ счетамъ, а вращается въ сферѣ нѣкоторыхъ общихъ и опредѣленныхъ принциповъ, непремѣнно содержится нѣкоторое положительное зерно, указывающее—умѣющимъ видѣть—цѣль, путь и начало рѣшенія. А кромѣ того, надо же понимать, что для работы положительной, созидательной необходима извѣстная, иногда достаточно сложная обстановка и что нельзя серьезно не только работать, но даже спорить—когда, гдѣ и съ кѣмъ угодно.

Вы ждете и желаете указаній совѣтовъ, рѣшеній. Поищите ихъ въ курсахъ и лекціяхъ Градовскаго, Чичерина, Коркунова, Алексѣева, Ивановскаго, М. Ковалевскаго, Виноградова, Свѣшникова („Основы и предѣлы самоуправленія"), въ сборникѣ „Мелкая земская единица" въ покойной газетѣ Скалона „Земство", въ покойныхъ: „Вѣстникѣ Права" и „Юридическомъ Вѣстникѣ" и нынѣ здравствующей газетѣ „Право". Больше пока я не могу вамъ помочь.

P. Z. X.

— —

XV-лѣтіе газеты „Закаспійское Обозрѣніе".

12 янв. тек. года исполнилось 15 лѣтъ съ того какъ вышелъ первый номеръ „Закаспійское Обозрѣніе".

Для газеты, издающейся на глухой окраинѣ,—это почтенный возрастъ.

Старѣйшимъ нашимъ собратомъ являются „Туркест. Вѣдом.", но ихъ нельзя принимать въ разсчетъ, такъ какъ это казенное, оффиціальное изданіе, которому незнакомы денежныя затрудненія и у котораго всегда налицо извѣстный контингентъ обязательныхъ подписчиковъ.

Просуществовать 15 лѣтъ—для частной газеты, хотя и пользовавшейся до 1 янв. 1907 г. субсидіей, громадный подвигъ, въ особенности принимая во вниманіе полную разъединенность мѣстной интеллигенціи.

Въ передовицѣ по поводу исполнившагося XV-лѣтія издатель „Закасп. Обозр." К. М. Ѳедоровъ сопоставилъ три даты: 12 января 1755 г., 12 января 1881 г. и 12 января 1895 г. Въ одинъ и тотъже день произошли слѣдующія событія: основаніе московскаго университета (1755 г.), взятіе крѣпости Геокъ-тепе М. Д. Скобелевымъ (1881 г.) и основаніе газеты „Закасп. Обозр." (1895 г.) Всѣ три событія—культурные праздники, ибо даже паденіе Геокъ-тепе, туркменской твердыни, знаменовало собою открытіе доступа европейской культуры въ глубь степей Средней Азіи.

По поводу юбилея газеты К. Ѳедоровъ пишетъ (№ 8 „Закасп. Обозр." 12 янв. 1910 г.): „Привѣтствуя сегодня нашихъ читателей и сотрудниковъ и принося искреннюю свою благодарность всѣмъ, кто тѣмъ или инымъ образомъ содѣйствовалъ выполненію нашей задачи, включивъ въ это дѣло свой личный трудъ, мы обращаемся съ нашей покорнѣйшей просьбою ко всѣмъ лучшимъ элементамъ нашего края, ко всѣмъ работающимъ ради общаго блага, помочь намъ словомъ и дѣломъ и въ дальнѣйшемъ нашемъ существованіи и въ увѣренности таковой ихъ помощи, мы заранѣе шлемъ имъ наше сердечное спасибо".

Привѣтствіе и призывъ—традиціонные. Однако, мы обратились-бы ко всѣмъ элементамъ культурныхъ силъ окраины, не выдѣляя „лучшихъ" въ особую рубрику, тѣмъ болѣе, что это понятіе весьма относительное.

Періодъ жизни Закаспійской обл., когда начальникомъ ея состоялъ (1890—1898 г.г.) генералъ А. Н. Куропаткинъ, впослѣдствіи занявшій высокій постъ военнаго министра, по справедливости долженъ быть названъ блестящимъ въ отношеніи напряженной, толковой созидательной работы...

Какъ первый туркестанскій ге-

нералъ - губернаторъ генер. - адъютантъ К. П. фонъ-Кауфманъ признается устроителемъ Туркестанскаго края, такъ совершенно без страстно начальникъ Закасп. обл. генералъ А. Н. Куропаткинъ долженъ быть названъ устроителемъ Закаспійской об. На этомъ поприщѣ А. Н. Куропаткинъ обнаружилъ громадныя административныя способности. Приказы А. Н. Куропаткина по области относительно устройства русскихъ поселковъ и туземнаго населенія дышали выдающейся энергіей, вдумчивымъ и серьезнымъ отношеніемъ къ дѣлу, крайне любовнымъ расположеніемъ къ русскому и туземному населенію. Приказы эти охотно перепечатывались и комментировались не только мѣстными газетами („Турк. Вѣд." и „Окраины"), но и столичными...

Полного достойнаго уваженія обрисовывается крупная личность А. Н. Куропаткина въ слѣдующей фразѣ, сказаной имъ по поводу даннаго согласія на изданіе въ Асхабадѣ газеты („Зак. Обозр".):

— *„Пишите правду и только правду... Многимъ, можетъ быть, не понравится это, но что-же дѣлать? на это и печать"!..*

Эти многознаменательныя слова мигомъ облетѣли всю Россію и самымъ сочувственнымъ образомъ привѣтствовались органами печати различныхъ направленій. Этою фразою былъ данъ завѣтъ для всѣхъ газетныхъ и литературныхъ работниковъ.

Взгляды свои на задачи печати А. Н. Куропаткинъ развилъ нѣсколько подробнѣе въ письмѣ отъ 6 іюля 1895 г. на имя К. М. Ѳедорова.

„Задачи мѣстнаго органа печати, по преимуществу, заключаются въ доставленіи читателямъ наиболѣе содержательныхъ статей, которыя могли-бы послужить къ болѣе близкому изученію и ознакомленію съ краемъ, съ особенностями мѣстной жизни и характеромъ дѣятельности населенія. *Весьма* также *необходимо, чтобы въ этомъ органѣ давалось мѣсто и получаемымъ свѣдѣніямъ о безпорядкахъ въ различныхъ отдѣлахъ управленія*... по возможности шире давать мѣсто статьямъ и замѣткамъ, гдѣ помѣщаются данныя о нуждахъ края, нуждахъ населенія туземнаго и пришлаго"...

Весьма важно то обстоятельство, что генералъ А. Н. Куропаткинъ не отступалъ отъ высказанныхъ имъ взглядовъ на сущность газетной работы, а потому при немъ газетѣ дышалось легко.

Изъ послѣдующихъ начальниковъ Закасп. обл. генералъ Д. И. Субботичъ (1901—1902 г.г. нынѣ въ отставкѣ) боготворилъ правду и, стремясь водворить ее тамъ, куда проникало зло, смотрѣлъ на мѣстную прессу, какъ на могущественную сотрудницу въ дѣлѣ благоустройства Закасп. обл.

Переступая порогъ 15-лѣтія, „Закасп. Обозр." обѣщаетъ держаться внѣпартійнаго прогрессивнаго направленія, при чемъ говоритъ:

„Да и можно-ли держаться иного направленія, когда сама русская жизнь милліонами языковъ говоритъ, кричитъ, стонетъ и плачетъ о необходимости реформъ. Въ день своего 15 лѣтія газета, пережившая цензурныя терзанія и за „послѣднее время„ нелѣпыя

мѣстныя административныя придирки, можетъ пожелать обществу, которому она вѣрою и правдою служила все это время, пока лишь только—осуществленіе свободы печати.

Ибо еще Шериданъ сказалъ: „Лучше быть безъ парламента, нежели безъ свободы печати".

Такъ какъ свобода печати вернетъ всѣ остальныя свободы".

К. Тимаевъ.

——

О каналѣ Императора Николая 1-го въ Голодной Степи.

Въ виду того интереса, который въ послѣднее время былъ проявленъ въ печати къ каналу Императора Николая I-го, беру на себя смѣлость сказать нѣсколько словъ о жизни этого перваго въ краѣ дѣйствующаго русскаго ирригаціоннаго канала, созданнаго смѣлой иниціативой и неутомимой энергіей Великаго Князя Николая Константиновича.

Ко времени присоединенія Туркестана къ Россіи туземная ирригація уже использовала почти безъ остатка всѣ болѣе или менѣе незначительныя рѣки, борьба съ которыми возможна при примѣненіи тѣхъ простыхъ пріемовъ работъ, которыми располагаетъ туземная техника.

Русскому піонеру оросительнаго дѣла въ Туркестанскомъ краѣ пришлось обратить свою энергію на орошеніе огромныхъ мертвыхъ пространствъ Голодной Степи, прилегающихъ къ Сыръ-Дарьѣ въ среднемъ ея теченіи, гдѣ она представляетъ собою огромную, бурную рѣку, несущуюся съ большою скоростью, въ половодье подымающуюся на высоту до 2-хъ саж. и разливающуюся по поймѣ шириною до 10 верстъ.

Въ распоряженіи Августѣйшаго строители имѣлись однако ограниченныя средства и только простые пріемы работъ, соотвѣтствующіе пріемамъ туземной ирригаціи. Первая смѣлая, широко задуманная попытка Великаго Князя Николая Константиновича перепрудить Сыръ-Дарью каменною плотиною у Ферхатскихъ скалъ окончилась неудачей, а выстроенный въ связи съ этою плотиною арыкъ Бухара, имѣющій длину до 40 верстъ, оставался все время безъ воды и теперь уже частью разрушенъ. Болѣе удачнымъ оказался захватъ воды ниже Беговатскихъ пороговъ, гдѣ Сыръ-Дарья послѣ прорыва тѣснины у Фергатскихъ скалъ выходитъ на равнину, начинаетъ дѣлиться на рукава и образуетъ острова.

Рядъ острововъ, соединенныхъ между собою плотинами, задерживаетъ воду въ протокѣ между островами и берегомъ и такимъ образомъ загоняетъ воду въ каналъ Императора Николая I-го.

Удачное использованіе именно этихъ естественныхъ условій является, однако, одновременно и слабымъ мѣстомъ канала; головныя сооруженія находятся въ рѣкѣ, подвергаясь разрушительному дѣйствію половодья и паводковъ,

мощныхъ ледяныхъ заторовъ и т. д. Ежегодно (иногда даже нѣсколько разъ въ годъ) приходится воздвигать новыя временныя плотины, которыя сносятся потомъ половодьемъ и случайными паводками, причемъ прорвавшаяся вода попутно разрушаетъ острова и увеличиваетъ ширину протоковъ между ними. Прегражденный плотинами протокъ сильно засоряется наносами и удаленіе ихъ связано съ трудностями. Доступъ воды въ протокъ въ низкую воду становится затруднительнымъ. Благопріятныя вначалѣ условія захвата воды съ каждымъ годомъ становятся все хуже и хуже и требуютъ все большихъ и большихъ затратъ; между тѣмъ требованія на воду по мѣрѣ заселенія Голодной Степи непрерывно возрастаютъ: площадь орошаемыхъ земель возросла съ 7000 до 11400 десят.

Ниже головныхъ сооруженій канала Императора Николая I-го Сыръ-Дарья продолжаетъ нести свои воды съ огромною скоростью и разрушаетъ берега въ разныхъ мѣстахъ. Иногда въ одинъ мѣсяцъ она разрушаетъ берегъ на 30—40 саженъ по ширинѣ, причемъ смываемыя глыбы земли обрушиваются въ воду съ грохотомъ пушечнаго выстрѣла, таютъ въ водѣ, какъ сахаръ, и уносятся рѣкою. Чтобы дать представленіе объ этой разрушительной силѣ, приведу еще слѣдующія цифры: по подсчетамъ, у Алка-куля въ 1909 году Сыръ-Дарья смыла и унесла болѣе 60 милліоновъ пудовъ земли; тамъ, гдѣ берегъ возвышался на сажень надъ водою, черезъ нѣсколько мѣсяцевъ получилась глубина четыре съ половиною сажени.

Въ связи съ этою разрушительною работою рѣки происходитъ непрерывное блужданіе ея русла по поймѣ.

Каналъ Императоръ Николая I-го, проведенный по этой поймѣ между низинами, старорѣчьями, озерами въ непосредственной близости отъ рѣки, подвергается постоянно опасности смыва во многихъ мѣстахъ.

Еще до перехода канала въ вѣдѣніе казны былъ прорывъ у Кушъ-тамъ-Галы.

За тѣ десять лѣтъ, въ теченіе которыхъ каналъ Императора Николая I-го находился въ веденіи туркестанскаго управленія земледѣлія и государственныхъ имуществъ, было четыре прорыва канала рѣкою: у Кызылъ-Пчана, у Николаевскаго поселка во время половодья 1902 года, у Ирджара и у Алка-куля. Для защиты канала отъ рѣки дѣлались обводы, удалявшіе каналъ отъ опаснаго мѣста, дамбы укрѣплялись дерновкою, плетнями, барданами и т. д.; строились особыя выправительныя дамбы легкаго типа (земляныя); успѣшно былъ примѣненъ прокопъ Сыръ-Дарьи для удаленія ея отъ канала, хотя мѣра вначалѣ и не давала особой увѣренности въ успѣхѣ и т. д.

Для работъ болѣе капитальныхъ не было средствъ.

Операціонныхъ средствъ, отпускаемыхъ ежегодно на нужды эксплоатаціи въ размѣрѣ 7000 р., не хватаетъ для удовлетворенія теку-

щихъ потребностей при условіи пользованія и наиболѣе простыми и дешевыми пріемами работъ; всѣ сооруженія на каналѣ остаются самаго несовершеннаго типа, каналъ подолгу остается безъ очистки и даже выпускъ воды изъ канала въ отводы затруднителенъ.

По Шахъ-Назарову, ежегодные расходы на эксплоатацію туземныхъ каналовъ, использующихъ преимущественно незначительныя рѣки, составляютъ обыкновенно не менѣе 2—2,5 рубля на орошаемую десятину, причемъ авторъ при переводѣ натуральной повинности на денежную принимаетъ поденную плату рабочему равною 40 коп. Для канала Императора Николая I-го эксплоатаціонный расходъ на орошаемую десятину составляетъ всего 7000: 11400=60 коп., каналъ же имѣетъ длину до 80 верстъ, а орошаемыя имъ земли разбросаны на большой площади и находятся въ пользованіи пришлаго русскаго населенія, мало знакомаго съ примѣненіемъ орошенія. Если выдѣлить расходъ, на содержаніе необходимаго при такихъ условіяхъ личнаго состава—5 стражниковъ (2160-рублей), то остающійся эксплоатаціонный расходъ на десятину выразится только въ 42 коп., причемъ натуральной повинности нѣтъ, а дѣйствительная поденная плата рабочему въ Голодной Степи—одинъ рубль. Сопоставляя всѣ эти цифры, нельзя не сдѣлать вывода, что каналъ Императора Николая I-го находится въ условіяхъ почти въ десять разъ худшихъ, нежели большинство туземныхъ каналовъ. Иначе говоря, каналъ находится въ такихъ неблагопріятныхъ условіяхъ и располагаетъ такими нищенскими эксплоатаціонными рессурсами, что теперь приходится оставить всѣ нарсканія на неправильности его дѣйствія и удивляться тому, что онъ до сихъ поръ еще существуетъ и кое-какъ подаетъ воду въ Голодную Степь.

Необходимо добиваться, чтобы на нужды канала были отпущены такія средства, которыя дали бы каналу возможность выполнять предъявляемыя къ нему требованія.

При составленіи въ 1899 году первоначальнаго проекта орошенія 45000 десятинъ въ сѣверо-восточной части Голодной Степи опредѣленно предполагалось пожертвовать головою и первыми 40 верстами канала Императора Николая I-го, недостаточно защищенными отъ рѣки.

Въ сущности, къ тому же привело бы въ концѣ концовъ осуществленіе предложенія Августѣйшаго строителя канала—пропустить воду для земель Голодной Степи взамѣнъ канала Императора Николая I-го по готовой части магистральнаго канала, выстроенной на болѣе или менѣе солидныхъ инженерныхъ началахъ и дающей гарантіи непрерывнаго пропуска воды въ Голодную Степь. Однако, такъ какъ это имѣетъ много техническихъ и экономическихъ неудобствъ и вмѣстѣ съ тѣмъ привело бы къ полной потерѣ канала Императора Николая I-го и той добавочной площади въ 10000—15000 десятинъ, которая будетъ имъ орошаться одновре-

менно съ функціонированіемъ новаго магистральнаго канала для орошенія 45000 десят., то теперь такая жертва признается нежелательной, и каналъ Императора Николая I-го, имѣющій большое историческое значеніе, какъ первый русскій дѣйствующій каналъ въ краѣ, предполагается сохранить, привести его въ порядокъ, т. е. дать ему достаточно прочныя и удовлетворительныя сооруженія, отвести для его сѣти ;раіонъ въ восточномъ углу Голодной Степи, провести въ жизнь опредѣленный порядокъ водопользованія и эксплоатаціи. Въ связи съ разработкою вопросовъ, касающихся упорядоченія канала и испрошенія на это средствъ, въ 1909-омъ году туркестанская изыскательная партія съ инженеромъ Семеновымъ во главѣ уже произвела необходимыя изслѣдованія.

Съ особой остротой выступаетъ въ данное время вопросъ о защитѣ канала Императора Николая I-го отъ рѣки около озера Алкакуль въ томъ мѣстѣ, гдѣ въ прошломъ году произошелъ прорывъ канала Сыръ-Дарьею и гдѣ теперь она угрожаетъ смыть дамбы новаго обвода 1909 года. Мѣрами защиты могли бы быть:

1) удаленіе канала отъ рѣки, т. е. устройство новаго болѣе длиннаго обвода;

2) Удаленіе рѣки отъ канала, т. е. устройство прокопа для спрямленія петли рѣки;

3) Укрѣпленіе берега рѣки противъ опаснаго мѣста.

Устройство обвода затруднительно и требуетъ большихъ средствъ, такъ какъ для его осуществленія необходимо прорыть глубокую выемку и насыпать на большомъ протяженіи высокія дамбы (до 4 саженъ общей высоты) частью въ глубокомъ озерѣ (глубина почти 2 сажени).

Устройство прокопа затруднительно, такъ какъ петля рѣки находится еще въ періодѣ ея образованія, перехватъ ея еще очень длиненъ и углубленіе прокопа затруднительно безъ землечерпательной машины.

Укрѣпленіе берега такой большой и быстрой рѣки, какъ Сыръ-Дарья, потребовало-бы обширныхъ выправительныхъ работъ со вложеніемъ въ дѣло огромнаго количества камня, котораго на мѣстѣ нѣтъ, а привозить надо издалека. Такія работы въ поймѣ Сыръ-Дарьи могутъ потребовать сотенъ тысячъ или даже милліоновъ рублей и многихъ лѣтъ времени.

Жизнь не ждетъ, а потому мѣстнымъ дѣятелямъ пришлось измышлять мѣры, которыя при сравнительно незначительной общей стоимости допускали-бы спѣшное ихъ осуществленіе и подавали-бы надежду на положительный результатъ, хотя бы даже и безъ полной увѣренности въ успѣхѣ. Первыя предложенія сводились къ устройству прокопа съ легкой шпорой въ рѣкѣ и временному впредь до начала дѣйствія прокопа укрѣпленію берега упрощенными, наиболѣе дешевыми способами. По смѣтѣ стоимость ;работъ исчислялась въ 78300 рублей, причемъ успѣхъ работъ за-

висѣлъ въ значительной степени отъ быстроты приступа къ нимъ.

Центральныя учрежденія Главлавнаго Управленія Земледѣлія и Землеустройства, отъ которыхъ зависѣло исходатайствованіе необходимыхъ средствъ, высказались противъ примѣненія предложенныхъ мѣръ и дали общія указанія, согласно которыхъ въ декабрѣ мѣсяцѣ прошлаго года мнѣ и было предложено произвести изысканія и составить проектъ устройства новаго обвода канала. Проектъ мною нынѣ представленъ въ Туркестанское Управленіе Земледѣлія и Государственныхъ Имуществъ для дальнѣйшаго направленія.

Въ виду важности вопроса о спасеніи земель Голодной Степи отъ безводья и въ виду того интереса, который проявленъ былъ въ печати къ положенію канала Императора Николая I-го я считаю своимъ долгомъ подѣлиться тѣми предположеніями, которыя выражены въ моемъ проектѣ и послѣ осуществленія которыхъ, по моему мнѣнію, можно въ значительной степени успокоиться за судьбу орошаемыхъ земель въ Голодной степи въ 1910-омъ году.

Устройство болѣе или менѣе удовлетворительнаго обвода потребуетъ значительныхъ средствъ (болѣе 100000 рублей) и почти года времени для окончанія работъ. Начать борьбу съ рѣкою въ предположенномъ ранѣе объемѣ теперь поздно, да и вообще очень трудно. Такъ какъ прорывъ существующихъ дамбъ канала вполнѣ вѣроятенъ вскорѣ послѣ наступленія половодья, т. е. въ іюнѣ мѣсяцѣ текущаго года, то необходимо имѣть хоть какое-нибудь средство, которое дало-бы надежду, что и послѣ прорыва канала Императора Николая I го Голодная Степь не останется безъ воды. Такимъ средствомъ является временный впускъ канала Императора Николая I-го въ магистральный каналъ для орошенія 45000 десятинъ и обратный выпускъ тремя верстами ниже, который не внесетъ никакого разстройства въ водопользованіе существующей ирригаціонной сѣти. Магистральный каналъ на протяженіи этихъ трехъ верстъ проведенъ частью по косогору древняго берега рѣки Кіата на разстояніи почти 2-хъ верстъ отъ рѣки, а потомъ врѣзается глубокою выемкою въ Кіатъ; этотъ участокъ уже вполнѣ готовъ.

Взаимное положеніе дна каналовъ вполнѣ допускаетъ ихъ сліяніе въ этомъ мѣстѣ. Наиболѣе серьезное обстоятельство, которое говоритъ противъ соединенія каналовъ: ожидаемое большое отложеніе насосовъ въ магистральномъ каналѣ при пропускѣ сравнительно незначительного количества воды, а также ожидаемое проростаніе камышомъ. Въ связи съ этими обстоятельствами длина вводимаго въ дѣйствіе готоваго участка магистральнаго канала доведена до минимума.

Къ счастью, въ районѣ озера Алка-Куль есть въ наличности условія, которыя даютъ возможность значительно сократить заиленіе канала устройствомъ осадочнаго бассейна для наносовъ

на пути впуска изъ канала Императора Николая I-го въ мигистральный каналъ. Устройство такого бассейна здѣсь осуществимо при незначительныхъ затратахъ.

Что же касается нежелательнаго прорастанія камышемъ, то послѣ закрытія впуска канала Императора Николая I-го и осушенія такимъ путемъ русла магистрали камышъ можно сжечь или уничтожить инымъ путемъ, а пропускъ въ магистральный каналъ полнаго расхода воды при слоѣ воды въ 4 аршина не дастъ возможности камышу подняться снова.

Предлагаемыя мною мѣры послѣ отпуска необходимыхъ средствъ могутъ быть осуществлены безъ особой спѣшки въ мѣсяцъ или полтора, т. е. закончены задолго до половодья. Средства потребуются сравнительно очень небольшія.

Пока что будетъ функціонировать каналъ Императора Николая I-го по прежнему до того момента, когда Сыръ-Дарья подойдетъ къ нему вплотную и неизбѣжность прорыва обвода 1909 г. станетъ очевидной. Такъ какъ къ этому моменту всѣ основныя работы по устройству сліянія съ магистральнымъ каналомъ будутъ закончены, то самый впускъ потребуетъ 3—4 дней. Непрерывное снабженіе водою селеній Голодной Степи будетъ обезпечено.

Молодой, еще самостоятельно не выступавшій въ жизни, но уже достаточно крѣпкій, готовый къ борьбѣ— магистральный каналъ подастъ въ минуту опасности руку помощи своему старшему брату—каналу Императора Николая I-го, который первый призвалъ къ жизни мертвыя до того пространства Голодной Степи.

А. Курсишъ.

Когда у насъ будетъ земство?

Совѣщаніе по вопросу о введеніи земства въ Туркестанскомъ краѣ пока не принесло положительныхъ результатовъ въ смыслѣ выясненія этого вопроса. Осталось широкое поле для разныхъ догадокъ и предположеній. Мѣстная пресса изъ силъ выбивается, чтобы разрѣшить эту проблему. Особенно серьезно заняты этимъ „Туркестанскія Вѣдомости"—газета оффиціальная и поэтому пользующаяся оффиціальными директивами и „Турк. Курьеръ",—газета частная, для которой важно разобрать вопросъ pro и contra и которая поэтому старается дать мѣсто каждому, желающему высказаться по вопросу, не считаясь съ тенденціями авторовъ статей. Можно отмѣтить при этомъ одно печальное явленіе: авторы статей какъ одной, такъ и другой газеты стараются писать эзоповскимъ языкомъ.

„Туркестан. Вѣдомости" бьютъ на либерализмъ и даже упрекали „Туркестанскій Курьеръ" (надо было упрекать автора статьи) въ отсутствіи либерализма, но изъ

послѣднихъ статей „Т. В.“ становится яснымъ, что либерализмъ ихъ—не больше, какъ покушеніе съ негодными средствами на вниманіе читателя. Въ разрѣшеніе вопроса о введеніи земства „Туркестанскія Вѣдомости“ ничего не внесли, кромѣ пустой болтовни. Въ послѣднихъ же статьяхъ, несмотря на пожеланія и „необходимость земства, ясно читается между строкъ, что земство въ Туркестанскомъ краѣ создать нельзя... Не забывайте, что такъ пишетъ оффиціальный органъ. Въ „Турк. Курьерѣ“ нельзя высказать всего, что думаешь, несмотря на желаніе редакціи дать возможность каждому высказаться какъ можно обстоятельнѣе. Читателю извѣстно—почему? Вслѣдствіе этого, если „Т. В.“ пишутъ эзоповскимъ языкомъ съ цѣлью не запугать „либеральнаго“ читателя, то „Тур. К.“—по необходимости.

Мы пока не станемъ разсматривать вопроса, въ какую форму выльется у насъ земство (если оно только будетъ) и не станемъ предлагать своихъ проектовъ, ибо при современномъ положеніи вещей они непріемлемы, а лишь повѣдаемъ читателю поучительную исторію о введеніи земства въ Оренбургской губерніи.

Знаете ли, что этотъ вопросъ тамъ разрабатывается... пятьдесятъ лѣтъ.

31 августа 1865 года министерство внутреннихъ дѣлъ, „признавая своевременнымъ“ введеніе земскихъ учрежденій, предложило оренбургскому генералъ-губернатору г. Крыжановскому высказаться по вопросу о введеніи земства въ Оренбургской губ.

Н. А. Крыжановскій въ то время былъ однимъ изъ наилиберальнѣйшихъ администраторовъ. Общественная дѣятельность, общественное самосознаніе, общественныя организаціи — все это пользовалось его симпатіями.

Но дѣло пошло канцелярскимъ порядкомъ. Въ ноябрѣ 1866 года Крыжановскій увѣдомляетъ министерство внутреннихъ дѣлъ: „что касается до Оренбургской губерніи, то мною до настоящаго времени не получено соображеній губернскаго начальства по предложеннымъ вашимъ превосходительствомъ вопросамъ. Но имѣя въ виду, что большинство населенія этой губерніи состоитъ изъ казаковъ оренбургскаго войска и башкиръ, нельзя не придти къ убѣжденію, что введеніе здѣсь земскихъ учрежденій требуетъ сложныхъ соображеній и по необходимости должно замедлиться на нѣкоторое время“.

Крыжановскій рѣшилъ личнымъ предстательствомъ и вліяніемъ ускорить ходъ дѣла въ Петербургѣ, но долженъ былъ отказаться отъ этого, такъ какъ гражданскій губернаторъ заявилъ, что къ отъѣзду—несмотря на то, что предписалъ всѣмъ недоставившимъ еще свѣдѣній, подъ угрозой наказанія, доставить ихъ въ теченіе пяти дней—не сможетъ сообщить свой проектъ.

21 апрѣля 1857 года къ генералъ-губернатору поступили предположенія гражданскаго начальства. Они сводились къ тому, что 1) несправедливо было бы обла-

гать земли казаковъ въ равной степени съ землями простыхъ обывателей; 2) *киргизъ не допускать вовсе до участія въ земскомъ самоуправленіи* и т. д.

Крыжановскій составилъ комитетъ изъ предводителей дворянства, представителей губернскихъ учрежденій, казаковъ и башкиръ.

Комитетъ о необходимости земства далъ отвѣтъ утвердительный, но не знали, что дѣлать съ башкирами и казаками. Башкиры представляли изъ себя преобладающую массу населенія, но стояли на низкой степени развитія. Наконецъ рѣшили создать избирательныя куріи, съ такимъ разсчетомъ, что башкиры входятъ туда въ значительной пропорціи.

31 декабря 1868 г. проектъ былъ отправленъ въ министерство, затѣмъ попадаетъ въ II отд. собственной Его Императорскаго Величества канцеляріи и лежитъ тамъ безъ движенія. Крыжановскій принимаетъ всѣ мѣры, чтобы тронуть дѣло впередъ, но его успокаиваютъ и сообщаютъ, черезъ нѣсколько времени что замѣчанія канцеляріи касаются весьма существенныхъ вопросовъ и проектъ будетъ возвращенъ для переработки.

Въ 1872 году проектъ снова оказался въ Оренбургѣ. Изъ дальнѣйшаго стало ясно, что вопросъ о земствѣ затягивается умышленно, несмотря на Высочайшее повелѣніе 1864 г. о введеніи земства и, что замѣчанія къ проекту, сдѣланныя Урусовымъ — малоцѣнны.

27 февраля 1873 года министерство внутреннихъ дѣлъ внесло свой проектъ введенія земства въ Оренбургской губ. въ Государственный Совѣтъ, гдѣ онъ пролежалъ до 22 декабря того-же года. Когда, наконецъ, состоялось засѣданіе Госуд. Сов. прежде всего постарался выяснить, на основаніи какихъ причинъ осталось невыполненнымъ Высочайшее повелѣніе. Причину нашли въ раздѣленіи Оренбургской на двѣ: Уфимскую и Оренбургскую. Конечно, это была только отговорка.

Совѣтъ въ общемъ согласился съ проектомъ но отклонилъ его лишь потому, что не были указаны существовавшія въ казачьемъ войскѣ денежныя и натуральныя повинности, а также какія изъ нихъ должны быть оставлены въ числѣ земскихъ. Было предложено дать указанія. Но министерство внутреннихъ дѣлъ этого не выполнило и проектъ лежалъ похороненнымъ въ теченіе 23 лѣтъ!

Только 15 февраля 1896 г., разсматривая смѣты земскихъ доходовъ и расходовъ, Госуд. Совѣтъ пришелъ къ убѣжденію что министерству вн. дѣлъ необходимо войти съ проектомъ реорганизаціи земскаго хозяйства во многихъ губерніяхъ, а въ томъ числѣ и Оренбургской.

24 марта 1897 г. министерство внутреннихъ дѣлъ запросило оренбургскаго губернатора: „представляется ли по вашему мнѣнію возможнымъ примѣнить въ ввѣренной вамъ губерніи названный законъ (полож. о земск. учрежден. 1890 г.) въ полномъ его объемѣ или съ какими либо особенностями.

Началась работа. Разсылались опросные листы, собирались статистическія данныя. 13 декабря 1897 г. состоялось несколько засѣданій совѣщанія по этому вопросу. Оказалось, что казаки были поставлены въ очень выгодныя условія по отношенію къ распредѣленію земскихъ повинностей и нежелали земства. Совѣщаніе высказалось за невозможность объединенія территорій въ одно земское хозяйство въ случаѣ введенія земскихъ учрежденій.

Рѣшили ввести особыя „окружныя земства" на основѣ Положенія о земствѣ 1890 г. губернаторъ 20 января 1898 г. представилъ проектъ въ министерство и высказалъ мнѣніе, что земскія учрежденія, внося только новый налогъ на населеніе, не дадутъ ему ничего новаго и такого, чего-бы не могли дать ему при извѣстныхъ условіяхъ существующія учрежденія.

Проектъ пріобщили къ архиву!

12 іюня 1903 г. въ Оренбургской губ. былъ командированъ директоръ канц. мин. внутр. дѣлъ по дѣламъ дворянства Мордвиновъ „для изученія условій земскаго хозяйства и соображенія по совѣщанію съ мѣстными дѣятелями тѣхъ основаній, на коихъ могли бы быть преобразованы учрежденія, вѣдающія нынѣ этимъ хозяйствомъ.

На совѣщаніи было признано желательнымъ введеніе земствъ на гражданской территоріи—о казакахъ и не говоримъ.

Мордвиновъ уѣхалъ и вопросъ о земствѣ въ Оренбургской губ. сдѣлался достояніемъ Государственной Думы.

Какая-же мораль изъ этого?

А мораль та, что даже при наличности Высочайшаго повелѣнія земскія учрежденія на свѣтъ Божій не появлялись.

У насъ же на лицо лишь... пожеланія Государственной Думы.

М. Антоновичъ.

Ташкентская желѣзная дорога.

По представленнымъ въ Управленіе жж. дд. предварительнымъ свѣдѣніямъ о результатахъ эксплоатаціи Ташкентской дороги въ 1909 г., оказалось, что въ минувшомъ году доходность дороги по сравненію съ 1908 г., возрасла на 15,5 % вслѣдствіе значительно увеличившихся перевозокъ, а именно:

Перевезено:	въ 1909 г.	Болѣе прошл. 1908 г. на	Болѣе смѣтн. предположен.
	ТЫСЯЧЪ.		
пассажировъ	1.611	238	411
грузовъ больш. ск.	1.784	500	584
„ малой „	102.543	28.475	26.542
сдѣлано поѣздо-верстъ	10.355	1.247	655
Выручено:			
За перевозку пассажировъ, багажа и грузовъ большой скорости .	2.800	452	636
За перевозку грузовъ малой скорости	14.500	2.100	3.767
Разныя статьи дохода	1.104	338	
	18.404	2.890	4.404
		менѣе	менѣе
Израсходовано	14.989	1.562	250
Превышеніе доход. надъ расходами .	3.415 т/р.		

Правда, свѣдѣнія эти хотя предварительныя, такъ какъ за послѣдніе мѣсяцы полнаго отчета еще нѣтъ, тѣмъ не менѣе, если нѣкоторыя цифровыя данныя и измѣнятся, то сравнительно на небольшую сумму.

Доходность дороги повысилась главнымъ образомъ вслѣдствіе значительно возросшей перевозки хлѣбныхъ грузовъ, именно: пшеницы, повысившейся перевозки рыбныхъ товаровъ, соли и проч. Расходъ по сравненію съ 1908 г. сократился по слѣдующимъ причинамъ: отъ пониженія стоимости нефти, каковой расходъ составляетъ $^1/_5$ часть всѣхъ эксплоатаціонныхъ расходовъ, экономія получилась въ 300 т/р. кромѣ, того расходъ сократился и самой нефти на единицу пробѣга, вслѣдствіе улучшеннаго состоянія паровозовъ и болѣе бережливаго расходованія топлива паровозными машинистами, по претензіямъ за утрату

грузовъ уплачено меньше на 100 т/р. на расчистку пути отъ снѣжныхъ заносовъ израсходовано менѣе на 100 т/р.; размывы пути отъ разлива р. Сыръ-Дарьи обошлись въ 1908 г. болѣе 100 т/р., тогда какъ въ 1909 г. ихъ не было. На смѣну шпалъ израсходовано меньше на 583 т/р., что объясняется тѣмъ, что въ 1908 г. пришлось смѣнить одинъ милліонъ шпалъ, уложенныхъ въ путь во время постройки дороги, срокъ службы которымъ истекъ, а въ 1909 г. смѣнено всего около 500 тыс. штукъ, т. е. въ 1909 г. смѣна шпалъ подошла почти къ нормѣ. Кромѣ приведенныхъ причинъ на сокращеніе эксплоатаціонныхъ расходовъ оказала вліяніе и болѣе установившаяся организація хозяйства дороги.

Такимъ образомъ, коэфиціентъ эксплоатаціи (т. е. частное отъ дѣленія суммы расхода на сумму дохода) вмѣсто 1,09 предположеннаго смѣтою понизился въ 1909 г. до 0,81.

Гашишъ и фанатизмъ.

Въ газетѣ «Россія» И. Левитовъ объясняетъ бухарское возстаніе .. дѣйствіемъ гашиша.

Вотъ что онъ пишетъ по этому поводу.

«Телеграфъ извѣстилъ насъ, что въ Бухарѣ произошла рѣзня между шіитами и суннитами, подобно тому, какъ оно имѣло мѣсто въ 70-хъ годахъ прошлаго столѣтія, въ Кульджѣ между китайскими мусульманами, а также и во многихъ другихъ мѣстахъ. Подобныя явленія у мусульманъ вовсе не рѣдкость и удивляться этому нечего.

Борьба между шіитами и суннитами замѣтна по всей Закаспійской линіи. Напримѣръ, въ Асхабадѣ построена громадная (единственная въ мірѣ) мечеть бабистовъ, проповѣдь которыхъ воспрещена въ самой Персіи, въ то время какъ на русской территоріи бабисты имѣютъ полное право гражданства. Между разнородными элементами мусульманства распри и кровавыя расправы бываютъ постоянно.

Мнѣ важно обратить вниманіе въ этомъ письмѣ на замѣчательный фактъ, по которому мы всегда можемъ предвидѣть подобную рѣзню,—во время такого броженія сильно увеличивается количество потребляемаго мусульманами гашиша.

Въ своей брошюрѣ «Бузо-гашишный вопросъ на нашихъ окраинахъ» я и привелъ (см. стр. 19) количество контрабанднаго гашиша, попадающаго въ русскіе предѣлы черезъ Бадахшанъ въ Бухарѣ. По отчету англійскаго консула въ

Кашгарѣ г. Макорнея видно, насколько сильно увеличился въ послѣднее время ввозъ наркотиковъ въ Россію (черезъ Бухару).

Количество наркотиковъ въ безпокойное у мусульманъ время сильно увеличивается, что и замѣтно стало англичанамъ еще въ 1857 г. во время возстанія сипаевъ въ Индіи, и съ тѣхъ поръ они внимательно слѣдятъ за колебательными движеніями распространенія наркотиковъ среди мусульманъ.

Въ особенности, это замѣтно среди гашишекурителей. Гашишъ служитъ сильно возбуждающимъ средствомъ въ революціонное время для мусульманъ, такъ же, какъ алкоголь для русскихъ людей. Изслѣдователи мусульманской жизни обыкновенно пользуются таблицами выкуриваемаго гашиша, какъ термометромъ для изслѣдованія внутренней температуры мусульманскаго броженія

Жизнь русскихъ мусульманъ такъ мало изслѣдована, что извѣстіе изъ Бухары о томъ, что тамъ вырѣзано столько-то мусульманъ, падаетъ, какъ снѣгъ на голову. Если бы мы только внимательно отнеслись къ этимъ явленіямъ, то мы бы могли предвидѣть и предотвратить подобнаго рода случайности. Будь у насъ возможность контролировать количество выкуриваемаго гашиша въ Туркестанѣ, мы бы всегда были въ курсѣ дѣла о степени возбужденности мусульманской черни. То же самое имѣло мѣсто и во время андижанскаго возстанія, такъ какъ количество выкуреннаго гашиша въ то время сильно увеличи[illegible] [illegible]всемъ Ошскомъ округѣ, одновременно со всѣ[illegible]ми фанатическими изступленіями мусульманъ».

Удивительно, какъ просто открывается ларчикъ; уничтожьте гашишъ— не будетъ рѣзни, слѣдите за потребленіемъ его—будете знать, когда начнется рѣзня.

М. А.

Проникновеніе австрійскихъ товаровъ въ сѣверную Персію.

Въ Россіи составилось убѣжденіе, что въ сѣверной Персіи распространены лишь русскіе товары, главнымъ образомъ, издѣлія русскихъ мануфактурныхъ фабрикъ.

Эту иллюзію разрушаетъ корреспондентъ «Баку» изъ Асхабада, А. Родной.

По его словамъ, въ сѣверной провинціи Хоросанъ (города Мешхедъ, Себзеваръ, Каганъ и др.) появились съ 1908 года австрійскіе товары, какъ-то: ситецъ, кисея, бязь. За короткое время они завоевали прочное положеніе. Рисунки присылаемыхъ австрійскихъ товаровъ чрезвычайно нравятся восточнымъ покупателямъ, благодаря крупнымъ фантастическимъ цвѣтамъ, букетамъ, яркости красокъ и т. п. Надо было спеціально изучить вкусы населенія. Поэтому предполагаютъ, что австрійскіе фабриканты командировали предварительно въ Персію художниковъ

и мастеровъ для изученія мѣстныхъ рисунковъ и вкусовъ населенія. Кромѣ того, австрійскія кисея и бязь бѣлѣе русской, тоньше и изящнѣе по выдѣлкѣ.

Знаменательно, что выписка въ провинцію австрійскихъ товаровъ упорно увеличивается не по годамъ, а буквально по мѣсяцамъ. Два года назадъ ихъ совсѣмъ не было въ Хоросанѣ, въ настоящее же время можно встрѣтить въ большинствѣ лавокъ и магазиновъ.

Наконецъ, на мѣстѣ, въ Хоросанской провинціи, австрійскіе товары обходятся торговцамъ дешевле, чѣмъ лодзинскіе и московскіе.

Благодаря нашимъ тарифамъ, доставка въ Хоросанъ австрійскихъ товаровъ обходится дороже доставки лодзинскихъ всего на 4 съ половиной копѣйки съ пуда. Разница очень незначительная.

Все это должно заставить серьезно призадуматься нашихъ фабрикантовъ и торговцевъ, поразмыслить надъ мѣрами, которыми можно было удержать въ нашихъ рукахъ этотъ почти единственный нашъ внѣшній рынокъ... И поторопиться пока еще не поздно.

На что, кажется, прочный рынокъ для русскихъ фабрикантовъ представляла собою сѣв. Персія, а и тотъ мы можемъ легко потерять, если будемъ слѣдовать рутинѣ... Чуть начнется въ Персіи умаленіе русскихъ торговыхъ интересовъ, московскіе и иные мануфактуристы будутъ винить во всемъ нашу дипломатію и власти... Зачѣмъ, молъ, пустили австрійцевъ и т. п. Нѣтъ, вы сами совершенствуйтесь!

К. Тимаевъ.

Еще о каналѣ Имп. Николая 1-го въ Голодной Степи.

Наконецъ-то послѣдовало со стороны лица, близко стоящаго къ дѣлу, разъясненіе тревожнаго вопроса о судьбѣ канала Имп. Николая 1-го въ Голодной Степи, иначе называемаго Великокняжескимъ арыкомъ, который орошаетъ около 11 тыс. десятинъ и питаетъ нѣсколько русскихъ селеній.

Въ отвѣтъ на корреспонденціи въ „С.-Пет. Вѣд." и статьи „Туркест. Кур." о вновь угрожаемой каналу опасности быть размытымъ р. Сыръ-Дарьей въ мѣстности, гдѣ озеро Алка-куль, и о крайней медлительности въ принятіи мѣръ для предупрежденія такого размыва,—появилось въ № 17 „Турк. Вѣд." весьма детальное изложеніе А. Курсиша (инженеръ путей сообщенія, производитель работъ по сооруженію магистральнаго канала для орошенія Голодной Степи) настоящаго положенія вещей.

Выступленіе А. Курсиша съ его выдержанной и обстоятельной

статьей необходимо привѣтствовать, такъ какъ этимъ выступленіемъ авторъ разсѣялъ нѣкоторыя сомнѣнія, но нельзя сказать, чтобы сомнѣнія эти были цѣликомъ совершенно удалены...

Мое вниманіе невольно было остановлено тѣмъ обстоятельствомъ, что А. Курсишъ не разъ упомянулъ въ своей статьѣ о проявленномъ со стороны печати интересѣ къ положенію канала Имп. Николая 1-го.

Да, интересъ былъ проявленъ не только мѣстными газетами, но и столичными и интересъ большой. Обуславливалось это тѣмъ, что печать поставила себѣ задачей такъ или иначе высказать свои заботы о судьбѣ населенія (русскаго и туземнаго), жизнь и благосостояніе котораго тѣсно связано съ судьбою Великокняжескаго арыка. Надо поставить въ заслугу газетъ, что онѣ, по мѣрѣ силъ и разумѣнія своего, заблаговременно стали тревожиться за судьбу канала и указывать на необходимость немедленнаго принятія казною мѣръ къ огражденію канала отъ угрожаемаго размыва.

По всей вѣроятности, и А. Курсишъ стоялъ на этой точкѣ зрѣнія, такъ какъ онъ прямо говоритъ, что, въ виду проявленнаго печатью интереса къ положенію канала Имп. Николая 1 го, онъ считаетъ своимъ долгомъ подѣлиться своими предположеніями объ охраненіи канала отъ размыва, которыя должны въ значительной степени успокоить за судьбу орошаемыхъ земель въ Голодной Степи.

Въ наше время съ печатью мало считаются, а потому мы должны особо выдѣлить въ данномъ случаѣ отношеніе А. Курсиша къ мнѣнію „С.-Пет. Вѣд." и „Турк. Кур." по поводу канала Имп. Николая 1-го въ Голодной Степи.

На основаніи полныхъ достовѣрности данныхъ авторъ статьи дѣлаетъ выводъ, что каналъ Имп. Николая 1-го находится въ условіяхъ почти въ десять разъ худшихъ, нежели большинство туземныхъ каналовъ. Иначе говоря, пишетъ А. Курсишъ, каналъ находится въ такихъ неблагопріятныхъ условіяхъ и располагаетъ такими нищенскими эксплоатаціонными рессурсами, что теперь приходится оставить всѣ нарканія на неправильности его дѣйствія и удивляться тому, что онъ до сихъ поръ еще существуетъ и кое-какъ подаетъ воду въ Голодную Степь. Необходимо добиваться, чтобы на нужды канала были отпущены такія средства, которыя далибы возможность каналу выполнять предъявляемыя къ нему требованія...

Спасибо за откровенное признаніе!

Оказывается, что нужно служить благодарственныя молебствія за то, что каналъ до сихъ поръ существуетъ, а не высказывать нарканія на неправильности въ его дѣйствіи, принесшія уже не мало тяжелыхъ убытковъ населенію Голодной Степи.

Впрочемъ, виноватъ! за послѣднее время столичныя и мѣстныя газеты дѣлали упреки не самому каналу Имп. Николая 1-го, а лицамъ, въ рукахъ которыхъ было

распоряженіе этимъ каналомъ.

Мнѣ кажется, отсутствіе потребныхъ въ достаточномъ количествѣ денежныхъ средствъ на содержаніе въ исправности канала Имп. Николая 1-го надо отнести къ винѣ тѣхъ учрежденій, которыя вѣдаютъ судьбою канала. Главнымъ образомъ, по моему, въ данномъ случаѣ вина ложится на отдѣлъ земельныхъ улучшеній (имѣется такой при департаментѣ земледѣлія!), которому мѣстное учрежденіе дѣлаетъ представленія объ отпускѣ необходимыхъ средствъ на ирригаціонныя сооруженія въ Туркестанск. краѣ. Вина эта еще болѣе усугубляется тѣмъ, управляющіе названнымъ отдѣломъ генер.-лейт. Жилинскій и князь В. И. Мусальскій, а также вице-предсѣдатель гидрологическаго комитета С. Ю. Раунеръ, лично ознакомились на мѣстѣ съ серьезнымъ значеніемъ для страны Великокняжескаго арыка.

Вѣдь эти начальствующія и власть имѣющія лица пріѣзжали къ намъ въ Туркестанъ не для прогулки, а тѣмъ паче не для полученія прогонныхъ и суточныхъ денегъ. Они командировались для ознакомленія съ насущными нуждами нашими. Почему-же до сихъ поръ нужда, напримѣръ, въ увеличеніи ассигнованій на ремонтъ и содержаніе канала Имп. Николая 1-го не удовлетворена?!

Мѣстные дѣятели совершили то, что могли. Бывшій завѣдывающій каналомъ техникъ А. М. Лундингъ, благодаря своей настойчивости, добился все-таки того, что средства на необходимую очистку канала были даны казной. Послѣ очистки каналъ сталъ давать больше воды.

Далѣе А. Курсишъ передаетъ, что въ декабрѣ минувшаго года петербургское правительство предложило ему произвести изысканія и составить проектъ устройства новаго обвода канала въ угрожаемомъ размывомъ мѣстѣ. Такъ какъ на сооруженіе обвода требуются значительныя затраты (болѣе 100 тыс. рублей!) и почти годъ времени на производство самыхъ работъ, то инженеръ А. Курсишъ вынужденъ былъ найти исходъ изъ создавшагося серьезнаго положенія, а именно: онъ остановился на средствѣ, которое дастъ надежду, что и послѣ прорыва канала Имп. Николая 1-го Голодная Степь не останется безъ воды. „Такимъ средствомъ является (цитирую по статьѣ А. Курсиша) временный впускъ канала Имп. Николая 1-го въ магистральный каналъ для орошенія 45 тыс. десятинъ и обратный выпускъ тремя верстами ниже, который не внесетъ никакого разстройства въ водопользованіе существующей ирригаціонной сѣти“. Такимъ образомъ, пригодилась сооруженная уже часть магистральнаго канала.

Ну, и слава Богу! Населеніе Голодной Степи, пользующееся водою изъ Великокняжескаго арыка для орошенія своихъ полей, можетъ теперь облегченно вздохнуть...

Мы, съ своей стороны, также будемъ вполнѣ удовлетворены, если надежды на благополучный

исходъ при данномъ положеніи вещей увѣнчаются успѣхомъ.

Лично я, однако, не могу не замѣтить слѣдующаго.

Размывъ рѣкою Сыръ-Дарьею канала Имп. Николая 1-го случился въ началѣ іюня минувшаго года. Цѣлый мѣсяцъ тогда ушелъ на экстренныя работы по окончанію устройства обводнаго канала. Предложеніе-же инженеру А. Курсишу произвести изысканія и составить проектъ новаго обвода послѣдовало лишь въ декабрѣ. Такимъ образомъ было упущено полгода цѣннаго времени, и инж. Курсишъ, какъ видно изъ его статьи, былъ поставленъ въ безвыходное положеніе. Нѣтъ ни денегъ, ни времени, а каналу угрожаетъ опасность!

А. Курсишъ остановился предъ значительными расходами на устройство новаго обвода. Для меня это странно.

Отпуская ежегодно на содержаніе канала лишь 7 тыс. рублей и получая эти деньги обратно за арендуемыя вдоль канала участки казенной земли, казна, какъ будто, не рѣшается затратить сотню тыс. рублей, чтобы вполнѣ обезопасить каналъ, который имѣетъ громадное экономическое и государственное значеніе, хотя-бы въ видѣ заселенія Голодной Степи русскимъ элементомъ, и который, какъ выясняется, будетъ продолжать самостоятельное существованіе даже послѣ окончанія постройки магистральнаго канала!..

Смѣю думать, что предъ значительными расходами въ данномъ случаѣ не слѣдовало останавливаться. Осторожная экономія при настоящемъ положеніи вещей можетъ повести къ печальнымъ результатамъ.

Я не компетентенъ въ техническихъ вопросахъ, а потому не беру на себя смѣлости входить въ оцѣнку проекта инж. А. Курсиша, изложеннаго имъ въ № 17 „Турк. Кур.", представляя это сдѣлать спеціалистамъ, но считалъ своимъ долгомъ высказать то, что выше мною написано.

Въ заключеніе остается еще отмѣтить одну характерную черточку.

Если предположенія А. Курсиша будутъ осуществлены, „то можно въ значительной степени успокоиться, по его собственному признанію, за судьбу орошаемыхъ земель въ Голодной Степи въ 1910 мъ году".

А въ 1911 или 1912 г.?!

Этотъ вопросъ, какъ будто, остается невыясненнымъ.

К. Тимаевъ.

Въ Бухарѣ.

Своеобразное устройство бухарскаго города, отсутствіе какой бы то ни было регистраціи населенія и тотъ хаосъ и смятеніе, который царилъ среди туземцевъ и властей бухарскаго ханства внесли много путаницы въ истинное положеніе вещей. Если бы все время руководствоваться оффиціальными данны-

ми, то можно было бы лишь установить слѣдующее. Были безпорядки нѣсколько десятковъ жертвъ, теперь все утихло и царитъ миръ и покой. Но выясняющіяся съ каждымъ днемъ новые подробности, говорятъ совсѣмъ иное. Религіозный мотивъ былъ лишь начальнымъ импульсомъ, бакфордовымъ шнуромъ къ той разрывной бомбѣ, которая долгіе годы начинялась народомъ изъ его національныхъ чувствъ, обидъ, гнета, притѣсненіи и пр.

Ни въ одной, кажется, странѣ не поставлена такъ безалаберно система податей, какъ въ Бухарѣ. Вся цѣль управителей сводится лишь къ тому, что бы какъ можно больше содрать съ населенія натурою и деньгами. Приставленные къ этому особые чиновники—амлякдары (сборщики податей) ретиво исполняютъ велѣніе высшихъ сановниковъ и дерутъ съ туземца заразъ по 7 шкуръ. Многочисленные законные государственные сборы ровно тасуются съ безчисленнымъ множествомъ всякихъ незаконныхъ поборовъ, отъ которыхъ буквально стонетъ бухарскій народъ. Ретивость этихъ чиновниковъ объясняется главнымъ образомъ тѣмъ, что никто изъ нихъ не получаетъ опредѣленнаго жалованія, а каждый кормится благодаря своему умѣнію, энергіи, изворотливости, по сбору податей. Если обыкновенной законной нормой подать, напримѣръ является $^1/_{10}$ часть урожая съ населенія, то навѣрняка можно сказать, что еще $^5/_{10}$ перейдетъ въ карманъ энергичнаго амлякдара. Подать съ продуктовъ земледѣлія (нерджъ) равняется $^1/_{10}$ части, подать съ купцовъ (зякетъ) равна $2^1/_2$ проц. обращающихся въ ихъ лавкахъ товаровъ, скотоводы-кочевники платятъ сборъ въ размѣрѣ $^1/_{40}$ стоимости ихъ стада. Чиновники конечно, толкуютъ эти проц. по своему, пріумножая ихъ для блага своего кармана. Если эмиръ и караетъ иногда слишкомъ ретивыхъ сборщиковъ, за то высшими сановниками система поборовъ, вообще, поощряется, служа увеличеніемъ ихъ матеріальныхъ достатковъ. Достаточно привести слѣдующій примѣръ. У только что отстраненнаго отъ управленія Кушъ-Беги нашли по слухамъ, полные подвалы золота, и начерпали этого золота до 300 мѣръ. Чиновники въ Бухарѣ обогащаются довольно быстро и глядишь въ годъ-два уже являются владѣльцами огромныхъ состояній, въ свою очередь народъ не могущій шагнуть шагу безъ поборовъ разоряется и озлобляется. Во всемъ этомъ движеніи,—сказалъ мнѣ одинъ купецъ въ Бухарѣ:—шіитизмъ играетъ не настолько важную роль, какъ отдѣльные представители этого шіитизма, имѣющіе характерную особен-

ность обирать народъ, унижать его національныя чувства и достоинства. Но это опять таки въ характерѣ и всѣхъ нашихъ другихъ управителей. Кушъ-Беги и его ставленники чиновники явились лишь таблицей умноженія всѣхъ государственныхъ золъ.

Вновь назначенные сановники— сунниты все равно не улучшатъ благосостояніе народа, такъ какъ будутъ придерживаться той же системы управленія, которая тяжелымъ бременемъ давитъ насъ. Дѣло не въ лицахъ, а въ системѣ. Кушъ-Беги былъ бы хорошимъ управителемъ, но при иной обстановкѣ. У насъ теперь царитъ миръ и спокойствіе; шіиты съ суннитами всенародно облобызались, протянули другъ другу руки, но это былъ поцѣлуй Іуды... Шіиты хорошо знаютъ, что при существующемъ положеніи вещей они снова упрочатся, окрѣпнутъ, займутъ тѣ же положенія; мы въ свою очередь тоже хорошо видимъ, и потому говоримъ; новыя столкновенія могутъ произойти опять очень скоро. Всѣхъ шіитовъ мы выгнать не можемъ, ихъ въ одной Бухарѣ живетъ до 25-30 тыс., они слились съ нами, сдѣлались коренными жителями, подданными Эмира. Часть покинувшихъ край послѣ безпорядковъ—это все пришельцы съ Кавказа, изъ Персіи. Теперь смѣнили нѣсколько сановниковъ шіитовъ, тѣмъ дѣло кажется и кончится. Но вѣдь шіиты занимали не только высшіе должности, они проникли и въ низшія ранги управленія: чиновничество, армію. Искоренить ихъ всѣхъ невозможно, тѣмъ болѣе, что Кушъ-Беги до сихъ поръ продолжаетъ пользоваться симпатіями Эмира, не смотря на его отставку. Насколько во всемъ происшедшемъ является виноватымъ Кушъ-Беги, настолько же виноватъ и Эмиръ.

Диноэль.

Въ Бухарѣ.

(*Впечатлѣнія и наброски*).

Лишь благодаря прибытію русскихъ военныхъ отрядовъ было прекращено въ Бухарѣ ужаснѣйшее кровопролитіе между шіитами и суннитами Бухарскія войска, какъ извѣстно, не принимали почти никакого активнаго участія въ подавленіи безпорядковъ и послужили лишь для толпы раздражающимъ элементомъ.

— Что бы было если-бы русскіе не вошли своевременно въ нашъ городъ!—съ ужасомъ разсказывалъ мнѣ одинъ интеллигентный сартъ. Рѣзня продолжалась бы безпрерывно, пока обѣ враждующія стороны не истребили-бы другъ друга. Кромѣ того со всѣхъ окрестностей стекалась масса народу, который

горѣлъ однимъ желаніемъ пролить кровь и тѣмъ самымъ искупить братскія жертвы.

У суннитовъ даже было такое рѣшеніе: если съ обѣихъ сторонъ окажется убитыхъ 100 на 100, тогда рѣзню они немедленно прекратятъ, но если окажется, что съ ихъ стороны убито хоть однимъ человѣкомъ больше этой цифры рѣзьня возгорится съ новою силою и будетъ продолжаться до тѣхъ поръ пока не будетъ установлено необходимое равновѣсіе въ жертвахъ.

Но такъ какъ суннитовъ пало гораздо больше чѣмъ шіитовъ, ибо послѣдніе были лучше вооружены, то такимъ обраломъ рѣзня могла продолжаться безпрерывно и поглотить много новыхъ жертвъ.

Прибытіе русскихъ войскъ подѣйствовало отрезвляюще на населеніе и рѣзня понемногу стала утихать.

Вотъ что разсказывалъ мнѣ фельдшеръ Фатіевъ, прикомадированный къ 8-му Туркестанскому стрѣлковому баталіону и бывшій въ Бухарѣ во время безпорядковъ.

«2 роты нашего баталіона, изъ Катта-Кургана, прибывъ 10-го на ст. Бухара въ тотъ же день въ походномъ порядкѣ двинулись къ старому городу. Наше вступленіе было встрѣчено населеніемъ почти равнодушно, зато персы были несказанно рады нашему появленію и чуть-ли не цѣловали намъ руки, прося спасти то оставленную на произволъ судьбы семью, то брошенное во время рѣзни ихъ имущество. У нѣкоторыхъ въ домахъ и лавкахъ остались даже цѣлыя состоянія. Наши роты вступивъ въ крѣпостныя ворота остановились. Офицеръ немедленно распорядился поставить часовыхъ по крышамъ въ, глухихъ проулкахъ и вообще въ тѣхъ мѣстахъ, гдѣ больше всего можно было ожидать возобновленія безпорядковъ. Часть солдатъ отправилась выручать изъ бѣды персовъ съ семействами и доставлять ихъ партіями въ новый городъ, я какъ фельдшеръ съ небольшимъ взводомъ солдатъ пошелъ искать раненыхъ для оказанія имъ необходимой медицинской помощи. На пути намъ встрѣчалась масса труповъ страшно изуродованныхъ тупыми предметами и съ ногъ до головы залитыхъ кровью. Раненыхъ было очень не много, ибо каждаго фанатика убивали на смерть и даже были случаи когда вновь «убивали» трупы, пронзая ихъ кинжалами и ножами. Кромѣ того каждый, даже тяжело раненый спѣшилъ уползти на животѣ куда нибудь въ сарай дабы избѣжать дальнѣйшихъ надругательствъ со стороны враговъ. Стрѣльба и отдѣльныя убійства на улицахъ между тѣмъ не прекращались. То тамъ, то здѣсь раздавались револь-

верные выстрѣлы, и мы почти на каждомъ углу находили теплые трупы. Если сарты были взвинчены до послѣдней степени и въ своемъ экстазѣ мести не знала предѣла, то также безумно настроены были и персы. Обладая большою физической силою и изворотливостью они даже и въ меньшинствѣ не давали себя въ обиду и мѣтко поражали изъ револьверовъ своихъ наступившихъ противниковъ. Установлено, что на каждаго сопротивлявшагося перса было необходимо не менѣе 8 человѣкъ сартовъ, и лишь только подавляющее большинство заставило персовъ обращаться въ бѣгство.

По улицамъ въ разныхъ направленіяхъ бѣжали съ крикомъ толпы людей, раздавались дикіе душу раздирающіе крики, трещали выстрѣлы револьверовъ. Часто приходилось переступать черезъ лежащія на дорогѣ тѣла убитыхъ, обходить широкія лужи запекшейся крови или пинать ногой какой либо предметъ, выброшенный изъ лавки во время ея разгрома. При прохожденіи нашего отряда мы всюду находили много убитыхъ, а въ особенности женщинъ и дѣтей, скрытыхъ гдѣ нибудь въ темныхъ сараяхъ или отхожихъ мѣстахъ. Нѣсколькимъ раненымъ дѣтямъ и женщинамъ я сдѣлалъ необходимыя перевязки и подъ конвоемъ солдатъ отправилъ ихъ въ больницы. Перестрѣлка и отдѣльные случаи убійствъ стали утихать въ центрѣ, но зато перебросились на окраины, гдѣ борьба еще продолжалась во всю."

Это разсказъ фельдшера, набросанный мною впопыхахъ во время прохожденія русскихъ войскъ черезъ бухарскія улицы. Удалось узнать и еще много всякихъ подробностей, которыя я къ сожалѣнію не записалъ, а потому и постараюсь въ слѣдующемъ очеркѣ воспроизвести ихъ на память.

На мой вопросъ къ муллѣ, зачѣмъ они убивали невинныхъ дѣтей, тотъ сдѣлавъ гримасу сказалъ: „выростутъ, такіе же поганцы будутъ. Наша месть—большая месть и не знаетъ пощады." Невольно пришлось содрогнуться при этихъ словахъ и подумать о томъ, какъ мы иногда идеализируемъ туземца, окружая его ореоломъ кротости, доброты и великодушія и забывая, что внутри его сидитъ злой страшный звѣрь, пробуждающійся при видѣ крови и все безпощадно уничтожающій...

Диноэль.

Орошеніе новыхъ земель частными лицами.

Въ статьѣ своей „Возрастаніе интереса къ Туркестану" (см. „Турк. Кур."), указывая на то, что столичная печать за послѣднее время удѣляетъ много вниманія Туркестану, я упомянулъ корреспонденцію А. К. въ „Торг.-Пом. Газ." изъ Ходжента.

Авторъ этой корреспонденціи разсказываетъ о двухъ предпріятіяхъ въ ходжентскомъ у. по орошенію казенныхъ земель на частныя средства. Объ этихъ предпріятіяхъ у насъ уже говорилось не разъ, и та-же самая „Торгов.-Пром. Газ." лѣтомъ минувшаго года сдѣлала по этому поводу перепечатку изъ „Турк. Кур.", помѣстивъ ее въ „Обзоръ печати".

А. К. даетъ теперь болѣе подробныя свѣдѣнія.

Первый починъ въ дѣлѣ орошенія новыхъ земель на частныя средства сдѣлалъ туземецъ, ходжентскій купецъ Пуладжанъ Касымбаевъ, который взялъ въ аренду казенно-обр. статью „Санджакъ-аралъ", размѣромъ 141 десятина. Земля эта расположена въ 5 верстахъ отъ Ходжента на правомъ берегу Сыръ-Дарьи. Весною 1908 г. Касымбаевъ установилъ нефтяной двигатель. въ 16 силъ, системы „Перкунъ" съ однимъ насосомъ и оросилъ 40 десятинъ. На устройство орошенія Касымбаевъ затратилъ около 10 тыс. рубл. Во вниманіе къ этому полезному дѣлу, казна продолжила срокъ аренды на 12 лѣтъ, но съ условіемъ, чтобы въ первые 3 года было орошено до 100 дес. Въ минувшемъ 1909 г. Касымбаевъ оросилъ до 60 десят. Посѣвы были уничтожены саранчею. Такимъ образомъ Касымбаевъ потерпѣлъ громадные убытки.

Нельзя не отмѣтить, что первымъ предпринимателемъ по орошенію каз. земель на частныя средства явился туземецъ.

Второе предпріятіе подобнаго-же рода организовано инж.-техн. А. А. Рудинскимъ, который около 5 лѣтъ былъ производителемъ работъ по постройкѣ казен. канала для орошенія 45 тыс. десятинъ въ Голодной Степи.

Г-нъ Рудинскій арендовалъ у казны 500 десят. въ уроч. Сарыугай, въ 8 верстахъ отъ Ходжента, на правомъ берегу Сыръ-Дарьи. Для орошенія этой земли г. Рудинскій поставилъ 30-сильный нефтяной двигатель системы „Перкунъ" съ тремя насосами и приготовилъ арычную систему на 200 десятинъ. Первоначально было орошено 80 десят. Лѣтомъ минувшаго года поливная площадь была расширена до 120 дес. Какъ сообщаетъ А. К., за позднимъ временемъ приступа къ оросительнымъ работамъ, инж.-техн. Рудинскій не успѣлъ засѣять и половины арендованной земли, но надѣется закончить полное

орошеніе къ веснѣ 1910 г.

Двигатель и насосы г. Рудинскаго могутъ дать 22 куб. фунта воды въ секунду, которою можно оросить около 600 десятинъ.

Мнѣ пришлось лично бесѣдовать съ А. А. Рудинскимъ по поводу организованнаго имъ предпріятія по орошенію земель.

Громаднымъ затрудненіемъ и тормазомъ является обычное засариваніе водопріемниковъ насосовъ. Вода въ нашихъ туркестанскихъ рѣкахъ, въ томъ числѣ и въ Сыръ-Дарьѣ, несетъ съ собою массу ила и другихъ посторонних веществъ, вплоть до деревьевъ. Притягивая къ себѣ все это, водопріемники засариваются.

Когда подобная вещь случилась то рабочіе не хотѣли нырять въ воду для очистки водопріемниковъ, опасаясь быстраго и сильнаго теченія рѣки. Никакія обѣщанія денежной награды не помогли. Пришлось А. А. Рудинскому продѣлать это самому, что онъ и исполнилъ благополучно. Только послѣ этого рабочіе набрались храбрости и безъ боязни ныряли для очистки водопріемниковъ.

Другимъ не менѣе важнымъ затрудненіемъ въ предпріятіяхъ, подобныхъ упомянутымъ выше, является неувѣренность, будетъ-ли продолжена аренда земли. Дается аренда лишь на три года. Чтобы продолжить ее до 12 лѣтъ необходимо выжидать разрѣшенія из Петербурга. Взявъ казенную землю въ аренду на 12 лѣтъ, есть еще разсчетъ устраивать дорого стоющее орошеніе путемъ подъема воды машинами, такъ какъ за этотъ періодъ времени имѣется возможность возмѣстить сдѣланныя затраты. Въ трехлѣтній же промежутокъ времени невозможно возвратить расхода на устройство орошенія.

Эта неувѣренность въ продленіи аренды невыгодно отражается на томъ, что до сего времени, какъ это видно, весьма немногіе рискуютъ вложить свои капиталы въ орошеніе казен. земель.

Орошеніе новыхъ земель съ цѣлью увеличенія площади посѣвовъ хлопка имѣетъ весьма серьезное значеніе для Туркестана. Въ виду этого, крайне желательно, чтобы для арендаторовъ казен. земель, которые намѣрены ихъ оросить на свои средства, было сдѣлано исключеніе и для нихъ были выработаны спеціальныя правила аренды, съ продолжительными сроками пользованія землею. Безъ этого дѣло орошенія казенныхъ земель на частныя средства затормазиться надолго. Сдѣлать эти изъятія изъ общаго положенія не такъ-то трудно. Жаль, что этого не сдѣлано до сихъ поръ: упущено много времени.

К. Тимаевъ.

По поводу развитія исламизма.

Послѣднія кровавыя событія въ г. Стар. Бухарѣ дали поводъ нашей „охранительной" прессѣ

вновь поднять вопросъ о развитіи исламизма, о происходящей отсюда опасности и выступить съ совѣтомъ быть на сторожѣ.

Газеты сопоставляютъ внутреннее политическое переустройство Турціи и Персіи съ вспыхнувшимъ въ Бухарѣ движеніемъ.

Все тамъ, т. е. въ Бухарѣ, видите-ли, шло до сихъ поръ такъ гладко, что объ этой странѣ вспоминали лишь тогда, когда къ намъ (въ Петербургъ) являлся бухарскій эмиръ со своими традиціонными подношеніями. Знали мы, говоритъ „Земщина", что это страна лишена „благъ цивилизаціи" въ видѣ правильно поставленнаго суда и администрація, что законы въ ней не укладываются въ рамки нашихъ культурныхъ понятій, но что тѣмъ не менѣе жизнь въ Бухарѣ течетъ лѣниво и мирно, безъ всякихъ скачковъ и освободительныхъ перспективъ. И вдругъ, въ этомъ тихомъ углу вспыхиваетъ ожесточенная междуусобица на почвѣ религіозныхъ недоразумѣній между шіитами и суннитами...

Вотъ въ томъ-то и бѣда, что въ Петербургѣ вспоминали о Бухарѣ только тогда, когда пріѣзжалъ эмиръ съ подарками, и совершенно безучастно взирали на то, что въ Бухарѣ, гдѣ жизнь течетъ лѣниво и мирно, нѣтъ, „правильно поставленныхъ судовъ и администраціи" утѣшались тѣмъ, что тамъ не наблюдается скачковъ и освободительныхъ перспективъ. Цѣлая страна влачитъ ужасное существованіе безъ судовъ и правильно организованной администраціи, а мы, въ качествѣ посторонняго зрителя, какъ-бы любуемся этимъ, не замѣчая страданій многомилліоннаго народа.

Далѣе газета разсуждаетъ такъ: неожидани сть бухарскаго междуусобія заставляетъ насъ взглянуть повнимательнѣе на тѣ массы, религіозный фанатизмъ, которыхъ можетъ породить и у насъ цѣлый рядъ „неожиданностей", далеко для насъ не безразличныхъ.

Стоя на этой точкѣ зрѣнія, газета указываетъ, что въ предѣлахъ Россіи находится свыше 30 милл. такихъ-же фанатиковъ, отзывающихся на каждое движеніе своихъ единовѣрцевъ, хотя-бы и въ другихъ государствахъ. Событія въ Турціи не прошли для нихъ безслѣдно...

Конечно, на счетъ „цѣлаго ряда неожиданностей", которыя, яко-бы, готовы разразиться среди мусульманъ въ другихъ частяхъ нашей Имперіи, газета можетъ успокоиться. Думаю, что въ данномъ случаѣ газета прибѣгла къ извѣстному публицистическому пріему, чтобы напугать своихъ читателей и обратить вниманіе выше стоящихъ.

Возникшее въ Бухарѣ движеніе является движеніемъ чисто мѣстнымъ и не грозитъ никакими неожиданностями среди другихъ мусульманъ. Такъ что запугиваніе 30 милліонами фанатиковъ надо признать излишнимъ и даже вреднымъ. При всемъ томъ является ошибочнымъ огульное обвиненіе газеты всѣхъ проживающихъ въ Россіи мусульманъ въ фанатизмѣ. Далеко это не такъ.

Бухарское населеніе дѣйствительно фанатичное до извѣстной степени, но это объясняется тѣми политическими и соціальными условіями, въ которыхъ пребываетъ бухарскій народъ.

Мы имѣемъ основаніе утверждать, что событія въ Стар. Бухарѣ носили характеръ чисто мѣстный, потому что можно считать окончательно установленнымъ, что происшедшія кровавыя волненія въ корнѣ своемъ имѣли недовольство Кушъ-беги, его ставленниками и лицами ему протежирующими. Подобныхъ причинъ въ другихъ раіонахъ русскаго мусульманства не имѣется. Стало быть, нѣтъ мѣста и опасеніемъ за „неожиданности".

Нельзя также сказать, чтобы событія въ Бухарѣ были неожиданностью. Такимъ явленіемъ они могли показаться только въ Петербургѣ, гдѣ Бухару знаютъ только по наслышкѣ, да по торжественнымъ пріемамъ бухарскихъ посольствъ...

Весьма характерно слѣдующее увѣреніе „Земщины".

„Свобода совѣсти, объявленная въ Россіи, облегчаетъ распространеніе мусульманскаго фанатизма и способствуетъ ихъ обособленности среди русскихъ. Къ томуже въ среду нашихъ магометанъ усиленно вливается освободительный духъ сознательными радѣтелями, ищущими удобной нивы для своего посѣва. Пока что, однако „сѣятели" не успѣли еще развратить мусульманъ въ политическомъ смыслѣ, такъ что религіозное движеніе среди нихъ пока еще не перешло въ политическое!"

Итакъ, во всемъ виноваты свобода совѣсти. Прекрасно, такъ и будемъ знать.

Что касается обособленности, то это заблужденіе.

Дѣло въ томъ, что какъ разъ, на этихъ дняхъ мнѣ пришлось слышать въ город. думѣ, какъ два представителя туземнаго населенія категорически указывали на необходимость устройства большого числа русскихъ школъ для туземцевъ, которые безграмотны и т. д. Туземцы такимъ образомъ сами добиваются русскихъ школъ, а въ Петербургѣ увѣряютъ, что фанатики мусульмане обособляются и т. п. Одно съ другимъ что-то не вяжется.

Если мы, русскіе, отнесемся совершенно безучастно къ стремленію нашихъ мусульманъ получить школы, то этимъ мы дѣйствительно будетъ способствовать укорененію среди нихъ фанатизма, подъ вліяніемъ собственныхъ учителей, воспитанныхъ только на толкованіяхъ корана. Нельзя такъ же отнестись безучастно къ заявленнымъ въ Бухарѣ народомъ требованіямъ. Было-бы величайшимъ преступленіемъ оставить въ Бухарѣ все безъ измѣненія, предоставить тамъ жизни течь лѣниво и мирно, какъ увѣряютъ столичныя газеты, но безъ суда и съ администраціей, правящей произволомъ и суровостью. Закрывая глаза на главнѣйшія причины бухарскихъ событій, мы

тѣмъ самымъ готовимъ почву для дальнѣйшихъ волненій.

И въ этомъ случаѣ мы окажемся тѣми самыми „сѣятелями", о которыхъ упоминаютъ петербургскія газеты.

К. Тимаевъ.

———